साहित्य-रत्नाकर.

(साहित्य-संग्रह)

अर्थात

प्राचीन-अर्वाचीन हिंदी कवीश्वरोंकी रसालकार-
युक्त प्रासादिक पद्य रचना.

प्रथम भाग

संशोधनपूर्वक प्रसिद्धकर्त्ता

कहानजी धर्मसिंह

राजकोट-काठियावाड

"सगीतमपि साहित्य सरस्वत्या स्तनद्वयम ।
एकमापातमधुरमन्यदा लोचनामृतम्" ॥१॥

(तृतीयावृत्ति)

वि स १९८२ ई स १९२६

मूल्य रु ४॥

बेहेस्तनशीन श्रीमान्

बेहेरामजी मेहेरवानजी मलबारी,–

उन्होंका

बंबई "सेवासदन" और धर्मपुर "क्षयरोग निवारण आश्रम" स्थापनेका स्तुत्य परिश्रम, "इंडियन स्पेक्टेटर" और "इस्ट एन्ड वेस्टा"दि पत्रोंका स्वतंत्र आधिपत्य; "नीति-विनोद"- "अनुभविका"-"संसारिका"दि सद्ग्रंथो द्वारा सुमधुर कवित्व, और समाजसेवाकी विविध प्रवृत्तिओंके चिर स्मरणार्थ, यह पुस्तक, उन्होंका स्वर्गस्थ सूक्ष्मात्माको सप्रेम समर्पण.

प्रस्तावना

साहित्य —सहितस्यभावो साहित्यं मेलने तुलनायाम् ॥

परस्पर अपेक्षा रखनेवाले जो रूप उन्होका एक दूसरेके साथ मिलाना उसको साहित्य कहते है कोमल मतिवाले लोगाका आनद उत्पन्न करिके सरस रीतिसें कार्याकार्यका उपदेश करना यह साहित्यशास्त्रका प्रयोजन है उपमा देनेके योग्य वस्तुको उपमेय कहते है, और जिसकी उपमा दी जावे उसको उपमान कहते है, और उपमेय तथा उपमानके मध्यमें मिलते हुए न्यूनाधिक गुणोका बताना उसको उपमा कहते है, जैसेकि मुख ये उपमेय पदार्थ है, चद्र ये उपमान है और गोलत्व, प्रकाशत्व तथा आह्लादकत्वादि ये गुण है, तिससें "उसका मुख चद्र समान है" ये उपमा है ऐसे अनेक अलकारोंसें देदीप्यमान और रस प्रवाहेंसे रसिकोंके मनकों प्रसन्न करनेवाली हजारो कविताएं कवियोंका यशरूप शरीरसें भारतवर्षमे प्रकाशित हो रही है कवीश्वरोंने स्वप्रज्ञानुसार छंद शास्त्रोक्त पद्धतिसें ऐतिहासिक किंवा पौराणिक आख्यानोंको रससें सजीव बनाकर अलकारोंसें अलौकिक शोभायुक्त किये है, जिसमे अपनी तर्कशक्तिके प्रभावसें देवी-देवता-वन-पर्वत-मनुष्य-गधर्व-नायक नायिका-ऋतु-वृक्ष, तैसेंही अन्य प्राणि पदार्थोके मिलते हुए गुणोंको शोध, उनका सादृश्य भाव बताकर अपनी सुदर वाणीके विलासोंसे सग्रहित किये है

नवा वाणी मुखे मुखे । मुख मुख प्रति वाणी नवनवीन रीतिसें बसती है, तिसको मनोहारिणी करनेके लिये प्राचीन तथा आधुनिक कवीश्वरोंने बहुत श्रम उठाया है, परतु तिनमे विशेष माननीय प्राचीन कवीश्वर है, क्योंकि भिन्न भिन्न विषयोंको भिन्न भिन्न चित्ताकर्षक उपमा देनेसें प्राचीन कवीश्वरोंकी बुद्धिकी विलक्षणता उन्होंके कार्यही द्योतन करते है इस लिये उन्होंका गुणानुवाद करनेकी आवश्यक्ता नहि है ब्रह्माडका ऐसा एकभी भाग नहि कि जो कवीश्वरोंकी दृष्टिसें बाहिर रहा होवें जहां सूर्यभी प्रकाश करनेको समर्थ नहि तहांभी

कवीश्वरकी गति है, तिससें ऐसी सामान्य लेकोक्ति है.--" जहा न पहूंचे रवि, तहां पहूचे कवि." और रसविज्ञान भी उन्होंने सपूर्ण रीतिसें संपादन किया होगा एसा अनुभव होता है. क्योंकि प्रासंगिक स्थलेमें रसोंके असली स्वरूपको प्रगट करनेमें वे चूके नहि; वास्तवमें रसोद्भव करनेकी उनकी रीति अति प्रशंसनीय है. प्रासंगिक शब्दोकी तरङ्गे उह्की निर्मल प्रज्ञामेंसें ऐसी प्रासादिक रीतिसें उठी हुई हे, के जिस रचनाको देखते, वाचते तथा सुनतेही अंतःकरण पर एक तरहका विलक्षण असर हुये विना नहि रहता, और कवीश्वरोंकी कृतिनेंही ब्रह्माकी कृतिको उज्वल की है ब्रह्माकी कृतिभी कवीश्वरोंकी कृति विना विरस दिखाइ देती है. वास्तवमें कवीश्वरोंने रससें आप्लावित कर, ब्रह्माकी कृतिको विशेष प्रकाशित की है. तिनोंने अपनी मनोमय सृष्टिसें जो ब्रह्माकी सृष्टिका चमत्कारिक रीतिसें वर्णन नहि किया होता, तो ब्रह्माकी सृष्टिकी चमत्कृतिभी प्रकाशको नहि प्राप्त होती. ब्रह्मा जैसे नवीन नवीन सृष्टिकी रचना करनेमें समर्थ है. तैसें कवीश्वरभी नवीन नवीन सृष्टि करनेमे समर्थ है. कविकी सृष्टिसें ब्रह्माकी सृष्टि न्यून है, क्योंकि ब्रह्माकी सृष्टि नियत नियमके आधीन है, सुख दु:ख मिश्र भावयुक्त है, परमाणु आदि कारणके आधीन है. और षट्रस (आम्ल-मधुर-कषाय-लवण-कटु-तिक्त) युक्त ह, परन्तु अरुचि उत्पादक रसवाली है. और कविकी सृष्टि तिससै विशेष उत्तम है; क्यौंकि वाहि नियत नियमके आधीन नहि-स्वतन्त्र है. नव रसेंसे मनोहर है, और सर्व प्रकार आनन्दमयी है इस लिये ब्रह्माकी सृष्टिसें अधिक गिनी जाती है, जो कवि नवीन नवीन काल्पनिक सृष्टिकी रचना करनैमें समर्थ नहि है, अर्थात् न्यून होनेसें जनहित करनमें कवी कोईभी शक्तिमान् नहि है. कवीश्वरोंका आंतरिक उद्देश मात्र विविध प्रकारकी उपमा देनी, रसालङ्कारोंको द्योतन करनां, सुंदर वाक्यरचना करनी, मनोहर प्रासानुप्रासके साथ नवीन नवीन छन्दोकी रचना और अनेक तरहकी कल्पनाओं प्रगट करनी तथा नवीन रचना

रचनी, इतनाही नहि, किन्तु उनोंका मुख्य उदेशतो कीसी तरहसें जनसमुदायको बोधदायक वचन कहनां तथा उनोंके आत्माकी उन्नति होनेका पूर्ण प्रयत्न करना यही है कवीश्वर फिर जगतकों नीतिकी शिक्षा देनेवाले, हृदयका आनन्द देनेवाले, तथा मनकी शुद्धि करनेवाले क्यों नहि है ?

नीतिज्ञान आत्मज्ञानका सहायक है व्यवहारकी विना कुशलता पारमार्थिक कुशलता असभव है, जगतके सम्यक् प्रकारसें शुभचिंतक है और सबसें विशेष मानसिक शक्ति धारण करनेवाला है सामान्य विषयकोंभी नीतिपूर्वक वर्णन कर देना यह कवीश्वरोंका मुख्य प्रयोजन है, परन्तु इन कार्यमें मानसिक शक्तिकी बहुतही आवश्यका है मानसिक शक्ति जितनी ज्यादा हो उतनीही कविकी कवितामें प्रधानता गिनी जाती है पृथक् पृथक् प्राचीन कवीश्वरोंके पाडित्यकों दिखलानेवाले तिनोंके औपदेशिक-चित्ताकर्षक वचनोंका संग्रह, जोकि साहित्य भावसें भरा हुवा है, उसमेंसे मनोरंजक संक्षिप्त सग्रह इस ग्रंथमें किया है साहित्य ज्ञानसें पुरुष दूरदर्शी होता है और समयानुसार औपदेशिक वचन बोलनेकी सक्तिभी आति है सभाह्लादक बोलनाभी एक मुख्य गुण है, परन्तु ये सदसाहित्यशास्त्रके अवलोकन किये विना आ शके नहि वाक्चातुर्य यदि साहित्यसें भूषित हो तो फिर उसकी शोभा भी अलौकिक होती है

साहित्यशास्त्रके ज्ञानरहित पुरुषकों सिंग पुच्छहिन पशु तुल्य कहा है

साहित्य संगीत कला विहिनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीन

तिससें इस शास्त्रका ज्ञान अवश्य सपादनीय है मनुष्यको जबतक साहित्यशास्त्रका ज्ञान न होय तबतक वह प्रकाशित नहि होता व्यवहार वशमें रहनेवाले राजासें रंक पर्यंतको इस शास्त्रका यथामति विचार अवश्य करना चाहिये, क्योंकि इस शास्त्रका विचार किये विना नीतिज्ञ होता नहि, नीतिज्ञ हुये विना यथार्थ न्यायी हो सका नहि, यथार्थ न्यायी हुये विना समदृष्टि होता नहि, समदर्शी हुये विना ज्ञानवान् होता नहि और ज्ञानवान् हुये विना मोक्ष होता

नहि इससें सिद्ध हुवा कि व्यवहारिक कुशलता, पारमार्थिक कुशलता-प्रति कारण है और व्यवहारिक कुशलतामें साहित्यशास्त्र कारण है; अत साहित्यकोभी मोक्षकेप्रति कारणता प्राप्त हुई उक्त कथनानुसार मोक्षमार्गके प्रति अनुसरण करनेवालेका प्रथम सोपान जो साहित्य-ज्ञान, उसका अवश्य अवलम्बन लेना चाहिये. मेरी स्थूल दृष्टिमें एसा विचार आनेसें यथा प्राप्त साहित्य विषयका इस प्रथम संग्रह कर, जनसमूहके हितार्थ प्रसिद्ध करता हुं, और आशा करता हु कि वाचकवर्ग प्रीतिपूर्वक अवलोकन कर मेरे श्रमको सफल करेंगे.

बंबई गायवाडी रामनवमी स १९५३. } कहानजी धर्मसिंह.

(प्रस्तावना द्वितीयावृत्तिकी.)

समग्र आर्यावृत्तकी एक प्रचलित–हिंदी भाषाके इस उपयुक्त काव्य ग्रंथकी बारह वर्षके अनंतर दुसरी आवृत्ति करनेका सुअवसर प्राप्त हुवा है इसका कारण केवल अपने काव्यप्रेमीओंकी न्यूनता तथा काव्यमें प्रीतिका न होनाही कारणभूत है; तथापि मैं साहित्य-सेवामें तत्पर होकर, यथामति शोधित वर्धित पुनरावृत्ति प्रसिद्ध करनेके लिये यह प्रयत्न किया है.

बंबई: ताडदेव, जुबिलीवाग, रगपंचमी, सं. १९६४.

(प्रस्तावना तृतीयावृत्तिकी.)

ससार विषवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे ।
काव्यामृत रसास्वाद सगति सज्जनं सह ॥

संसाररूपी विष-वृक्षमें दो अमृत-फल फले है. एक काव्यामृत रसास्वादन और दूसरा सत्संग इस विचारमेंभी काव्य-साहित्यका स्थान प्रथम होनेसें कुछ विवेचन उपरोक्त प्रस्तावनामें निवेदित किया गया है.

प्रस्तुत् आवृत्तिके संशोधन कार्यमें, नवनूतन पद्यरचनाओंकी पूर्ति करनेमें और कविपरिचय विषयमें कुंतलपुरनिवासी श्रीयुत्

नरसिंगदास भाणजीभाई ब्रह्मभट्टने अमूल्य सहाय की है, और गणोद दरबार श्रीमान् गोपालसिंहजी रामसिंहजी आदि साहित्यरसिक सज्जनोनेभी उच्च श्रेणीके काव्य भेजनेका श्रम लिया है अत' मैं उन्होकी सहर्ष कृतज्ञता प्रकट करता हु इस ग्रंथमें कुच्छ आनंदप्रद हिस्सा होवे सो उन्हीका समजनां और दोप रह गया होवे सो मेरी अल्पज्ञताका है क्योंकि —

शास्त्रकर्ता भवद्व्यासो लेखको गणनायक. ।
तयाश्च स्खलिता बुद्धिमनुष्याणां तु को यथा ॥

वेद व्यास सदृश महान् ग्रंथ लिखनेवाले और विनायक सदृश महान सुचतुर लेखक, उसकी मतिमें भी भ्रम हो गया तो मैं कोन गिनतीमें '

इस ग्रंथकी द्वितीयावृत्ति बहुत वर्षोंसें बिक चुकी है और म तृतीयावृत्ति शीघ्र प्रकाशित करनेका प्रयत्नमें था, परतु कितनेक अनिवार्य कारणोसें बहुत समय व्यतीत हो चुका है, तदपि हर्षका विपय यह है कि वर्तमान समयका ग्रंथ पहिले सग्रहसें विस्तृत और उत्कृष्ट हुआ है, इस बातको पाठकवृंद देखतेही समझ सकते है, और मुझेभी इस विपयमें सतोप है कि, अब काव्य-काननमें रसिक भ्रमरोंको एकही स्थानपर सब प्रकारके परिमलपूर्ण प्रसून प्राप्त हो सकेंगे, क्योंकि भापा-साहित्य-वाटिकाके चुने हुए पुष्पोंसें यह ललित कलित "आकर ' भरा गया है

सग्रह ग्रथमें बहुत ख्याल रखते हुएभी सहज दोप रह जाते है और उसमेंभी मेरी परतंत्र स्थितिके लिये कुच्छ विशेप दोप रह गये होगे, परंतु सुज्ञ पाठक हसवृत्तिसें (नीर-क्षीर न्यायसें) देखेंगे और मुझे सूचना करेंगे जासों आगामी आवृत्तिमें सुधार लिया जाय

प्रस्तुत ग्रथका दुसरा भाग तैयार करनेका प्रयास चालु है और ईश्वरेच्छा तो बन सकेगा तैसें शीघ्रही याचकोकी सेवामें निवेदित किया जायगा

राज्यदुर्ग (राजकोट) विजयादशमी, वि स १९८२

कहानजी धर्मसिंह

कवि-नामानुक्रम.

संक्षिप्त विषयदर्शन.

विषय पृष्ठ

राजनीति चातुरी.

प्रेम-प्रीति-मैत्रि-विरह.

नायिका वर्णन.

चित्र-विचित्र अन्योक्तियां.

INSCRIBED TO
THE SACRED MEMORY OF

BEHRAMJI MERWANJI MALABARI, -

POET, JOURNALIST,
REFORMER and PHILANTHROPIST,

A Worthy Son
of
India
Our Motherland.

साहित्य-रत्नाकर.

(साहित्य-संग्रह)

अकबर

(यशमहिमा दोहा)

जाकी कीरति जगतमें, जगत सराहे जाहि,
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बरशाहि १

(विविध शृंगार-सवैया)

शाह अकब्बर बालकी बाह, अचिंत गही चल भीतर भौने,
सुन्दरि द्वारहि दृष्टि लगायके, भागिवेको भ्रम पावत गौने,
चौकतसी सब ओर विलोकित, शंकि सकोच रही मुख मौने,
यों छवि नैन छबीलेकी छाजत, मानो विछोह परे मृगछौने १

शाह अकब्बर एक समै चले, कान्ह विनोद विलोकन बालहि,
आहटतें अबला निरख्यो चकि, चौंकि चली कर आतुर चालहि,
त्यों बलि बेनी सुधारि धरीसु, भई छवि यों ललना अरु लालहि,
चंपक चारु कमान चढावत, काम ज्यों हाथ लिये अहि बालहि २

केलि करै विपरीति रमैसु, अकब्बर क्यों न इतो सुख पावै,
कामिनिकी कटि किंकिनि कान, किधौं गन प्रीतमके गुण गावै,
बिंदु छुटि नमें सु लिलाटतें, यों लटमें लटको लगि आवै,
शाहि मनोज मनो चितमें छवि, चंद लये चकडोरि खिलावै ३

(बीरबल विरह-सोरठा)

दिन जानि सब दीन, एक न दिन्हो दुसह दुख,
सो अब मोको दिन्ह, कछु न राख्यो बीरबर १

(दोहा)

पीथलसो मिजलस लई, तानसेनसो तान,
हसबो रमबो खेलबो, गयो बीरबल मान १

अनन्य.

(चतुर्विध ज्ञान-सवैया.)

विधि भेद निषेध न जाने कछु, मतिके अनुसार लही सो लही.
नहि रीत है वेद पुराननकी, अन रीतसुं टेक गही सो गही;
समुझाय नही समुझे गुरुके, उरके अनुमान कही सो कही,
यह तामसि ज्ञान अनन्य कहे, हठि मूरख गांठ गही सो गही. १
जिहि काम करे सुविचार करे, फल चार विषे हित राजत है,
व्रत संयम नेमसों कर्मक्रिया करे, भक्ति भली विधि छाजत है,
करि सेवहि देव मनाय भली, धर पाय धरापर गाजत है,
यह राजस ज्ञान अनन्य कहै, जनु धर्म सरूप विराजत है. २
शील सुशील सुबुद्ध सुलच्छन, धीर गंभीर मिले जग न्यारे,
धर्म दया निरलोभ निरंतर, निर्भय भक्ति आराधनहारे,
धर्म करे सो करे प्रभु अर्पन, चाहत नाहि जु बुद्धि उजारे,
सात्विक ज्ञान अनन्य कहै, सोइ भक्त सदा भगवंतहि प्यारे. ३
हर्ष न शोक न राग न रोप हु, बंध न मोक्षकि आस नही है,
वैर न प्रीत न हार न जीत न, गार न गीत सो रीत ग्रही है,
ऊंच न नीच न जात न पात, न द्योस न रात सुदृष्टि भही है,
निर्गुन ज्ञान अनन्य कहै, अवधूत अतीतकि रीत यही है. ४

(भवसिंधु और परब्रह्म-कवित्त.)

करमकी नदी जामें भरमके भौर परे,
लहरै मनोरथकी कोटिन गरत है,
काम शोक मद महा मोह सो मगर तामें,
क्रोधसो फनिंद जाको देवता डरत है;
लोभ जल पूरन अखंडित अनन्य भनै,
देखौ वार पार ऐसो धीर ना धरत है,
ज्ञान ब्रह्म सत्य जाके ज्ञानको जहाज साजि,
ऐसे भवसागरको विरले तरत है. १

वैष्णव कहत विष्णु वसत वैकुंठ धाम,
शैव कहे शिवजू कैलास सुख भरे है,
कहें राधावल्लभी विहारी वृंदावनहींमें,
रामानदी कहे राम अवधसें न टरे है,
एतो सब देव एकदेसिक अनन्य भने,
हम तुम सब आप ठौर न ज्यों घरे है,
चेतन अखंड जासें कोटिन ब्रह्मांड उठे,
ऐसो परब्रह्म कहा पुरिनमें परे है २

जेहि सरितान अरु सागरान नीर शोष्यो,
सोइ सरितान सागरान नीर भरि है,
जेहि तरुवरनकों पत्रन विहिन कियो,
सोइ तरुवर मांझ फेर पत्र करि है,
जेहि राजा बलिनकों उंचेसे पताल भेज्यो,
सोई राय बलिनकों फेर इद्र करि है,
धरे रहो धीरवीर अक्षर अनन्य भजे,
जोइ उपजाइ पीर सोइ पीर हरि है ३

अजान.

(पारब्ध-कर्ममहिमा-सवैया)

विमोहित सत पठे द्विज मत, महा सुख तंत हैं शोम अपार,
सिवारको राम पुरैन विलास, सरोज विकास सुगंध अगार,
मधूव्रत ऐसो सरोवर वासतें, जो न गयो मन तैसे विकार,
अजान यही मति किन्ह बिचार कि, भाल लिखी लिपि को शके टार १

(राधाकृष्ण विनोद-कवित्त)

मान करि बैठी वृषभानकी लडैती इते,
उतको हवाल देखे मेरो हियो डरपै,
पानी पान भूषन वसन तजि दीनो जाको,
छायो है विषाद सारे नंदके नगरपै,

-

कांपि जात वाततें लहकि जात चांदनीतें,
तारन कतार ताकि तारापति तरपै;
मान शिख ऐरी अबे दीजियें दरस नेक,
धीरज धऱ्यो न जात लाल गिरधरपै. १

महल उशीरके चंदोया चिकै चांदनीकी,
फरस चमेलीकी अनोखी छटा छहरै,
छुटत फुहारे चहुंओरन गुलाबवारे,
नहरै भरी है घनसार वारी गहरै,
संदली बहारदार व्यंजन हुलावै सखी,
करत विहार तामें दंपति दुपहरै,
प्रेमकी लगनमें सु आनद मगन लेत,
शीतल सुगंध मंद मारुतकी लहरै. २

अतर गुलाब सो सुवासित पहिरि सारी,
चोंपसो चुपरि चोली चंदन चहलमें,
भूखन अदुखन सकल वेला चादलीके,
गजरा चमेली को न आवत कहलमें,
सग ना सखिन घनसारकी गलिन बीच,
व्है कर अलिन चंद चापति सहलमें,
धीर धरो सावरे हियेकों करो सीर चली,
आवति समीरपै उशीरके महलमें. ३

संग सखियानके नहानमें सरोवरपै,
कौतुक भयो है सो न कहति बनायके,
चंद्रमुखी देखत कमल सकुचाने भौर,
सकल उडाने परे क्यारिनमें जायकै,
ता समै निकुंजतें, निकरि सुख पुंज लाल,
गजरा गुलाबको, दिखायो कछु गायकै,
कंचुकी कसति हसि एडिन घसति कंज,
कालिका दिखाय चली मुरि मुसकायकै. ४

(**दोहा.**)

सम्बत शशियुग अंकमंहि, फागुन मास हुलास;
वीरोल्लास प्रकाश किय, कबि अजान सविलास. १

अनंत

(समस्यापूर्ति-विविध शृंगार सवैया)

कहीं इक बात बुरो जिनि मानहु, कान्हहि देखि कहा मुसकानी
मैंधौ कवे चित यों इहि औरपैं, वाऊकी सौं तुम और गुमानी,
आपनो सो जिय जानती औरको, तातें अनत यहे जिय जानी,
कहो जू कहो अलि जो कह्यो चाहती, दूधको दूध सो पानीको पानी १
मनमोहन हैं जिन वे सुख दीने, इते चितयौ चित भूलि न जैयें,
और सुनौ सखी मीत मिताइकी, मीत जो वेचै तौ येचे विकैयें,
अनत हसेतें हसें बिच चक्षन, रूसें हसेतें गवारि कहैयें,
मान करौ तो करौ घरी आधलौं, प्यारि वलाय ल्यों सौंह न लैय २

अयोध्याप्रसाद-औध

(ऋतुवर्णन कवित्त)

वाटिका विहगनपैं वारिगा तरंगनपैं,
वायु वेग गगनपैं वसुधा वगार है,
वाकी वेनुताननपैं, वगले विताननपै
येस औध पाननपै, निथिन वजार है,
वृंदावन वेलिनपै, वनिता नवेलिनपै,
व्रजचव केलिनपै, वशीबट मार है,
वारिके कना कनपै, वदलके वाकनपैं,
विज्जुली वलाकनपैं वरपा वहार है १
हरपे हरौऊ व्है अमरपें अनग हेत,
करपे कलापि चोपि चातक चमूपिली,
उमडे घटा है मानी करने छटा है छटा,
फेरत पटा है ठटा शुरकी हटाकिली,
घेरिके अडे है बिन बुदन च्छे है औध,
आनद खडे है देखि दादुर वहेदिली,

कादर वियोगी हारी चादर वलाक फेरी,
बादर वहादुरकों नादिर फते मिली. २

मंजन अथाह नीर वास है विसाल जहा,
झार है अढार भार विंध्याचल पारके;
मेवा अहार काज भले भांत भांतिनके,
करिनीके यूथ मध्य करनो विहारके,
वेतो सुख गये अव रहे मार अंकुशके,
जंजिर जरे है लोह पायमें पसारके,
डारत है शीसपें उठाय गजराज रज,
झूरत है वार वार वै दिन संभारके. ३

सेवती निवार सेत हीरनकी हार जूही,
यूथ औ अनार मोती विद्रुम लसंत भो,
पन्ना पुखराज पत्र चंपक समाज फाल,
मानिक गुलाब नील इंदीवर गंत भो,
माधवी नमूनो गउमेद कल सूनो दूनो,
औध बाटिका बजार पूनो विलसत भो,
यतन जलूस जोर रतन रसाल रंग,
अतन अनंद हेत जौहरी बसंत भो. ४

भूली किधौ ह्यांकी पीर बाढी हे उहांकि झरे,
नेन झरनांकि सुधि आये उर बाकी है,
चंचल चलाकी करे नटकी कलाकी तेसी,
दोर बदराकी औ धुकार धुर वाकी है,
है न कछु बाकी औधि आशरा निशाकी तामें,
आह परे डाकिये झकोर पुर वाकी है;
टेर पपिहाकी करे सेल समताकी डरे,
करे उर झांकी ये पुकार मुरवाकी है. ५

अहमद.

(प्रेम-वियोग-दोहा)

मनमें राखौं मन जरै, कहौं तो मुख जरि जाय,
अहमद बात न बिरहकी, कठिन परी बहु भाय १
अहमद गति अवतारकी, कहत सबै ससार,
बिछुरे मानस फिर मिलैं, यहै जान अवतार २
प्रीतम नही बजारमें, वहै बजार उजार,
प्रीतम मिलै उजारमें, वहै उजार बजार ३
कहा करौं वैकुठ लै, कल्पवृक्षकी छाह,
अहमद ढाक सुहावने, जह प्रीतम गलबांह ४
गमन समय पटुका गह्यो, छाडहु कह्यो सुजान,
प्रानपियारे प्रथमही, पटुका तजौं कि प्रान ५
अहमद या मन सदनमें, हरि आवें कहि बाट,
बिकट जुर जौं लौं निपट, खुलै न कपट कपाट ६
कहि आवत सोई यथा, चुभि जो हित चितमांहि,
अहमद घायल नरनकों, बेकरार कल नाहि ७
अहमद अपने चोरकों, सब कोउ कहै हनेउ,
मो मन हरन जु मौ मिलै, वारफेर जिव देउ ८
प्रेम जुवाके खेलमें, अहमद उल्टी रीत,
जीतेहीको हारिवो, हारेहीकी जीत ९
कहि अहमद कैसें बने, अन भावतको सग,
दीपकके मनमें नहीं, जरि जरि मरे पतग १०
अहमद नग नहि खोलिये, या कलि खोटे हाट,
चुपकि मुटरियां बाधिये, गहियें अपनी बाट. ११
प्रेमपथ दुरिगम विषम, अहमद चले न कोय,
टोढर या मग सो चले, जाको शुद्धि न होय १२
अहमद मारग प्रेमके, भूलि परे जनि पाय,
बिन मारे छांडे नहिं, इनके ओर सुभाय १३

अहमद मारग प्रेमको, सब को पैठे धाय;
जो पोंहचे सो ना फिरे, कुशल रहेकोउ खाय. १४
नेन श्रवन मुख नासिका, अधर सधर कच भीर;
उहां पर्यो मन अहमदा, जैसें सगा बहीर. १५

(सोरठो.)

हाड चाम रग मास, सो तो बिरहा ले गयो,
अहमद रह्यो जु सास, ताहिको सासो पर्यो. १६

आलम.

(कवित्त.)

(शृंगाररस-वियोग वर्णन.)

प्रेम रगमगे जगमगे जागे जामिनीके,
यौवनकी ज्योति जगि जोर उगमत है,
मदनके माते मतवारे ऐसे घूमत है,
घूमत है झुकि झुकि झंपि उघरत है;
कहे कवि आलम निकाई इन नेननकी,
पांखरी पदममें भंवर थिरकत है,
चाहत है उडिवेकों देखत मयक मुख,
जानत है रैनि तातें, ताहिमें रहत है. १

प्यारी तन भूमि तामें, रूप जलसागर है,
यौवन गभीर भौर शोभाकों धरत है,
दीपत तरग नेन वारिजसें डोले तहां,
उरगसी वेनी जिय देखत डरत है;
आलम कहत, मुख कहर गहर राजै,
तामें मन मेरो, यह दौरिकें परत है,
वेसरिको मोती मानो, करहै सिकदरको,
वार वार झूमि झूमि, मनै सौ करत है. २

खरो कइ हुतो खुतो तों खरी ए विकल कीनी,
मन हरी लीनो हरि, अति तनतें गयो,

देखे न अघाइ नेना रोइ करि छाइ रही,
बिरह बढाइ आइ जानो बिखुझे गयो,
साँवरेसे गात कवि आलम सरोज चख,
अचानक आइ अब आँगनमें व्है गयो,
मुरि करि मोरि मोहैं मेरी याही खोरि सखी,
नेकु मुख मोरिक खरोंई जिय ले गयो ३

हसें हसि देत बोले बोल आनि खेले गेह,
तातें पहिचानी कछु पीरी पीरी सी भई,
आलम कहे हो वाकी ढियेकी पुढाई देखो,
फेर्स के दुराई माई प्रीति कान्हकी नई,
आजु अनमनी हुती असुवा भरत ठाढी,
पीछें ते अलीन आनि भुज भरि हे रही,
मेरी कह्यो असुवा कहारी केसे असुवा हें,
पलकें पसारिही पूतरी न पी गई ४

जानत हे जीउ जसें अनदेखे दुख होत,
जमुनातें आवतही जात देखे अनत,
भोंनन सुहात हे उसासन बिहात दिन,
रतिपति अगनि दहत तन तबतें,
आलम कहे हो प्यारे काहूकी तो पीरो बूझे,
हरिहूतें बदन दिखेबो कीजे अनतें,
ऊंचे चितवत नाही नीचें मुसिक्यात जात,
एती निठुराइ कान्ह कोने बदी कबतें ५

ओरे ठोर कान देती मनही नेराई लेती,
मुरलीकी धुनि सुनि चितहि न आनती,
कान्ह चित येते होतें, चितें मुसिक्यानी कल,
भूली तब रुखी व्हेके त्योंही त्योरी तानती,
आलम कहे हो कछू एसेई बिसासी हेरी,
जानि बस भई बात काहूकी न मानती,

मोसों मुख मोरि जेहं ओरनसों जोरि रेहं,
काहेको हों जोरों नेंनां जों हों एसों जानती. ६

केधों मोर शोर तजि गयेरी अनंत भजि,
केधों उन दादुरन बोलत हेए दई;
केधों पिक चातक महीप काहु मारि कारे,
केधों वक पांति उत अंत गति व्हे गई;
आलम कहति आली अजहुं न आये पिय,
केधों उतरात विपरीत विधिने ढई,
मदन महीपकी दुहाइ फिरिवेते रही,
केधों मेघ जुझे केधों विजुरी सती भई. ७

चंदही चकोर देखे ढिन गने रेन लिखे,
चंद विन एक छिन लागत अंध्यारी है,
कारो कारो कान्ह कहे लागत गमार जैसो,
मोहि वाकी श्यामताई लागत उज्यारी है;
आलम कहेरी आली कुलही चढत फूल,
कंटक डरात नाहि एसी प्रीति प्यारी है;
मनकी लगन तिहा रूपको विचार कैसो,
रिझिवेको और पैहे बूझ कछु न्यारी है. ८

इंदु-बालमुकुंद.

(भामिनी भोजन तारतम्य.)

जे ते पकवान है सुजाननके जानवेको,
ते ते तुं निदान कर करिवे कुशल है;
तो ते मधुराई चिकनाई औ सुवासताई,
पाई हे पियूष प्रेम मालती सवल है;
इंदु सुकुमार है निहोरके निहारहारी,
बार बार फूंक देत होत न अमल है;
तेरे मुख सरस सरोजकी पराग भरी,
पीवत अनिल यातें मधुमत अनल है. १

सुखद सुदार घरी पापरसु राख तहा,
चायर सजुत भेस व्यंजन सजाईमें;
चद्रफला फलित औ ललित रसाल मन,
मोदक मनोहरकी जुगत समेईमें,
विविध विधान पाक रजत जलेब जाकी,
मधुर सलोनी जेम जाहर न कोईमें,
शीतल न होनें दीजे लीजे रुचि होय ज्यों ज्यों,
जोई जोई चाहो सोई सोई हे रसोईमें २
शोभावान सरस सरोवर सुवास पूर,
सुखको समूर सदा शोभे शोभ भारीमें,
मृदु फल कमल कुमोद कुल काम भरे,
फूले अभिराम चद्र और चित्त चारीमें,
तामें इदु कज दल मांझ सांझ होते धंक,
हेके जडरूप लसे लसन निहारीमें,
शुक्र हे के मुक्त हे के उक्त यी समाजे राजे,
कधु कमनीय इदु नीलमनि थारीमें ३

उद्धव–ओघव

(गूढार्थ-दोहा)

में जान्यो अधशेर हो, तुमतो पूरे शेर,
हीमसुता पतिवादना, तामें फार न फेर १

(कवित्त)

सोहे सीस सारी रग दोयलीकी जाकूं चारु,
खेलत हे कान्ह दोय चार लीसी देखिये,
किन्हे आठ दूने औ छ दूने लसे अंगनमें,
तेरहके दूने लहि साहित विशेखिये,
जातकी तो गुजरी हे चालीस औ चाली शली,
दूनेके छयाली सली ऐसी अवरेखिये,

दूनेके छयाली सली एनने उमेनवारि,
पांच वीश दूमें एक ताको करि लेखिये. १

उदयभाण.

(विविध विषय)

दिव्य गतिहूतें हीरा कीरनिके चढ्यो कर,
मढ्यो गुजमाल तोपें वढत मयूख है,
भाइ भई ताकी द्युति भानके समान जान,
जिय ऐसें जान्यो याके नयन उलूक है;
काल पाय वेस्याके करैयातें जु आय मिल्यो,
राख्यो तव किंमतमें वरन कछूक है,
अहो नाथ जौहरीहू जानत करी न जान,
तव तो करे जो फव्यो भयो शत टूक है. १

चशम चढाय चख भूल मत भाविहुतें,
अवसर चूके यहा फेर नहि आवेंगे,
वढेवो घटेवो मेरो पारख करैया हात,
तोपें ना पिछाने तव कहां हम जावेंगे,
भान कवि जौहरीसों हीरा कहे वार वार,
बिरद विचार वात आनपें न भावेंगे;
तेरे सो मिलेगो कौऊ करेगो खरीद तव,
कनुका भयेहु नेक सत्य मोल पावेंगे. २

मात है कुशल्या तात दशरथ विख्यात विश्व,
भरतसो भ्रात भानुवंश मोदभर है;
भान कवि शासन कवूले जाके तीन भौन,
भक्तकाज भूले फेर फूले बेफिकर है,
पथ्थरपें प्रीत आई मर्कटादितें मिलाई,
शत्रु भ्रातके सहाई जाहिको जिकर है;

देत रीझ डर है न वैभव बिगर है न,
कान कौउ कर है न सोवत असर है ३

(देहपिंजर-सवैया)

ज्यों ज्यों निचिंत रह्यो निशि घोस तु, त्यों त्यों मिल्यो नहि वैरि तिहारो,
मान कहे सुन रोर व्यथा, अब पस्त सन्हारके वेग पधारो,
मान सियानके पान परानतें, आन न प्रान बचावनवारो,
चाहत हो जियमो चितमे, तो उमेद है पिंजर तोहि निहारो १

ऊमरदान.

(दारु दोषदर्शन-कवित्त)

रोगको भवन त्यौ कुजोग तोप मन जानों,
दयाको दमन है गवन गरवाईको,
बिधाको विनाशकारी तत्ष्याको त्रासकारी,
हिंमतको हासकारी मेरु भरवाईको,
उमर बिचार शील पाप रिखि थापनको,
विषय विष व्यापनकों पौन पुरवाईको,
भगतनिको भाइ औ कमाइ निज कामनिको,
शत्रु सुखदाइ सुरा हेतु हरवाइको १
पीथलको[1] खेत पार्यो महमदको[2] मान मार्यो,
बुद्द[3] सिंहको बिगार्यो नीके निरधारों मैं,
खून बिन जैत[4] खोयो डूंगरसिंहको[5] डबोयो,
ओरको[6] मरन जोयो हिये मांझ हारों मैं,
तखतको[7] किन्हो तंग सज्जनको[8] मृत्यु सग,

१ पृथिराज चोहाण. २ अमदाबादको सुल्तान महमद बेगडो ३ बुद्धसिंह हाडो बुंदीपति ४ जैतसिंहजी जोधपुरका उमराव आउवा ठाकुर. ५ डूंगरसिंहजी जोधपुरका उमराव बीदावत, पटोदका ठाकुर. ६ जोरावरसिंहजी जोधपुरका उमराव चांपावत, खाटूका ठाकुर संवत् १९३० का माघ शुदि ११ के रोज दगासें मारे गये कहते है ७ जोधपुरका महाराजा तख्तसिंहजी ८ उदेपुरका महाराणा सज्जनसिंहजी

कोटापतिको[९] अपंग ऊमर उचारोमें;
तोप पोश ओश मारु काहे अपसोस कोस,
हाय दारु तेरे दोप कहालो पोकारो मे.

एदिल-येदिल.

(सज्जन सनेह-पतिभक्ति.)

आगिनी कनक जरे चंदन खॉडितआरे,
शिला घसे शीतलता वासना घटात है;
क्षीर मथे माखन वहुरि आवे एदिल व्हे,
मुकर मलीन माजे मूरति दिखात है,
तोरे है सरस अरु मोरेहू सरस ऊख,
छीले छाटे काटे ओटे अधिक मिठात है,
रचिवेकी कहा कहों विरचे सहस गुनी,
सज्जन सनेह कहू वातें न सिहात है. १

नरक जो देहि तो न निदरी विमुख ह्रजें,
स्वरग जो देहि तो न हरखि सराहियें;
रद्द करि डारे तो न कीजियें कलेश जिय,
करे जो कवूल तो न फूलिके उमहियें,
जिहि अंग रंग होई तिहि अंग रंगह्रजें,
एदिल सनेही नेही नीकेकै निवाहियें;
चित्त क्यों न चाह मरों आपु चाह चूल्हे परो,
प्रीतम जो चाहे चाह सोइ चाह चाहियें. २

(सवैया.)

आंखिन आंखि लखी जवतें, अखियांनलों आंखि रहे अनुरागें;
एदिल वा अखियानके ध्यानमें,आंखिनिकों निशि जातहें जागें.

---

९ कोटापति भगवतसिंहजी.

आंखिये आंखि हैं आखिनकी, आखियानको आंखि न सूजत आगे,
आंखिनके बस आंखि परी छिन,आंखि लगो नहि आखिके लागे १

(निर्गुणभक्ति-कवित्त)

कंदरने बसे कहा कंदमूल भखे कहा,
एतो आप कसे कहा, साधत ज्यो पोंन हे,
मुडन कराय कहा, जटन बढाय कहा,
तीरथही नाहे कहा, प्रितिहीई जो न हे,
तेरे दोंको उही माझि, तेरोही सरूप लिये,
एदिल बिचारि देख, भीतरि ज्यों भोंन हे,
काया कोट मांझि पेठि त्रिकुटी कपाट वेठि,
नेनके झरोखे बीच झाखता सो कोन हे १

झांखता सो नेन कोन, सुनता श्रवन कोन,
नासिका निवास कोन, भोग विषे कोन हे,
तनमे रहे हे कोन, दु:ख सुख सहे कोन,
ताहिको सरूप कोन, वेन बिपे कोन हे,
ऊंच कोन नीच कोन, पाप पुन्य विधि कोन,
चेतन अचेत कोन, सोवे जगे कोन हे,
निपटमें समे कोन, भ्रम भूल्या भ्रमे कोन,
रोम रोम रमे कोन आपहीमें कोन हे २
कर्त्ताको रूप कौन इडको स्वरूप कौन,
इडमांहि बसे कौन इंड पार कौन है,
नाद बूंद जोग कौन, जीव ईश भोग कौन,
भूमिको अवतार कौन निराकार कौन है,
पाप पुन्य करे कौन अवागमन पडे कौन
पंडित पुरान कौन, वेदवाद कौन है,
पचमें प्रपच कौन ओमति ओंकार कौन,
मुक्तिको द्वार कौन स्वर्ग नरक कौन है ३

पिंडसो ब्रह्मांड कौने, जरा मरण काळ कौन,
वाचा औ अवाचा कौन, चिदाभास कौन है;
गुरु शिष्यको बोध कौन, सद्गुरुको देह कौन,
पार उतारन कौन कहो ए ते कौन है;
कर्त्ता हे अक्षर ब्रह्म, तातें भया सुवर्ण इंड,
सुरति वनि इंडमांहि, इंड पार आनंद हे,
नाद बुंद जोग स्वप्न, जीव ईश भोग स्वप्न,
भूमिको अवतार स्वप्न, निराकार स्वप्न हे. ४

पाप पुण्य करे स्वप्न, आवागमन पडे स्वप्न,
पंडित पुराण स्वप्न, वेदवाद स्वप्न हे;
पंचमें प्रपंच स्वप्न, ओमती ओंकार स्वप्न,
मुक्तिको द्वार स्वप्न, स्वर्ग नरक स्वप्न हे;
पिंडसो ब्रह्मांड स्वप्न, जरा मरण काळ स्वप्न,
वाचा अवाचा स्वप्न, चिदाभास स्वप्न हे;
गुरु शिष्यको बोध स्वप्न, सद्गुरुको देशपार,
पार उतारन स्वप्न, मिथ्या जग स्वप्न हे; ५

ओंकार

(हिंमतकी किंमत—सवैया.)

निशि वासर प्रेमके पंथ चले, हृदये हरिनाम विसारे नहीं,
घटि वृद्धिय देखके एक घरी, धिरता दिलपें कछु धारे नहीं,
विधिको बिसवास ओंकार कहे, अपनो बलबुद्धि बिसारे नहीं,
वहि मानस जातकि किमत हे, जु समेंपें हिंमत हारे नहीं. १

---

* कितनेक कहते है कि यह कवित्त गोरख कृत है.

अंग

(कृष्णगुण-काव्यलच्छन-कवित्त)

सुवरन अरथमैं मनोहर अलंकार,
सबद मधुर ताकी धुनि मनभाई है,
सहज सुभाव नीकी पदवी धरनि जाकी,
सरल सुगतिहीतें सरस सोहाई है,
मानत निगम जे बखानत बिबुध जन,
तेरे पद बंदनकी बिदित निकाई है,
जैसी छबि चढै चित्त चरनारबिंदनकी,
तैसि ये कबिंदनकी बढै कबिताई है १

जावक प्रमुख तेरे पदके सिंगार ध्याये,
सरस सिंगारमई बानी उमडति है,
भावना कियेतें सुचरन अलकारनकी,
नीकी अलकारनकी उपमा कढति है,
उठी तरबानकी उजाली नख ईंदुहुकी,
अंब जो कबिंदनके चित्तमें चढति है,
जागत प्रताप चरननको प्रताप जग,
कीरति चरनिबेकी कीरति बढति है २

शांत नख रुचिमें सिंगार है सिंगारनमें,
घुघुरू सुखन मृदु हास रस बरसै,
करुना भरें हैं प्रभु अदभुत एक जिनै,
बैरी बीर निरासि भयानकसे तरसैं,
जामे जानि परत बिभत्सको अभाव जाको,
रुद्रचख रसिक सुभावनितें परसैं,
अब तेरे चरनारबिंदन कबिंदनको,
शुद्ध नवो रसके उदाहरन दरसैं ३

ज्ञानतें न गेय उपमेय उपमानितें न,
ध्यानतें न धेय अप्रमेय अनुमाने हैं,

ज्ञाताको कहावै को प्रमाता ताहि पावै कौन,
ध्याता ताहि ध्यावे जें विधाताऊ न जाने है;
अव्यय अखड कोटि कोटि ब्रह्मंड जामे,
मंडल मयूखके पियूख सरसाने है,
ब्रह्मानंदमयतें अनामय अभय अंब,
तेरे पद मेरे अवलंब ठहराने है. ४

कहान-कान. (पहिला.)

(सदुपदेश-कुंडलिया.)

म्होवत कीजे मर्दसु, कबहू आवत काम,
शिर साटे शिर देत है, दुखियनको विश्राम,
दुखियनको विश्राम, दु:ख अपने तन झीले,
मटे न जब लग माहि, तहां अपनो कर हीले.
कथे सु कविया कान, सत्यसें साची सोवत,
कबहू आवत काम, मर्दसें साची म्होवत. १

मेरी झपटत मर्दकुं, मर्द रह्या गम खाय,
पानो पड्यो कुनारसें, राव कहां ले जाय;
राव कहां ले जाय, मदत तो एसी मंडी,
कहां बदलानें जाय, नही कुंभारकी हंडी.
कथे सु कविया कान, मेरी मनकी हे झेरी.
मतीहीन है नार, मर्दकुं झपटत मेरी. २

मेरी आशक मर्दकुं, बांधत मलक मजूर,
जागेके मुख चूरमा, (ओर) ऊंघतके मुख धूर;
ऊंघतके मुख धूर, डालके चली बजारा,
ओर शूरमें रंग, पियकुं मारे पैंजारा.
कथे सु कवियां कान, अकलकी हए अनेरी,
बांधा मलक मजूर, मर्दपर आशक मेरी. ३

मिशरी घेरे झूंठकी, ऐसे होय हजार,

जहर पिवावे साचका, सो विरला ससार,
सो विरला ससार, पटतर उनको ऐसा,
मिशरी जहर समान, जहर है मिशरी जैसा
कथे सु कवियां कान, भूल मत जैयो भोरे, ४
जिनके शिर पेंजार, झूठकी मिशरी घेरे
खरको तुरग न नीपजे, सजे अतिसें साज,
फूवड होय न पद्मिनी, कगवा बने न वाज,
कगवा बने न बाज, काच कंचन नहि होवे,
मर्कट गलेमें हार, जाय जगलमें खोवे
कथे सु कवियां कान, स्वभाव न पलटे नरको,
सजे अतिसें साज, तुरग नां निपजे खरको ५
मींडो भाद्रू मासको, वडकु कहे जरूर,
मो तन इत मावे नहीं, जगा करो तुम दूर,
जगा करो तुम दूर, वडे जब अरजी कीनी,
वरसाऋतु द्वै माम, आश वसवेकु दीनी
कथे सु कविया कान, मूल कछु नहि हैं ऊडो,
आया आसो मास, मूख दुख सूक्यो मींडो ६
वचन सुनेरी जाल्री, वेहद गडी सुनार,
ठेर ठेर चित्त राखके, मत पानीमें डार,
मत पानीमें डार, गइ सो हाथ न आवै,
पडी खल्कके पास, आपको मान गुमावै
कथे सु कविया कान, अवे नहि लाज हुनेरी,
मत पानीमें डार, जाल्री वचन सुनेरी ७
रंडी मित्र न कीजिये, अकल भ्रष्ट हो जाय,
भक्ति गुमावे इष्टकी, जीवत नरकु खाय
जीवत नरकु खाय, जहा ध्यग होय असंगा,
वां तक नरका नेह, पलगपर करे प्रसंगा
कथे सु कवियां कान, रहे संतोसें मंडी,
अकल भ्रष्ट हो जाय, मित्र नहि करना रंडी ८

कहान-कान्ह (दुसरा.)

(गुरुस्तुति-सवैया.)

योग जपादिक को करिवो अरु, भोंवरी तीरथके भरवेको,
सन्तत संत समागमको, अरु ब्रह्म विचार विचार करेको;
कान्ह भने गुने औ मन शासन, मास समेतहु दान कियेको;
सो गुरु अंघ्रि सरोरूह सेवत, हे फल ये जग देह धरेको. १

(ऋतुवर्णन-कवित्त.)

सीतल सुगंध मन्द मारुत स्वनित रुरे,
पूरे धूरि धूसरित रोदसी विहारेरी;
कुंजन पलाश फूले डारन अगार पुंज,
गुंज मधुपाली मन मुदित प्रसारेरी;
कान्ह फूकि कवेलियान, फूकि फूकि वरवस,
विरहा अनल हिय प्रवल प्रजारेरी;
हारे करि यतन अतन सो सहायक लै,
कन्त विन सजनी वसन्त तन जारेरी. १

मंद मुसकयानि चंद्र ज्योतिमें उदोति होति,
कुंदमें दिखावे द्युति, दशन रसालकी;
खंजन लखावे कान्ह, नैन मन रंजनसें,
पानिलौ सुहावे कला, कंजन बिसालसी;
भौरनकी गुंजपुंज, मंजुल मंजीरनसी,
हंसनि चलावे गति, श्यामके सुचालकी,
आयोरी शरद काल, दरद बढावनको,
जरद करै है हमै शोभा धरि लालकी.

कनीलाल.

(चित्त चंचलता—सवैया.)

कबहुं मन तेज तुरंग चढे, कबहुं मन सोचत है धनकुं,
कबहुं परनारपै चित्त चले, कबहुं तपसी होता वनकुं;
कबहुं संतानको सोच करै, कबहुं सुख चाहत है तनकुं,
यों कनिलाल विचार करे, कैसे समझावे कपटी मनकुं. १

कनैयालाल

(दामप्रशंसा-कवित्त)

पैसेके काज आज देखो या जमाने बीच,
पापी बन लोग धर्म कर्महु गमावत हैं,
पैसाके ताही गवाही जा अदालतमे,
शीशा धरे हाथ गंगा झुंठीही उठावत है,
पैसेके काज आस औलाद सब त्याग बेठ,
बीच इजलास कसम बेटाकी खावत है,
पैसेके ताई रंडी नाच करै महफलमें,
कैसे भले आदमी सो भडुआ कहावत है १

दुनियामें आमें जोनि मानसकी यामे भले,
आदमी कहावें घात अपनी बनाते हैं,
भले आदमीकी तरह चलते झुठी न कसम-
खाते समझे न परम (मगर) बचन ना गमाते है,
नेकी करनवारे कहें मुहसें न विचारे देय,
हारेनको सहारे सगको कस्म खाते है,
भलोंकी भलाइ बुरोंकी बुराइ कन्हैया-
लाल कहे नई पुस्तिक हम बनाते है २

कबीर

(दोहा-साखी)

[संतसमागम-ईश्वरमहिमा]

कबीर वाणी पाणी भरे, चार बेद भये मजूर,
आधी साखी कबीरकी, वाम साहेब हजूर १

तीरथमें फल एक हे, सत मिले फल चार,
सदगुरु मिले अनेक फल, कहे कबीर विचार २

साई मेरा बानिया, करे बनज बेपार,
बिन दांडी बिन तालरी, तोले सब ससार ३

साध मिले साहिब मिले, अंतर रही न रेख;
मनसा-वाचा-कर्मणा, साधू साहिब एक. ४

गुरु गोविंद दोनुं खडे, किनकुं लागुं पाय;
बलिहारी गुरुकी जिने, गोविंद दियो बताय. ५

पशुकी तो पनियां भई, नरका कछू न होय;
जो उत्तम करणी करे, तो नारायण होय. ६

ऐसा कोई ना मिला, घटमें अलख लखाय,
बिन बत्ती बिन तेल ज्युं, जलती ज्योत दिखाय. ७

ब्राह्मन गुरु यह जगतके, संतनके गुरु नांहि,
उलट पुलट कर डूबया, चार वेदके मांहि. ८

सत्गुरु हमसों रीझकर, एक कह्या परसंग,
वरस्या वादल प्रेमका, भीज गया सब अंग. ९

चोपड मांडी चोवटे, सारी काया शरीर;
सतगुरु दाव बताविया, खेले दास कबीर. १०

बूडेथे पन ऊगरे, गुरुकी लहिर चमंक,
भर्या देख्या जाजरा, ऊतर पडे फरंक. ११

रामनामके पटंतरे, देवेकुं कछु नांहि,
क्या ले गुरु संतोषिये, सोच रही मनमांहि. १२

मन दिया तन सब दिया, मनकी गहिल शरीर;
अब देवकुं क्या रह्या, युं कहे दास कबीर. १३

सत्गरु साचा सूरमा, शब्दज बाहिर एक;
लागतही भ्रम मिट गया, पड्या कलेजे छेक. १४

हंस न बोले उनमने, चंचल महिमा मार,
कबिरा भीतर भेदिया, सतगुरुके हथियार. १५

गुंगा हूआ के बाउरा, बहिरा हूआ के कान,
पांडसें पिगला भया, सत्गुरु मार्या बाण. १६

दारकमें पावक बसे, धनका जल क्युं जोय,
हरिसंगी उर गुरुमुखी, काल गरांसो खोय. १७

सत्गुरु मेरा सूरमा, शोध्या सकल शरीर,
बाण द्वादश फूटिया, क्युं जीवे दास कबीर १८
सत्गरु साचा सूरमा, नखशीख मार्या पूर,
बाहिर घा दीसे नहिं, भीतर चूरमचूर १९

(शब्दब्रह्म-नामविचार)

शब्दे मार्या मर गया, शब्दे छोडा राज,
जे नर शब्द पिछानिया, ताका सरिया काज २०
कबीर उन देश बसत है, जात मरण कुल नाय,
शब्द मिळावो हो रह्यो, देह मिलावो नाय २१
तनका वेरी को नहिं, जो मन शीतल होय,
तु आपहिकों डार दे, दया करे सब कोय २२
मन मथुरा दिल द्वारका, काशी काया जान,
दशमे द्वारे देहरा, तामें जोत पिछान २३
नाम लिया तेने सब लिया, सकल वेदका भेद,
विना नाम नरके पडे, पढतें चारों वेद २४
नाम विसारे देहकु, जीय वशा सब जाय,
जबहीं छाडे नामकु, तबही लागे आय २५

(सत्य साधुत्व उपदेश)

शूराके मैदानमें, नहि कायरका काम,
आठ प्रहरका जुझना, विन खांडे सग्राम २६
शूरा तेज घटे नहिं, जुध रण जुडे गम्हाड,
सच वचन पल्टे नहिं, उल्ट जाय ब्रह्मांड २७
शुरा सती तो स्हेल है, घडी एक घमसाण,
साधू जले न जल बुजे, धुकता रहे मसाण २८
हद हद सब कोई चले, बेहद चले न कोय,
बेहदके चवटे मही, रह्या कबीरा सोय. २९
पारस साढे तीन है, दीपक भृंगी साध,
अरधो पारस पारखी, कहत कबीर बिसाध ३०

फीकर सबकों खा गई, फीकर सबका पीर;
फीकरकी फाकी करे, उसका नाम फकीर. ३१
निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोय,
विन साबू विन पानीसें, मेल हमारा धोय. ३२
ज्यों तिरिया पीहर बसे, सुरति रहे पियमांहि,
एसे जन जगमें रहे, हरिको भूले नाहि. ३३
चारों वेद पढया करे, हरिसो नांहि हेत,
माल कबीरा ले गया, पंडित ढूढे खेत. ३४
पढी गुनी पाठक भये, समजाया संसार,
आंपहि तो समज्या नहि, वृथा गया अवतार. ३५
पढी गुनी ब्राह्मण भये, कीरत भइ संसार,
वस्तुकी तो समज नहि, ज्युं खर चंदन भार. ३६
जप तप तीरथ सब करे, घडी न छंडे ध्यान;
कहे कबिर भक्ति विना, कबु न होय कल्यान. ३७
साध सती औ सूरमा, ज्ञानी औ गजदंत,
एते निकसि न बहुरें, जो जुग जाहि अनत. ३८
साधु भया तो क्या भया, बोले नहिं विचार,
हने पराइ आतमा, जीभ बाधि तलवार. ३९
मधुर बचन हे औषधी, कटुक बचन हे तीर;
श्रवनद्वार व्है संचरे, साले सकल शरीर ४०
कबीर तेही पीर हे, जे जाने पर पीर;
जे पर पीर न जानही, ते काफर बेपीर. ४१

(मन-स्वरूप.)

मन मेरा पंखी भया, जहां तहां उड जाय,
जहां जेसी संगत करे, तहां तैसा फल खाय. ४२
मनको कह्यो न कीजिये, जहां तहां ले जाय;
मनकूं ऐसा मारिये, टूक टूक हो जाय. ४३
मन गया तो जान दे, तूं मत जाय शरीर,
विना चढाई कामठी, क्यों लगैगा तीर ४४

माया मुई न मन मुवा, मर मर गये शरीर,
आशा तृष्णा ना मरी, कह गये दास कबीर ४५
काया देवल मन धजा, लहरी विषय फिराय,
मनके चलते जो चले, ताको सरवस जाय ४६

(प्रस्ताविक प्रबोध)

कबीर जख न जखिये, तेरो कर्या न होय,
करम करिम जो कर रहे, मेट शके नहि कोय ४७
जाकी जितनी बुद्धि हे, इतनो देत वताय,
वाको बुरो न मानिये, ओर कहांसें लाय ४८
नारी निंदा मत करो, नारी नरकी खान,
नारीसें उत्पन भये, ध्रु प्रल्हाद समान ४९
सती साधक ओर सूपडा, सत्ते सत भाखत,
कास कूसकुं काढके, कणे कण राखत ५०
पत्थर भीतर अगनि है, चाटे पीसे कोइ,
लाख यतन करि काढती, आगि न परगट होइ ५१
आप छके नयना छके, छके अधर मुसकाय,
छकी दृष्टि जापर परै, रोम रोम छकि जाय ५२
कबीर गर्व न कीजिये, रंक न हसिये कोय,
तेरी नाव समुद्रमें, को जाने क्या होय ५३
कहेते सो करते नहीं, मूके यडे लवाड,
काला मूं ले जायगे, साहिबके दरबार ५४
तु जाणे हर दूर हे, पण हर हिरदामाहि,
भीतर ताटी कपटकी, तासें सुजत नाहि ५५
नारी पूछत सूमकुं, (तुम) कहांसे वदन मलीन,
कहा गाठसें गिर पडो, कहा कीसीकुं दीन ५६
नहिं गांठसें गिर पडो, नहिं कीसीकु दीन,
देता देख्यो ओरकुं, व्हासे वदन मलीन ५७

(कवित्त)

रे जिया जो चाहे तो, जीवनकी रच्छा कर,
धनीहूंको चाहे तो, धरमजूंको कहरे,

जसहूको चाहे तो तुं दान कछु देता रहे,
नीकीको जो चाहे तो तुं, वदी मत व्हरे,
जोबनको चाहे तो तुं काहूसों न जोर कर;
गरीबीकों चाहे तो तुं सबनकी सहरे;
कहत कबीर बंदे काहूसों न रोष कर,
साहेबकों चाहे तो तुं सांचहीमें रहरे. १

(झूलणा—कर्मकी रेख.)

भक्त भगवंतके शेष महिमा करे, भीखके शीशमें ध्यान धारे,
कमलको छेदके ब्रह्मको भेदके, कामको जीतके क्रोध मारे;
मुक्तिकी पीठपें कर्म असवार व्हे, गगन चढ साधके काल टारे,
कहत कबीरपें नाहिं कोई लख्यो, कर्मकी रेखमें मेख मारे. १

कमनीय.

(वसंत—कवित्त.)

माघ शुदि पंचमीके घोस जे अबाल खेलै,
लाल भये धारिके गुलाल बरवेशको;
कहै कमनीय कवि जोहिकै युगत ऐसी,
मणिदेव विमल बिलोकि बुधिदेशको;
आगिमें अधूम भुंजे तिनको ते हाय भरी,
कीबे फिरियाद माहा पायकै ललेशको,
प्रबल पलाश गनै अमित असंग जानि,
खोजी रहे बिरहीं बसंत बसुधेशको. १

कमलापति.

(वर्षा-कवित्त.)

घेरि घेरि घहरि घहरि घन आये घोर,
तापै महा मारुत झकोरत झरपसो,
सुनि सुनि कूकनि मयूरनकी बीर मैतो,
राख्यो निज प्राण यमराजहि अरपसो;

भीत्त भरी भौनतें कठीन कमलापतिमें,
तउ मेघे डरि हियो तड़िता सरपसो,
गावन मलारको सुहावन क्यौ न भयो,
भावन विनारी मोहिं सावन सरपसों १

कमलाकान्त.

(होरीवर्णन-सवैया)

होरि अहीरको साँवरो ढेठ छबी यहि मारग व्है निकसोरी,
सोरि गयो यहि मारग व्है करि झांझ पखावजकी घनघोरी;
घोरि अबीर गुलाल गुलाबमें बाँह गहे औ किये बरजोरी,
जोरि निहारत वारत प्राण सुढारत रंग पुकारत होरी १

(दोहा)

जिल्लनपति गोरक्षपुर, जानत सकल जहान,
बसत रापती तट निकट, कुँवर मती सुखखान १
शरद शुक्ल तिथि पंचमी, सुऋतु शरद बुधवार,
अष्टादश शत छानवे, भयो ग्रथ सुखसार २

कमाल (पहिला.)

(धर्मकर्मविचार-झूलणा)

जिकर कर जिकर कर फिकरकु दूर कर, बैठ चोगान बिच बांध साटी,
अल्लाने ख्लक कुल जोकि पैदा किया, अत हो जायगी खाख माटी,
मीर उमराव घडि चारके पहरमें, ऊठ कर चले दरबार हाथी,
कहत कम्माल कबीरका बाल्का, करम अरु धरम दो सग साथी १
रामके नामसों काम पूरन भयो, ल्छमन नामतें लब्धि पायो,
कृष्णके नामसें बारिसें पार भो, बिष्णुके नाम विश्राम आयो,
आइ जग बीच भगवतकी भक्ति कर, और सब छाडि जजार छायो,
कहत कम्माल कबीरका बाल्का, निरखि नरसिंह प्रह्लाद गायो २

ग्यान कर ग्यान कर सुरतका दंड कर, खेल चोगान मेदान जाई,
जगतकी भरमना छोडदे बालके, आ जा भेख भगवान मांही;
भेख भगवानकी शेष मेला करे, शेषके शीष पर ग्यान धारी,
कहे कम्माल कबीरका बालका, करमकी रेखपर मेख मारी. ३

(दोहा.)

भावंतीकी लात भलि, अनभावतको नेह,
कौने काम कमालिया, फागुन बरस्यो मेह. १
कौडीसे हीरा बने, हीरामेंसे लाल;
आधा भगत कबीर रु, पूरा भगत कमाल. २

कमाल (दुसरा.)

(बीरबलविरह-दोहा.)

शोभा सबे दरबारकी, जहां राजत बलबीर;
गोकुलमेंसे कान्ह गये, पाछे रहे अहीर. १
इहां हकीम बहुत हे, बक्षी मीर बजीर.
काम पड्या किरतारको, तहां गया बलबीर. २
मोतीको पानी गयो, रह्ग्यो माल कंगाल,
बीरबल सो तो चल गया, रही खालकी खाल. ३

(वसंतवर्णन-कवित्त.)

आयो है वसंत कंत वास कियो अंत लाग्यो,
मैनशर तंत सुधिनेकी नहीं अंगकी;
गावत धमारतै अधिक उपचारै आई,
कोकिल पुकारै मनो नैनभर गंजकी;
होलीके जरत धीर कैस्यो न धरत बनै,
ताहीमें परत है व्यथा मनोसंगकी;
और नहिं चार सब थाकीकै कमाल बाल,
लीन तेहि कालगति पंजर पतंगकी. १

करण

(ग्रीष्म-पावस-कवित्त)

चढ कर झारन झकोरत सरोप पौन,
तोरत तमाल गण मन्द दिन भारोसो,
धर्मके धरणि गिरि तमकै प्रताप जागै,
देखत मजेज रेज जगत निहारोसो,
तरु क्षीण छाया सर सखत समुद्र वन,
करण विचारी देखो आतप अगारोसो,
छावत गगन धूर धावत धधात आवै,
चाप चढो ग्रीष्म मयव मतवारोसो १

कंट क्ति होत गात विपिन समाज देखो,
हरी हरी भूमि हेरि हियो लरजतु है,
निपट चवाई भाई बंधु जे बसत गाउ,
दाउ परै जानिकै न कोऊ बरजतु है,
एतेपै करण ध्वनि परसत मयूरनकी,
चातक पुकारि तेह ताप सरजतु है,
अरजो न मानी तू नगरजो चलति मेर,
येरे धन वैरी अब काहे गरजतु है २

करणसिंहजी.

(शृंगार-कवित्त)

स्यामरी सलोनी गजगौनी मृगछोनी नैन,
कोकिल कल वेनी यौं रिझोनी रास राचेकी,
ज्या दिनसें उद्धव में न कही बात माधवकी,
ता दिनते सुधो मोपें सुनतीं न सांचेकी,
कहे करनेश वेश थोरीपें न मोरी लेश,
गजवी गुजारों वेश ता समे तमासेकी,
करो जो करार सो सुनिये मुरार मेरी,
जो में सुनार तो सुनार लाउं सांचेकी १

करसनदास.

(भाविप्रावल्य और अफीम-कुंडलिया.)

तूटे तूटनहार तरु, वायुहि दीजे दोष;
त्यों अब हरके धनुषको, हमसों कीजत रोष.
हमसों कीजत रोष, काल गति जानि न जाई,
होनहार हो रहे, मिटै मेटी न मिटाई.
कहते करसनदास, मोह मद सबसें छूटे,
होय तिनूका वज्र, वज्र तिनुकांपे तूटे. १

साचो जैर अफीम हे, खरच रुपैयो खाय;
सूंघेसुं कडवो लगे, खाधे अंग सुकाय.
खाधे अंग सुकाय, मित्रसें बांधे दावो,
घरमें संपत घटे, मांगतो फिरे जु मावो.
कहते करसनदास, अफिमसें कबू न राचो,
अवगुन करे अपार, जैर अफीम है साचो. २

कल्याण.

(विरागविचार-कुंडलिया.)

पाजी वाजी झूठ तज, लोलप लोल स्वभाव;
हिंदुपति सो मर गये, नाना माधवराव.
नाना माधवराव, मुवे जयसिह सवाई,
मिरजां मुनि व नवाव, मौत तिनकूं वी आई.
कहत दास कल्यान, भयो कायमें राजी;
भज भज श्रीभगवान्, झूठ तज पाजी वाजी. १

(सागरान्योक्ति-कवित्त.)

जीवन अपार जाकी जातको न आवे थाह,
किये कोश भांति भांति रतनोंकी ढेरी है;
संपतिके सागर जगतमें कल्यान कहे,
औरनकों दिजीये वडाई सव तेरी है;

अग अग पूरन तरंगनतै छाय रह्यो,
सोहे चद तात एक बात घट घेरी है,
घाटके चटाउ प्यासे पूछे तीर कूप कहा,
अहो क्षारसागर बडाई धिक तेरी है ७

(सुकविमहिमा-छप्पय)

दशरथ नलि हरिचंद, युधिष्टिर धर्म सुहाये,
चक्रवर्ति सतवृत्त, कविनके कहे कहाये,
भूप विक्रमाजीत, भोज पृथुराज प्रवीने,
इद्रजीत शिवराज, पाय कवि पूजन कीने,
जिहि करनी करी नरेंद रन, कही कविंद्रनकी कही,
कन्यानदेव कविराज बिन, यशदाता दूजा नहीं ८

कविन्द्र.

(कलिस्वरूप-कवित्त)

सुरतिमें सूरति नहायबेमें नेम रह्यो,
नेह रह्यो तियमें रुआब रह्यो रुकामें,
शद्रमें सुचाल औ कुचाल रह्यो भाक्षनमें,
चेरिनिमें प्रीति बडी मार रही मुकामें,
भनत कविंद्र अरु मंत्र टोना टाम रह्यो,
राग रह्यो कहरन राव रग बुकामें,
प्रीति औ प्रतीतिचार चुगलके बीच रही,
दान रह्यो पातुरमें शान रह्यो हुकामें १

(ऋतुवर्णन)

तारे जहां सुभट नगारे पीक नाद जहा,
पैदल चकोर कोर बांधे मंदबेशकी,
गुंजरत भौंर पुज कुजरत मोर जहां,
पौन झु झुकोर घोर घमक हमेशकी,
भनत कविंद्र शर फोज है बसंत आली,
मिलै तंत कंतसो मनोज मानयेशकी,

मानवारी गढीपै गुमान ढाइवेको आज,
चढी है सवारियां निशाकर नरेशकी. २
पौनके झकोरन कदंब झहरान लागे,
तुंग फहरान लगे मेघमंडलीनके;
भनत कविंद्र धरा सारन भरन लगे,
कोश होन लगे विकसित कदलीनके;
उटज निवासिनको त्रास उपजन लागे,
संपुट खुलन लागे कुटज कलीनके;
नाचे विरहीनके अहीन स्वर झिल्लिनके,
दीन भये वदन मलीन विरहीनके. ३
राजे रसमैरी तैसी वरषा समैरी चढी,
चंचलान चैरी चक चौधा कौधा वारैरी;
पतिव्रत हारै हिये परत फुहारे कछु,
छोरै कछु धारै जलधर जलधारैरी,
भनत कविंद्र कुंज भौन कौन सौरभसों,
कौनको कंपायके न पर हथ पारैरी,
काम केतु कासे फुलि डोलि डोलि डारै मन,
और किये डारैयै कदबकी डारैरी. ४
तडिता तरर त्यों इरंमद अरर घन,—
घोरकी वरर झनकौर झींगुरनकी,
पौनकी लहक त्यों कदंबकी महक लागी,
दाहक दहन लै लै सीमा उरगनकी;
भनत कविंद्र बिन नाह ये सनाह साजें,
पटाझर घटा फेरै क्योंहू ना मुरनकी;
पेरै भट्ट मनको अेरैरै करै आठो याम,
टेरै बरहीनकी देरैरै दादुरनकी. ५
लग्यो मास सावन विदेशी ठाव ठावनसौ,
आवन लगे है कैधौ उन्है सुध री नही,
कैधों वह गावनमें जावन कहत कोउ,
कैता गुन गावनकी रीझ अगरी नहीं;

भनत कविंद्र मनभावन तिहारे हम,
पावनको सैंचे तकसीरहू परी नहीं,
हसे तो हितावनपे तावन लगेही देह,–
दावन लगे ही कि चिदानन करी नहीं ६
लाग्यो यह सावन सनेह सरसावन,
सलिल बरसावन पयाधर ठटानको,
गोरी गाय गांवन लगी है गीत गावन,
हिंडोरो झुमलावन उठान धर्व अटानको,
भनत कविंद्र विरहीजन सतावनसो,
देखो चमकावनरी बिजुल छटानको,
प्यारे पगे पावन लखाको दर्जे नावनसो,
देखो आजु आवन सुहावन घटावनको ७
गगन गयंदपर चढ्यो करि डंका बंका,
पिक नाद आगे होत तैसे मन भायो है,
भनत कविंद्र तारे सुभट अमोर जोर,
चैटर चकोर मोर शोर सरसायो है,
तोर तम अगग लगग ठेकर उदग्ग घर,
मदन हरौउ मान गढ पर धायो है,
चमू चंद्रिकानके पसारे अवलेश नख,
तेश आज नवतम नरेश यनि आयो है ८

कविराज.

(पावस-सवैया)

भूमि हरी चहुओर भरे जळ है सुभरी ऋतु आइ अषाढी,
मीठि महा धुनि मोरनकी, कविराज सुने सबकी रुचि बाढी,
झूल्त गोपि गोपाल मिले, वृषभानके आगन भीर है गाढी,
हेरे हरि मिस वाकि घटा, भरि फेरि घटामें अटापर ठाढी १

कादर.

(कलि-कुटिलाइ.)

गुनको न पूछे कोऊ औगुनको वात पूछे,
कहा भयो दई कलियुग यों खरानो है;
पोथी औ पुरान ज्ञान ठट्ठनमे डारि देत,
चुगल चवाइनको मान ठहिरानो है;
कादर कहत जासों कछु कहिवेकी नाहिं,
जगतकी रीति देखि चूप मनमानो है,
खोलि देखो हियो सव भातिनसो भाति भाति,
गुन ना हिरानो गुनगाहक हिरानो है. १

देखतके नीके परिणाम वहु आदरको,
देखत भलाई सदा जीवमें जरे रहै;
भेद भेद पूछे पूछे टेव तन आव लाज,
पापके समूह सिंधु आंखिन अरे रहै;
कादर कहत जे नटीनके तलासिवेको,
हाट वाटहूमें दरवारमें खडे रहै;
निंदाको जु नेम जिन्हे चुगली अधार पर-
स्वारथ मिटाइवेकों खोजही परे रहै. २

कालिदास.

(समश्या-छप्पय.)

अष्ट रेस इक मास, मास वारामें पक्के,
पावक मुख भयो जंन, लोक सव नजरों देखे,
अखर लखे लेलार, मार धतिअनको मारे,
चंद्रबदनि चित्त चोर, ध्यान मुनिजनको टारे,
ये सिद्ध नहीं योगी नहीं, ये बिन पांऊ पृथ्वी धुनी,
कालिदास कवि उच्चरे, अर्थ करो पंडित गुनी. १

जगमें प्यारे कोन, कोन है जगत सुधारन,
जगमें लेवो कहा, कैसो रखियै हथियारन;

रजनीपति है कोन, कोन है शोभा धरकी,
पंथे चल्यो कहा, बहुत भोजन कहा खरकी,
गढ बंको गोपन सरस कौन, कौन सरस हय काज है,
आगम कौनसें चेतवो, लज्ज शशीधा राज है २
कोकिल करि हरि कमल, दीप मृग शशियर विषधर,
श्याम शरद घन रैनि, अषवन सिंह सरोवर,
रतमद मूख रसाल, तरुन शठ राकानोकुल,
जीनत मघ लघु तिमिर, बसत जुव बिनकुश कोयल,
चाल कटि स्वर नासिका, नयन भाल वेणी धणी,
कर सिंगार भिष्मकसुता, मिले कान अरु रुक्मिणी ३

(समस्या—दोहा)

बार मासमें खट ऋतु, शरद शिशिर वसत,
या तिन ऋतुमें तीन दिन, त्रिया न चाहत कत १
दपति रति उछासमें, गई रीस भइ रीस,
ताहि समै त्रेसठ हते, छिनमें भये छतीस २

काशीराम.

(विविध—कवित्त)

रहेगो न राज राजधानीपें न पानी पुनी,
कहे थाक थानी जिमी आसमान जायगो,
सातही पताल अरु सात द्विप भासियत,
एक बेर चांद सूर तेजही विलायगो,
जोइ कछु सृष्टि रची करताकी दृष्टिहीसों,
एक बेर सृष्टिहीको करता समायगो,
कहे काशीराम कवि और कछु थिर नाहीं,
रहिबेको एक राम नाम रही जायगो १
पैसे बिन बाप कहे पूत तो कपूत भयो,
पैसे बिन भाई कहे मोकों दुखदाई है,

पैसे विन काका कहे कौनको भतिजा लगे,
पैसे विन सासु कहे कौनको जमाई है;
पैसे विन पंचनमें बैठिवेको ठौर नांहि,
पैसे विन आई घर रोइ रोटी खाई है;
कहे कवि काशीराम सुनो नर श्याने सबे,
आजुके जमानेमांहि पैसेकी बडाई है. २

देखादेखी भई त्यों सकुच सब छूटि गई,
मिटी कुलकानि कैसो घूंघटको करिवो;
लगी टकटकी उर उठी धकधकी गति,
थकी मति छकी ऐसो नेहको उघरिवो;
चित्र कैसें काढे दोउ ठाढे कहि काशीराम,
नांहि परवाह लाख लोग करे लरिवो;
वंसिको बजैवो नटनागर विसरि गयो,
नागरि विसरि गई गागरिको भरिवो. ३

कर खिले मानसन दीनो हे विवेक विधि,
काशीराम कहे सब जग आहियत है;
जो न मिल दौरि पौरि ताकी फेरि जाय सोई,
जाको हियो काहु न कुबोल दाहियत है;
सुनिहो प्रवीन नर दीनता न भाखि जाने,
याको तौ विदेश परदेश गाहियत है,
खान चाहिये न एतो पान चाहिये न एतो,
दान चाहिये न जेतो मान चाहियत है. ४

(हंसान्योक्ति.)

कांकरसे मुक्ता सुकंज जहां कुंदनके,
पन्नाहीकी पौरि परि जाकें चहुधा करी,
विहरत सुर मुनि उचरत वेद धुनि,
सुखकी समेटि राशि विध ना तहां करी,
वासी एसें सरको उदासी भये विछुरेतें,
काशीराम तऊ कहूं ऐसी आशा ना करी,
पर्यो कोऊ काल तातें तक्यो तुच्छ ताल लघु,
लह्यो जो मराल तौ चुनेगो कहूं कांकरी. ५

किसन.

(वैराग्योपदेश-कवित्त, धनाक्षरी)

धंधहीमें धायो पै न धायो है धरम रुख,
पायो दुख द्वंद्व पै न पायो सुख पायवो,
गायो ज्ञान आन पै न गायो भगवान भान,
आयो जो न ज्ञान कहा नरयोनि आयवो,
मनमें न मायो अंध काहू न नमायो कंध,
किसन परैगो खरे ताहि पछितायवो,
आपहिको भायो भायो पापको उपायो पायो,
बाँधि मूठी आयो पै पसारे हाथ जायवो १

अरथ न आवे रथ अरथ गरथ पथ,
रखत तखत राज साज बाज शासना,
काहू योनि जैयो पूंजी पाखे कहा लैयो तातें,
तैसो तैसो छैयो जातें ह्वै न तोहि त्रासना,
आजलों अचेत रह्यो किसन न हेत लह्यो,
मान अजो कह्यो कर सुगुरु उपासना,
छिन छिन छीजें आई देह कछु देह पाइ,
वासना विलाइ जाइ रहे जाइ वासना २

आलम यहे अयान मालम न है पयान,
आलम रहे न जुल्मानो मान रहैगो,
अत वार ख्वारी परिवारकू न वेत यारी,
गहे भार भारी यार सोहि भार वहैगो,
काया अरु माया कैसी वादलकी छाया जैसी,
किसन जू ऐसी को अदेशो दिल दहैगो,
जौलौं जीये येह देह तौलौं नि संदेह देह,
ह्वैगी देह खेह तब कौन देह कहैगो ३

इत उत डोले कहा दीन बोले मोले रहा,
पेटहीके मोले देह लग्यो महा प्रेत है,

गरभमें दे दे ग्रास पाल्यो दस मास आश,
वाहिकी किसनदास आन आन देत है;
चांच दइ सोइ नित चूनकी करेंगो चित्त,
चिंतही हरैगो ऐसो साहिव सचेत है;
जानको अजानको जिहानको विहान हीतें,
देत सुविहान कहा तोहि कों न देत है. ४

ईहै प्रभु ताको जो किसन प्रभुताकों त्याग,
छांडी ना विभूति तौ विभूति कहा धारी है;
जौलें भग तजी नांही तौलै भगतजी नांहि,
काहेकों गुसाई जो गुसांईसों न यारी है.
काहेको विराहमन जा रहै विराह मन,
कहा पीर जोपै पर पीर न विचारी है;
कैसो वह योगी जन जाको न वियोगी मन,
आसनहि मारी जान्यो आश नहि मारी है. ५

उकति उपाइ एती उम्मर गुमाई कछु,
कीनी न कमाइ काम भयो न भलाइको;
औधी जब आइ तब कौन है सहाइ भाई,
राईभर कछु न वसाइ ठकुराइको;
आइ पहुंचाइ पछताइ माइ बाइ जाइ,
छूटयो नातों टूव्यो तांतो किसन सगाइको;
इहांतो सदाइ धाम धूमही चलाई पर,
उहां तो नहि है भाइ राज पोपाबाइको. ६

ऊखरमें मेह ऐसो पोषवो अकाज देह,
आग ज्यों अछेह याके सबही समेटबो;
सदा दुरगंध क्योंहु देत न सुगंध अंध,
तातें तैसो धंध यातें सोंधातें लपेटवो;
काया तो असार यार मायाहून चलै लार,
किसन बिचार यमलोक नेट भेटबो;
काको अभिमान यह भूल्यो भगवान जान,
छांड दे गुमान अंत छारहीमें लेटवो. ७

रिद्धितें न सिद्धि करी जो तें जीय कैसी जरी,
तहा ले धरी जहा प्रवेश न समीरको,
खरच्यो न खायो येहीं नरक जनम आयो,
जा दिनतें जायो सुख पायो न शरीरको,
पियो जल छान्यो पैं न छोहू अनछान्यो जान्यो,
किसन कछू न भान्यो श्रास पर पीरको,
धोखेहीमें जीव दयो भयो न सुकृत ल्यो,
गयो भव खोय भयो नीरको न तीरको ८

रूठो डौल नांहि करै काहूपैं बडाइ साच,
समरै न सांई कव सांई भव खोइ है,
जेती तें बुराइ ठाइ तेती घनि आइ परि,
एती चतुराइ दुखदाइ अत होइ है,
किसन सुभावे सगा कौन न कहावे लाल,
कालतें छुडावे आडो आवे ऐसो कोइ है,
अरे अविवेक भेक कापैं गहि गाढी टेक,
लेवेकों न एक कछु देवेको न दोइ है ९

लिखो जु ललाट लेख तामें कहा मीन मेख,
करमकी रेख देख टारीहू न टरे है,
चोंप करी काहू चूहे सापको पिटारो काट्यो,
सो तो अनजाने पाने पन्नगके परै है,
किसन अनुधमहि चल्यो अहि पेट भरि,
उधमहि करत तुरत चूहा मरे है,
देखो क्यों न करी काहू हुनर हजार नर,
व्है है कछु सोइ जो विधाता नाथ करै है १०

लीलाकी लगन मांहि ज्ञानकी जगन नाहि,
जग न रहाहि नर तोहि न रहायबो,
चलै जर कौन वट क्यों इहां करत हठ,
नदी तट तरु कौन भांति ठहिरायबो,
सुपना जहान तामें अपना निदान कौन,
जपना किसन जाप जातें दु ख जायबो,

मोहमें मगन शगवग न धरे है पग,
नग न चलेंगे संग नगन चलायबो. ११
एक उगे सुर करे भोजन कपुर पुर,
एककुं तो पेट पुर भाजीहु न ताजी है,
एक नर गज चढे चढत चपल वाजी,
एक पाजी आगें दौरं दौरिवेमें राजी है;
एककी किसन लच्छ देखि लच्छमीहु लाजी,
एक धनहीन मिसकीन दीन माजी है;
कही न परत कुदरत ऐसी कारसाजी,
अपने अपने यारो वखतकी वाजी है. १२
ऐरावत कैसे अंग उद्धत अभंग जंग,
घूमत मतंग लिये शोभा मेघ श्यामकी;
उत्तम उतंग तर तरल तुरग चंग,
सहज सुरग ओप पशम तमामकी,
मुजरो न पावत है रावतके ठाठ ठाढे,
आवत किसन पेशकशी गाम गामकी;
भरे अभिराम धाम दाम ठाम ठाम पर,
विना प्रभुनाम प्रभुताई कौन कामकी. १३
ओसकी कनीसी जैसी दर्भकी अनीपे वनी,
लेखियें न वार घनी देखियें झलामली,
जगतकी बाजी ताजीपे न तातें हुजें राजी,
देखी जाकी वाजी नटबाजी ज्यों चलाचली;
महके किसन जाकी महिमा मुल्क मांझ,
कहावै मुल्क मीर मालिक महा वली;
कालकी अकल बात यातें कब होय घात,
आजकी न जानी जात कालकी कहा चली. १४
औषध अनेक एक मौत अतिरेक छेक,
नेक टेक धरिकें विवेक घर आइयें;
मोसम ससै किसन कीजियें असम श्रम,
बैठे क्रम क्रम पुंजी गांठकी न खाइये;

काल काल करत परत आन काल पास,
कालको न आस कछु आजही बनाइये,
कायामें न आइ काइ तौलौं करिलै कमाइ,
आग लगे मेरे भाइ मेह कहां पाइये १५
अजलिके जल ज्यों घटत पल पल आयु,
विषसें विषम व्यवसाय विष रसके,
पंथको मुकाम कछु बापको न गाम यह,
जैबो निज धाम तातें कीजें काम यशके,
खान सुल्तान उमराव राव रान आन,
किसन अजान जान कोऊ न रही शके,
सांझ रु विहान चल्यो जात है जिहान तातें,
हमहु निदान मेहमान दिन दशके १६
अरब खरब महा दरब भयो तो कहा,
गरब न कीजें खेल सरब सुपनको;
छार कोसो देह येह छिनमे विलावे खेह,
रद ज्यों शरद मेह नेह पर अनको;
जोबन झलक चपलाकीसी चमक चल,
विषे सुख किसन धनुष जैसो घनको,
जैसें काच भाजनको भाजनको जोखो तैसे,
तनक खरोसो न भरोसो इन तनको १७
कोरी कोरी कर कोरी लाखन करोरी जोरी,
तोउ माने थोरी जाने लीजे जग लूटकें,
मायामें अरुझ्यो पर स्वारथ न सुज्यो,
परमारथ न बुझ्यो भ्रम भारथतें छूटकें,
जगतकों देत दगे आन जमदुत लगे,
किसन जो सगे वेउ ठगे न्यारे फूटकें,
हंस अश पेच लियो संग रग भग भयो,
जैसें बीन बजत गयो है तार तूटकें १८
खेत हेत एक यामें उत्तम अधम कहा,
भये पैदा भयो जब जोग मात तातको,

कढे सब योनि द्वार मढे सब चामहीतें,
गढे सब माटिके गढाव एक गातको;
कीडे सब नाजके रुधिर मास सबनिके,
भर्यो मल मूत धर्यो पिंड सात धातको;
लायक गुमानके किसन भगवान जान,
कोउ नाहिं करो अभिमान काहु वातको. १९

गंदगीसी खानि खरे वंदगीकी हानि करै,
रिंदगीसी आनि धरे एसि खोटि खासियत,
रेतकी गढीसी गढी प्रेतकी मढीसी मढी,
चामते चढीसी चित नेक नीकी भासियत;
जाके संग सैली मैली फैली वदफैली ऐसे,
मैलहीकी थैली कैसे किसन उजासियत;
केसुकी कलीसी लगे तनक भलीसी तन,
कहा गुन फुलन तिलीसी फुनि वासियत. २०

घरी पल पाऊं न रहत ठहराउ करी,
आवै के न आवे फिर लेह केसो ताउरे;
सांस तौलै आश ताहि गौनको अभ्यास ऐसे,
सहज उदास कित रहे कर भाऊरे,
ज्यों ज्यों भींजे कामली बिशेष त्यों त्यों भारी होत,
आगेही किसन यातें कीजियें ऊपाउरे;
सांस सो तो वाऊं ताके लेखे तेरो आऊ अरे,
राउ अरु वाउको विसास कहा बाउरे. २१

नायकानि राशी यह वागुरिन भासी खासी,
लिये हाँसी फासी ताके पाशमें न परना;
पारधी अनग फिरै भौहन धनुष धरे,
पैन नैन बान खरै तातें तोहि डरना,
कुच है पहार हार नदी रोमराइ तृन,
किसन अमृत एन बैन मुख झरना;
अहो मेरे मन मृग खोलि देख ज्ञान द्रग,
यह बन छोरि कहुं और ठौर चरना. २२

नागिनीसी बेनी कारी भ्रमरासी पाटी पारी,
माग जु सम्हारी चोर गली तोहि टरना,
तन सर जामें जल यौवनसु मस्त चस,
ग्रीव कबु भुजासु मृनाल मन हरना,
नासा शुक दंत दाया नाभि कूप कटि सिंह,
किसन सुकवि जघ रभ स्तम भरना,
अहो मेरे मन मृग खोली देख ज्ञान मग,
यह वन छोरि कहू और ठोर चरना २३
चले इह राह खरे शाह पतशाह छरे,
घरेहि रहे परे भरे भडार दामके,
छबे दल बादलसें रहे दल बादलहू,
डूबे मनसूबे मनसूबे कौन कामके,
तेरी कहा चली भौरे किसन शयाना हो रे,
रहिचोरी बाकी थोरे बासर मुकामके,
देखे तोरै तोरे जोरे कोरेइ तमाम अब,
का तक चलायगो तमाम दाम चामके २४
छारहीमें ख्वार खर न्हात जाति जलचर,
धरत जटासु बर बरत पतंग है,
ध्यान बग धरत रटत राम राम शुक,
गाडर मुडाये पशु सब सु निहग है,
सहे तरु ताप घर करिकें न रहे साप,
किसन दुराय आप अंग भो अनग है,
रग यह रग कछु मोक्षनको अग पर,
व्हैहै मन चग तो कठौतहीमें गग है २५
जीयत जरासा दुख जनम जरासा तापें,
डर है खरासा काल शिरपें खरासा है,
कोउ बिरलासा जोपैं जीवे है पचासा अंत,
मन बिच वासा यह बातका खुलासा है,
सध्याकासा बान करिवरकासा कान चल,
दलकासा पान चपलाकासा उजाला है,

ऐसासा रहासा तापै किसन अनंत आशा,
पानीमें बतासा तैसा तनका तमासा है. २६

जानी भूखा प्यासा जान दीजें न निराशा कीजें,
सबका दिलासा सब जीव अपनासा है,
खान पान खासा कहा पहिरे भलासा तउ,
लोभ अधिकासा एती प्रानीकों पियासा है;
दगाकासा पासा कीजें वासा जलधरकासा,
आवे देखि हासा छिन तोला छिन मासा है;
एसासा रहासा तापें किसन अनंत आशा,
पानीमें बतासा तैसा तनका तमासा है. २७

झूठी काया मायाके भरोसें भरमाया लाया,
मायाहू गुमाया पर मूरखता पाया है;
ज्यों ज्यों समझाया त्यों त्यों जात मुरझाया,
सुरझे न सुरझाया ऐसा आप उरझाया है;
काचा पाया पाया तातें कौन चैन पाया पर,
साचा सोइ सांया जो किसन गुन गाया है;
दगा दिया काया जानि जमको बुलाया आनि,
काल बाज खाया तब याद प्रभु जाया है. २८

नीके मधु पीकें मत्त मधुप सरोजहीमें,
रुकी रह्यो जब लुकि गयो दिनमनि है;
जानी जै हे रात व्हे हे प्रात दरसै हे रवि,
विकसे है कंज तब जात निकसनि है,
ऐते गजराज आयो पंकज उखारी खायो,
भयो भायो विधिको किसन धन धनि है;
तैसें बहुतेरी तुं तो चाहत धनाइ भाइ,
तेरी न बनाइ बने बनि है सु बनि है. २९

टरि है न मरन जो परि है चरन चाहि,
करि है शरन जो तुं अमर अमीरको,
ताको तो डर न लग्यो लोकसों लरन पग्यो,
पापही करन बेठो व्हैकें नेजो पीरको,

त्रि जगको ताज है किसन महाराज तासों,
अरे विन काज करै काज तकसीरको,
तातो होइ धीरतें शिराइ हीकें पीजें वीर,
कीजें धीर दीजेंगो निवेरो छीर नीरको ३०
ठानत अकाज जम जानत कुटुम काज,
आनत न लाज मन मानत मरदमें,
कुटुम त्रिटम शूर मूरख न बूझे मूर,
सुखमें हजूर दूर दारुन दरदमें,
किसन त्रिसन त्यागी विसनके राग पागी,
जागि जौसों बाकी दे हयातिके फरदमें,
केती देह रद करी सिंधु सरहद धरी,
आखर मरद वेहि मिलैंग गरदमें ३१
कर्यो न करम कर भर्यो हे भरम भूरि,
धर्यो न धरम धुरि धोखे धन धामके;
ठग्यो लोक ठाम ठाम लग्यो लोभ आठो याम,
दग्यो काम कामनामें जग्यो वेध वामके,
बक्यो परनिंदा तक्यो पर रामा एती सब,
थक्यो पून्य सेती पें न छक्यो राम नामके,
में पतित तें पतित पावन किसन प्रभु,
भयोहूं तो पतित भरोसें नाथ नामके ३२
ढोयो नीच पर हरिचंद भर बीर नीर,
डौले रघुबीरसें ससीत शीत घाममें,
भयो दुखभागी नल संग लगी त्यागी तिय,
मुंजसें सुभागी भीख मांगी रिपु गाममें,
ऐसें ऐसें किसन अनेक नेक नरनको,
गयो है सो जनम तमाम इतमाममें,
गोते खात गज तहां गाडरको कौन गजो,
अरे नर बौरे तुं तो कूचके मुकाममें ३३
निशिके परत दिशि दिशितें परिंद पुंज,
जैसें काहू कुंज मुनि वास लेत ल्से है,

होतही सकोर जात जात न्यारे न्यारे अरु,
प्यारेहू किसन याहि रीति रंग रसै है;
आयेही कहींतें दाना पानीके सबब सब,
जाइगे कहांही योंहि प्रेम फंद फसै है;
योग रु वियोगको न कीजिये हरख सोग,
पाहुनेतें घर वसै काके घर वसै है. ३४

तरु ले कमान लोधी रह्यो ताकि तान वान,
देखत सिंचान उडे जात आसमानजू;
दुखित कपोत पोत जानी दुख ओतप्रोत,
समर्यो किसन श्याम करुनानिधानजू;
व्याधकों डस्यो अचान व्याल विकराल आन,
लग्यो छूटी वान छूटे वाजहूके प्रानजू;
कहा करै हाल क्रम काल जम जाल व्याल,
जोपै रच्छपाल प्रतिपाल भगवानजू. ३५

थाटको महीश चल भोगल कपाटको कि,
हाटको खटाउ कि वटाउ कोउ वाटको;
देत पर पीरा प्रेत जानै न जनम हीरा,
घातक अधीरा खटकीरा मानो खाटको,
किसन सुहात कुराफात करै जीव घात,
आपै उर ज्ञात ऐसें जैसें कीट पाटको;
सुखतें न सूतो हा हा हूतो व्है विगूतो धूतो,
धोवी केसो कूतो तुं तो घरको न घाटको. ३६

दियो भोग भारीपै अघात नांहि पापकारी,
यातें इच्छाचारी पेट चेटकी करारी है;
यामें चीज डारी तेती कामहीतें टारी ऐसी,
किसन निहारी यह कोठरी अंधारी है,
कहा नर नारी सिद्ध साधक धरम धारी,
पेटके भिखारी ग्रंथि पेटहीतें हारी है,
पिटवारी थारी न्यारी न्यारी है गुनहगारी,
पेटही बिगारी सारी पेटही बिगारी है. ३७

धायो धाम धामपें न पायो विशराम अब,
आयो मन ठाम ठायो नामहीसु नेहरो,
आप न विशेष्यो तौलौं आपको न देख्यो जब,
आपमें गवेख्यो तब पेख्यो सुर शेहरो,
बरखे अमृत बैन हरखे निरख नैन,
परखे किसन पेन पें न छवि छेहरो,
कहू जल्मेव कहूं उपल्की सेव पर,
देही सब देव की न देवकीन देहरो ३८
नदी नावकोसो जोग तामें मिले लाख लोग,
काकों काकों कीजें सोग काकों काकों रोइयें,
कहे काकों मिंत्र परी काकों काकीं चिंत यत्तें,
सीतापति चिंतय नचिंत व्है न सोइयें,
ध्याइयें न विमुख उपाइयें न काहु दुख,
पाइयें न आम जोपें आक बीज बोइयें,
स्वारथ तजीजें परमारथ किसन कीजें,
जनम पदारथ अकारथ न खोइयें ३९
नरको जनम बार बार न गमार अरे,
अजहू सम्हार अवतार न विगोइयें,
लीजेंगो हिसाब तहां दीजेंगो जवाब कहा,
कीजें जो संताप तो सताब शुद्ध होइयें,
पाप करि अग्यानी सुखकी कहा कहानी,
घृतकी निसानी कित पानी जो बिलोइयें,
स्वारथ तजीजें परमारथ किसन कीजें,
जनम पदारथ अकारथ न खोइयें ४०
पापको समाज साज करत न लाज आज,
पून्य काज परत करत काल परसों,
जाहि तूतो जानै मेरो तामें को है प्यारो तेरो,
छिन द्वै बसेरो डेरो कैसी प्रीति परसों,
एतो कारबार भार लेकें कैसें पावे पार,
किसन उतार डार भार शिर परसों,

कालतें अभीत माया जालतें अतीत गीत,
जानियें सो परम पुनीत नीत परसों. ४१

फूटयो फाटयो ख्वार जाके खुले खट चार द्वार,
पिंजरो असार यार तामें पखी पौनसो;
आवत पिछानियें न जाहि जात जानियें न,
बोले तातें मानियें सुडौले रुचि रौनसो;
करमको पेर्यो दानापानीके सबब घेर्यो,
रोनक किसन जानि भूल्यो मान भौनसों;
पावे औधिहून तोलों करिह कहुं न गोन,
करै गौन पौन तो तमासो तामें कोनसो. ४२

यम जैसे शीश परि ठाढे निशादिन अरि,
तासों विसे वीसा ढरि ऐसी कर आंधरे;
छाडदे हेरामखोरी बूझी अब बूज तोरी,
जगतसें तोरी जगदीशसें तूं सांधरे;
चलाचल साथ न विसारियें किसन नाथ,
जैवो है दिखाते हाथ चढे चहूं कांध रे;
केती जिंदगानी जापै ऐती तें अनीति ठानी,
अजो पानी पहिले गुमानी पारि बांध रे. ४३

रूठा जमराना भाना काया कमठाना तब,
उठे ह्यांते थाना कहूं करना पयाना है;
आगें जो ठिकाना सो तो मुल्क बिराना तहां,
गांठहीका खाना दाना बैठे नित खाना है;
तातें मन माना पूर करले खजाना अब,
किसन शयाना जो तुं दाना मरदाना है;
परे मरिआना मरे चूहा व्है दिवाना जैसें,
ऐसे अनजाना नाच नाच मर जाना है. ४४

लशुनके लिये न्यारी खात कसतूरी डारी,
अंबरकी क्यारी वारी चंदन करेवेकी;
हरख भरांनी भरि कंचन कलश रानी,
सिंच्यो इद सानी पानी गंगाहिकों देवेकी;

बइ खुशबोई त्यों त्यों चन्यो बदबोइ होइ,
मूढ़ेह न फरे कोइ इच्छा वोइ ऐबेकी,
सहस उपाय करो किसन उपाय दाय,
प्रान क्यों न जाय पर प्रकृति न जैसेकी. ४५
यार यार करत पुकार घडियार यार,
होउ हुसियार विसियार सुख पायगो,
गइ है बहुत आइ रहि है बहुत आइ,
गाफिल गमाइ है गमार मार खायगो,
खाक हिय खाक होइ रहि है किसन खाक,
खाकको खमीर अत खाकमें समायगो,
आपको हसायगो हसायगो कहाके जाय,
जगल बसायगो न यमते बसायगो ४६
शाखी मधुमाखी लों न चाखी अभिलाखी राखी,
कहालों पताल नाखी राखी धन धानकी,
खावे पोख पावे प्रानी देवे जम होत जानी,
जान दे हिवानी जे न खानकी न पानकी,
फाके सग गई बह कौनकी किसन भई,
रहे कर दई कर दई है निदानकी,
आवत न बार आत लागे छिन मात जान,
माया बदलात जैसे छाया बदलानकी ४७
खर ज्यों अयान इनसानकी न सान बान,
कहा मसतान महा खान मद पानमें,
मूढ रूठताने आपे आपही बखाने आपे,
गानमें न काहू आने जाने ज्ञान ध्यानमें
चलो मनमान भलो नाहि न वृथा गुमान,
किसन निदान दिल देहु दया दानमें,
मान सीख मेरी व्हैगी ऐसी गति तेरी येह,
जैसी मूठी ठरी हेरी राखकी मसानमें ४८
खासी चीजे खाते खासे भूषन बनाते जीव,
जानते न दिन राते रत्ते मान तानमें,

सूरत सुहाते रन सुभट कहाते तातें,
पौरुषके माते न समाते मद मानमें;
किसन जु ऐसे भये वेउ भीच मींच लिये,
जस ले गये सो नित नयेही जहानमें;
मान सीख मेरी व्हेगी ऐसी गति तेरी येह,
जैसी मूठी ढेरी हेरी राखकी मसानमें. ४९

हंस रहै रैन न्यारे काच सौध पर हारे,
तारे प्रतिबिंबके निहारे जैसें लीजियें,
मान मोती गोती साच चूगे तब तूटी चांच,
लागी आंच सोचे अब काहू न पतीजियें,
किसन गये सु थाने मानसर केलि ठाने,
मुकता छुयेतें जाने काहु छुये छीजियें,
पिशुनतें दगो पाइ भलेको भरोसों जाइ,
दूधके जरेकी नांई छाछ फूंकि पीजियें. ५०

लंकाको अधीश दश शीश भुज वीश जाके,
दयो वर ईश अवनीश ता सराहिवी,
सागरकी खाइ कुंभकरणसें भाइ जाकी,
दुसह दुहाइ ठकुराइ अवगाहिवी,
ऐसो राज साज गयो भयो जो अकाज एतो,
हाथ प्रभुहिके लाज किसन निवाहिवी,
झूठहीमें झूले नित लता अन मूले फूले,
साहिबको भूले डूले क्यों न एसी साहिवी. ५१

क्षीन भये अंगपै अनगके तरंग नये,
न गये दुरित रग कहा सतसंग है,
क्रोधहीमें काम अभिमान मान आठौ जाम,
मायामें मुकाम गहे लोभके उमंग है,
निंबकी निबोरी ढीठी पके तब होत मीठी,
किसन तिहारे तो निहारे तेइ ढंग है;
बूझी तन लेश देश देख कैसें भये केश,
काग रगहूते सोइ कागदके रंग है. ५२

किसोर.

(शृंगाररस–कवित्त)

माग लीनो मघवाने राज साज ऐरावत,
कमला खगेरा हरी माग लीनी देतमें,
सारथी समेत रथ बाजी ले गयो दिनेश,
चार मुख ले गयो मराल देत लेतमें,
सुकवि किसोर मनि माग लीनी नागराज,
दियोहि लुटाइ सब सुरभोग हेतमें,
देत देत सबे वृषकेतुके समाज रान,
रे' गई विभूति भूत बेलही निकेतमें १

कढी जल केलितें नवेली अलबेली तीय,
अंग अंग भूपन उमंग रूर कसतें,
कहत किसोर मुख धोय पोंछि अंचलसो,
ठाढि भई तीरमें छबिली छबि लसतें,
कर उलटाय कर कंधापें आगी थप,
गही रही गई बाल लाज लखि घसतें,
सनमुख सबल विलोकी रनधीर मानो,
खेंचत सुभट मीर तीर तरकसतें २

कुबेर

(गूढ–दोहा)

हिमाचल पार्वती शंकर. सर्प जहर.
गिर धी कत्ता आभरण, याके मुखमें होय,
सो याके नेना बसे, (वाको) सग न करनां कोय १

समुद्र कमल ब्रह्मा सरस्वती हंस मुक्ता
दधिसुत ता सुत ता सुता, ता वाहन भख होय,
सीप लक्ष्मी भगवान्
ता माता भगनी पती, निश दिन भजिले सोय २

गाय. बैल. सिंह. मंजार. मूषक. गणपति.
अंबा सुत रिपु तास गुरु, ता भखको असवार;
पार्वती. शंकर. नाग. वायु. हनुमान. रामचंद्र.
ता जननी पिय आभरण, ता भख सुत प्रभु[1] ज्वार. २
समुद्र. ब्रह्मा. कमल. सुर. समुद्र चंद्र. मृग.
दधिसुत वाहन वदन छबि, दधि-सुत वाहन नैन,
समुद्र. धन्वंतरी. सुवा. कोयल.
दधि-सुत वाहन नासिका, दधिसुत वाहन बैन. ४
पृथ्वी. शेष. गरुड. कृष्ण. लक्ष्मी.
अवनी-थंभन तास रिपु, ता स्वामी अर्धंग;
समुद्र. मुक्ता.
तास पितामें नीपजे, वासों लाग्यो रंग. ५
द्वादश मुख भुज अष्टदश, दृग पचीस पग वीश,
सो तुमको रक्षा करे, खग नगपति जगदीश[2]. ६
समुद्र. लक्ष्मी. उर. धन्वंतरी.
दधी सुता दधि-सुत भख्यो, दधिसुत वेग बोलाय;
समुद्र. अमृत. समुद्र. मोती. हंस अर्थात् जीव.
जो दधि-सुत आवे नहि, (तौ) दधि-सुत रिपु उड जाय. ७
जिभ. हाथ. तीन.
रसना एक रु कर दुई, सुरलोचन खट पाय,
इण गूढारो अर्थ के', सो मोटो कविराय[3]. ८

१ नमन. २ शंकर. पार्वती. नंदी. विष्णु. लक्ष्मी. गरुड. ब्रह्मा. सावित्री. हंस.

मुख...	१	१	१	१	१	१	४	१	१=१२
भुज...	४	२	०	४	२	०	४	२	०=१८
दृग....	३	२	२	२	२	२	८	२	२=२५
पग....	२	२	४	२	२	२	२	२	२=२०

३ वाहन सहित शुक्राचार्य· शुक्राचार्यका वाहन मंडुक है और मंडुकको जिन्हा नहि होती है; और हाथभी नहि है. तस्मात् शुक्राचार्यजीके दो हाथ और एक जिन्हा कही है औ वामनावतार प्रसगमें शुक्राचार्यजीका एक नेत्र फूट गया है. शेप एक नेत्र और मंडुकके दो नेत्र मिलके हुवे तिन, और वाहन मंडुकके साथ आपके मिलके हुवे छे पाद.

लखन टकनखार. धनुप् गुण
राम सहोदर कनकरिपु, कोदंडाको सार,
ए तीनों तोमें नहिं, तो छाडी भरतार[1] ९

मडुक मृतिका सांप उर. शिवजी काम मन
दादुर–भोजन आहि धसण, हर-रिपु वाहन सोय,
ये तीनों मैं आर्पिया, तोउ अपनो नव होय[2] १०

(चोपाइ)

मेडी भतार. हेला करो मेघ रुधिर.
सारंग चढी मोहि सारग कोकि, सारंग जावत सारग रोकी,
भतार. सताबी (२७) अर्थात् शीघ्र
उठो सखी सारग समुझावो, तीसां माहे तीन घटावो[3] १

(दोहा)

अग्नि दीपक
करि श्रृंगार प्रिया चली, सारग–सुत ले हथ्थ,
पाणी जलो रुधिर
जल-सुत भख वेरी भयो, सब सिणगार अकथ्थ[4] १

हस्ति मुख कुंभ आकारकी जलो
ईंद्रवाहनकी नासिका, तासतणे अणुहार,
रुधिर.
उणरो भखमो प्राहुणो, (पियु) आवागमन निवार २

पीउ मोर.
सारंग सोता निस भरी, सारग ठेढा वा'र,

---

१ टकनखारको सोहागा कहेते हैं और धनुषकी प्रतंचाको गुण कहेते है, तस्मात् तेरेमें लखन, सुभाग्य और गुण ये तीनोका अभाव होनेसे पतिने तेरेको त्याग दिया है

२ दादुरका भोजन मृतिका अर्थात् देह, हृदय और मन ये तीनो मैंने चरनमें अर्पन कीया तो भी मेरे न हुए

३ रजस्वला धर्मको प्राप्त हुइ पतिसमीप आनेमें असमर्थ होती हुइ नायिका–स्वामीको सत्वर समझानेके लिये सखीकों प्रार्थना कर रही है.

४ भावार्थ उपरोक्त चोपाइ अनुसारही है

पिया. कमान. तस्कर. तीर.
उठ सारंग सारंग ग्रहो, सारंग सारंग मार. ३
मनुष्य. वरसाद.
सारंग टालण पशु भखण, सारंग हूंतें होय;
जो तुम सुंदर सुघड है, मदिर हूंतें ढोय. ४
मेघ. मंडुक. मंडुक साप.
हरि गरज्यो हरि उपज्यो, हरि आयो हरिपास;
मंडुक. जल. साप.
जब हरि हरीमें गयो, तब हरि भयो उदास. ५
शृंगार. लखन. यौवन १२ बरसकी.
सोल सिंग बत्तीस खुरी, नवथन तेरे कान;
अकबर देखी बाकरी, शिखर चरती पान. ६

(चोपाइ.)

अंगुठे अंगुलिया. अंगुली. अंगुष्ठ.
चार पुरुष औ सोल्ज सती, चार चार अकेकसों रती,
चार पुरुषका एकहि नाम, कहो अर्थ वा छाडो गाम. १

कुंदन.

(सूमकथन-कवित्त.)

सूम कहै पतनीसों सुपनेकी बात सुन,
अकथ कहानी एक बर-बस हार्यो तो,
चादीको धर्यो तो जोर जोरके कर्यो तो गाड,
जमीनमें भर्यो तो फेर हाथमें निकार्यो तो;
कुंदन कहत कवि आयो एक ताहि समै,
कविता पढेतें वाको देबो अनुसार्यो तो,
होत कुल दाग वडो सुतको अभाग जो मै,
जागन परों तो ये रुपैयो देइ डार्यो तो. १

(शंखान्योक्ति.)

दाता सुन्यो लोकों जब विक्रमसो जान्यो दिल,
बात दुःख दर्दहूकी कहिके बताई में;

तब तो न दिन्हो जब भोजसो सुभाव चिन्हो,
विविध प्रकार तेरी बहु कीर्त गाई में,
गुनतें भयो न प्रभ तबतो जान्यो में कृप्न,
तीजी बेर तदुल ज्यौ कबल दिखाई में,
खुद है उधार खाता देखा शून्य शख वाता,
मेरी चीज दे दे तेरी रीझ भरपाईमें २

केवल.

(कमाल जवांमर्द वीरता)
गजन कमाल गढ मजन कमाल भरि,
सूरत रसाल मन रजन कमाल है,
प्रीतमें कमाल, रन जीतमें कमाल राज,
रीतमें कमाल देख्यौ प्रजाप्रतिपाल है,
राजमें कमाल, सब काजमें कमाल दिल,
साजमें कमाल, सदा बैरी सिर साल है,
खागमें कमाल, अरु त्यागमें कमाल देख्यौ,
खानहू कमाल, सब बातमें कमाल है १
गजबी गम्भर गाज, दिल्लीतें वख्न साज,
छटवेके काज पथ गुज्जरको छीनो हे,
बुदीकों बिहारी मारी हाडा गाढा जोरनके,
और राव राना ताके बाहू बल छीनो है,
प्रबल पठाननसों भीर्यो अंग जीतवेको,
भारतसो कीनो जुद्ध वीररस भीनो है,
नवल नवाब जुवां मर्दखा बहादुरने,
फकरु नवाबकों फकीर कर दीनो है २
(कविपरिचय-दोहा)
अहमदगढपें राजपुर, तुल्सीकी यह पौल,
केशवसुत केवल वसै, नागर विप्र अमोल १
केवल केशव कृष्णको, उठतहि नाम संभार,
सेवक शोभा रख सदा, आदित उदय निहार २

केशव.

(स्तवन-छप्पय.)

एक रदन गज वदन, सदन बुध मदन कदन सुत,
गौरिनंद आनंद, कंद जगवंद चंद युत;
सुखदायक दायक, सुकृत गननायक नायक,
खल घायक घायक, दरिद्र सब लायक लायक;
गुनगन अनंत भगवंत भव, भक्तिवंत भवभयहरन,
जय केशवदास निवास निधि, लम्बोदर अशरनशरन. १

तिलक भाल वनमाल, अधिक राजत रसाल छवि,
मोरमुकुटकी लटक, छटक वरनत अटकत कवि;
पीताम्बर फहराय, मधुर मुसक्यान कपोलन,
रच्यो रुचिर मुख पान, तान गावत मृदु बोलन;
रति कोटि काम अभिराम अति, दुष्ट निकंदन गिरिधरन
आनंदकद व्रजचंद प्रभु, जय जय जय असरनसरन. २

मोरमुकट नग जटित, कर्ण कुंडल मणि झलकै,
मृगमद तिलक ललाट, कमल लोचन दल पलकै;
घुंघर वाली अलक, कंठ कौस्तुभ विराजै,
पीत वसन वनमाल, मधुर मुरली धुन वाजै;
करत कोटि शुभ आभरन, चंद सूर्य देखत लजत,
ते वल्लदेव दे भक्तजन, श्यामरूप प्रीतम सजत. ३

चतुरानन सम बुद्धि, विदित ज्यौ होय कोटि धर,
एक एक धर प्रतिनि, सीस ज्यौं होय कोटि वर;
सीस सीस प्रति वदन, कोटि करतार बनावै,
एक एक मुखमांहि, रसन फिर कोटि लगावै:
रसन रसन प्रति सारदा, कोटि बैठि बानी कहही,
महि जन अनाथके नाथकी, महिमा तबहु न कहि सकही. ४

(संसार शिक्षा.)

विमल चित्त करि मित्र, शत्रु छल बल बस कीजै,
प्रभु सेवा बस करिय, लोभवंतहि धन दीजै,

युवति प्रेम वस करिय, साध आदर बस कीजें,
महाराज गुनकथन, बंधु सम आदर दीजे,
गुरु नमित सीस रससों रसिक, विद्यावल बुध मन हरो,
मूरख विनोद सुकथा वचन, सुम सुभाय जग बस करो ५
जाचक लघुपद लहै, असन लालची गहै गढ,
लोभी दुर्जश लहै, कामिजन लहै कलंक पद,
मूरख अवगुन लहै, लहै पढि पढि गुन पंडित,
शूर सुयश जव लहै, रहै रनमें महि मडित,
निर्वान सुपद जोगी लहै, जो न गहै ममता सुमति,
सुख भगत जगतजन लहत है, करेजु ता विध भक्ति अति ६
धिक मगन गुन बिनहि, गुन सु धिक सुनत न रीझै,
रीझ सु धि क विन मौज, मौज धिक वेतसु खीजै,
देवो धिक विन साच, साच धिक धर्म न भावे,
धर्म सु धिक विन दया, दया धिक अरि कहँ आवें,
अरि धिक चित्त न साल्हइ, चित्त धिक जहँ न उदार मती,
मति धिक केशव ज्ञान विन, ज्ञान सु धिक हरिभक्ति विन ७
तजहु जगत विन भवन, भवन तज तिय विन कीनो,
तिय तज जु न सुख देय, सु सुख तज सपति हीनो,
सपति तज विन दान, दान तज जहँ न विप्रमति,
विप्र तजहिं विन धर्म, धर्म तजिये विन भूपति,
तज भूप भूमि विन भूमि तज, दोह दुर्ग विन जो बसै,
तज दुर्ग सु केशवदास कवि, जहा न पूरन जल लसै ८
मूढ तपी सम कृती, दुष्ट मानी गृहस्थ नर,
नरनायक आलसी, विपुल धनवत कृपण कर,
धर्मी दुष्ट स्वभाव, वेदपाठी अधरमरत,
पराधीन सुचिवत, भूमिपालक निदेह सत,
रोगी दरिद्र पीडित पुरुष, वृद्ध नारिरस गृद्धचित,
एते विडब ससारमें इन सबकों धिक्कार नित ९
तियबल जोवन समय, साधबल शिवपद समर,
नृपबल तेज प्रताप, दुष्टबल वचन अडबर,

निर्धन वल सुमिलाप, दानसेवा जाचक वल,
वानिज वल व्यौपार, ज्ञानवल वर विवेकढल;
इम विद्या विनय उदार वल, गुन समूह प्रभुवल दरव.
परिवार सुवल सुविचार कर, होहि एक संमत्त सरव. १०

नरपति मंडन नीति, पुरुष मंडन मन धीरज,
पंडित मंडन विनय, ताल्रस मंडन नीरज;
कुलतिय मंडन लाज, वचन मंडन प्रसन्न मुख,
मति मंडन कवि कर्म, साध मडन समाध सुख;
नित भुजवल मंडन है क्षमा, गृहपति मंडन विपुल धन,
मंडन सिद्ध रुचि संत कहि, काया मंडन वल न धन. ११

ज्ञानवंत हठ गहै, निधन परिवार बढावै,
वंधुआ करै गुमान, धनी सेवक व्है धावै;
पंडित सुक्रिया हीन, रांड दुर्वुद्धि प्रमाने,
वृद्ध न समझे धर्म, नारि भर्त्ता रिपु माने;
कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै, वंधु न माने वंधुहित,
संन्यास धार धन संग्रहे, जे जगमें मूरख विदित. १२

गई भूमि फिर मिले, वेलि फिर जमे जरे ते,
फल फूलनतें फले, फूल फूलंत झरे ते,
केशव विद्या निकट, विकट विसरी फिर आवे,
वहुरि होय धन धर्म, गई संपत फिर पावे,
होई जो शील सुशील मति, जगत् हेतु इम गाइये,
प्रान गयो फिर मिलत पै, पत गइ फिर नहि पाइये. १३

रूप रंभ विधु बदन, वचन अमृत विष चितवत,
भौह धनुष ग्रिव शख, जलज सम जहं पातिव्रत,
हय घुंघुट गज चाल, कामतरु लाज नयन भर,
मणि सु पक्क हृद उदित, शील छवि लाज धेनुधर,
सुरा कपट सुर वैद सुयश, केशव दुखके जान तन;
सुरगण सर मथ्यो वृथा, तिय तनमें चौदह रतन. १४

(मौतिव्यवहार-सवैया)

सोभति सो न समा जहँ वृद्ध, न वृद्ध न तेजु पढे कछु नाहीं,
ते न पढे जि न साधु न साधित, दीह दया न दिसै जिन माहीं
सो न दया जु न धर्म धरै घर, धर्म न सो जहँ दान वृथाहीं,
दान न सो जहँ साच न केशव, साच न सो जु वसै छलछाहीं १
दूपण दूपणके जस भूपण, भूपण अगनिके सब सोहै,
ज्ञान सपूरण पूरणके, परिपूरण माव निपूरण जोहै
श्री परमानँदकी परमा, परमानँदकी परमा कही को है,
पातुरसि तुरंसि मतिको, अनदातरसि तुलसी पति मोहै २
पापकी सिद्धि सदा ऋणवृद्धि सु, कीरति आपनी आप कहीकी,
दु खको दान जु सूत कहान औ, दासीकी सतति सतत फीकी,
वैरीको भोजन भूपण डांडको, केशव प्रीति सदा पर तीकी,
युद्धमें लाज दया अरिके अह, ब्राह्मण जातितें जीति न नीकी ३
पातक हानि पितासग हारिवो, गर्भके शूलनतें डरियेंजू,
ताल्नको वध वध धरोरको, नायके साथ चिता जरियेंजू,
पत्र फटे औ करै ऋण केशव, कैसेहू तीरथमें मरियेंजू,
नीकि सदा ससुरारिकी गारि सु, दढ भले जु गया मरियेंजू ४
एकनु तो सुख होत सदा, इकको जिय पावत दु ख अलेखा,
एकहि मस्तक छत्र धरावत, एकहि सीग्मतदारक देखा,
एककों कूर कपूर न भावत, एककों छनकि चिन विसेसा,
ओरकी आश करो किमि केशव, टारि टरे नहिं कर्मकि रेखा ५
अष्छर भेद न जानिउ केशव, बाल्पसों सो निपावट सोई,
देव कथा सुनवे तरस, हरसें मुढ देख व्है जब कोई,
हींग बराबर बावन चवन, मास दसें उनमाइ बिगोइ,
बाल न जानत है परमाष्छर मूरखके शिर सिंग न होई ६
पावक पक्षि पशू नग नाग, नदी नद लोग रच्यो दशचारी,
केशव देव अदेव रच्या, नरदेव रच्यो रचना न निवारी,
रचिकै नरनाह बलवीर भयो, भयो कृत कृत्य महाव्रतधारी,
दे करतापन आपन ताहि, दियो करतार दोउ "कर" तारी ७

पापि वघेलको राज सुखी गो, पेग्वरि . पठान अठानी,
केशव ताल तरंगिनि तूवर, सूखि गइ सिगरी वहु वानी;
शाहि अकव्वर अर्क उदय,—मिटी मेघ महीपनकी रजधानी,
उजागर सागरसी मधुशाहिकी, तेग चल्यो दिनही दिनपानी. ८
क्रोधित लागत डगसो दीसत, पीसत दंत सदा खुर पासे,
भूपति काह करे भरणी जस, मंगल काह लहे उन पासे;
सूरज चोथो कहा करे आठसो, वारमो ऊठ नहि उस रासे,
ठीगच डींग अडे जिनके घर, आइ पनोति वडे पग नासे. ९
आंगन आवत हे कोउ मागन, होय न होय तऊ कछु दीजे,
आस निरास न कीजिये वल्लभ, दुर्लभ होयके कामउ कीजे;
जोवनमें उपकार करो नर, जोवन गो तव हाथ घसीजें,
मानवको भव पायके केशव, जो कछु गम दिलावे सो दीजें. १०
चाह करे जनके तनमें सव, आयके पाय नमे भल भैया,
मातकों तातकों लागत वल्लभ, भामिनी भें नर लेत वलैया,
वात जुठी सव शांत समो, नित लोक गुनि सव वात कहैया,
केशवदास तो साच कहावत, सोई वडो जाकी गाठ रुपैया. ११
ऊद्यम जोर करे कर जोरके, पेटके काज महा दु ख माचे,
वात विचारत नाहि भलि वुरी, पेटके काज अहोनिस पाचे;
कोटि कलक सहे अपमान जु, पेटकी वेद कथा हस वाचे,
केशवदास तो सांच कह्यो भैया, पेट नचावत त्यों जग नाचे. १२
ऋतुराज गये घनकी वरखा, तनकी सव पीर गई छिनमें,
भर पावस मास उल्हास भयो पिक मोर झकोर करे वनमें;
पिउ पीउ पपीह करे वरही, कुल गाजत वीज विषे घनमें,
उस मास विलास न हो तवही, विरही जन आग लगो तनमें. १३
कृत्य तजी सव धर्मके मूरख, पापहिमें जिय पाच रह्यो हे,
भेदहि जानत रूढही तानत, अंगके संगसें राच रह्यो हे;
क्रूर कपट्ट कर जनसों धन, पुत्र कलत्र सों माच रह्यो हे,
मानवको भव हारी चूक्यो अब, केशवदास तो साच कह्यो हे. १४
लीक न लांघत हेह जु सायर, वायर सत्त धरेह जु कांई;
सूरको तेजह जु धरणीधर, मातरको हेह जु वरदाई;

मंत्र मइ अरु जंत्र मइह जु सिद्धकी सेव करो चित्त लाई,
केशवदास कहे सब आसत, सत्त धरो मेरे वल्लभ माई १५
उत्तर बोल न बोल्डि केशव, रीसमें वैर न चाल्डि तासों,
कीस्सेको हास गयो भैया रूडके, टेरत पानी तबें सब कासो,
गो सुभ शूक गये छोर वल्लभ, महुमर मेल विदेश गयासों,
औसर चूक गयो जब मेह विना, प्रसताव बुठो तब कासों १६
खाय शके नहि पीय शके नहि, देनकी बात नहीं करले,
ए सब मालकी छूब न लागत, चोर जुवारी राजा हरले,
फूटत शीप जबें कोइ छूटत, फूटतही खुरला खुरले,
केशवदास कहे सुन सज्जन, पापीको धन हुवो परले १७
भक्ष लल्लाट लिल्यो जोइ केशव, टार शके कहो कोन हे ऐसो,
राम रु भुज जोरावर रावन, भाविसों जोर कियो कहो कैसो,
कृष्ण विदेश फिरे पंच पाडव, राजनकोंसु लह्यो फल तैसो,
बार अनेक भयो अस केशव, काहेको जीवन कीजे अंदेसो १८
उद्यमसें जु संवे दु ख जावत, नावत दारिद उद्यम पासे,
जाप जपो भगवत सुधे मन, सकट आपद पाय पनासे,
वेद कह्यो दसी आप लगी तब, मान किये कल्हादिक नासे,
जागत सोवत हें भय जावत, केशवदास कहे सुविलासे १९
एकनको करिये उपकार जु, एकनको धुर दीजिये छोरें,
को गुन पावत सापकों दूधही, को गुन कागकों नीरज डोरें,
को गुन नीचकों सींचत अमृत, को गुन छारमें होम विडोरें,
को गुन नीच भलाइ करो किन, को गुन सिंहकी आख उघारे २०
उल्टि बात गुरु कह छोडदे, धर्मकि बात करो मल भावें,
तोल वनाय कह्यो मनसों, हम बालक धर्म कहो किमि आवें,
सोवन देह भई भर यौवन, धर्मकि बात बुढी कुम्हलावें,
केशव धर्मको जो नहि मानत, सो नर हाथ घसी पछितावें २१
गांवर गोठ कभू नहि जावत, खाय मगासे सदा दिन ढेरे,
नां घर खाट न पाट उमाटि, उचाट सदा परको धन हेरे,
ऐसे मजूरकों आसिस देवत, जाचक हाथ चहू दिस फेरे,
चोर कहा करिहें उनके घर, लीजत हे नव दीजत तेरे २२

जोग पको करामातकी मारत, मानत लोक सुने सहरो,
गल्ल पुराण सुनी हरखें, सब धर्म कथा सुनवे बहरो;
कूर कपट्टके हाथही आवत, साधुकों देख हरो चहरो,
केशवदास इसो जग लोग हे, आज लबारनको पहरो. २३

(रागमालादि विविध कवित्त.)

सात स्वर छौ राग रागिनी समेत गाय,
तीन ग्राम घोर छाय बाइस रसाला हे;
भैरे मालकोस अलापत हिंदोल धुनि,
दीपक श्री और मेघहू श्रुति विशाला है;
न्यारी न्यारी नायिका रूपके सागर भरी,
बीच बीच भार जामें एक एक आला है,
गुणनकी माला सुनि रीझि व्रजमाला आज,
बासुरीमें लालने बजाइ रागमाला है. १

शीखे रस रीति शीखे प्रीतिके प्रकार सबै,
शीखे केशवराइ मन मनको मिलाइबो;
शीखे सोहै खान नटतान मुसक्यानि शीखे,
शीखे सैन बैननिमें हँसिबो हँसाइबो;
शीखे चाह चाह सो जु चाह उपजाइबेकी,
जैसी कोउ चाहै चाह तैसी वाही चाहिबो;
जहां तहां शीखे ऐसी बातै घातै ताते सब,
तहां क्यों न शीखे नेक नेहको निभाइबो. २

खरो तो खजान जाने पातसाह सुख जाने,
दुजा सब आय माने धोरी जाकी धात हे,
चाकरको चित्त चोरे चंदहू चकोर जैसे,
कामिनीको मन हरे गोरो जाको गात हे;
तुं तो कवि बहोरो निपट निडावरो बडो,
लेवेकों ललचावे कहो कहों ऐसी बात हे;
याती मोरी मैया हें या कोप कर दैया हमें,
रुपाको रुपैया भैया दिया कैसो जात हे. ३

जूठ हे चतुनी नेन नेननकी नेह भरी,
जूठ हे येन वेन कही नट जातु हे,
जाकी हे करनी जूठ हिय्नी मिय्नी जूठ,
चय्नी हे जूठ सच जग सरसातु हे,
नेन जूठ मन जूठ रोम रोम रमे जूठ,
जगतको जूठ जाका जूठमें समातु हे,
कहे कवि केसोदास कहा एों मखान कर,
जाको जन्म वार वार जूठहीमें जातु हे ४

(चतुराक्षर)

सीतानाथ सेतुनाथ सत्तनाथ रघुनाथ,
यदुनाथ भजनाथ दीनानाथ देवगति,
देवदेव यक्षदेव विश्वदेव वासुदेव,
व्यासदेव दीनदेव देवीदेव दीनरति,
नरवीर रघुवीर यदुवीर भ्रजवीर,
मटीवीर वीरवीर रामचन्द्र चारुमति,
रागपति रमापति रामपति राधापति,
रसपति रासपति रसापति राजपति १

(दोहा)

(तिन अक्षर)

श्रीधर भूधर केसिहा, केशव जगत प्रमाण,
माधव राघव कसहा, पूरन पुरुप प्रमाण १

(द्वि अक्षर)

रमा उमा वानी सदा, हरि हर विधि सग वाम,
क्षमा दया सीता सती, वाकी रामा राम १

(एकाक्षर)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
गो गो गं गो गि अ आ, श्री धी हूँ भी भानु,
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३
मू वि प स्व ज्या द्यो हि हा, नौ ना स म मानु १

---

१ धेनु, मठ, गगाजी गीत, कल्पवृक्ष, किरन २ वानी ३ वासुदेव ४ ब्रह्मा ५. लक्ष्मी ६ बुद्धि. ७ लज्जा ८ भय ९ भानु-सूर्य १० पृथ्वि ११ पक्षि १२ प-ख-आकाश १३ मनुप, शुभ स्वम. १४ ज्वाला १५ दिवस १६ हिरण्यगर्भ, निश्चय १७ गंधर्व १८ गीनती १९ माटम २० सकपण २१ तारा. २२ मृत्यु २३ प्रस्तुत

(कवि-कवितादि विचार.)

विप्र न नेगी कीजिये, मुढ न कीजिये मित्त;
प्रभु न कृतघ्नी सेइये, दूषण सहित कवित्त. १
अंध बधिर अरु पंगु तजि, नगन मृतक मति शुद्ध;
अंध विराधी पंथको, बधिरति शब्द विरुद्ध. २
छंद विरोधी पंगु गण, नग्न जो भूषण हीन;
मृतक कहावे अर्थ बिन, केशव सुनहु प्रबीन. ३
तौलत तूल रहै नहि, कनक तुला तिल आधु,
त्योंहीं छंन्दोभंगको, सहि न शकै श्रुति साधु. ४
अगण न कीजे हीनरस, अरु केशव जातिभंग;
व्यर्थ अपारथ हीन क्रम, इनके तजो प्रसंग. ५
वर्ण प्रयोगी कर्णकटु, सुनहु सकल कविराज;
सबै अर्थ पुनरुक्तिके, छांडहु सिगरे साज. ६
देश विरोध न वरणिये, काल विरोध निहारि;
लोक न्याय आगमनके, तजो विरोध विचारि. ७
मगन नगन भन भगन अरु, यगन सदा शुभ जानि;
जगन रगन अरु सगन पुनि, तगनहि अशुभ बखानि. ८
मगन त्रिगुरु युत त्रिलघुमें, कशव नगन प्रमान,
भगन आदि गुरु आदि लघु, यगन वखाणि सुजान. ९
जगन मध्य गुरु जानिये, रगन मध्य लघु होइ;
सगन अंत गुरु अंत लघु, तगन कहत सब कोइ. १०
एक कवित्त प्रबन्धमें, अर्थ विरोध जु होई;
पूरबपर अनमिल सदा, व्यर्थ कहें कवि लोई. ११
एकबार कहीए कछु, बहुरिजु कहिये सोइ;
अर्थ होय कै शब्द पुन, सो पुनरुकित सु होइ. १२
दोष नहि पुनरुक्तिको, एक कहत कविराज;
छोड अर्थ पुनरुक्तिको, शब्द कहै यहि साज. १३
उत्तम मध्यम अधम कवि, उत्तम हरिरस लीन;
मध्यम मानत मानुषन, दोषन अधम अधीन. १४

यद्यपि सुजाति सुलक्षणी, सुसरस सुवृत्त,
भूषण बिन न विराजई, कविता वनिता मित्त १५

(त्रिविध नायिका)

दिव्य अदिव्य कहे सु कवि, दिव्यादिव्य विचारि,
त्रिविध नायिका जगतमें, प्रथम कहै विहारि १
दिव्य देवतिय वर्णिये, नारि अदिव्य सानि,
अमर नारि भुव अवतरी, दिव्यादिव्य जानि २
नखतें दिव्य तिया वरन, सिखतें विबुधादिव्य,
नखतें सिखतें वर्णिये, सो तिय दिव्यादिव्य ३

(विविध भक्तिबोध)

रा सुन संकट अघ विकल, भगे खुले मुख्य,
मुख मकार पटकत मिलो, बीच भस्म हो प १
रा कहतें छोडवियो, म पहिलो गजराज,
पहिले गोली लगत हैं, पीछे होत अवाज २
धरणी धरणी जात क्यों, सुनि धरणीके ईश,
रामदेव नरदेव मणि, देव देव जगदीश ३
राज राज संग ईश द्विज, राज राज मन मान,
त्रिप विषधर अरु सुरसरी, विप विप मन उर आन ४
कुमतिहारि सहारि हठ, हितहारिनि प्रहारि,
कहा रिसात विहारि धन, हरिमन हारि निहारि ५
शूरनके तन सूम मन, काठक मठकी पीठ,
केशव सूखो चर्म अरु, शठ हठ दुर्जन दीठ. ६
सती समर भट सत मन, धर्म अधर्म निमित्त,
जहां तहा ये वरणिये, केशव निश्चल चित्त ७
तरल तुरग कुरंगगण, वानर चल्दल पान,
लोमिनके मन स्यार जन, बालक काल विधान ८
कुलटा कुटिल कटाक्ष मन, सपनो यौवन मीन,
सज्जन अलि गज श्रवण श्री, दामिनि पवन प्रवीन ९

दंड अनुग्रह धीरता, सत्य शूरता दान,
कोश देशयुत वरणिये, उद्यम क्षमानिधान २५

सुंदरि सुखद पतिव्रता, शुचि रुचि शील समान,
यहि विधि रानी वरणिय, सलज सुबुद्धि निधान २६

विद्या विविधि विनोदयुत, शील सहित आचार,
सुदर शूर उदार विभु, वरणिय राजकुमार २७

राजनीतिरत राजरत, शुचि सर्वज्ञ कुलीन,
क्षमी शूरयश शीलयुत, मंत्री मंत्र प्रवीन २८

प्रोहित नृपहित वेदविद, सत्यशील शुचि अंग,
उपकारी ब्राह्मण रिजु, जीत्यो जगत अनग २९

स्वामिभक्त जित श्रम सु धी, सेनापति अभीत,
अनालसी जनप्रिय यशी, सुख संग्राम अजीत ३०

तेज बढ़े निज राजको, अरि उर उपजे क्षोभ,
इंगित जनहि समय गुण, बरणवु दूत अक्षोभ ३१

पच भूत पातक प्रकट, पंच यज्ञ जिय जानि,
पच गव्य माता पिता, पचामृत बखानि ३२

पाच अग गुणसग पद्, विद्या दशयुत चारि,
आगम सगम निगममति, ऐसे मंत्र बिचारि ३३

आयु घटे आशा बढे, मनहू बढ घट जाय,
प्रीति बढे ना तिल घट, कहे कवि केशवराय ३४

जिन बोलो जिनही हसौ, जिन रुठौ जिन जाहु,
ऐसेंही बैठे रहो, ऐसेंही मुसकाहु ३५

ध्यान पृथुकी वक्रता, अरु प्रह्लादको भाव,
कोटि जतन करि करि थके, नेक न तजत सुभाव ३६

केशव केसन अस करी, जस सत अरि न कराहि,
चद्रबदनि मृगलोचनी, बाबा कहि कहि जाइ ३७

केशवलाल.

(शारदास्तुति इ०—कवित्त.)

मानवमें मंजु त्योंजु देव अरु दानवमें,
गान किन्नरीकेमें अखिल जस जाको है;
माननीय महिपें महान कविराजनको,
राजत अनूप एसो रूप न रमाको है;
केशव निवासी मानसरको हुलासप्रद,
हंस अवतंस जाको वाहन सदाको है;
जानत हों जो में कछु रीत कविताकी तात,
सो सव प्रताप वह मात शारदाको है. १

अति अभिराम धाम कामकी अचल ताकी,
छांड खोटी आश कोटी दामकी वदामकी;
संत औ महंत सव जानत हे अंतमांहि,
दशा नाशवंत रसा आदि ले तमामकी;
सार ये असार जगमांहि यार जीवनको,
करिक विचार जपमाला हरिनामकी;
मोक्षपद दायक त्यों नायक सुकर्मकी सो,
केशव हे सेवा सियारामकी न रामकी. २

आदर मिले हें जहां अवुध नरोंको नित,
तहां जायवेकी कहो पंडितको कामका;
स्वामीकों सतावे वह सेवकको काम कहा,
सोई दुःख पावे माल खावे जो हरामका;
केशव कहत चूंथे चर्म क्रूर कर्म करे,
धावे नहि धर्मपथ सोहे नर नामका;
कामका न दामका न घटी पल जामका न,
हमारे भरोसा एक साचा सिय रामका. ३

राम गुन गाई भये तुलसी सवाई जग,
जसकी कमाई जिने जवर जमाई है;
जाकी कविताईकी मिठाई मजेदार जामें,
सुधाकी समानताकी संपति समाई है;

केसोदास आदि कवि राम गुन गाई भये,
नामसों अमर आज ताम ना नवाई है,
ज्ञानी चित्त एसो निज श्रेय हित केशोलाल,
ताको शिर नाई हम करत बडाई है ४
एन कैसे नेनवारी कोकिलसे बेनवारी,
चेनवारी त्यों न रेन निंदनी व्हा करे,
वाको कहा करे कहो दान मरदाने नर,
आनद अथाह जाके वदन वहा करे,
देखि दगहासों श्यामसुंदर रमापतिको,
केशव रतिको नित चित्तमें चहा करे,
प्रेम विरहा करे न त्योंजु तिरहा करे न,
मुखसों न हा करे न दिलको दहा करे ५

(समस्यापूर्ति-सवैया)

चित मो चमकावति हे चपला, यह हे तुव सोतिनके वस क्यों
अलि साजि सिंगार सबे इतही, खडि हो इतनी घरि लाल्स क्यों,
कवि केशव रोचत नांहि कछु, अति आकुल आज [illegible] क्यों,
हम सोचत हे अब आइ यहे, सखि ऋतु वसतमें [illegible] क्यों १
गरजे हैं गुमान भरी गरजें, सरसे हैं सुदामिनि [illegible]
करवेको इश्कत्तमें केलि किधों, तमको जु [illegible] हे [illegible]
कवि केशव या अनुमान कियो, अवलोकि इने [illegible] रसा,
भइ हे अति आशक आज मनों, सखि [illegible] २
भरनेकु चली जमुना तटपें जल, वाहि [illegible]
जलसंग परी शफरी घटमें, पर [illegible],
मनमोहन माधुरि मोहनकी, सुनि [illegible],
अति विह्वल हे नव गोपसुता, [illegible] चली [illegible]

[illegible]

(कटि [illegible])

सँहथी इश्यार [illegible] काम,
राहतें तनि [illegible] किनिये,

चोट न बचत ओट कीनेहू कपाट कोट,
भौन भोहरेहू भारे भय अवरेखिये;
केशोदास मत्र तत्र जंत्रहून प्रतिपच्छ,
रच्छ लच्छ लच्छ नजरच्छक न लेखिये;
भेदियत मर्म वर्म ऊपर करेई रहे,
पीर घनी घायल न घाव अवरेखिये.　　　१

सीता जैसी सती पति जाको रामचंद्र जैसो,
ताकी तिया दशकद रावन क्यों हर है;
नल राजा दमंतीकी जल मीन जैसी प्रीति,
ऐसें कौन जानते विछोह बीच पर है;
भाविक जे कर्मरेखा टारी नहि टरे नेक,
सोनेहीकी लंक कभी आगी लागी जर है;
मानसके हाथ कछु बात नहि केशोदास,
लिखि हे विधाता सो विधातानाथ कर है.　　　२

वाहन कुचाल चोर चाकर चपल चित्त,
मित्त पतिहीन सूम स्वामी उर आनिये;
परवस भोजन निवास वास कुपुरन,
बरखा प्रवास केशोदास दुख दानिये;
पापिनके अंग संग अंगना अनग वश,
नीत अपयशजुत चित्त हित हानिये;
मूढता बुढाइ व्याध दारिद झुडाइ आवि,
यहही नरक नरलोकन वखानिये.　　　३

चूक जात जौहरी जवाहिर परख जाने,
चूक जात पंडित पढैया वेद चारिक,
चूक जात घोडेहीका चढैया सवार पूरे,
चूक जात रागी राग गावे सुरधारी के;
चूक जात चितेरोही चित्र शुभ चित्रवेमें,
चूक जात लेखो यों लिखैया लेखधारीके;
कहे केशोदास शूर रनहीमें चूक जात,
एक नांहि चूके है चुगल मति मारीके.　　　४

(शरद शोभा-कवित्त)

शोभाको सदन शशि बदन मदनकर,
बंदे नरदेव कुवलय बरदाई है,
पावन पद उदार लसत हस कमाल,
दीपती जलजहार दिशि दिशि धाई है,
तिलक चिलक चारु लोचन कमल रुचि,
चतुर चतुर मुख जगजिय भाई है,
अमल अंबर चीचि नील पीन पयोधर,
केशोदास शारदाकी शरद सुहाई है ५

केशोराम.

(नेह निभावन-कवित्त)

शीखे रस रीति और प्रीतिके प्रकार शीखे,
शीखे केशोराम मन मनको मिलायबो,
शीखे सौहे खान नटिजान मुसक्यान शीखे,
शीखे सैन बैननमें कहिबो कहायबो,
शीखे चाह चाहिबेकों वैसें उपजायबेको,
जैसे कोइ चाहे याको तैसेही चहायबो,
जहा जहां शीखे ऐसी बातनकी घातनको,
तहा क्यों न शीखे एक नेहको निभायबो १

केसरी.

(वैराग्य बोध १०)

आवत हे काम चाम पशुके अनेक ठांव,
हस्तिनके अस्ति बेरा दामतें बिकावे हैं,
गडरीके बारकों सुधारिकें दुशाले रचे,
कुलिंगके पंखनकी कलगी बनावे हैं,
छीपनके पेटनमें मुक्ता अमूल्य होत,
मोरनके पीछनको कृष्णको चढावे हैं,

केसरी करत ऐसे जानीके सकल चेतो,
मरे हुये मानसको कुकर न खावे है. १
आवत न संग कछु वारन तुरग आदि,
आवत न संग वडी दौलत जमावे है;
गाम धाम वाम वंधु मात तात पुत्र प्यारे,
संगही न आवे सव स्वारथी कहावे है;
अंग न चलत संग प्रानके चलन समे,
औरही उठाय जाय आगमें जरावे है;
केसरी कहत तातें उरमें विचार देखो,
जो जो किये कर्म सोइ आप संग आवे है. २

केसरीसिंह.

(नीति-न्याय द्रष्टांत.)

कीर औ कपोत जैसें, आइकें विहग केते,
सुखकों न पावे तो वे कहा तरुवर है;
मृगराज मृग आदि पशुनकें वृंद केते,
वसि कष्ट पावे तो वे कहा गहवर है,
मच्छ कच्छ हंस वग दादुरसे आदि केत,
पावे नाहि सुख तो वे कहा सरवर है;
केसरी कहत तैसें लोक निज देश वसी,
न्यायकों न पावे तो वे कहा नरवर है. १

(कामरूप वसंत.)

चंपक चमेली अरु केतकी कनैर जुई,
ताके वान साजिके उमंग सरसायो है;
दाउदीके तुरा अरु मुकुट हजारा किये,
हे गल हेमल इश्क पेचा मन भायो है;
केसरी कहत सवे फूलके सिंगार साज,
मकरको ध्वज सौ तौ केवरा बनायो है;

शैलके करन काज साजिके समाज एसे,
मानो ऋतुराज रतिराज बनि आयो है १

(कविराजरूप वसंत)

मनहर मोगरा रु सोसनी सवैया कहे,
कवित्त गुलाब दोहा चपक सुहायो है,
मधुभार मालती रु मोतीदाम मोतिया हे,
सोरठा सुवास जाई सुघर बनायो है,
बेली सो भमार अरु गेंदको भुजंगी कहे,
गुलतुरा गीत चित उमग बढायो है,
भरय सुवास अरु छंद फूलचय रचि,
मानो ऋतुराज कविराज बनि आयो है १

(महाभिमानी शूरनिंदा)

पेठें पेठें फिरते मरेठ पेंठे खाय खाय,
धाय धाय हाय हाय जाय पैठे बाडोंमें,
सेनापति सैनकों न सैनतें सम्हार सक्यो,
छक्यो सोई रह्यो मद भैनहीके गाडामें,
झूठे सरदार यार दारके बडाइखोर,
ताकी जश होत कैसें प्रगट पवाडामें,
बाडा ढिग होतो रजपूत वश व्हाडाको तौ,
खाडा खडकाय खेल करत अखाडामें १

कृष्ण.

(भाषाकाव्य प्रशंसा)

बृज भाषा भासत सकल, सुरबानी सम तूल,
ताहि बखानत सकल कवि, जानि महा रस मूल १
बृज भाषा बरनी कविन, बहु बिधि बुद्धि बिलास,
सबको भूखन सतसया, करी बिहारीदास २
मे कोऊ रस रीतिको, समजौ चाहे सार,
पढे बिहारी सतसया, कविताको शृंगार ३

भाति भांतिके अर्थ बहु, यामें गूढ अगूढ,
वाहि सुने रस रीतिको, मग समुजे अति मूढ. ४

....

सवल छमी निःगर्व धनी, कोमल विद्यावंत;
भू भूखन यह तीन है, उपजत खपत अनंत. १

(परस्परकी शोभा, भक्ति.)

भूपति प्रधान विना, गुनिजन ज्युं ज्ञान विना,
वासर ज्युं भान विना जंखो दरसावे है;
दुल्हा ज्युं जान विना गाना ज्युं तान विना,
सुंदरता सान विना चातुर न चाहे है,
दोलत ज्युं दान विना दफतर दिवान विना,
त्रिया प्रिय मान विना कान्ति घट जावे है;
पंडित पुरान विना काजी कुरान विना,
कृष्ण कवि कहे एते शोभा नहि पावे है. १

ऐहो शठ धरी निज माया मांस जात टरी,
पीछे पछतै हे अब समझ ले नरकी,
सोयो क्यों अचेत चेत ल्हाव हरिहीसों हेत,
जीवनकी आश नाहीं पल छिन भरकी;
कंचन समान देह सोई मिलि जैहे खेह,
करिले सनेह एक आश रघुवरकी;
कृष्णही कहत रहे देहको सो नेम कर,
चार घरी घरकी तो एक घरी हरकी. २

(सवैया.)

औसर आपनो हेरे रहे सब, घात लगे चहे दाव चलायो,
यातें हे भागकों पूरो भरोस, वृथा करि लालच नाहक धायो;
कृष्ण भई यह सांचि कहावत, कीनो मुजावरो नेम न भायो,
मागन पूत गई तो मदारसों, भो यों कुतार भ्रतार गँमायो. १

(औरंगझेब प्रशंसा)

कंपत अमर खलभल मचे ध्रुवलोक,
उडगनपति अति नेक न सकात है,

देशके दिनेशके गनेश सब कांपत है,
शेषके सहस फन फैलि फैलि जात है,
आसन डिगत पाकशासन सु कृष्ण कवि;
हाल उठे दुग्ग बहे गद्रफसों खात है,
चढतें तुरंग नवरंग शाह बादशाह,
जिमी आसमान थर थर थहरात है १

(परस्पर मन मिलाप-सवैया)

वैदको वैद गुणीको गुणी, ठगको ठग ठूमक ठूमक भाये,
कागको काग मराल मरालको, फाध गधाको गधा खजुलावे,
कृष्ण भनै बुधको बुध त्यों अरु रागिको रागि मिले सुर गावै,
ज्ञानिसो ज्ञानि करै चरचा, लबराके ढिगा लबरा सुर पावै १

कृष्णदास.

(ब्रह्मदर्शन-ज्ञानप्रकाश)

परब्रह्म गुरु देवजू, चिदानंद अविनाश,
ताके पद बंदन करी, बरनों ज्ञानप्रकाश १
दीन वचन हुइ शिष्यनें, नमस्कार किय आय,
बंध्यो मन संसारमें, छूटे कौन उपाय २
दुतियो प्रश्न कहत हों, नीके कहिये मोय,
पच कोश वपु तीनकी, उत्पति कैसें होय ३
सुन शिष्य उत्तर कहत हों, निश्चय कर उरमांहि,
छूटे एक विचारतें, दूजो साधन नाहि ४
एकहिसें त्रिविधा भयो, द्रष्टा सत्ता पाय,
पंच कोश करि रचि रह्यो, कहों तोहि समुजाय ५
ईश्वर तुम त्रिविधा कह्यो, चेतन सत्ता पाय,
अब इनकू भिन भिन करी, कहो मोहि समुझाय ६
आनद कोश अनादि है, ताकूं कारन जान,
मन बुद्धि इंद्रिय प्रान लें, सूक्षम लिंग प्रमान ७
सत्तर तत्वको लिंग यह, तीन कोशमय जान,
पंच प्रान इंद्रिय दशो, मन बुधिसों पहिचान ८

पंच ज्ञान इंद्रिय बुधि, सोइ कोश विज्ञान;
पंच कर्म इंद्रिय रु मन, सोइ मनोमय जान. ९
पंच प्रानको प्रानमय, कोश कहावे सोय;
प्रान अपान उदानकूं, व्यान समानहि जोय. १०
कारन सूक्षम देह हुइ, नीके कहे जनाय;
अब जो स्थूल शरीरहू, दीजें मोहि बताय. ११
अन्न रचित हे अन्नमय, सो तन प्रगटहि देख;
पंच कोश तोसूं कहे, लच्छन रूप विशेष. १२
कारन लिंग रु स्थूल तन, नीके कहे बनाय,
जीव शब्द कासों कह्यो, दीजें मोहि जनाय. १३
मिल्यो अविद्याके विषे, आपो मान्यो आय;
भूल्यो अपने रूपकुं, जीव मान तूं ताय. १४
पुनि गुरुसों शिष्य प्रश्न करि, वाको कहो निरूप;
कहो जीव केसें भयो, केसें आहि स्वरूप. १५
चेतनको प्रतिबिंब है, पड्यो अविद्यामांहि;
तद्आत्मक होई रह्यो, आपो जानत नांहि. १६
कर्त्ता भोक्ता देह हूं, यही जीवको रूप;
जब कर्त्ता आपे नहीं, केवल शुद्ध स्वरूप. १७
चिदानंद अनुसूत है, कहो जीव क्यूं दोय;
चेतनको क्यूं भास हुइ, निर्विकल्प है सोय. १८
निर अवयव आकाश है, घट करि भासत रूप;
आतम जोग अज्ञानतै, दीसे जीव स्वरूप. १९
कृष्णदास कहे मनन करि, जो धारै उरमांहि;
ज्ञानप्रकाश प्रकाशतें, रहै तिमिर कछु नांहि. २०

(शक्तिमहिमा–कवित्त.)

प्रथम गनेश ताकों, धावत सुरेश आदि,
विघन हनेश जाके मूषक सोहात है;
मौर है षडाननके, बैल है महेशजूके,
पंछी हरि विधि केसो सृष्टि गुन गात है;

मूषक मयूर मेल पंखिन बढाइ कह्यो,
इनकी तौ जात कौन बातमा निकात है,
अरे भट कृष्णदास राख मातहूकी आश,
सिंहपें चढी है सो तो कछु करामात है १

कृष्णलाल

(क्षत्रिय पच्चवळ)

विक्रमते भोजते अकबरते बीर नर,
दाता खानखाना बहु भांतिन मनाये हैं,
यन्त्रसे दरत परतंत्रसे कढत मुख—
मत्रसे कहत जनु कामरू पढि आये हैं,
कृष्णलाल चाहैं सोइ करैं समरथ रथ,
हाथी बिना अकुशके बिधिने बनाये हैं,
क्षत्रिनके पत्रिनके रविनके कविनके,
ओरहिते ऐंडे बैंडे पैंडे चलि आये हैं १

(ऋतु वर्णन)

आगे आगे दौरत बकौल गय वाह ऐसे,
पाछे पाछे भौंरनकी भीर भइ भीम है,
बाजे राजे किंकिणी मजीठ कल गाजे जबे,
घुघट ध्वजामें मैन सीम छुज सीम है,
कृष्णलाल सौरभपे चदनपै जाकी जीत,
ऐसो कोन भूतलमें गहर गनीम है,
मदन महीपबाज सदन शिशिरताज,
मदन बहादुरकी कापर मुहीम है १
उमटी किशोरी वृषभानकी हरष होरी,
सोहे संग गोरी चोरी केसर मई मई,
पिचकी जराव जरी भरी लाल रगनते,
मोहनके मुख दई छबिसों छई छई,

कृष्णलाल ग्वालपै गुलालकी चलाइ मूठि,
ताते नभ लाली भई चंचल नई नई;
बादलाके चूर परिपूर ह्वैल सत मानो,
रवि चंद्र जीत करि डार्यो है रई रई. २

खासे खस खाने खास खाने तहखाने तल,
छूटत सरोजकी सुगंध रवटी रहै;
अत्तर अरगजेसों केसरी गुलाब नीर,
छिरके किवार द्वार झार झपटी रहै;
कृष्णलाल जेठमें गमन कैसे कीजे प्यारे,
चंदन मलयके पक अंक दपटी रहैं;
ज्वाल उदरबटी कुच बटी काम गटी तटी,
हटी मरहटी नटी लटी लपटी रहै ३

चातक चिंहुक मत मुरवा कुहुंक मत,
झिंगुर किंहुक मत भेकी मननाय मत;
चकवा चिकार मत पपीहा पुकार मत,
बुंदे झर धार मत धार धहराय मत,
कृष्णलाल गाय मत पीरे उपजाय मत,
बालम बिदेश पाय, मैन तन ताय मत;
पौन फहराय मत चपला चवाय मत,
धाय मत धुरवा ओ घन घहराय मत. ४

खूबचंद.

(कविकी कदर-कवित्त.)

मान दश लाख दियो दोहा हरिनाथकैपै
हरिनाथ कोटि दै कलंक कवि कैहैको;
बीरबर दश कोटि केशव कावितनमें,
शिवराज हाथी दियो भूषणते पैहैको;

छप्पयमें छतीस लाख गंगै खानखाना दियो,
याते दीन दूनो दान ईवरमें एहैको,
राजाश्री गम्भीरसिंह छन्द खूबचन्दकेमें,
निदामें दगा दईन दीन कोउ देहैको ९

खेमकरण.

(अस्तोदय-छप्पय)

कबहुक घरपर महल, महल नहि कबहुक भरपर,
कबहुक सरवर नीर, नीर नहि कबहुक सरवर,
कबहुक तरवर पत्र, पत्र नहि कबहुक तरवर,
कबहुक नरघर लछि, लछि नहि कबहुक नरघर
कहि खेमकरन चेतो सुघड, नरपति निज यह निरखि कर,
अचल कहे सो नहि अचल है, अचल एक हरिनाम थिर. १

गजानंद.

(संगदोष-कवित्त)

बैसिय तो अब पीठ पाईये तो फल मीठ,
घूरके पहार बेठ आपही घटाइये,
खेलिये तो रग ख्याल ख्यालतें हुये खुशाल,
बालतें विनोद करी मोद ना घटाइये,
कांकरी उडाय जैसें डारियें पुरीपमाही,
उठत कुवास पुनि आपही घटाइये,
गजानद कहे तैसे छोडिके शयान संग,
मोलें अकुलीनसें कुलीनता घटाइये १

गजेन्द्रशाही.

(दुर्गास्तुति इत्यादि.)

सुखद हुलासिनी प्रकाशिनि अखिल लोक,
दास दुख दूरि करि विरदहि धारि है;
प्रबल प्रचंड भुज दंड बश शस्त्रधारि,
मारि दुराचारी दुष्ट क्षणमें संहारि है;
श्रीगजेन्द्रशाही अम्बे निजजन हेतु जानी,
कैए वार दैत्यदल दंगल विडारि है;
सर्वरूप धारि हरिहरहू सहायकारी,
मातु दुर्गा मेरी सदा शरण तिहारी है. १

एरे मेरे मन धारू सिख मेरे हिय बीच,
त्यागी माया फन्दे भजु दशरथ नन्देरे;
श्रीगजेन्द्रशाही जेते नभमें न तारे ते ते,
तारे अघवारेते भये हैं निरद्वन्देरे;
श्रीमन महाराज कौशलेश राघवेन्द्र,
ऐसो जपि नाम जन काटे यमफन्देरे;
छांडि छलछन्दे सब आनंदके कन्दे,
मन एक वार सीता रामचन्दे क्यों न बन्देरे. २

सुन्दर सुहावन सरूप मन भावन,
दनुजको सतावन हरन दुःख द्वंदके;
जग आदि कारन सँहारन असुर मद,
तारन सुजन कोटि दायक अनन्दके;
श्रीगजेन्द्रशाहि सुखदायक सुरनि सदा,
लायक सब निके सहायक सुरेन्दके;
छांडि छलछन्द सब आनँदको कन्द,
भजु दारिदहरन है शरन रामचन्दके. ३

पाल्यो देश देशको भुआवल नरेश भले,
यशको प्रसार्यो जग नभ पूर्ण चन्दसे;

अन्त रटि राम दशरत्थ सम गंग तट,
चढिके विमान सुरधाम गौ अनन्दसे,
भरतसे वच्छराहि शोमनाथ शत्रुहन,
ल्खन अहलसिंह उदित अमन्दसे,
नल्यिा मखानी औधि राजे राजधानी भये,
ईसरनकरा देवराजा रामचन्दसे ४

(सवैया)

राधिका संग सखीन को लै, बहु फाग रची भजमें करि घूमहि,
दै चिटकी करताल्हि नाचहि, गावती ग्रीव कपोतसे दूमहि,
शाहि गजेन्द्र तहाँ नँदलालको, बाल नचावति ताल्दे झूमहि,
गाल गुलाल ल्गाय मले मुख, गोपवधू भजलालके चूमहि १

गद.

(विविध अनुभव उपदेश-छप्पय)

जरो रूप गुन पखे, जरो बिन तेज तुरंगम,
जरो मित्रसों कपट, जरो दुरिजनसों सगम,
जरो अर्थ बिन बात, जरो भावत बिन हांसो,
दुख बिन दारू जरो, जरो एकल्डो बासो
पात फूल फल बिन जरो, (सो) सोमलरूप अफज्ज फल,
कवि गद कहेरे गुनिजनो, जस बिन सपत जाओ जल १

जरो अदल बिन शाह, जरो इह जुद्ध शूर बिन,
जरो वूज बिन हुनर, जरो मेहबूब नूर बिन,
जरो पम्न बिन बाग, जरो कूवन जो जल बिन,
जरो तीन*बिन पान, जरो रुपवंती नर बिन
ल्ज्जा बिन जीवन जरो, समज लाल इह शब्द फल,
मन मोर जरो बिन भजनके, भजे नहीं भगवंत पल २

तरुनिकाज्ञ रघुबीर, विकट बन बन बन रोप,
तरुनिकाज्ञ ल्केश, सीस दश अपने खोप,

* कथ्था, चूना और सुपारी

तरुनिकाज कैकच्च, निकंदन कुलको कीनो,
तरुनिकाज सुरपती, शाप सिर अपने लीनो.
चतुरानन भये ए तरुनिसें, मदनकांड शंकर दही,
कवि गद्द केहेरे तरुनिसें, कोनहिकी पत ना गई. ३

चंद न कियो निकलंक, कायातें अमर न कीनी,
लक्ष्मी लई दातार, कृपन करमें दई दीनी;
सोन न कियो सुगंध, करी कस्तूरी कारी,
निष्फल नागरवेल, बोत फल लग्गा ताडी.
चकवा रेन बिछबो कियो, सागर जल खारो कियो,
कवि गद्द केहेरे ठाकुरा, तुं ठैर ठैर भूली गियो. ४

बुरो प्रीतको पंथ, बुरो जगलको बासो,
बुरो नारको नेह, बुरो मूरखसें हासो;
बुरी सूमकी सेव, बुरो भगिनी घर भाई,
बूरी नार कलच्छ, सास घर बुरो जमाइ.
बुरो पेट पंपाळ अरु, बुरो सुरनमें भागनो,
कवि गद्द केहेरे ठक्करो, सबसें बूरो मांगनो. ५

कहा सूमको दाम, कहा फागुनको वूठो,
कहा मूर्खको मान, कहा निर्धनको तूठो;
कहा नीचको संग, कहा कोहूको खौनो,
कहा कीडिकी लात, कहा गाडर दूझौनो;
अवगुनी गुन कहा जानही, उस कूटन कहा सेवियें;
कवि गद्द केहेरे ठक्करो, फूट नाव कहा खेलिये. ६

(स्त्रीरुपक-हंसभार.)

हंस गयंदपर चढ्यो, गेंद पर सिंह बिराजे,
सिंह सागर सिर धर्यो, ताथें दो गिरिवर गाजे;
गिरिवर पर एक कमल, कमल बिच कोयल बोले,
कोयलपर एक कीर, कीरपें मृगहु डोले,
मृगे शशिहर सिर धर्यो, शेषनाग तापर रहे,
कवि गद्द केहेरे ठक्करो, हंस भार कितनो सहे. १

गदाधर.

(नामस्मरण कवित्त)

राम कहो रमैया कहो कृष्ण कहो कन्हैया कहो,
मुरली मनोहरकी आश चरण गहु रे,
चिंतामणि चूडामणि केशव बनवारी कहो,
वृंदावन कुंजनमें सदा सग रहु रे,
अमृत वचन बोले सतनके संग डोले,
काम क्रोध लोभ मोह इनको मति गहु रे,
भक्त गदाधर कहे पुकार तीन बार बार,
राधाकृष्ण राधाकृष्ण राधाकृष्ण कहु रे १

गिरिधर (पहिला.)

(कुंडलिया)

(प्रेम-प्रेमिक महत्व)

लैले ओ मजनू कहां, कहा प्रीतकी रीत,
प्रान माधवानलहुतें, कामकुंडला दीन
कामकुंडला दीन, माधवानल तन त्यागें,
भली निवाही प्रीत, रीतकूं दोप न लागे
कहे गिरिधर कविराय, प्रीत कहि यही है गेले,
चली जायगी बात, कहां मजनू ओ लैले १
मद हरिया भजरायके, कापे मागन जाहि,
पतिव्रता पियने तजी, पीय परहरे नाहि
पीय परहरे नांहि, छांड प्रीतमकी चाही,
प्रीतमकी रुचि ओर, तो तउ नेह निवाही
कहे गिरिधर कविराय, रूप गुन आगर दरिया,
सात सास्त्र है साख, सदा मतके मद हरिया २
मित्र विछोहा अति कठिन, मत दीजे करतार,
वाके गुन जब चित चढै, बर्षत नयन अपार
बर्षत नयन अपार, मेघ सावन झुरि लाई,
अब बिछुरे कब मिलौ, कहा कैसी बनि आई

कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो बिनति एह,
हे किरतार दयालु, देहुजनि मित्र बिछोहा. ३
नयनां लगन अपार है, पटा अपट है जाय;
गुन गौरव अरु शीलता, धीरज धर्म नसाय.
धीरज धर्म नसाय, फेर वाही संग छूटे,
छिनक बुद्धि हो जाय, फेर वाही संग जूटे.
कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो मोर सयना,
कठिन प्रीतिकी रीति, जहां लागे दुइ नयना. ४
नयनाकी नोकें बुरी, निकस जात जस तीर;
हेरे घाव न पाईये, वेधे सकल शरीर.
वेधे सकल शरीर, वैद का करे वैदाई,
करिहो कोटि उपाय, घाव नहि देत दिखाई.
कहै गिरिधर कविराय, विरहिनी हेत है चोकै,
समुझि बूझिके चलो, बुरी नयननकी नोकै. ५
प्रीति किजिये बडेनसों, समया लावे पार;
कायर कूर कपूत है, वोरि देत मझुधार.
वोरि देत मझुधार, प्रीतकी कवन बडाई,
पछिताने फिरि देहिं, जगत्में अपयश पाई.
कहै गिरिधर कविराय, प्रीति सांची सिखि लीजै,
व्यवहारी जो होय, तऊ तन मन धन कीजै. ६

(नारीदोष दर्शन.)

नारी परघर जाइ जो, अरे भलो नहि मान;
जो घर रहै निदानसों, चाल ढाल पहिचान.
चाल ढाल पहिचान, वहुरि उत्पात न होई,
जो कुछ लागै दोष, अरे सुन आवै रोई.
कहै गिरिधर कविराय, समय पर देत है गारी,
मरौ पुरुष जिय जान, जबै परघर गइ नारी. १
नयना रोटी कुचकुची, परती माखी बार,
फूहर वही सराहियै, परसत टपकै लार.

परसत टपके डार, झपटि हरिकासों चावे,
झठा पोंछे हाथ, दोउ कर सिर सजुवावै
कह गिरिधर कविराय, फुहरके याही धयना,
फजरौटा नहि होइ, लुमाठै आंजे नयना ७

(जातिस्वभाव)

करे कियारी कपूरकी, मृगमद मरहा बंध,
सींचे नीर गुलाबसें, ल्हसुन तजे न गंध
ल्हसुन तजे न गध, रुद्र जे अगर सजूता,
कबहु होहि गजराज, कबहु शूकरके पूता
कहै गिरिधर कविराय, बेद भाषे यह सारी,
बीज बोयो सो होय, कहा करै उत्तम क्यारी १

(समय परिवल)

साई अवसरके पडे, कौन सहै दुख द्वंद,
जाय बिकाने डोमघर, वै राजा हरिचंद.
वै राजा हरिचंद, करै मर्घट रखवारी,
फिरे तपस्वी वेप, फिरे अर्जुन बल्धारी.
कहै गिरिधर कविराय, बनाइ भीम रसोई,
कौन करै घटि काम, परै अवसरके साई १

सिंहिनि सिखवत सिंह कह, बेहा परै संभार,
जे हाथें कुंजर हन्यो, तेहि मेढक जनि मार
तेहि मेढक जनि मार, कुल्हि जनि दोष लगावै,
बरु फाका करि मरे, जगत्में शोभा पावै.
कहै गिरिधर कविराय, हस जंबुक औदिंगिनि,
समय परेकी बात, सिंहको सिखवे सिंहिनि २

हरना विरभेउ सिंहसें औझुर खुरी चलाय;
मार सह झीना पर्या, सिंहा चले पराय.
सिंहा चले पराय, समय सामर्थ विचारी;
कुल्हि कालिमा लाय, हसे हसिके पग धारी.
कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो मेरे अरना,
आजु गम करि जाय, काल्ह हों हांके हरना. ३

(धोखेसे धास्ती.)

धोखे दाडिमके सुआ, गयो नारियर खान;
खम खाई पाई सजा, फिर लगो पछितान.
फिर लगो पछितान, बुद्धि अपनीको रोयो,
निर्गुणियनके पास, बैठ गुन अपनो खोयो.
कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो मोरे नोखे,
गयो फटकही टूटि, चोंच दाडिमके धोखे. १

(कलि विडंबन.)

हंसा उपवासी रहे, कौवा चूगे कपूर;
राज गयो सतजूगको, कल्जुग आयो पूर.
कल्जुग आयो पूर, ऊंचकूं नीच नमावे;
मूरख पामे मान, पडितकुं दूर पठावे.
कहै गिरिधर कविराय, मेरे मनमेंही शंसा,
कौवा चूगे कपूर, रहै उपवासी हंसा १

हीरा अपनी खानिको, बार बार पछिताय;
गुण किंमत जाने नही, तहां बिकानो आय.
तहा बिकानो आय, छेद करि कटिमें बाध्यो,
बिन हरदी बिन लोन, शाक ज्यों फूहर राध्यो.
कहै गिरिधर कविराय, कहां लगि धरिये धीरा,
गुण किंमत घटि गई, यहै कहि रोयो हीरा. २

सांई तहा न जाइये, जहां न आप सोहाय;
बरन विवेक जाने नहीं, गदहा दाखे खाय.
गदहा दाखे खाय, गऊ पर दृष्टि लगावै;
सभा बैठि मुसक्याय, यही सब नृपको भावै.
कहै गिरिधर कविराय, सुनोरे मेरे भाई,
तहां न करिये वास, प्रातही चलियै साई. ३

(बडोंकी बडाई

साई एकै गिर धर्यो, गिरिधर गिरिधर होय;
हनूमान बहु गिरि धरे, गिरिधर कहै न कोय.

गिरिधर कहै न कोय, हनू द्रोणागिरि लायो,
ताको तनको तूट, पर्यो सो कृष्ण उठाया
कहै गिरिधर कविराय, बडेनकी बडी बडाई,
थोरेमें यश होय, अशो पुरुपनको साई १

गुनके गाहक सहस नर, विनु गुन ल्है न कोय,
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन,
दोउको इक रंग, काग सब भये अपावन
कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मनके,
विन गुन ल्है न कोइ, सहस नर गाहक गुनके २

रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामें मा सोय,
छांह न वाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय.
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहै,
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जरसें जैहै
कहै गिरिधर कविराय, छांह मोटेकी गहिये,
पाती जो झरी जाय, तऊ छाहेंमा रहिये ३

पीवे नीर न सरवरो, बूंद स्वातिकि आश,
केहरि तृण नहि चरि शके, जो मत करै पचास
जो मत करै पचास, विपुल गजयूथ विदारै,
सुपुरुप तजै न धीर, जीव बरु कोऊ मारै
कहै गिरिधर कविराय, जीव जोधक मरि जीवै,
चातिक बरु मरि जाय, नीर सरवर नहि पीवै

(दैवाधीनता)

जिमबो मरिबो भोगनो, यह नहि अपने हाथ,
जानत हैं यह नदसुत, विहसत बछरुन साथ
विहसत बछरुन साथ, चारि जुगके रखवारे,
इंद्रमान जिन हर्यो, विपतिके काटनहारे
कहै गिरिधर कविराय, व्याव शाहनसें करिबो,
आछत सीताराम, उमिरि अपनी भरी जीबो १

(दशरथ वचन.)

पुत्र प्राणतें अधिक है, चाहिये युग परिमान;
सो दशरथ नृप परिहरे, वचन न दीन्हों जान.
वचन न दीन्हों जान, वडनकी यहि वडाई;
बात रहे सो काज, और यह सम्पत जाई.
कहे गिरिधर कविराय, भये नृप दशरथ ऐसे;
पुत्र प्राण परिहरे, वचन परिहरे न ऐसे. १

(केकयी कलंक.)

रही न रानी केकयी, अमर भई यह बात;
कवन पुरुषके पापतें, वन पठयो जगतात.
वन पठयो जगतात, कन्त सुरलोक सिधायो;
जेहि सुत काजे गयो, सब नहि वदन निहार्यो.
कहे गिरिधर कविराय, भई यह अकथ कहानी;
यश अपयश रहि गयो, रही नहि केकयि रानी. २

वेन खटके मरदकुं, काट कलेजा कोर;
मूरखकुं संशा नहीं, जेसा खंडा ढोर.
जेसा खंडा ढोर, विचारा जह तह भटके,
स्वअभिमानी सोय, मेरे निज शीर पटके.
कहे गिरिधर कविराय, देहिमें दुःख चटके,
मुवा न छोरे रीस, मर्दकुं वेन खटके. २

(बापसें झगरत बेटा.)

सांई बेटा बापके, बिगरे भयो अकाज,
हरणाकश्यप कंसको, गयो दुहुनको राज.
गयो दुहुनको राज, बाप बेटामें बिगरे,
दुस्मन दावागीर, भये महिमंडल सिगरे.
कहे गिरिधर कविराय, युगन याही चलि आई,
पिता पुत्रके वैर, लाभ ऐको नहि सांई. १

बेटा बिगरो बापसों, करी त्रियनको नेहु;
लटापटी होने लगी, मोहि जुदा करि देहु.

मोहि जुदा करि देहु, घरी मा माया मेरी,
लेहौ घर अरु बार, करौ मैं फजियत तेरी,
कहै गिरिधर कविराय, सुनो गवहाके लेटा,
समय पर्यो है आय, बापसें झगरत बेटा २

सांई एसे पुत्रसें, बाझ रहै बरु नारि,
बिगरी बेटे बापसें, जाय रहै ससुरारि
जाय रहै ससुरारि, नारिक नाम बिकानो,
कुलके धर्म नसाय, और परिवार नसानो
कहै गिरिधर कविराय, मातु मूखै वहि ठांई,
अस कपूत क्यों भयो, बाझ रहतिऊ बरु सांई ३

(बंधु प्रेम)

साई अपने भ्रातको, कबहु न दीजै त्रास,
पलक दूर नहि कीजिये, सदा राखिये पास.
सदा राखिये पास, त्रास कबहूं नहि दीजै,
त्रास दियो लंकेश, ताहिकी गति सुनि लीजै
कहै गिरिधर कविराय, रामसों मिलियो जाई,
पाय विभिषण राज, लंकपति बाज्यो सांई १

(चाणाक्य राजनीति)

जाकी धन धरती लई, ताहि न लीजे संग,
जो संग राखैही बने, तो करि राख अपंग
तो करि राख अपंग, फेरफर कैसो न कीजे,
कपट रूप बतराय, ताहिको मन हर लीजे
कहै गीरिधर कविराय, खुटक जैहै नहि वाकी,
कोटि दिलासा देउ, लई धन धरती जाकी १

बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछिताय,
काम बिगारे आपनो, जगमें होत हसाय
जगमें होत हसाय, चित्तमें चैन न पावै,
खान पान सन्मान, राग रंग मनहि न भावै
कहै गिरिधर कविराय, दु ख कछु टरत न टारे,
खटकत है जिय माहि, कियो जो बिना बिचारे

सांई समय न चूकिये, यथाशक्ति सन्मान;
का जानै को आइ है, तेरी पौरि प्रमान.
तेरी पौरि प्रमान, समय असमय तकि आवै,
ताको तूं मन खोलि, अंक भरि कंठ लगावै.
कहै गिरिधर कविराय, सबै यामें सुधि आई,
शीतल जल फल फूल, समय जनि चूको सांई. ३

राजाके दरबारमें, जैये समया पाय;
सांई तहां न बैठिये, जहा कोउ देय उठाय
जहा कोउ देय उठाय, बोल अनबोले रहिये,
हांसिये नाहि हसाय, बात पूंछे ते कहिये.
कहै गिरिधर कविराय, समय सों कीजै काजा,
अति आतुर नहि होय, बहुरि अनखै है राजा. ४

बीती ताहि बिसारि दे, आगेकी सुधि लेइ;
जो बनि आवै सहजमें, ताहीमें चित देइ.
ताहीमें चित देई, बात जोई बनि आवै,
दुर्जन हसै न कोय, चित्तमें खेद न पावै.
कहै गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती;
आगेको सुख होय, समुझ बीतीसो बीती. ५

गढपतियनको धर्म है, करै दोउनको ध्यान;
जिमी दोज रैनी करै, मनका राखो जान.
मनका राखो जान, किल्लेपर तोप चढावो,
कोस कोसको गिरद, कटि मैदान करावो.
कहै गिरिधर कविराय, राज राजनके सथियन;
जंग भंग नहि होय, होय जौ अस गढपतियन. ६

(ठग वणिक.)

बनियां अपने बापको, ठगत न लावे बार;
निशि बासर जननी ठगै, जहां लेत अवतार.
जहां लेत अवतार, मास दश उदरै राखै,
गुरुसें करे विवाद, आप पंडित है भाखै.
कहै गिरिधर कविराय, बेंचे हरदी औ धनियां,
मित्र जानि ठगि लेहि, जहां बग भक्ता बनियां. १

आटामें आटा घटै, घटै दालमें दार;
कबहुक घटि है धीवमहें, तो है है पुनि रार
तो है हे पुनि रार, मारि जूतिन जी लेहीं,
जाने सकल जहान, दाम एको ना देहौ
कहै गिरिधर कविराय, बैठि हैं तुम्हरे घाटा,
पनहिन मूड ठठाह, कबहुक जो घटि है आटा २

झूठे मीठे बचन कहि, ऋण उधार ले जाय,
लेत परम सुख उपजे, ले कै दियो न जाय
ले कै दियो न जाय, ऊंच अरु नीच बतावै,
ऋण उधारकै रीति, मागते मारन धावै
कहै गिरिधर कविराय, जानि रहे मनमें रूठा,
बहुत दिना है जाय, कहै तेरो कागज झूठा ३

बनिया बेश्या एकसें, तामें फेर न जान;
रसंइ रस बतरात हैं, तन मन धनसों आन
तन मन धनसों आन, बात हितहींकी भाखे,
निर्धनियन पहेचान, घरी एको नहि राखे
कहै गिरिधर कविराय, सुनो रे सबेर दुनिया,
मतलबहीके यार, होत बेश्या और बनियां ४

(स्वार्थ और कृतघ्नता)

साइ सब संसारमें, मतलबका व्यवहार,
जबलगि पैसा गाठमें, तबलग ताको यार
तबलग ताको यार, संगही सगमें डोले,
पैसा रहा न पास, यार मुखसें नहि बोले
कहै गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई,
बिनु मतलब व्यवहार, यार बिरला को साई १

कृतघन कबहु न मानहीं, कोटि करे जो कोय,
सर्बस आगे राखिये, तऊ न अपनो होय
तऊ न अपनो होय, भलेकी भली न माने,
काम काढि चुप रहै, फेरि तिहि नहि पहिचाने
कहै गिरिधर कविराय, रहत नितही निर्भय मन,
मित्र शत्रु ना एक, दामके लालच कृतघन २

सांई सन औ दुष्ट जन, इनको यहै सुभाव;
खाल खिचावै आपनी, परबंधनके दाव.
परबंधनके दाव, खाल अपनी खींचवावे,
मूंड काटि कूटिये, तऊ वह वाज न आवै.
कहै गिरिधर कविराय, जरै अपनी कटवाई,
जलमें परि सर गये, खुटाई तजी न सांई. ३

चुगुल न चूके कबहु को, अरु चूके सब कोइ;
गोलन्दाज कमानिया, चूक उनहुसें होइ.
चूक उनहुसें होइ, जे बांधे बरछी गुल्ला,
चूक उनहुसें होइ, पढे जे पंडित मुल्ला.
कहै गिरिधर कविराय, कलाहूते नट चूके,
चुगुल चौकसीदार, सखुर कबहुं नहि चूके. ४

(लकडी और कमरी.)

लाठीमें गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग;
गहिरी नदि नारा जहां, तहा बचावै अंग.
तहां बचावै अंग, झपटि कुत्ता कह मारै,
दुश्मन दावागीर, होय तिनहूको झारै.
कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो धुरके बाठी,
सब हथियारन छाड, हाथमह लीजे लाठी. १

कमरी थोरे दामकी, आवै बहुतै काम;
खासा मलमल वाफता, उन कर राखै मान.
उन कर राखै मान, बूंद जह आडे आवै,
बकुचा बांधे मोट, रातको झारि बिछावै.
कहै गिरिधर कविराय, मिलति है थोरे दमरी,
सब दिन राखै साथ, बडी मर्यादा कमरी. २

(दम्भी सिपाही.)

पगडी सूही बांधिके, भयो सिपाही लोग;
घास बेंचिके खात है, भयो गांवमें रोग.
भयो गांवमें रोग, पूंछ निवरी देखावहु,
मनमें बडे हौ छैल, राग पनघटपर गावहु.
कहै गिरिधर कविराय, मारि न तुमतें है चूही,
भये सिपाही आनि, बांधिके पगडी सूही. १

गिरिधर दुसरा.

(मिव-शिव अभेदादि विचार)

गिरिधर सो जो गिरि धरे, यतन शुन्य बिन खेद,
कारन सूक्षम स्थूल तन, गिरिधर प्रत्यक वेद
गिरिधर प्रत्यक् वेद, जीव है नितहीं पापत,
बिना स्रोत धुन सुने, वाक बिन शब्द अलापत
कहे गिरिधर कविराय, जासमे नहिं मित्र अर,
सबको आपन मान, आतमा सो तुं गिरिधर १

राम तुंही तुहि कृष्ण है, तुंहि देवनको देव,
तुंहि ब्रह्मा शिवशक्ति तुं, तुंहि सेवक तुंहि सेव
तुहि सेवक तुंहि सेव, तुही इश्वर तुहि सेपजु,
तुंहि होय सब रूप, कियो सबमें परवेसजु
कहे गिरिधर कविराय, पुरुष तुही तुहि वामा,
तुंहि लछमन तुंहि भरत, शत्रुघन सीता रामा २

बेडा तुं दरियाव तु, तुंहि वार तुंहि पार,
तुंहि तरावे तुं तरे, तुंहि मध डूबनहार
तुंहि मध डूबनहार, सर्व लीला है तेरी,
तुंहि घंटा तुंहि संख, तुहि रनसिंगा भेरी
कहे गिरिधर कविराय, तुही बस्ती तुंहि खेडा,
तुहि नायक तुंहि नीर, तुंही पतवारी बेडा ३

भूल्यो जब तुं आपकुं, तबही भयो खराब,
रेरेका अस्पद भयो, उतर गइ सब आब
उतर गइ सब आब, दरोदर खावे धक्के,
धावे कबी केदार, खंड पुन जावे मक्के
कहे गिरिधर कविराय, कुफरके पल्ने झूल्यो,
बकने लग्यो तुफान, जमा सब अपनी भूल्यो ४

अमर नाथ इक आतमा, सब देवनको देव,
कोटिक मध्ये संत जन, जानत है कोउ भेव

जानत है कोउ भेव, विवेकी पुरुप अकामी,
अनुगत अंतर बाज, व्योमवत् अंतरजामी.
कहै गिरिधर कविराय, विना अवयव जू भंमर;
इद्रिय गणको नाथ, आतमा सो तूं अंमर. ५

नारायन यह आप है, स्वप्रकाश विज्ञान;
निज स्वरूपको भूलवो, ह कल्पित अज्ञान.
है कल्पित अज्ञान, नानाविध नाच नचावै,
घटी जंत्रको उर्ध, अर्ध इत उत भरमावै.
कहै गिरिधर कविराय, पीवै जव ज्ञान रसायन;
स्वप्रकाश विज्ञान, आपकों विपे नरायन. ६

सांई लोक पुकार दे, रे मन हो तुं रींद;
यह यकीन दिल्में धरो, मै सवको खाविंद.
मै सवको खाविद, एक खाल्क हकताला,
खल्कतकी फनाहिं, रहो हरसें परवाला.
कहै गिरिधर कविराय, आप ना दुखी दुखांई;
मंन खुदाइ खुदाइ वांग हरदम दे सांई. ७

मन रे मदी वात छड, गद्दा तज हंकार;
ज्ञान धनुप उरमें ग्रहो, करहं व्रह्म टंकार.
करहं व्रह्म टंकार, जरा तूं पग धर आगे;
भर्म जो पंच प्रकार, हृदेसो ततछन भागै.
कहै गिरिधर कविराय, मूल संसारका खन रे,
नष्ट होय अज्ञान, द्वैत फिर रहै न मन रे. ८

देही सदा अरोगं हे, देह रोगमय चीन,
येह निश्चय परिपक जिसू, सोई चतुर प्रवीन.
सोई चतुर प्रवीन, विवेकी सो है पडित;
करे अत्यंत न रसन, आतमा लखे अखंडित.
कहै गिरिधर कविराय, आपणा आप सनेही;
परमानंद स्वरूप, और नहि एहै देही. ९

अतंत मलिन यह देह है, देहि अतिशें शुद्ध;
उभय सुअंतर जानिये, कस सौच करे की बुद्ध.

कस सीचे करे की बुद्ध, भेद निश्चय किम जबहीं,
विमल फार्ल्ते विमल, मलिन शुध होय न कबहीं
कहे गिरिधर कविराय, जहा लगि शास्त्र संता,
सबका यहि सिद्धात, शरीर असार अतता १०

शरीरी सकल शरीरमें, व्यापत नभवत् एक,
स्थावर जगम तनजते, है परिछिन्न अनेक
है परिछिन्न अनेक, दृश्य जडरूप विकारी,
द्रष्टा चेतन नित्य, आतमा अव्यभिचारी
कहे गिरिधर कविराय, मिटे तव सब दिलगीरी,
जब निश्चय साक्षात, होत अपरोक्ष शरीरी ११

वानी मात्र जगत सब, चिद वितरेक न रंच,
ज्यों मृद सत घट मिथ्यता, त्यों कल्पत परपंच
त्यों कल्पत परपंच, ततुमें जैसें वस्तर,
कनकमांहि आभरन, लोहमें जैसें सस्तर
कहे गिरिधर कविराय, द्वैतकी धूरि उडानी,
मनकी जहां न गम्य, विपय करि सके न वानी १२

वानी विपय न करि शकै, मनकी जहां न मरम्म,
सो परमेश्वर ब्रह्म है, ऐसो लियो मरम्म,
ऐसो लियो मरम्म, अपनपो आप निहाल्यो,
मोह संशय विपरीत, भ्रांतिको मूल उखार्यो
कहे गिरिधर कविराय, विलोवों काहे पानी,
मनकी जहां न गम्म, विपय करि सके न वानी १३

आतम भिन्न जो जो क्रिया, सो सो भ्रमको मूल,
कायक वाचक मानसी, सबी आपनी भूल
सबी आपनी भूल, मोक्ष हित करै जु करनी,
ज्यों रवि चाहै तेज, जाय खद्योतकि सरनी
कहे गिरिधर कवि पुरुप, साध्य तो सबी अनातम,
स्वत सिद्ध अपवर्ग, रूप चिदघन तू आतम १४

हाइ हाइ तबलग रहै, जबलग वाह्य हु दृष्ट,
अतरमुख जब धी भई, सब मिट जाइ अनिष्ट

सब मिट जाइ अनिष्ट, रहो उत्तर वा वागड;
जहां जाइ तहां आनंद, जब मन भयो इकागर.
कहै गिरिधर कविराय, चारि फिर आवै धाई;
जीव ब्रह्म इक ज्ञान, विना ना मिट है हाई. १५

दसमा ग्रह अभ्यास है, नव ग्रहका जो मूल;
जबलग देहाभिमान है, तबलग मिटे न शूल.
तबलग मिटै न शूल, करै केती चतुराई;
देव जजै जप जजै, न सुरको होत सहाई.
कहै गिरिधर कविराय, ज्ञान दृढ देवै चसमा;
मल अविद्या नास, होइ न ग्रह रहै न दसमा. १६

मौला लोक पुकार दे, रे मन मत हो तंग;
पुना किसोंकों मत करो, ब्रह्ममें लागै रंग.
ब्रह्ममें लागै रंग, अविद्यक बंधन टूटैं;
मिलै विवेकी संत, कपूतोंका संग छूटे.
कहै गिरिधर कविराय, त्याग कर मारग खौला;
जौन तान परकार, आपकों लख ले मौला. १७

(भिक्षु-फकीरी धर्म-कर्म विचार.)

फकीरी करनी कठिन है, छडणी सबी प्रवृत्त;
जीवत मरणा जगत्में, बाजांतर होणां निवृत्त.
बाजांतर होणां निवृत्त, न रखणी रंचक मोताजी;
जो जेसी जाइ बने, तिसीमें रहणां राजी.
कहै गिरिधर कविराय, भ्रांतिकी फारे चीरी;
एक आत्ममें मगन, तिसीका नाम फकीरी. १

भिक्षा खावै मागके, रहे जहां तह सोय;
काम न राखे किसीसों, जो होवै सो होय.
जो होवै सो होय, विरक्तकी यही निशानी;
ब्रह्मविद्याके विना, अवर बोलै नहि बानी.
कहै गिरिधर कविराय, ज्ञानकी देवै शिक्षा;
क्षुधा निवृत्ति अर्थ, मागके खावे भिक्षा. २

लियो ठीकरो हाथमें, दसही दिशा जगीर,
ऐसो जगमें कौन हैं, जो कर सके तगीर
जो कर सके तगीर, सो तो जन्म्यो नहि मानव,
देव जक्ष गधर्व, न उतपत हूओ दानव
कहै गिरिधर कविराय, नास जिन धर्मको कीयो,
लोक लाज सब त्याग, ठीकरो हाथमें लीयो ३

भिक्षू बालक भारजा, पुन भूपति यह चार,
न जाने अस्ति नास्ति कछु, देही देहि पुकार
देही देहि पुकार, निसि वासर आठो जाम,
जाग्रत सुपनेमाहि, कूरना दूसर काम
कहै गिरिधर कविराय, जगत्में कोइ तितिक्षू,
जिनको तृष्णा नांहि, सो ऐसो विरलो भिक्षू ४

रहणी सदा इकांतको, पुन भजणी भगवंत,
कथन श्रवण अद्वैतको, यही मतो है संत
यही मतो है संत, तत्त्वको चिंतन करणो,
प्रत्यक ब्रह्म अभिन्न, सदा उर अतर धरणो
कहै गिरिधर कविराय, वचन दुरिजनको सहणी,
तजके जन समुदाय, देश निरजनमें रहणी ५

वहता पाणी निर्मला, पडा गध सो होय,
त्यों साधू रमता भला, दाग न लागे कोय
दाग न लागे कोय, जगत्में रहै अलेपा,
राग द्वेष जुग पेत, न चितकों करे विक्षेपा
कहै गिरिधर कविराय, शीत उष्णादिक सहता,
होइ न कछु आसक्त, यथा गंधा जल वहता ६

एका एकी सिद्ध पुनि, सिद्ध साधक दोइ मुनीस,
तीन चार कलटब सम, लस्कर है दश बीश
लस्कर है दश बीश, तहां नाना विधि जगडो,
सदा रहै विक्षेप, जु मेरी तेरी रगडो।
कहै गिरिधर कविराय, पुरुष जो परम विवेकी,
करके सबको त्याग, सु विचरे एकाएकी ७

मनकी मेटै दीनता, करै वासना नाश;
प्रत्यक्ष ब्रह्म अभिन्नका, पुनि पुनि बोध प्रकाश
पुनि पुनि वोध प्रकाश, विषयकी ममता जारे,
लोक ईषणा आदि, कामना सकल निवारे.
कहै गिरिधर कविराय, त्याग सब अहंता तनकी,
तत्त्वज्ञान उपदेश, दुष्टता हरही मनकी. ८

एक फकीरी लभे जब, दूसर ज्ञान अथाह;
उभै रतन ढिग जिनहिके, तिनकों क्या परवाह.
तिनकों क्या परवाह, वस्तु जिस पास अमोलक,
कोन तीनकों कमी, अटूट धन जिन घर गोलक.
कहै गिरिधर कविराय, भ्राति जिन दीनी छेक,
सो क्यों होवै दीन, ब्रह्मवत जिनके एक. ९

लोड रही ना अर्थकी, नहि परमारथ भ्रांत;
कोन वस्तुके वासते, फिर निकासत दात.
फिर निकासत दात, तवी जव होइ अपेक्षा,
विना प्रयोजन कोइ, प्रवृत्त ना काहुं देख्या.
कहै गिरिधर कविराय, फकीरी अपनी बोरे,
प्रमादी ढिग तव जावै, जव कछु होवै लोरे. १०

आवे तो अटकाउ नहि, जातेकौ नहि रोक;
इस लौकिक व्यवहारमें, हर्ष शोक नहि टोक.
हर्ष शोक नहि टोक, नहि खाइस एक मासा,
फकीरी करनी लगी, जवै फिर किसकी आशा.
कहै गिरिधर कविराय, कोइ रोवै कोइ गावै,
नहिं कीसीको काम, भावै आवै जि न आवै. ११

जंगलमें मंगल तुजै, जो तूं होवै फकर,
खिजतम तेरी सब करे, दिल्के छाड मकर.
दिजके छांड मकर, फकीरीका रंग लागै,
मूल सहित संसार, रोग सगरो भ्रम भागे.
कहै गिरिधर काविराय, कुफरकी तोरो संगल,
जह इच्छा तह रहो, नगरवा अथवा जंगल. १२

मडी बाघ बैठत नहीं, नहीं प्रबोधत सती,
फरन मामकों वश फरे, बीत राग नर यती
बीत राग नर यती, न भिक्षा करे सथूला,
विविक्त देशमें रहे, मिटाय अविद्या मूला
कहै गिरिधर कविराय, भ्रांतिकी तोरी तगडी,
अन्न प्रान मन बुद्धि, कोश आनद जो मडी १३

चेला उनकूं चाहिये, जिनके घन वा धाम,
इन बिन चेला जो करै, सो है पुरुष सकाम
सो है पुरुष सकाम, कामनावान अजारी,
बीत रागको त्याग, बनायौ महा बजारी
कहै गिरिधर कविराय, विरक्त जन रहै अकेलो,
जिनकों तृष्णा रोग, लयो सो मूढो चेलो १४

आश्रय आशा उभय तजि, खावै टुकडा मांग,
कहू किनारे पड रहे, राख टाग पर टांग
राख टाग पर टांग, चाह चिंता सब खोवै,
भावैं जागै निसि भर, अथवा दिन भर सोवै
कहै गिरिधर कवि महिपत ठाकर द्वार उपासरे,
धर्मसाल पुन छाड, रहे भिक्षुक बिन आशरे १५

तृपार्वतकों पतित नर, पुना तपायो गाम
सो नहि आवै गंग ढिग, गगासों उपराम
गंगासों उपराम, सुरसुरी तीन न जावै,
सुरध्वनिकों क्या काम, जु ताके ढिग चलि आवै
कहै गिरिधर कविराय, [त्यों] नख शिख प्रास्यो तृपा,
सो सत्संग न करै, संतकों है क्या तृषा १६

चार प्रहर दिन हर बसत, चार पहर पुनि रात,
आतम चिंतन कीजियें, त्याग अनातम बात
त्याग अनातम बात, प्रसंग न कब्हु चलावै,
अद्वय अखंड अपार, आतमा तिसमें लावै
कहै गिरिधर कविराय, आपकों चीनैं सार,
देह-मन-इंद्रिय-प्रान, यह मिथ्या जानै चार १७

काल काम करना जोउ, सो तो कीजै आज;
मूल अविद्या निंदतें, शीघ्रहि तूं अब जाग.
शीघ्रहि तूं अब जाग, अपना करले कारज,
ऐसो मानव देह, फेर कब मिलही आरज.
कहे गिरिधर कविराय, काट कर भ्रमके जाल,
लखो आपको ब्रह्म, काल जों जो है काल. १८

(वर्णाश्रम धर्म-तीर्थादि भेद.)

जो सग आश्रम वरनके, ना जा तिनके कोल,
जावे तो मत बैठ तिह, बैठे तो मत बोल.
बैठे तो मत बोल, बोलहि तो छोर बिखेरो,
वहि पूछे व्यवहार, थोरमैं करो निवेरो.
कहै गिरिधर कविराय, कहे मत तिनके लग जो,
ना जा तिनके कोल, वरनआश्रमके सग जो. १

कूकर पागल काटतहि, वह पागल होय तात;
त्यों नर मजवी संगते, नर मजवी हो जात.
नर मजवी हो जात, बात हिरदे धरि लीजै,
प्रान जाय तो जाय, मजवीका संग न कीजै.
कहै गिरिधर कविराय, अधम है सबसे सूकर,
तातें बीसो अधम, मजबका जो जो कूकर. २

पासी जबलग मजबकी, तबलग होत न ज्ञान;
मजब पासि टूटै जबै, पावे पद निर्वान.
पावे पद निर्वान, निरंजनमाहि समावे,
जनम मरन भव चक्र-विषे फिर जोनि न आवे
कहै गिरिधर कविराय, बोध बिन भ्रमै चोरासी,
तबलग होत न ज्ञान, मजबकी जबलग पासी. ३

मेरी तेरी छोडकै, पक्षापक्षहि नाख;
राग द्वेषको दूर कर, निजानंद रस चाख.
निजानंद रस चाख, और रस लागै फीके,
एक ज्ञानके भये, दुःख मिट जावै जीके.

कहै गिरिधर कविराय, रग जो पैरै गेरी,
तन यह होवै सफल, तजे जब मेरी तेरी ४

देह दु खकी खान है, मह सत सोफकि खान,
अविद्या जो है आपनी, जन्माकर पहिचान
जन्माकर पहिचान, समझ जो सुखकी खानी,
जामैं वेद प्रमान, पुना आपतकी बानी
कहै गिरिधर कविराय, निरंकुश वृति एही,
छूटे तन अभिमान, दृष्टि फिर रहै न देही ५

आतम रथी शरीर रथ, बुद्धि सारथी जान,
मन दोरी इंद्रिय हय, मारग विषय पिछान
मारग विषय पिछान, देह इंद्रिय मन योगा,
दुख सुख भोगै भोग, तत्त्ववित कहै प्रयोगा
कहै गिरिधर कविराय, है एही परमातम,
बुद्धि सारथी जान, देह रथ रथी जु आतम ६

माया मोह मद राग पुनि, ममता दंभ रु काम,
यह जामैं नहि पाइये, सो परमेश्वर राम
सो परमेश्वर राम, सर्वका जाननहारा,
और सर्वे अध्यस्त, आपधिष्ठान अपारा
कहै गिरिधर कविराय, ध्यान धर सुन रे माया,
आश्रय आशा तजि, अरोपित जिसमें माया ७

भोग परम सुख आपका, दिल्गीरी कर दूर,
भावें वेच फरोच फल, भावें कुछ कपूर
भावें कुछ कपूर, पहिर कंबल वा खासा,
भावें धरियै ध्यान, भावें नित देख तमासा
कहै गिरिधर कविराय, करो भावें हठ जोग,
अथवा ज्ञान समाधि, करो ब्रह्मानद भोग ८

सुनियत है भागीरथी, पातक हरन अपार,
पुना पाप निर्मूलकों, गगा ब्रह्म बिचार
गंगा ब्रह्म विचार, कर्म छेदनकों छैनी,
अविद्या उदर बिदार, नर्कों जम वाढी पैनी

कहै गिरिधर कविराय, जु चितियत कथियत गुनियत,
सो सब जान अनामत, जो जो श्रवनें सुनियत. ९

(प्रारब्ध-कर्ममहिमा.)

अवसमेव भुक्तव्य हे, कर्म सुभासुभ जोय;
ज्ञानी हस करि भोग व्है, मूरख भोगे रोय.
मूरख भोगे रोय, पुनः पुन मस्तक कूटै,
प्रारब्धहि जो होय, बिना भोगै नहि छूटै.
कहै गिरिधर कविराय, दैव अनुसार दिवसही,
जैसें जैसें भाग, पुरुषके फलै अवसही. १

भाग फलत सर्वत्र है, नच विद्या पौरष सरल;
हरि हर मिल सागर मथ्यो, हरकूं मिल्यो गरल.
हरकूं मिल्यो गरल, हरीने लच्छमी पाई,
षट भग दो संपन्न, भागकी कही न जाई.
कहै गिरिधर कविराय, कोउ मिल खेले फाग,
कोउ हमेशां रोत है, आपो अपने भाग. २

दैव नाम है भागका, सो है जिसका सूर;
ताकी हानी करनकूं, है किसका मगदूर.
है किसका मगदूर, आप विधि विष्णु महेसू,
वाकी रच्छा करै, भवानी सहित गनेसू.
कहै गिरिधर कविराय, भैरवी शकती सैवजु,
इक मन सकै उखार, दाहने जब तक दैवजु. ३

दैव अधिन व्यवहार सब, अन्य अधीन न वीर;
अन्य अधीन जु होय कोइ, पीवन देत न नीर.
पीवन देत न नीर, तोयमें देत न न्हावन,
पावक देत न तपन, पवन पुन देत न खावन.
कहे गिरिधर कविराय, आतमा इक निरवैवजु,
उभय अविद्या सहित, अरोपत जिसमैं दैवजु. ४

कीयो चाहै कामकों, परे तासमें देर;
पुनः विपर्यय होइ सो, यहि अदष्टको फेर.

यहि अदृष्टको फेर, कर्म ग्रह टरे न टार्यो,
बिन भोगे प्रारब्ध, और विष मरे न मार्यो
कहे गिरिधर कविराय, जु पुरव दीयो लीयो,
सो सो भोगत पुरुष, दु ख सुख अपनौ कीयो ५
खीर पिवैया सकस जो, सो नहि खावत घास,
दुग्ध मिले तो तृप्त हुइ, नहि तो रहै उपास
नहि तो रहे उपास, और उपाव ना तीसर,
अदृष्टके अनुसार, आप रच दीनो ईसर
कहे गिरिधर कविराय, है जिनका भोजन नीर,
तिनकों नित जल मिले, खीर खोरेकों खीर ६
भोजन छाजन नीरकी, करै सुचिंता मूढ,
ज्ञानी चिंता ना करें, निज पदमाहि अरूढ
निज पदमाहि अरूढ, तिनोंकों चिंता कैसी,
तिसहीमें आनंद, अवस्था प्रापत जैसी
कहै गिरिधर कविराय, अवर ना रखै प्रयोजन,
आतम चिंतन करें, अदृष्ट पहुचावत भोजन ७
होनी हुइ सो ना मिटे, अनहोनी ना होइ,
ऐसो निश्चय जिनहिकों, मानव कहिये सोइ
मानव कहिये सोइ, और तो समहिं पाये,
अल्प बातकों समजत, नहि निज गुरुके खाये
कहै गिरिधर कवि जान्यो, जीसने एक अजोनी,
तिसकी है सब लीला, जो अनहानी होनी ८
खानो अपनो प्रारब्ध, फिर क्यों होना दीन,
रहनौ जगत सराइमें, दावा कहा प्रवीन
दावा कहा प्रवीन, जु कीनौ अपनो पइयें,
बुरे कामका नाम, भूल कर कबहु न लइये
कहै गिरिधर कविराय, जु तिल इक संग न जानो,
तो संग्रह नहि बने, बने देनो वा खानो ९

(भाषाभिमान विचार)

गपौडा भाषाका कोइ, संसकृतका कोय,
कोइ गपौडा पारसी, अंग्रेजी पुन होय

अंग्रेजी पुन होय, गपोडा कोइ अरव्वी,
ब्रह्मज्ञान विन विद्या, सव ज्यों पाकमें दरव्वी.
कहै गिरिधर कविराय, वेग समझो कोइ मोटा,
जा करि आतम लभै, भला है सोइ गपोडा. १

पोथी पाना फेंकके, विचरो व्है निहकाम;
आतम अनुसंधान कर, दिलमें रहे अराम.
दिलमें रहे अराम, ओर कछु फुरे न शंका,
अहंब्रह्म परिपूर्ण, निसि दिन वाजे डंका.
कहै गिरिधर कविराय, दृश्य तुज विन सव थोथी,
तुं सवको धिष्टान, अरोपित जिसमें पोथी. २

भाषा भूसा फेंकके, सडी संस्कृत डार;
उभय अरोपत जिस विषे, सोहं चिद निरधार.
सोहं चिद निरधार, त्याग सगरी सिर दरदी,
परको किस्सा छोर, खवर ले अपने घरदी.
कहै गिरिधर कविराय, वेदको समझो आशा,
तुझमें युग अध्यस्त, देववानी नरभाषा. ३

(व्यवहार विवेकविचार.)

अंधा पीसे पीसना, कूकर धस धस खात;
तैसै मूरख जनोंका, धन अहमक ले जात.
धन अहमक ले जात, संच करि वहवी मरि है,
ताकें पाछै ओर, कुवुद्धी दावा करि है.
कहै गिरिधर कविराय, भई इस वंधाकि गंधरी,
लग्यो स्वानके दाव, पीसनां पीसै अंधरी. १

खायो जायजो खा हरे, दिया जायसो देह;
इस दोनूंसें जो वचे, सो तुम जानो खेह.
सो तुम जानो खेह, किसे पुन काम न आवै,
सर्व सोसको वीज, पुनः पुन तुझे रु आवै.
कहै गिरिधर कविराय, जरन त्रैधनकै गायो,
दान भोग विन नास, होत जो दियो न खायो. २

तप करवेकू नरमदा मरवेकू सुरधुनी,
भजन करनेकूं हारिहर, भाखे रिषिवर मुनी
भाखे रिषिवर मुनी, वसिष्ट परासर व्यासा,
दान करै कुरुक्षेत्र, ज्ञान साधन संन्यासा
कहे गिरिधर कविराय, शिवोहं शिवोहं जप,
करन मामकुं रोक, न या सम है कोई तप ३
कोप करै जिस सकस पर, परमेश्वर जब आप,
लोकन साथ मिलाय पुन, चाहे दिन अरु रात
चाहे दिन अरु रात, वासना उपजै खोटी,
कृपनताइके लिये, बुद्धि हो जावे मोटी
कहे गिरिधर कविराय, आपनो करि के लोप,
अनामत चिंतन करै, यहि ईश्वरको कोप ४
करे कृपा जिस पुरुष पर, अतिसे करिकै राम,
ताकू कोई ना करे, लौकिक वैदिक काम
लौकिक वैदिक काम, रहे नहि करनो बाकी,
हर जगा हर वखत, ब्रह्मकी होवे झाकी
कहे गिरिधर कविराय, अविद्या जिसकी मरै,
सर्व क्रियाके मांहि, एक खुद दरसन करै ५
खटकेवाली वस्तुकों, दीनी जिसनें डार,
भावें रहे बजारमें, भावें बीच उजार
भावें बीच उजार परो रह मुखें न बोले,
अथवा बात अनेक, करै निसि वासर डोले
कहे गिरिधर कविराय, चीज जो चारो पटके,
सुत दारा धन धाम, गये तिनके सब खटके ६
परम प्रेमको विषय जो, सो है अपनो इष्ट,
वा विन और जु जगतमें, सो सब जान अनिष्ट
सो सब जान अनिष्ट, दृष्टि यह जिनको जागी,
सो पुमान उत्कृष्ठ, श्रेष्ट अतिसें बड भागी

कहै गिरिधर कविराय, अलौकिक पायौ मरम,
यातें परे न और, कोउ पुरुपारथ परम. ७

आदर था अनादरे, वचन बुरे त्यों भले;
अप्रभु प्रभुता जगत्की, धर जूतेके तले.
धर जूतेके तले, राग पुन द्वेप विदारे,
महा सिंधुको तरे, डुबै क्यों शुष्क किनारे.
कहै गिरिधर कविराय, पहिर समताकी चादर,
हर्ष शोक करे दूर, तथा दुनियाके आदर. ८

रोइ रोइके पाइये, रुपया जिसका नाम;
जब जाय फिर रोइये, इह मुख जिसको काम.
इह मुख जिसको काम, इस मति काहे रूपी,
जिसके हेत मजूरि, करैं उडावै कूपी.
कहै गिरिधर कविराय, कई खोजे गर्दभ धोई,
पुना वनज नोंकरी, कृपि करें रोई रोई. ९

गई गई पुन गई रे, करके निशिदिन सोर;
घडियाल पुकारै और कछु, तें समजी कछु ओर.
तें समजी कछु ओर, यथारथ नाहन भाखी,
तापर एक दृष्टांत, सुनो वदरनकी साखी.
कहै गिरिधर कविराय, समज जब उलटी भई,
घटका घटका करके, सगरी आयु गई. १०

बोवे पेड बबूलके, खाई लोडै द्राख;
धनी बननकी कामना, करे संगरे राख.
करे संगरे राख, पहर्यो चाहै क्रमची,
रंगे रंग चमरुया, रंग मजीठहि रमची.
कहै गिरिधर कविराय, सुखी सो कैसें होवै,
तृष्णा राग रु द्वेष, ईरषा मत्सर बोवै. ११

देणी दमरी एक ना, लेणे कौन छि दाम;
गांठ बांध नहि चालते, फूटी एक बदाम.
फूटी एक बदाम, न राखै धूसर दिनको,
विना आपणें आप, भरोसा और न जिनको.

कहै गिरिधर कविराय, रही ना बाकी देणी,
कीनी जबी हिसाब, न निकसी कोडी देणी १२
बैल मूल विधि नर रचे, दावे दाढी मूछ,
अकल नही हैवानकी, बिना शींग बिन पूंछ
बिना शींग बिन पूछ, और तो पशुकी रहनी,
भय मैथुन आहार, निद्रा पुनि सुननी कहनी
कहै गिरिधर कविराय, चले ना सूधी गैल,
लाख आदमी दिखे, पहरी है ता बैल १३
बाहर जो अतरसुही, आगे पीछे एक,
जो ना समजे बात यह, ताके पिता अनेक
ताके पिता अनेक, तथा जानो तिस माता,
जहां जहा वह जाइ, तहां तह एहै असाता
कहै गिरिधर कविराय, एक चिद् बात न जाहर,
सोइ उर बसो अरथ, सोइ पुनि अतर बाहर १४
यारी ता संग कीजियें, गहै हाथसों हाथ,
दुख सुख संपत बिपतमें, छिनभर तजै न साथ
छिनभर तजै न साथ, महत दृष्टात बखानो,
ज्यों अकाज संग पोछ, और इक सुनो बखानी
कहै गिरिधर कविराय, निमकमें ज्यों रस खारी,
या प्रकार जो व्यापक, ता संग लाइये यारी १५

(बगभक्त-कवित्त)

रामायण भागवत भारत पुरान सुनि,
छूटी नहीं महता, न मिटी माझ ममता,
झाझकुं भजाये रहे, उंचे स्वर गाये रहे,
शिला ले रिझाये रहे, नाश्री नहि तमता,
प्राणायाम साध रहे, अजपा आराध रहे,
अनाहद् सुन रहे, आई नहि समता,
बिना ईक्षणा न मारे, त्रिधा वासनाके टारे,
राग द्वेप बिना जारे (कैसे) पावे राम रमता १

विप्र आदि वर्ण जे ते, संन्यासिलो आश्रम ते,
तुसनकूं कूटे सो तो, नीरकूं विलोवते;
बूझवे हे जोग सो तो, बूझवे न महा शोक,
भूत भर्म रोग लग्यो स्थूल दृष्टि जोवते;
कोन नाम कोन धाम, कोन मढी कोन मठ,
ऐसो बूझे अटपट, आयुकों विगोवते;
देखवेकूं नर एतो पशु महा खर मेष,
तंतूनीमें बांध्यो यार या गतिही सोवते. २

चित्तके उदार, राजनीतिमें खबरदार,
समे अनुसार बाणी बोलत लपेटकी;
करे पावक आहार, खूरे नखसुं पहार,
जलकी धहावे धार, जगमें बे चेटकी;
योगहूमें परिपक्व, यामें नहि कछु शक्क,
सिद्ध वर हक्क, जान लेत पर पेटकी;
ऐसे तो प्रतापी, ब्रह्मबोध बिना पापी,
ताकी जावत हे कथा (सो तो) सबी अलशेठकी. ३

उलुककी सभामांह, रविको अभाव कहे,
न्यायके जो बूझे चाम गादुर बतावते;
त्यूंही मूढ बुद्ध कहे अहंब्रह्म नां त्रिकाळ,
विषे पतनीके वाक्य समता लियावते;
जेसे नर स्वप्नेमे उंची गोल करे मम-
शीश काट ले गयो कोउ ऐसे बूब आवते;
त्यूंही आप अज्ञानबश करे परलोप अहं-
पाप पाप कर्म पाप आत्मा अपापतें. ४

ठाकुर कहावे जो हजाम गाम लोकनमें,
राज्यद्वार जावे तब नाउके बुलाइये;
पंडित कहावे जो कुंभार निज जातिमांहि,
ब्राह्मणोकी पातीमांही कुलालही अलाइये;
तेसे परपथीओने मोक्ष जो जो थापा सोतो,
बंधनके कीजे, जो विवेकी आम जाइये;

बिना तत्वबोध शशय शोकको न हो विरोध,
दीनता न छूटे विष्णुलोकसें गिराइये ५
परचे कीहे सीखो पुन दमकी हे पूजा
रहो पत्ताकी मिश्राइ सरखा पहेचानकी,
जकमें येवार एते देखिये प्रसिद्ध ज्यामें,
इती करामत खान पान पहेरानकी,
चारे नहि ज्याहा अन्न तोए पट मिळे तहा,
साते ए तजो बात सगरे तोफानकी,
एकोहं-अद्वयहं-शिवोहं-परिमक्ष,
दृढ निश्चे धार वृत्ति यही ज्ञानवानकी ६

गिरिधर. (तिसरा.)

(शृंगार-छप्पय)

भ्रुकुटी नेनको बान, कामको कटक चढावन,
घुंघट पटकी ढाळ, चाल गजगती सुहावन,
कचुकी कवच पेनाय, किये कुच पेदल आगे,
बिछुवा बजत निशान, सुनत रतिपति सुर जागे,
होंकार करत नूपुर नवल, रणखेत कुसुम सय्या भली,
(कवि) गिरिधर कहे यहि साज सज, पिया पास झुंझन चली १

(वसंतऋतु)

सुनत निदेशसो अशेष वनिता सुभेष,
चली एक एक गहें गरब अकरिकै,
कबरी समेटी बांधी सवरी सुभग शुचि,
लहगो जबर कस्यो लकमें जकरिकै,
गिरिधरदास हाथ फूलकी छरी लै धाई,
छबिसों अतूल होरी होरी शोर करिकै,
चपलासी चमकि चहूंघा सो चपल चोर,
चदकुसी लिन्हा मजचंद कोप करिकै १

(वर्षाऋतु.)

करत अकाश बारी बाहक बिलास तैसे,
बुंद पर बसन कुसुंभी रंग बोरपै;
क्षण छबी छटा तैसी घटा घन घहराय,
हीरनके भूषण त्यों सोहे तन गोरेपै;
गिरिधरदास लिये गिरिधर लाल रंग,
झुकती झपति जाति थोरेहू झकोरेपै;
हूलती है शूल सुख सौति उन झूलती है,
फूलती है झूलती है हेमके हिंडोरेपै. २

उमडि उमडि नदी नद कूल बोरत है,
जोरे जलधारनसों सूझत कहूंना है;
परम प्रचंड पौन धावनि त्यों धुरवाकी,
झिल्लिनको शोर सुने होत कान सूना है;
गिरिधरदास महा बिज्जुको प्रकाश सोई,
लगै दोह दुसह दवानलसों दूना है;
एरी बाल जोइ श्याम बिन सुख खोइ यह,
पावसन होय प्रलय कालको नमूना है. ३

श्याम असमानो श्याम भयो असमानो तैसो,
लखि असमानो सुख सजि अस मानोरी;
सब अहिरानो दुख सहि अहिरानो फूले,
फिरै अहिरानो संग हरि अहिरानोरी;
गिरिधरदास ताय मिट्यो धुरवानो खंड,
ऊडे धुर मानो किये धीर धुरवानोरी;
सुख बरसानो रीझि लियो सरसानोरी त्यों,
यह बरसानो रीति रस बरसानोरी. ४

भूमि नाचै ना किसे मोर एरी चहूं ओर,
चंचला अकाश देव नारिसी नचति है;
गायकस गान करै चातक बिपिन घन,
गंधर्व गावै गीत आनंद रचति है;
गिरिधरदास देव फूल बरसावै जल,
सुमन लुटावै तरु बुद्धियों जचति है;

पावससो जनम भयोरी यासो सुखमासों,
अवनि अकाशमें पंघाइसी मचति है ५

(हेमंतऋतु)

कंजन मुखाये मे मुखाये रज मनहीके,
शीत ना घडाइ नीत प्रकटी समत है,
रात ना अधिक करी रवि अधिकाई माई,
दिन ना घटायो कर्म मासना तुरग है,
गिरिधरदास पौन शीतळ असह है न,
प्रेमके प्रवाह जग चलन टरत है,
राधिकाके कंतको भगत मतिमंद है कि,
मज शीतवंत ऋतु प्रकट हिमत है ६

अतिही अराम दे न ऐनको अराम अभि,
राम आठो ओर ओर्यो एस अमलनमें,
आसन अनूप आय ईश है अनीश जाप,
अक्षि अवलोकि है उदासी अंबजनमें;
गिरिधरदास एको उपमा न आवत है,
ईंगुरसी आर्धी अरुणाइ अधरनमें,
अगधर ईंदुमुखी ओजसों अमल ऐसें,
रसे अनगनसें अजय अगहनमें ७

सूर ऐसे शत्रुको गरुर त्यो दूर कियो,
पावक खिलौना कर दियो है सबनको,
भातनकी मारहीते गातकी भुलात सुधि,
कापत जगत जाकी भय आनमानको,
गिरिधरदास रात लगी काळरात कीसी,
नाहिंसो लगत भाम राखत चरनको,
आयो है हिमंत भूमि कत तेजवंत दीह,
दतन पिसावतो दिगंतके नरनको ८

(शिशिरऋतु]

विष ना कपावत है कांपति घनीसी आय,
सीसीन करावती करत अति वीना है,।

रदना बुलावत है रदनिज पीसे सोई,
चंदना स्रवत मुखचंदको पसीना है;
गिरिधरदास पीरो खेत न शरीर यह,
कंज मुरझाये न निगाह भूमि लीना है;
छत सीरी सासै कर श्यामसों प्रथम रति;
शिशिरन एरी यह नागरी नवीना है. ९

(ग्रीष्मऋतु)

तपत प्रचंड मारतंड महिमंडलमें,
ग्रीषमका तीक्षण तपन आरपार है;
गिरिधर कहे काय कीचसो वहन लग्यो,
भयो नद नदी नीर अदहन धार है;
झपट चहूंहनते लपट लपेटी लुट,
शेष कैसी फुंक पौन झकनकी झार है:
तावासी अटारी तपी आवासी अवनि महा,
दावासे महल औ पजावासे पहार है. १०

गिरिधारी.

(श्रीमद्भागवत वर्णन.)

वेदनके थाल्हा बीच ऊपज्यो है पोधा एक,
बारा है सुडार जाकी ओमकार जर है;
तिनिसें पेंतीस शाखा दशहू दिशामें फेली,
ज्ञान औ विराग तोष खग निको घर है;
पात जे अठारह हजार छवि छाइ रहे,
जाकी छांह बैठि यमदूतनको डर है;
येहो बनमाली गिरिधारी कहै बार बार,
भागवतरूपी सो कल्प तरुवर है. १

(श्रीकृष्णविरह.)

अक्रूर गोहन चलत मनमोहनके,
वसुधा बिछोहनके बीजनको बोवती;

कहै गिरिधारी धीर धारिनना धारी धीर,
करुण गंभीर ब्रज मण्डल विगोवती;
नंदकी यशोमतीकी गोपनकी गोपिनकी,
विपति बखानै कौन आसुनसे धोवती,
चोखती न गैया चारा चरती न गया मिलि,
जटकी गिरैया औचिरैया मन रोवती १
कदमकी डाली चढि कूद औच वनमाली,
कोविका‍ी भीतर वियोग बीज ब्वैगयो,
कहै गिरिधारी धाये नगरके नारी नर,
भइ भीर भारी नीर नैनेते च्वैगयो,
नन्द नँदरानी अररानीपरै पानी बीच,
ओक ओक अररस शोक बीज हैगयो,
यमुना समानो आजु ब्रजको सतन हाय,
यशुमति सुन विन सून ब्रज है गयो २
कामरो परोहै कहूं लकुटी डरीहै कहूं,
बासुरी धरीहै अब इन्हैं कौन धरिहै,
कहै गिरिधारी को रचैगो रस रास कौन,
विराचि विलास वृन्दावनमें विहरिहै,
यशुमति रानी दीन बानीसों कहत आजु,
गोरसके काज कौन मोसो आनि अरिहै,
सग ग्वाल बालनके खेलि है को ख्यालनको,
लालन विनारी गोपालन को करिहै ३
उठै कोपि काले प्रलय कालवाले धाराधर,
शुराडा दराड धारे धारि चहु ओर पर,
कहै गिरिधारी अकुलाने ब्रजवासी सब,
पाहि पाहि आरत पुकारते निहोरपर,
मोर पंखवारे रखवारे ब्रज गाइनके,
सो विना न कोऊ रखवारो यहि ठौरपर,
छोभ करि छोहनीते उठाय भीन्हों छोनीधर,
छाय दीन्हों छत्रसों छगुनियाके छोरपर ४

गोवै ग्वाल बाल अहिगालमें समाने जाय,
जान तनहुते ख्याल खलबल जूटको;
कहै गिरिधारी पीछे रहिगे अकेले कान्ह,
करुणानिधान धरे करुणा त्रिकूटको;
देवकीनंदन चलि बदन अघासुरके,
पैठे आय पैठतही कीन्हों यह ऊटको;
शैलके समान बढे फैलमें फुलायो तन,
फूलिकै पानीको फन फाटि गयो फूटको. ५

जानि परो आनिकै अवाज कान्हजूके कान,
जानि जन जापनो अनाथकी पुकारथी;
छोड्यो सिंहासन औ छाड्यो पन्नगासन औ,
छोड्यो गरुडासनसो धायो परमारथी,
नन्दनसों कविप्यारी कमला अकेली छांडि,
हाथन हथ्यार छोडो छोडा रथ सारथी;
धाये ब्रजराज गजराजकी अरज जानि,
आये चलि वाहीके मनोरथ महारथी. ६

गीध.

(विधि उपालभ-छप्पय.)

शशि कलंक रावन विरोध, हनुमतसो बनचर,
कामधेनु सो पशू, जाय चिंतामनि पथ्थर;
अति रुपा तिय बांझ, गुनीको निर्धन कहियें,
अति समुद्र सो खार, कमल बिच कंटक लहिये.
[ये] जु व्यास खेवहिनी, दुर्वासा आसन डिग्यो,
[क]वि गीध कहे सुनरे गुणी, कोउ न विधि निर्मल गढयो. ?

गुणदेव

(दोरंग मोती) *

नखत स्वांत ऋतु सरद, सुभट भट एरत महाबल,
उदधि दूर अविदूर, शूर भरपूर उमेदल,
गीध एाल अतराल, आल महि चढेहु अंबर
तेहि काल ततकाल, होइ नभ मघा मघंबर,
शोणीत मखा बिंदु मिले, शीप मूख भीतर गयो,
यहि भान जान राजान पति, मोतिनको दुइ रंग भयो १

(चंद्रग्रहण प्रतिकार-कवित्त +)

एक समै पूरन उद्योत जोत ससि भयो,
मुनिकै ग्रहन देखें लोक सब धाईके,
ज्योतिकीसी ज्वाल चाल इंदुसो मुखारविंद,
कहे गुनदेव म्हेल ठाढी भई आईकें,
चद और चंदमुखी याही मसु एही मसु,
एसेही बिचार नीशि सारीही बिताईकें,
चद भयो अस्त चंदमुखी निज ग्रह आई,
राहु गयो गेह निज हिये पिछताईके १

गुणवंत.

(सज्जन लक्षण-छप्पय)

अगर अगन पर धरत, जरत शुभ बास प्रकासे,
एसत कसत फल पीत, छडाय तंदूल उजासे,

*किसी राजाके पास एक मोती था, उसका रंग आधा लाल और आधा सुपेद था. इस दो रंग होनें कारण राजा सबसें पूछता था पर किसीसें उत्तर न दिया गया; फिर भगव नाम कविने उसका उत्तर इस छप्पयमें दिया जिसें राजा प्रसन्न हुवा भेगवकों कितनेक गुनदेव कहते है,

+ किसी राजाकों एक बखत जोतिषियोंने कहाकि इस पूर्णिमाको चंद्रग्रहण होगा; जब पूर्णिमाके दिन देखा तो ग्रहण हुवा नाही राजानें इसका कारण जोतिषियोंसे पूछा तब उनोंने कहाकि गणितमें ग्रहण होनेका पूरा पूरा जोग था पर दैवेछा बलवान् है इस उत्तरसें राजाके मन संतोष न हुवा इसलिये सब विद्वानोंसें पूछता रहता फिर गुनदेव कविनें इसका उत्तर कवित्तमें दिया जिस्से राजा प्रसन्न हुवा

दुग्ध तपत दधि मथत, पगहि बंधत पय धेने,
तिलें तैल रस ईक्ष, धिसत चंदन मृग बेने.
फल देत अंब पथ्थर हने, यों गनपत कवि उच्चरे,
कुलवंत संत सज्जन पुरुष, गिन न औगुन गुन करे. १

गुणाकर.

(वसंतविरह-कवित्त.)

फूले है रसाल नवपल्लव विशाल वन,
जूही औ पलास मल्ली आदि बहुं को गने;
कूजन विहंग पिक कोकिलादि एक संग,
कुंजत मलिंद वन विथिकानिमें घने;
वहत समीर मंद शीतल सुरभि धीर,
रहत न योगयुत मुनिगनकें मने,
एरे व्रजरंग ऐसें समे देहुं संगन तुं,
दहन अनंग मिसु गोपिकानके तने. १

गुमान.

(वंसी महिमा.)

खग मोहे मृग मोहे नग मोहे नाग मोह,
पन्नग पताल मोहे धुनि सुनि जासुरी;
सुर मोहे नर मोहे सुरन सुरेश मोहे,
मोहि रहे सुनिकै असुर अरु आसुरी;
भणत गुमान कहौ मोहिवेकी कहा बाणि,
चर औ अचर मोहे उमँगी हुलासरी;
गोपिनके वृन्द मोहे आनँद मुनिन्द मोहे,
चन्द मोह चन्दके कुरंग मोहे बासुरी. १
ताछिन भनक बीर काननमें धरी आय,
ऊठै तन पीर और रुक जात सांसुरी;

मोहन मतवारे नैन सैन बैन जाग उठे,
ता दिनतें प्यारी यह फरकत है बांसुरी,
छीन है हमारे पिय प्यारको अधररस,
छोक महराज मुसकान कीन्हो नासुरी,
जम है कि तम है कि मोहिनीको मत्र है कि,
तीन है कि सान है कि पैन है बांसुरी ॥ २

गुरुदत्त.

(वर्षावर्णन)

री रनि हदुराहू हरी हरी भूमिपर,
दौके दौके दामिनी हमारि ये अरज है,
मोरि मोरि पपिहा मयूरगनि नाचि नाचि,
पढ़ि पढ़ि दादुरन पाठकी मरज है,
गाजि गाजि पावस तू सावस दे गुरुदत्त,
फेरि फेरि मार अति छतियां दरज है,
मेरे मन मदरा तू बरजो न मानत है,
गरज गरज तोहि आपनी गरज है ॥ १

(सवैया)

पीव कहां कहि देव तो सारस, पावसमें रस पीन कहां है,
जीवननायकके साथ बिना, गुरुदत्त कहैं तन जीव कहां है,
ध्यानि मुनी जपतें तप में, यह जानि न जातसो पीव कहां है,
पीव कहां कहिके पपिहा, केहि सों तुम पूछत पीव कहां है. १

गुरुदीन.

(वसंत-विरह)

कूजत गुंजत गुंजन पुंज मलिंद, पियें मकरंद अनंद भरे,
कुसुमावलि फैलिया फूले फरे, भरे सौरभ सीरि समीर हरे,
यहि संत बसंतको भावे नहि, गुरुदीन जऊ लसे फल गरे,
निसि बासर निंद औ भूख हरी, सुख पीरि परी दुखदीरे परे १

गुलाब.

सवैया.

(प्रेम-प्रेमिक महत्व.)

मीन पतंग करैं तन त्याग, तऊ जल दीप न जानत जोऊ,
चातक और चकोरनिकी औ, चितौत न मेघ निशाकर दोऊ;
दानव देव कहा नर नाग, गुलाब चराचर है जग सोऊ,
जानत है करिवो सब नेह, निवाहिवो नेह न जानत कोऊ. १

मीन मरे जल जीन धरे, गति खीन करै अगिनी परदीकी,
जानत नांहि कुरंग चकोरहि, नाद निशाकरजी गरदीकी;
कंज गुलाब तचै अतिही, विपदा न हरै रविहू शरदीकी,
बेदरदी दरदी न लखै गति, जानत है दरदी दरदीकी. २

(चतुर्विध नायका भेद.)

अति चाहभरी जमुनां जलकों, वरजेंहु खिजे नित ऐवों करै,
सखियानकी सीख सुने न कछू, अपनी कहिकै मुसकैवो करै;
द्युति दूनि वढाय गुलाब कहे, गुरु लोगनतें न सकैवो करै,
नव नागरि रूप उजागरिसो, भरि गागरि क्यों ढरकैवो करै. १

गाथ अकाथ कथै नर नारि, विना पथ सौति वतात डरै नां,
नाथ हलावत माथ गुलाब, भरे वर बाथ विथा उचरै नां;
पाथरसों बच सास कहे, ननदी परिपाथ सुतान टरै नां,
साथ तजै सब साथनिपै पर, हाथ पर्यो मन हाथ परै नां. २

कीचभरी कल क्यारिनमें, शुक सारिकाते न कछू मय मानौ,
कंटक बेलि बिशालनसौ, तरु जाल वितान तहां उर झानौ,
संग न कोऊ सहेली गुलाब, स्वहाथनतें चुनि नेम निभानौ,
हेत महेशके पात प्रसूनकों, आज भटू मुहि बागलों जानौ. ३

अति शीतल मंद सुगंध समीर, हरै विरहीजन दागनकों,
सरसंत वसंत गुलाब कहे, ऊपजावत हे अनुरागनकौ;
सुख होत महा सबहीके हिये, लखि नीरजवंत तडागनकौ,
सखि एरि खरो दुख एक अरे, पत झार करे बन बागनकों. ४

(कवित)

(अप्सरा उपमा)

मानीके भवानी केन रानीके सुरेशहूकी,
आसुरी सुरी केहेन फनी भामनीके है;
रंभा केन केसी केन किन्नरी नरीन हूके,
मेनका तिलोत्तमा न भक्षरमनीके है,
सुकव्य गुलब मंजुघोषाके घृताची केन,
और उरबसी केन ससी भगनीके है,
मेन घरुनीके ऐसे हेन हरनीके हर,
नीके जैसे मखुभान नव नंदनीके है १

(पावस और अपन्हुति)

जोरि जोरि जुगनु जमात फिरैं चारौं और,
घोरि घोरि घरषे घनेरे घन छावैरी,
दौरि दौरि दरमैं दरेरा देत दामिनिंहु,
फोरि फोरि शिरकौं मयूर सरसावैरी,
सुकवि गुलाब डोले ठौर ठौर वीरवधू,
और और दादुर पुकारि तन तावैरी,
मोरि मोरि मनको मरोरें बकमाल हाय,
ऐसेमें दयाल नँहु न छाल घर आवैरी १
घन न गजाली है बकाली नां रयाली फिरैं,
जुगनु जमाति सों बिशाली भटमाल्की,
धुरवा न दौरें ये चलाचल तुरंगनकी,
गुरवा नें तोप पाति तीखे सुरसाल्की,
सुकवि गुलाब मानि चातक नकीब जाल,
दादुर पुकारे ना दुहाइ जेनपाल्की,
मान गढ मोरिवेको काज आज साज साजि,
पावस न आई फोज मेन महिपाल्की २

गुलामी.

(तुलसीस्तुति.)

अष्टादश पुराण चारि वेद मत शास्त्रनको,
ग्रंथनि सहस्रमत रामवश वै गये;
पापको समूह कोटि कोटिन सिराने धर्म,
राजस महानके कपाट द्वार दै गये;
भणत गुलामी धन्य तुलसी तिहारी वानी,
प्रेमसानी भक्ति मुक्ति जीवन सुकहि गये;
योग सुख, ब्रह्म सुख, सुरलोक सुख भोग,
सुख एते सुकृत गोसाई लूटि लै गये. १

गुलाल.

(विरह-व्यथा.)

गौन हद हौ न लागे, सुखद सु भौ न लागे,
पौन लागे विपद, वियोगिनके हियरान;
सुभग सवादिले सुभोजन लगन लागे,
जगन मनोज लागे योगिनके जियरान;
कहत गुलाल वन फुलन पलास लागे,
सकल विलासनके समय सुनि हियरान;
दिन अधिकान लागे ऋतु पतियान लागे,
भान लागे तपन सुपान लागे पियरान. १
कैसी अलि राजे अलि अवलि अवाजे,
आजु सुमन सुमन राजे छिन छिन छुकेयै;
कहत गुलाल औ रसालपै न सुख जाल,
बोलत विशालतेन भोगत मरुकेयै,
धीरको धराती छाती कौन अवलाकी अब,
करिके कलाकी कोकिलासो निफुकेयै;
जलथल गंजन सरस रस भंजन,
सुमानकी प्रभजन भंजनकी झूकेयै. २

गोकुल.

(जीभ और दांतका संवाद–कुंडलिया)

रसना नोकरकु कहे, सुनियो दशन सुजान,
मन मगरूबी छोडके, रखो हमारा ध्यान
रखो हमारा ध्यान, नहिं तो दूर कराबुं,
मुजकुं केती बेर, उल्टकी सुल्ट फिराबुं
कहे गोकुल करजोर, बेठके नाहीं खसनां,
सुनिये दशन दिवान, नोकरकु कहेवे रसना १
रसना हसता छोडदे, कहेवे दीनदयाल,
फोज पडी तुज घेरके, बेठी बडी शियाल
बेठी बडी शियाल, जानजी उल्टी ठेकु,
मत भूले मनमाहि, काटके दूरहि फेंकु
कहे गोकुल करजोर, बेठके नाहि खसना,
कहेवे दीनदयाल, छोडदो हसना रसना २
म्हेकी बकवा क्या करे, तुजमें एक अनेक,
भागे तूटे खिर पडे, रहे जबछे एक
रहे जबछे एक, नोकरी करे हमारी,
जाना जीकी संग, प्रीत नहि खरी तुमारी
कहे गोकुल करजोर, अरे प्रिय मित्र विवेकी,
तुजमें एक अनेक, कहा करे बकवा म्हेकी ३

गोख.

(श्रीकृष्णविरह–कवित्त)

बेठे ढिग आइ जदुराइ मुसिकाई बात,
भेदकी चलाइके अनाइ मोसों रति हे,
हाथ गहि लीनो हठ कीनो उर लागिबेकों,
मेन रूख दीनों बे अधीनो आली अति हे,

गोख कबि काहूं कही रसकी पेहेली तब,
सोहे मोहि तेरी मेरी भई एसी गति हे;
मन कहे मान दाह तन कहे भैटिवाहि;
नेन कहे सोहें चाहि लाज कहे मति हे. १

गोप (पहिला.)

(समश्यापूर्ति.)

लोल कर मच्छ कच्छ गहिकें न छांडे चित्त,
हीधर वराह बौध वैरी श्रुति धामके;
नेही रिपुगंजन नरसिंह छलन छली,
बलि भृगु राम मदनाशक तमामके,
वूमत झुकत बलराम राम व्रत्तधारी,
कल्किसे करैया प्रान पाम परभामके;
गोप कबि धर्मनतें एते अवतार पेखे,
व्रषभान नंदनीके नेननमें श्यामके. १
मनको हरत रंमा थहरत हय होत,
एंड मान ढावे गज जोती मणि गाइयै;
वृंद सुखदानी पारजात सील सुरभीतें,
सीतल प्रकाश इंदु लोलमां भमाइये;
वूमे मद दर्द जानि वैद मारे गरल ज्यों,
वसुधा सुपेत कंबुकोए धुनि ठाइयै;
गोप कहे काहे कृष्ण सिंधु मथ किन्हो श्रम,
चौदेहु रतन राधा नेननमें पाइयै. २
असुर समूह सेना व्यूहपद चूर चूर,
सुरन कर सूर छाय खेलत अनंदमां;
अंग अंग भूखा सब जंग भवि धार धार,
अम्र करी अंब कवि गोप ज्यूं भनंदमां;
रक्त वीज धोखे नैन रक्त ताकों चाट चाट,
जीभ फटकारे चारे तिहूं लोक द्वंदमां;

कालीजूके कज्जलकी ललित लुनाई सोम,
छाई नभ मंडलमें भारगव चदमां ३
कोकनकी कूके सुनि चोंकत चकोरी चित्त,
अलज सिराने लाल सोवत अनदमां,
इदीवर वृदसों निकास मधू तस कर,
औ लस्कर कर गोप कजनके वृंदमां,
आई दग अजनकों आजि काहे दुख देन–
पन अब नाम्बन सयोगनिन फदमा,
कालिकाके कज्जलकी ललित लुनाई सोम,
छाई नभ मंडलमें भारगव चंन्दमां ४
ताल औ तमाल माल फूल गिर शृगनपें,
झलिकत है आतप अनूप अति मोरको,
सीतल सुगंध मंद मंद मारुत प्रवाह,
मेनको रिझैया यौ छकैया मधु चोरकों,
करि है विहार हाल कुंजकी लता न स्यामा,
स्याम सग लूट मुख हंसनके सोरको,
गोप कहै फूलत सित कज गुल दक्षन,
प्रभाकर पेख चित्त हरल्यो चकोरको ५
कोकिनकी कूक सुनि कोक मुरझाने लखि,
फंदमें फस्योरि पूर इंदीवर मोरको,
सीतल सुगध मद मारुत प्रवाहि कर,
कज यहरानो जान संवर कुजोरको,
बेन रस पीवन वरून दिस भानु होत,
गोप मोर वर्या हेरी ध्यान चोर चोरको,
ताल्के तमाल्नमें निशाकर प्रभामधि,
प्रभाकर पेख चित्त हरल्यो चकोरको ६

(विविध शृंगारवर्णन)

मृदुल मनोहरसें नवल अनूप आली,
पाय मुकि लेत करे नितही नवीने है,
नेह वारि सींच सींच हारी हिम भान डर,
करि करि यत्न राखे अलीन अचीने है,

होत हे अचंभा अति गोप खट ऋतुमांहि,
आगे इन कबहू न ऐसे रंग कीने हे;
नितप्रति देखतही सुधा होत इंदीवर,
आज ये कसूंभि कंज कोने रग दीने हे. ७

ललित लतानके पतानको वितान तन्यो,
तालके तमालनमें नीको दरसात हे;
घेरे घेरे घनश्याम घनश्याम तहां मेन,
सेन मोर पीक हरी सोर सरसात हे;
चपला चपल होय चमकत चहुं ओर,
छूटत छटा गोप ललिता ललचात हे;
तातें कहों वार वार सोतें वतरात प्यारी,
तू तो इतरात इत गत बित जात हे. ८

सरद जुन्हैयामाहि वैठे व्रजचंद तहा,
सीतल सुगंध मंद वात सरसात हे;
कलिंद गिरनंदनी किलोल लोल फूलन,
निहार नेह पीर ऊरमें उमगात हे;
एरी व्रजरानी मुखचंदको अमंद कर,
कीजिये गवन मन माखन जनात हे;
वे तो तुतरात प्यारी वतरात वतरात,
तूं तो इतरात इत रात वित जात हे. ९

जानत सुजान मन नांही न कहा जीवन,
अजान जग जानो न दूसर सहाहि हों;
येहि हिय सोच छिन छिन छवि छीजत औ,
छूटत विरहानल झारन दहाहि हों;
करि करि गुन गान मनहि मन मनन,
वांधी विध रंच रंच स्वासाकों वहाहि हों;
जोपें कहूं बीच गाहिक गहि लहि हे गोप,
रावरो कहाहि पर रावरो कहाहि हों. १०

चकोरनि काम कूटी गहि कोकन वधूटी,
चोरनकी चाह टूटी वाम कमनीनकी;

मधू छक मन छूटी कर चलत घमूटी,
जलजन छवि छूटी पंकि अलीनीनकी,
मृग हेरत हे बूटी क्षस चाहत हे रटी,
वन मन फयनूटी धज नलीनकी,
गोप स्यामा सब खूटी नभ लाली रव फूटी,
लालन वहार लूटी याल कंगनीनकी ११

नेननकी* सेननसों मैनको जगायो पुनि,
बेननसों चेन कर लीनो मन गसके,
असित भुजगनीसी छोर वैनी मृगनैनी,
झुकि झुकि कुच कचुकीके कसकसके;
चोरि चोरि चित मेरी हरि बुद्धि ठाडी भई,
सेजके समीप आय मंद मद हसके,
ता छिनहि तान चूडी बेननसों नैन खुले,
गोप कहे छ्हे तो गई नागनसी डसके १२

अधर मणि अंबरमें अधर न दिखात,
जलजन है जलजल द्युति छोरिये,
जलजमधि कोट कुल तारन तरिन न्है,
अन्न रसाल रस नेननमें घोरिये,
वाचे विधि बेद देव हरि देखत तमासा,
गोप गिर रानी दोप कौनपर ढोरिये,
अधर अधर ना बधवर दिगंबरपे,
पन्नगकी पूछ है सुगांठ गठ जोरिये १३

(कविकुल गौरव)

छाडयो रघुवंश मणी तात सूर सुत जान,
स्यंनदके चक्रकर नातर हनों जिया,
सोहू भव भुज्यौ परवलके घमडहीसों,
गोप निज गुन सरसावन सनाहिया,
सबही समान जान रे रे निपट निलज्ज,
कान तोर फेर हजु कीनी तें पनोंतिया,

---

*नगनसहसक यह रीतिसें मात्र 'ह स" व्यंजन है। उसमें स्वर मिलानेमें पद करनो और पिछेसें मयोजना करणी इस प्रमाणसेंही यह पद बनाया हुवा है

काहे मतिमंद वरवंड खल जाने न तु,
मीनको शनीचर हों ब्राह्मण कनोजिया. १४

(समस्यापुर्ति-सवैया.)

चंपक कानन मध्य हरी पटमें शिशु देख विरंचहु भूल्यो,
औ छवि छांहि वखाननकों लखि शेषहुने मनमांहि न हूल्यो;
सो कवि गोप कहै कसि जो, अनिलालन होय रह्यो अनकूल्यो,
भोर समे मृदु वल्लभको, मुख पावक पुज सुपंकज फूल्यो. १
कातिक कृष्ण महानिसिमें गहि, मोंन अंकोललता झटकारे,
जो फल भूम परे तिनकों रवि, पुष्प मिले तव नेह निकारे;
नेह विना जव शिंसु कहै, छिनिमें जसही वह काज सिकारे,
तो कवि गोप कहै सिर चोलत, मुंडत संत जटा फटकारे. २
कानन कुक्कट कोक मराल रु, कूक तजे खग भोरसुखी है,
सीतल मंद समीर वहै, मकरंदहि चोर सुमेन रुखी है;
कुंजनमें जु गुलावनके, चटका सुनि दंपति होत सुखी है,
गोप कहै करि लक्ष सुपूरन. चंदहि देख चकोर दुखी है. ३
मोर चकोरनकी धुनि मार, मरोरत भोंर दिखावत भैसे,
कोकिल कूकन हूक उठे हिय, गंजन खंजन खंजर जैसे;
गोप विना ललना कलिना, रितुराज दिखावत है सुख ऐसे,
किंसुक फूल विना दल कानन, श्रोन भरे नख नाहर कैसे. ४
चंद्रक चर्चित चंद्रमुखी, विंव जात जटी वन पूज निहारन,
गोप कहै फल अक्षत चदन, गंध सुदीपक लै कर थारन;
वंधुक फूलन लेन कियो कर, एक न एक लगी जु पुकारन,
ऐ चलि है चुरियां चलिआवरी, आंगुरियां जिन लाव अगारन. ५
शशि मंद समीर चकोर पिकी, मधु वैनन मैन जगावत है,
सुरभान उकेर सखी अहि फंद, सुकाग जटी दिखरावत है; है,
कवि गोप कहै पियको हित तोलन, कों तिय युक्ति चलावत
करि लै सुथरी पुतरी उतरी, चुचिकारि चुरी चटकावत है. ६
पल्लव लाल महा द्रुम डारन, सीतल मद समीर सुझूल्यो,
भ्रंगनकी अवली लखि गुंजत, औ मधु वर्ष तपे सुख भूल्यो;

माधव ताप तप्यो जब माधव, ता फल दर्श शशी अनकूल्यो,
गोप महावतरी रुज देख, तुपार समूह सुपकज फूल्यौ ७

ललिता तन सेज समाज सजे, मधु लेल्पि फजनमें जु रुदै,
जल्जिा अलि भूपित होत चकोरिनिके चित्त चेत सुसूर मुदै,
रजनी रस मस्त भई लखि गोप, कविंदनमें ध्रुव पैज बुदै,
पिय संग अहेरन पिंजरमें, चकवी नित चाहत चद उदै ८

सफरी बिंब धारिन चाहतरी, मधु चोर चहे सुख रंच मुदै,
सुकमारुत विमन चाहतरी, जगमें कहि को मन थोंन जुदै,
मकरद गुलाल चहे निचुर, यह गोप कहै हम पैज बुदै,
सजनी तुम जानत हो जियमें, चकवी नित चाहत चंद उदै ९

गर्भित जान पयोध अचे, बनको घटनद महामुनि ज्ञानी,
रोस सज्यो विसराय सुबोधन, कों उरधों भरि भ्रुकुटि आनी,
कोटिक भात करी विनती, पन मानत नाहि न रंचहू यानी,
काहे विलंब करे मति फेरन, बूडत है करिरी कर पानी १०

काहि तपौ बनमें मनरंजन, बैननकों सुनके किम धूजौ,
जो मन भानत होय न तौ कवि, पंडित हेर कहूं किन बूजौ,
तापसके मतसों न मृपा, मम गोप गिरा करिकें नहि दूजौ,
दोप नहीं वरपायतमें, मर नाहिन तौं विय पीपर पूजौ ११

मनमोहनकी मुरली धुनि श्रोनन, आवतही जमुना तटपै,
कवि गोप कहै चित रच कहू न, दियो उरके उघरे पटपै,
गहि द्वार दुहु करसों धरिकें, पगकंज सहेल्निकी कटिपै,
भजबाल उमग भट्ट घटमें, मछली जल छाड चढी भटपै १२

चरि ना युधि बेननसों मन मोद, भरी व्व जान रही रतिया,
जल्जिा छबि छूटति गोप कहै, उठ भान गही पियकी छतिया,
सरिता रस पूरनकों दुख खोवन, कर्स सरी रतिकी बतिया,
सित कंज खुले लखि ता क्षनम, अरुनोदय रोवत कोक तिया १३

गति जान अहेरिनकी दबके, तरु पातनमांहि चकोर जुदें,
जल्जिा छबि छीन भई निकरे, मधुलेल्पि कजनमें जु रुदै,
पिय सग मनोहर पिंजरमें, लखि गोप सुमेंचक कज मुदै,
मनमे न उमंग निसा सुख सोचति, कोकिन रोवति सूर उदै १४

भोर समै मृगलोचनके, उर नाह सुलोचन विंव जु साले,
ज्यों मनरंजन सूरतकी प्रति, मूरत मंजुल दर्पन झाले;
गोप कहे निसमें जु कलाधर, विंव सरोवरमें जस चाले,
ज्यौं जलजान चढे जन जानत, गोड चले परपात न हाले. १५
गग तरंगनमें शिव वीर, जवैहि तज्यौ मुखमें न निभातौ,
जातहिं कूल भयौ सुतसो, ससि नारननै लखिके सुठमांतौ,
गोप कहै गहिके निज लोक, चली मगमें करती सुत नातौ,
वाझ सुनंद लख्यों नभ मध्य, पियेक छवी तनसों पय तातौ. १६
निंदित कोन तिया तियको. जगमें कुल लाज सुमान विशेखे,
का विन जीवन जीव वृथा, कवि दुःख जु होय चकोरन लेखे·
कामिनके मन काम वढे, निसमें कवि उत्तर गोप सुरेखे,
वांझ सपूत विना अखियांन, कुहु निसिमें रवि मंडल पेखे. १७
को जन ज्ञान विना रंगके, परिभाम कहो कव आनंद लेखे,
गोप भयो गिरिजासुत सीस, कहां कटिके सु कहो कवि रेखे;
कोकिनके हिये शोक मिटे, कव ईश ऋषीन अधर्म विशेखे,
अवकुहू अधिरात समे, शशिमंडलमें रविमंडल पेखे. १८

(छप्पय.)

धर धुकत धुंव धार, जसत डंवर घन अंवर,
सघन विपन डुंगरन, दरिनदर रहत दिगंवर;
धरहु धीर जिन चढे, चढे दल दुरह पुरंदर,
वक विपक शित दत, धुंध मद अंध धुरंधर;
कवि गोप भनत वन वेलिदुम, सरिता सिंधु धावत मिलन,
चक चक्रवाक चक्रत चितेहु, अक ढक तकन चलन. १

गोप (दुसरा.)

(रनछोर याचना-कवित्त.)

चाहे श्याम चौदिशिकों जांचे भूत भूतलके,
चाहे नरनाहनकों जांचि घर आहे है;
चाहे करि यत्न कोऊ सकल जहांन जांचो,
चाहे पातशाह जांचि कोऊ कछु पावे है;

चाहे रतनाकरकों जांचे कवि गोप कोऊ,
चाहे नागपुज जांचि कोउ धन लवै है,
जाचे जो न जोलों महाराज रनछोर जूकों,
तोलों मन वंछित पदारथ ना पावे है १
कैयो नर नाह औ सुराह पादशाह कैयो,
अमित अथाह रत्नसिंधु जग भासा है,
शेषतें दिनेश लगि चौदह भुवनपति,
सिद्धि न समेत सिद्ध कैयक निवासा है,
सबतें विशेष हे सुरेश निधिनेश वृद्धि,
देख्यो कवि गोप एक अजव तमासा हे,
ये हो विश्वनाथ महाराज रनछोरराय,
रावरे विहीन कोऊ पूरत न आशा है २

(नीति-सवैया)

चारहु वेद पुरान अठारह, औ पटशास्त्र पढ्यो कविताको,
संगित आदि चतुरदश विद्याहु, होय पढ्यो पुनि सर्व कलाको,
औरहु इल्म अनेक पढ्यो पर, यों कवि गोप वृत्तात हैं ताको,
जो न पढ्यो नृप नीति नृपालतों, व्है नट ताल समम प्रजाकों १
होय कहा कवि गोप कथा पढें, जो न कथा करि जान्यों सहा,
होय पुरान पढेतें कहा लख्यो, जो न पुरान वृत्तांत महा,
जीतें कहा रन शास्त्र पढे पट, जो वर शास्त्र कदे न गहा,
चेत्के भेदकों मर्म न जान्यों तों, वेद पढे सिधि होत कहा २

(सापेक्षिक आवश्यक प्रबंध)

होत जो न कृष्ण पक्ष मासके दु पक्षमें तौ,
आवति सुधि न शुक्ल पक्ष सुखदानकी,
होते जो न दूषण पदारथ प्रपचकेमें,
होती तो न मान्य छवि भूषण विधानकी,
होते कवि गोप जो न सूम सरदार तोपें,
होति जग कीरति न दानी नृप दानकी,
होतो ना हलाहल जो प्रगट समुद्रतें जु,
होती तों न महिमा सुधाके अवसानकी १

धर जो न होती तो सुमेरुको धरत कोन,
शेष जो न होतो तो, धरा कोन धरतो;
इन्द्र जो न होतो तो, समुद्रको भरत कोन,
समुद्र जो न होतो तो, जल कोन भरतो;
रावन जो न होतो तो, सीताकों हरत कोन,
राम जो न होतो तो रावन क्यौ मरतो,
दाता जो न होतो तो कवि ताको देतो कोन,
कवि जो न होतो तो किरत कोन करतो. २

ये हो कवि गोप मित्र दोष गुनवारी यह,
रचना यथारथ हे विविके विधानकी;
रहत विशेक वन्यो जसके कुजस एक,
होत आई नेकी वदी समय प्रमानकी;
जान्यो दुरगध औ सुगंधको विभेद ताहु,
रिझ रिझ किनो कहा मान अपमानकी,
देखो या जहांन वीच होत जो न कपटी तौ,
कैसें पहिचान होती सज्जन सुजानकी. ३

ये तो हेमरूप सुखदायक लगाय अंग,
कंटुके सुजावे तन कौचिलो घनेरेये;
ये तो कवि गोप रहे शीतल सघन छांह,
छायाहू कियेपें खल छांह बिन हेरेये;
येतो फल देत सदा दीनो फल लेत नांहि,
फलहू दियेपै रहै निष्फल अंधेरेये,
ये हो नरनाह दुहुं राखियें विवेक करि,
कामतरु रैयत निकाम तरु चेरे ये. ४

(सिंहान्योक्ति.)

ए हो उग्र नाद वीर सागर पराक्रमके,
टेक नेक न्यायी राजनीति उर धारिये;
धर्म अवतंश निज वंश मृगराजके को,
हंसलो प्रशंसनीय बिरद बिचारिये;

स्वादिक न व्हे हे कहू दाढमें तिहारी यह,
यांते कवि गोप भ्रम दुसह निवारिये,
जो सु करपल्लव बिदारे गजराज झुंड,
सेई कर पल्लवसों मेंढकी न मारिये ५
ऐरे मित्र मेरे तुम रहियो सदाइ स्वच्छ,
कीज्यो ना अंदेशो चित्त काहू दुख देयाको,
कोऊ खल मलीन स्वभावके प्रभाव करि,
अधम करे जो पूत भैसिक दुलैयाको,
तोपे मन भायो करो ऊधम घनेरे वह,
सर्वसही कीजें ले प्रमान धर्म नैयाको,
न्यायक मुसदी जब पेहे न्याय गद्दीपर,
व्हेहे मद रदी तब वदीके करैयाको ६

(पुष्पद्वारान्योक्ति)

सर धन बागन मृनाल तरु बेल्नितें,
जनित कली सु रहे प्रथम मुदे मुदे,
पाईके पराग औ सुगंध फूलिमके समैं,
राखे निज मध्य रस चोरहू रुंदे रुंदे,
गोप कवि माल्निके हस्त गुणवंत व्हेक,
आये नरनाह उर माल्में गुंदे गुंदे,
व्हे हो जो मलीन रे प्रसून तौ गलीन बीच,
पथी पग लातनतें फिरि हो खुदे खुदे ७

गोपाल.

(वसंत वर्णन)

तरुपत भारनमें किसलित डारनमें,
रचित पहारनमें दुलिमें दिगंत है,
त्रिबिध समीरनमें यमुनाके तीरनमें,
उडत अबीरनमें झुला झुलकंत है,

छाय रह्यो गुंजनमें अलिपुंज कुंजनमें,
गानमें गोपाल ऐसो रूप दरशंत है;
फूलमें दुकूलमें तडागनमें बागनमें
डगरमें बगरमें बगरो बसत है. १

गोपाललाल.

(पंच विकार विचार.)

प्रेमकी दुकानमें विचारी मैन पैठिय तु,
कामकी दुकानसों सयान सब हारा है;
क्रोध कोतवाल जिन प्यादेको पकरि पाया,
दायाको दिवान जिन माया फांस डारा है;
मोहको गुमाशता जे मिले भले आदरसों,
मोह छबि गाहक जो बांचिके विचारा है;
ऐसे ऐसे बाणिजको लादि है गोपाललाल,
कंचन शहर पर पंचन विगारा है. १

गोपालानंद.

(गोरक्षा-दोहा.)

भारत राखन जो चहो, चाहो निज प्रतिपाल;
तो तन मन धन दै अहो, रक्षो गाय गोपाल. १
आवत है लज्जा नहीं, तुम्है देखिये हाल;
वधिक बधे नित गाय कह, तेरे सिंह गोपाल. २
क्या करनी निज आर्यकी, गयो भूली यहि काल;
जिन गैयन हित आपनो, दीन्ह प्राण गोपाल. ३

गोपीनाथ.

(समश्यापूर्ति-सवैया.)

कृष्ण रिझावन एक समै, साजि साज चली वृषभान दुलारी,
श्यामल रंग रंग्यो सब अंग, गह्यो कटिपीत सुवस्त्र सुधारी;

पक्षमयूरको ताज कियो, अरु बंसिको टेर सुटेरत प्यारी,
राधिका कृष्णको रूप धर्यो, तब स्याम भई छबि स्याम निहारी १
कै पितु मातु सुतादिक त्यागिके, गैळ गहो मन मंगल काजे,
कै निज नारि उरोज छ्यो, पुनि भोग करे सुख सम्पति साजे,
सार यहे जगमाह दुई सब वेद पुराण कहे छवि छाजे,
कै शिवभक्ति विरक्तन की, अरु कै जानकै पग पैजनि बाजे २

गोविन्द (पहिला.)

(बांसुरी वर्णन-छप्पय)

सुनत मदन मन लग्यो, तज्यो पतिव्रत ब्रजनारी,
सिध समाध छुट गई, वेद धुनि ब्रह्म बिसारी,
पशु चरत त्रन चकित, थकित नमर्मद उडगगन,
थकित पवन पुनि जमुन, नीरगिरि चन्यो पुलक तन,
पय पिवत न बाल्क बच्छ सब, खग मृग रस बस प्रति मुदित,
बंसी गोविंद ब्रजचदकी, सो वृदावन बाजत बिदित १

गोविन्द (दुसरा.)

(समयबल)

समय मेघ बरसंत, समय शिर होइ सब फल,
तरुणा पावे समय, समयई आति देइ बल,
समय सिद्धिहु मिले, समय पंडितहु चूके,
समय प्रीति चित घटे, समय सरवरहु सूके,
कोउ द्वार जु आवै समय शिर, समय पाय गिरिवरहि गिर,
गोविन्द अटल कवि नद कहि, जो कीजे सो समय शिर १

गोविन्द (तिसरा.)

(जातिस्वभाव)

बोइकों प्यशून खात मृगजको डारि जल,
गंगको पिलाय तोहु गंगमांहि फेर ना,

चंदनको काटि जिमि आगमें जरात तिमि,
सुंदर सुगंध देत वामें कछु देर ना,
बागमें विमल थल बोइ बहु बार सिंचे,
तोहुं शुभ छांइ कदि करत है फेर ना;
गोविंद कहत तैसें जाकी जैसी जाति तैसो,
तिनको सुभाव होत वामें कछु फेर ना. १

शुरकों शिखायो किन रनहींमें लरिवेकों,
भीरुको शिखायो किन डरिवेमं देर ना;
साधवी को पास शिखी पतिव्रत पारिवेकों,
कुलटा को पास शिखी छैलनकों हेरना;
दानिकों शिखायो किन दान देइवेकों सदा,
सूमको शिखायो किन वैन वर वेरना;
गोविंद सुकवि कहे जसी जाकी जाति तैसो,
तिनको सुभाव होत वामें कछु फेर ना. २

सिंहकों शिखायो किन कुंजरकों मारिवेकों,
चातुक शिखायो किन तोयदकों टेरना;
शुककों शिखायो किन वामिल वचन वर,
शिखत चकोर कहां चंद सामें हेरना;
साधुकों शिखायो किन सत्य पालिवेकों सदा,
चौरकों शिखायो किन राहदार घेरना;
गोविंद सुकवि कहे जैसी जाकी जाति तैसो,
तिनको सुभाव होत वामें कछु फेर ना. ३

(शृंगाररस-नायिका भेदादि.)

सुंदर सरूपवान ओपत अमिर और,
सुघर चतूर सदा विमल विभायका;
जानत सकल कला आप अभिराम और,
उरमें उदार महा प्रेम सरसायका;
गोविंद सुहाग भरी भाव भरी भ्राजत है,
लाज भरी भाग्य भरी नेहकी निभायका;
मैन उपजायका रु दायका दयित सुख,
ऐसें गुन लायकाकों कीजें कवि नायका. १

मोद भरी मैन भरी, अमित उछाह भरी,
ओप भरी अगनमें गोविंद प्रभायका,
भाग्य भरी लाज भरी सुदर सुहाग भरी,
प्रेम भरी प्रीतमकों आनद उपायका,
हाव भरी भाव भरी राग भरी रग भरी,
रूप भरी रस भरी गुनकी गहायका,
प्रेम सरसायका रु दायका उमग उर,
ऐसें गुन लायकाकों कीजें कवि नायका २
आजकी अनूप आछि वानक विभात बर,
वाहिको विलोकी कवि करत है गौर है,
तदपि न एके ताकी उपमा न सूझत है,
सोचत सदाय चित्त सांझ अरु भोर है,
पेमी अग आभा तामें लोचन लगाय लसे,
अजनही और और आस्यमें तमोर है,
ओर आभरन और अधर सुहाय चारु,
और गति मति तेरी चितरनी और है ३
सुदर सुखद हावभावकी भरित भल,
ओपत अपार अनुराग अकुपारसी,
केलिमें कमाल कल्पलतिकासी राजत है,
कठमें लगत रम्य हीरनके हारसी,
हसत वदन वर विलसत रात दिन,
बोलत मधुर बानि गंगजल धारसी,
गोविद कहत ऐसी जगमें न जोरु होती,
कविता न होती एती कवि होत आरसी ४
रेनमें रमन करि सुख उपजात अति,
दिनमें सतोपत हे उत्तम अहारदी,
धाममें व्याम काम करिके प्रधान सम,
स्वामीकों सहाय करे पुत्र परिवारदी,
जगत जलधि पार पाइवेमें पोत जैसी,
सुदरी न होत ऐसी विविध विहारदी,

मोर चहे मनमें घनकों पर, मोर नही घनके मन भावे,
मृगिनपें रति व्याल धरे पर, मृगि नही कमि व्यालको ध्यावे,
चातक स्वातिकों बुंद चहे पर, बूंद न चातकके गुन गावे,
गोविंद त्यों हम आप चहे पर, आप न क्यों हमपें रति लावे ५

(नेह निभायन विचार)

नेहको नातों निभावनको सखि, नेहि करे सु धर्मे नहि होती,
देखिये प्रान पतंग तजे निज, प्रेमहितें परि दीपक ज्योती,
सागर नीरतें ऊपर आइकें, स्वातिकें बुंदकों छीप लें ढोती,
त्यों मधुरे तजि डारमं वासकों, गोविंद हस चुगे इक मोती १
ज्यों पपिहा घन वारि बिना कहि और न पान करे लखि श्रोति,
ज्यों रवि कीरनको तजिकें कदि, कंज चहे नहि औरकि ज्योती,
ज्यों निस पायतें लाकरिकों तजि, हारिल पंखिनि और न ढोती,
त्यों कवि गोविंद नेह निभावन, चुगत हस सदा इक मोती २

गोविन्दचन्द्र.

(दुष्टजन स्वभाव)

भानु तेज अपनी गतिको अरु, पावक तेज प्रचड घनेको,
पकजहू तजि पंक निवास, विकास करै गिरि शृगन नेको,
गोविंदचंद्र चलै अचला महि, जाइ तलै कमि छंद भनैको,
पै निशि सोवतहू सपने मन, दुष्ट तजै नहि दुष्टपनेको १
शूकर नाहि तजै मलको भखु, वायस आमिख भोजन नेको,
कूकर अस्थि न चर्म सियार, न पन्नगहू विषदंत सनेको,
श्रोणित पान तजै नहि जोंक, कहै कवि गोविंदचन्द्र गिनैको,
तैसेहि कूर कुचालि महा खल, दुष्ट तजै नाहि दुष्टपनेको २
विष अमृत कायर शूर बनें, वायस शुभदायक युक्ति बनेको,
निज चालिहु छाडि भुजंग चलै, प्रिय अंग तजै मुमुखा अपनेको,
पावक प्रकृति विसारि रहै, धन आइ मिलै कबहु सपनेको,
सतसग प्रभाव बडो अद्भुत, किमि दुष्ट तजै नहि दुष्टपनेको ३

रावण सीय लइ हरिकें पुनि, मान कियो शुभ चित अपनेको,
वालि भुपाल अनीति करी, परि प्रीति करी पाद दर्शन नीको,
गौतम नारि विचारि तरी, करि पाप परी‌‌‌‍‍‍‍ शाप मुनीको.
शरणागति पाइ तिरे निगर, किमि दुष्ट तजे नहि दुष्टपनेको. ४

केतक कोऊ करे उपदेश न, लेश हिये मन आवत नेको,
जैसे हलाहलके घटमें, मन बुद सुधारस काहि गिनको:
गोविन्दचद्र किये विनति नहि, मानत नेक विचार हनेको,
धारें फिरे गति पन्नगसी जग, दुष्ट तजे नहिं दुष्टपनेको. ५

ज्ञान तजे नहि ज्ञानि महातम, ध्यान तजे नहि ध्यानि खनेको,
लंपट वाम न दामहि मृग, न रामहि गोविंदचंद्र क्षणे को.
शूर तजे नहि शूरता धर्म, न कायर प्राण प्रमाण घनेको:
सजन सज्जनता न तजे अरु, दुष्ट तजे नहि दुष्टपनेको. ६

ज्ञानको सार सम्हार कहे शुभ, नीत पुनीति कहे सबनोंको,
भवकूप परे मति हिन निटे बहु, पाप करे अरु दुख सजनोंको;
चारो यतन करि शुद्ध करे तो, प्रहार करे खर दुष्टजनेको,
दड प्रचड विना कबहुं पर दुष्ट तजे नहि दुष्टपनेको. ७

गंग.

(अकबरप्रति उपदेश-सवैया.)

गग तरग प्रवाह चले अरु, कूपको नीर पियो न पियो,
आनि हृदे रघुनाथ बसे तव, औरको नाम लियो न लियो,
कर्म संजोग सुपात्र मिले तो कुपात्रको दान दियो न दियो,
(कवि) गंग कहे सुन शाह अकव्वर, मूरख मित्र कियो न कियो. १

तारेकि जोतमें चंद्र छुपे नहि, सूर छुपे नहिं बादर छाये,
रन चड्यो रजपूत छुपे नहि, दाता छुपे नहि मागन आये;
चंचल नारको नैन छुपे नहि, प्रीत छुपे नहि पूठ देखाये,
(कवि) गंग कहे सुन शाह अकव्वर, कर्म छुपे न भभूत लगाये. २

द्यौस छुपे तिथ वार घटे, अरु सूर छुपे अति पर्वको* छायो,
देखि मृगेंद गयंद छिपे पुनि, चंद्र छुपे जु अमावस आयो;

---

* ग्रहण.

पाप छुपे हरि नाम जपें, कुलकान छुपे हें कपूतको जायो,
(कवि) गंग कहे सुन शाह अकब्बर, कर्म छुपेगो न छुपो छुपायो ३
बालसें ख्याल बडेसें विरोध, अगोचर* नारसें ना हसिये,
अन्नसें लाज अगनसें जोर, अजानत नीरमें ना धसिये
बैलकु नाथ घोडेकु ल्याम, मतगको अकूशसें कसिये,
(कवि) गंग कहे सुन शाह अकब्बर, क्रूरसें दूर सदा बसिये ४
जट कहा जाने भट्टको भेद, कुमार कहा जाने भेज जगाको,
मूढ कहा जाने गूढकी बातमें, भील कहा जाने पाप लगाको,
प्रीतकी रीत अतीत कहा जाने, भेंस कहा जाने खेत सगाको,
(कवि) गंग कहे सुन शाह अकब्बर, गद्ध कहा जाने नीर गगाको ५
ज्ञान घटे कोइ मूढकी सगत, ध्यान घटे बिन धीरज लाए,
प्रीत घटे परदेश बसे अरु, भाव घटे नितही नित जाए,
शोच घटे कोइ साधुकी सगत, रोग घटे कुछ औखद खाए,
(कवि) गग कहे सुन शाह अकब्बर, पाप कटे हरिके गुन गाए. ६
पावकयुं जल बुंद निवारन, सूरज तापकु छत्र कियो हे,
व्याधिकु बैद तुरंगकुं चाबक, चोपगकु ग्रन्थ बड दियो हे,
हस्ति महा मदकु किय अकुश, भूत पिशाचकुं मत्र कियो हे,
ओखद हे सबको सुन्वकार, स्वभावको ओखद नांहि कियो हे ७
चचल नारकी प्रीत न कीजिये, प्रीत किये दुख होत है भारी,
काल परे कबु आन× बने, कबु नारिकी प्रीत हे प्रेम कटारी,
लोहको घाव दवासें मिटे, अरु चितको घाव न जाय बिसारी,
(कवि) गग कहे सुन शाह अकब्बर, नारिकी प्रीत अंगारसें भारी ८
गर्जसें अर्जुन हीज भये, अरु गर्जसें गोविंद धेन चरावे,
गर्जसें द्रोपदि दासि भई, अरु गर्जसें भीम रसोई पकावै,
गर्ज बडी त्रय लोगनमें, अरु गर्ज विना कोइ आवे न जावे,
(कवि) गग कहे सुन शाह अकब्बर, गर्जसें बीबी गुलाम रिजावे ९
रती बिन राज रती बिन पाट, रती बिन छत्र नही इक टीको,
रती बिन साधु रती बिन संत, रती बिन जोग न होय जतीको,
रती बिन मात रती बिन तात, रती बिन मानस लागत फीको,
(कवि) गग कहे सुन शाह अकब्बर, नर एक रती बिन एक रतीको १०

* कामांध अथवा और कोइ तरहसे. × आयपरे.

वासके संग तो नाक दियो, ओर आंख दियो जग जोवनकुं,
हाथ दियो कछु दान करनकुं, औ पांउ दियो पृथि फेरनकुं;
कान दियो सुननेकुं पुरान, औ मूख दियो भज मोहनकुं,
हे प्रभुजी सब आछो दियो पन पेट दियो पत खोवनकुं. ११

मात कहे मेरो पूत सपूत है, बेनि कहे मेरो सुंदर भैया,
तात कहे मेरो हे कुलदीपक, लोकमें लाज अधिक बधैया;
नारि कहे मेरो प्रानपति, औ जीनको जाके मै लेउं बलैया,
(कवि) गंग कहे सुन शाह अकब्बर, सोई बडो जाके गांठ रुपैया. १२

पाख पराजनके जरमें, जनको जर संचके काम न आवे,
पाख पराजनके तपमें, जनके तपसें अघ दूर न जावे;
काह कहूं अन भूपनसे, जिनसें अरि ठठ्ठ थरक न जावे,
दाम ढहो तिनके कहे गंग जहां घर मंगन मान न पावे. १३

नीति चले तो महीपति जानिये, धीरमें जानियें शील धियाको,
काम परे तब चाकर जानिये, ठाकुर जानिये चूक कियाको;
पात्र तो बातनमांहि पिछानिये, नेनमें जानिये नेह तियाको,
गंग कहे सुन शाह अकब्बर, हाथमें जानिये हेत हियाको. १४

(सज्जन दुरिजन-कवित्त.)

धन देवे धाम देवे बातको विश्राम देवे,
राजकी लगाम देवे ऐसो प्रिय पेख्यो हे;
समय अनुकूल रे'वे भूलथाप नहि देवे,
निष्कपट न्यायी पट्ट कूपरन छेक्यो हे,
वात गुप्त राखे दाखे बोल ना कही उथापे,
प्रकृति पिछानी जानी लायक यों लेख्यो हे;
कहत है कवि गंग सुनो मेरे दिल्हीपति,
समयपें सीस देवे ऐसो कोई देख्यो हे. १

अकारण क्लेश करे इरषामें अंग जरे,
रग देखी रीझे नहि दृष्टिदोष खडो हे;
आपको न करे कांज परको करे अकाज,
लोगनकी छांडी लाज असूयामें अड्यो हे;
मन बानी काया क्रूर ओरकूं संतावे शूर,
काम क्रोध हो हजूर बिधिने क्युं घड्यो हे;

कहत हे कवि गंग शाहनके शाह शूरा,
दुनियामें दुःख एक दुर्जनको मंडो हे २

कुपात्रकी प्रीत कहा खात विन खेत जैसे,
प्रीति बिन मित्र याकु चित्तहु न आनिये,
मति विना मर्द ओर नूर विन नारी कहा,
अर्थ विना कवि याकु पशु ज्यों प्रमानिये,
तोया विन फोज कहा हस्ती विन होदा जैसे,
द्रव्य विन देवे दान देव करि मानिये,
कहे कवि गंग सुनो शाहनके शाह शूरा,
आदमीका तोष एक बोलमें पिछानिये ३

प्रीतिके लीये पतंग प्रान देत पलमाह,
पावत हे जोति जहां तहां चलि टूटि हे,
प्रीतिहीके लीये मृग मानत हे मनमाह,
मरिबेको नाद सुनि आवे अति तूटि हे,
प्रीतिहीके लीये मग कैतकीमें जाइ परे
लावत न जिय जोपें होत पर कूटि हे,
परम प्रवीन नेहके प्रीति छोडयो चाहत हो,
प्रीति नेह प्रान सग छूटे प्रान छूटि हे ४

कक्करको खेत कहा कपटीको हेत कहा,
वेश्या विसवास ऐसें कैसें पतियाइयें,
आगकी अंगारी कैसें फूसमें पसार राखो,
पथ्थरकी पूतरीसें कैसें पतराइयें,
काठको समशेरसें कोन देश जीत आये,
रांगके रुपैयेसेंतो कैसे बुधताइये,
सुनहो गंङ्ग गङ्ग गंङ्गके गहैये कवि गग,
जैसे गुनी ताकों गंदपें न तुडाइये ५

(भूख-दुःख-झूलणा)

भूखमें राजको तेज सब घट गयो, भूखमें सिद्धकी बुद्धि हारी,
भूखमें कामिनी कामसों तज गई, भूखमें तज गयो पुरुष नारी,
भूखमें ओर व्यवहार नहि रहत हे, भूखमें रहत कन्या कुमारी,
कहत कवि गग नहि भजन मन पडत हे, चारहि वेदसें भूख न्यारि १

(प्रबोधक-छप्पय.)

मोर मेरु पर चुगै, चुगै हंसा जल सरवर,
सिंह सकल बन चुगै, चुगै पंछी सब तरवर;
गजकदली बन चुगै, चुगै पाताल भुजंगम,
मच्छ कच्छ सब चुगै, चुगै घर बंधे तुरंगम;
जीव जंत सबही चुगै, वाकि गाठ क्या गर्थ हे,
चिंता मत कर निश्चिंत रे, पूरनहार समर्थ हे. १

छप्पर रेंड छपाय, तबे तरु कौन कटावे,
खरतें व्हे संग्राम, तेजियां कोन चरावे;
लसन सुगंधित होत, कोन केसरकों बहोरे,
वेस्यातें घर चले, कोन कुलवंती खोरे.
जो होय तमाशा कागतें, तो बाज कोन शिकारथें;
जो काज कपूतांथें सरे, तो कोन सपूता पारथें. २

(विधि वियोग-सवैया.)

नृप मार चली अपने पियपें, पिय नाग डस्यो दुखमें परिहूं,
परदेश गई वनसोइ ग्रही, मुहि वेच दइ गनिका घरहूं;
सुत संग भयो जरबेको चली, जलपूर भयों निकसी तरिहूं,
महाराज कुमार अहीर भई अब, छाछकों सोच कहा करिहूं. १

सोचत जात सबे दिन रात, कछू न सुहात कहा करिये,
इत व्याकुल नेन परे नहि चेन, हिये महि मैन हिये जरिये;
इत सोचत लालनको जियरो, इत लाज महा कुलकी धरिये,
जरिये मरिये भरिये रसके, बिधि एसि लिखी तो कहा करिये. २

दुख दूनो भयो निस बासरतें, अलि रेन दिना दुख क्यों धरिये,
सूर सुकावत हे उतके, उत चंद्र उते उतके जरिये;
गुन टूटिके कर नाव चल्यो अब, खेवटियां बिन क्युं तरिये,
जरिये मरिये भरिये रसके, बिधि ऐसि लिखी तो कहा करिये. ३

जा दिन कंथ बिदेश चले, गलहू न लगी न परी चरनां,
ता दिनसें तन ताप रह्यो, मन झूर रही पियको मिलनां;
भूल गई सुख फूल रह्यो, दुख नेन लगे गिरिको झरनां,
कवि गंगकि नार विचार करे, पियके बिछेरेंसें भलो मरनां. ४

(समस्यापूर्ति-शृंगाररस-सवैया)

भई[1] अबला रस भेद न जानत, सेज गई जियमाहि डरी,
रस घात करी जब चौंकि चली, तब जायके कंथने बाहि धरी,
उन दोननकी भग भोरनमें, कटि नाभितें अंबर छूट परी,
कर दीपक कामिनी झांप लियो, तिहि कारन सुंदरिहाथ जरी १
सोल सिंगार सजी अति सुंदर, रेन रमीसो पियासग रानी,
ऊठ प्रभात मुखाबुज धोवत, टीकि मिसी हथेरी लिपटानी,
तामध चित्र हतो गजराज, अर्जायेव बूमय काहु पिछानी,
(कवि) गग कहे सुन शाह अकब्बर, डूबत हाथि हथेरिके पानी २
जा दिनतें जदुनाथ चले, मज गोकुल मथुरा गिरिधारी,
ता दिनतें मजनायिका सुंदर, गंपति झपति कंपति प्यारी,
वाहिके नेननकी सरिता भई, (जेमे) उकरसीस चले जल भारी,
(कवि) गग कहे सुन शाह अकब्बर, ता दिनते जमुना भई कारी[2] ३
जा दिन कंथ विदेश चले, सखि ता दिनमे बहु लागत जीको,
अग शृगार अंगारसें लागत, मानुनिके मन लागत फीको,
सेज समे कमला भई व्याकुल, सीस रख्यो लटकी तरुनीको,
(कवि) गग कहे सुन शाह अकब्बर, नेनके नीरमें भींजत टीको ४
नीचें निहार हो नागरी म्हावरी, ऊंच दिसि आसमान फटेगो,
इंदर लोकमें होत हलाहल, सूरज चद्रको तेज घटेगो,
राख व्यार विरागि मनि नर, रामहि राम स्वआस रटेंगो,
गग कहे हम यों डर लागत, तेरे लिये करतार छटेंगो ५
बेठि हुती मपभानसुता तहां, दूतिका एक अचानक आई,
सोच किये बिन बोल उठी, सखि कान्ह विंदावनमांहि बुलाई,
कान सुन्यो नहि आंख देख्यो नहि, कान्ह कहा विजिया कछु पाई,
ऐसि हसी सखि जानि पडे हम, पानिम आग लगावे लुगाई ६

---

१ इस कवित्तमें मुग्धा नायकाका वर्णन है अकबरने गगको पूछाया कि सुदरीका हाथ किस कारनसें जरा, जिसके जवाबमें ये सवैया कहाया.

२ (दोहो) सब नदियनको नीर है, उज्वल रूप निदान
शाह पुछे कवि गगकु, जमुनां क्युं भइ श्याम १

कौन घरी करि है बिधना मन, रूय सियां दिल्दार बुबीनम,
हस्त अनंद तबे सजनी, अज बागे बहार गुलाबन चीनम;
प्रीतम प्यारे मिले जबते, दर सोहबत यार निगार नशीनम;
सूरत मित्रको चित्त बसी, कबि गंग चुनांचेकि नक्स नगीनम. ७
एक समे घरसें निकले, सखियानके संग व्हे सांवल मूरत;
होशम रफ्त न मंद बदस्त, शुदेदिल मस्त जीदीदन सूरत;
मुसकाके मोहि तन ताकि दियो, तिरछी अंखियाते कहूं कह पूरत,
गमजे ब नाज नमूद सनम, बेताब शुद तन मन ब मरूरत. ८
लखि पायन पायल मायल दो, शुभ लंकते दुर निशंक गयो,
जह रूप नदी त्रिबली तरिके, करिके अति साहस पार भयो;
कबि गंग कहे बटपार मनोज रुमावलिसें ढग संग भयो,
कुच दोनो सुमेरुके बीच भट्टू मन, मेरो मुसाफिर लूटि लियो. ९

(शृंगार-कवित्त.)

प्यारी रसाल रातकी न जानुं कोन जातकी,
आली अनेक भातकी सो भाव भेद दे गई;
चुरी हरि हें हाथमें सखी सहेली साथमें,
बिधु बिधु जमातमें सो मोज मोज के गई;
सिंह लंक कामिनी दमक देह दामिनी,
स्वरूप रूप भामिनी दयाल उच्छतें गई;
जराक नेन जोरते कचाट भवां मोरके,
चटाक चित्त चोरके कपाट पाट दे गई. १

राति घोस रहत हिलेई मिले दोउ पिय,
फिरि फिरि याहीतें परेखो कीजियत हे;
कहे कबि गंग जेसें पानीन पुखान पुरे,
पुरइनि पातन कदापि भीजियत हे;
रूपवंत मानस रसीली आंखे लागति हें,
यातें कहा कछू तुम्हे, दोष दीजियत हे;
जोइ जोइ रुख देखि बेठिबो छिनकु छांह,
सोइ सोइ रुख संग लाइ लीजियत हे. २

खंजनसे नेन तन तात तपनीय एन
मेनसी हुलास मुख बेनन सुहात हे;

अलबेली अडकें सु आइ रही नैननमें,
दसन गामिनि इति ज्यों ज्यों मुसिकात है,
चचर चकित मानो चोकें मृग छोना ताको,
एाए मिलिबेको खरी ग्वरी अकुलात है,
नैनह न आवे नींद भूपन न भावे गंग,
पहर पहर राती पहर सी जात है २

(वीर, शृंगार-छप्पय)

मांग लगा लट सांग, चक्र फेंउ चद हार गर,
अति तिष्छन सर पष्क, धनुष भ्रुकुटी मुख ऊपर
नयन चपर हय सच्च, चार गज गार धरति युन,
चरीय गग्न गति जुद्ध, गात धमि प्रेम कवच रुचि,
झिगमिलति ध्वज फरफर धमन, धजत नाद किंङ्किया पगन
ननि जुन निपमी झुंझन चली, भये याम देखत मगन १

(अनुपणम-कवित्त)

कोपी फशर्मारते चल्यो हे दल साजी वीर,
धीर ना धरत गर गानिबेको भीम है,
सुभ होत साझही धजत ढंत आधी रात,
तीसरे पहरमें वहर दे असीम है,
कहे कवि गंग चौथे पहर मतावे आनि,
निपट निगोरो मुहि जानिके अनीम है,
याही शीत शका कापे उर हवै अंदका,
रघुराजाके ज्योते होत एकाकी मुहीम है १

(सवैया)

गुजत भृग निकुजके पुंज, सरोजन सौरभकी सरसाई,
गगहि प्राणपतिको पयान, भलो केहि भांति वियोग दशाई,
बोल्त कोकिल बाद बसत, बसतते बासर सो न बसाई,
चैतकी चादनिके चित ये कहु, कैसेकै छोडेंगो काम कमाई १
निशि नीरु नये उनये घन देखि, फटी छतियां मजबालनकी,
कवि गग तना धृति क्षीण भई, सुभरी छबि देखि तमालनकी,

दशहूं दिशि ज्योति जगाजग होत, अनूपम जीवन जालनकी,
मनोकाम चमूकि चढी किरचै, उचटे कल धौतके नालनकी. २

(शाहजहां-वीरता प्रशंसा.)

(कवित्त.)

लथ्थ पथ्थहथ्थ सोहै सुंदर सिदूरयुत,
गहे रविरथ्थ मद चारों ओर वरखे:
ऐसे हे उतग ए मतंग शाहजहांजूके,
अगन सुमेर व्हैके अगनके सरखे,
ऐरावतके हे बेटे दिग्गज लगत चेटे,
धूरिसो धुरेटे देखि रोम रोम हरखे,
चारों चंपनके अरि वड वड कंपे वोहो,
काज सिंधु जंपे ले कल्पतरु करखे. १

नोबत बजत चढि चले दिल्लीपति तव,
परि हे विपत अति रघु राजधानीमें,
हय गय खुरतार सुंदर उडत छार,
हरत पहार हे न मानी काहु मानीमे,
मेरु गयो आमलको चल गयो शेपनाग,
शाहजहां कूच कियो यह जिय जानीमें,
कमठकी पीठ फटी टूक टूक भई टूटे,
नाव केसे तखता तुरत फिरे पानीमें. २

बजत निसान शोर दसहू दिसान भयो,
ठोर ठोर कंपे और भूधर गरूरसों,
चलत छितीत छिति व्है गई छपासी छांहि,
छाह गयो अवर बिलाई गयो सूरसों,
शाहजहां साहब दिलीसको चढत दल,
म्लान भयो नरपति भूतलकी धूहिसों,
धाव हय धमक धरासौ चपि चूर व्हैके,
उडि गयो कूरम सपूरन कपूरसों. ३

दोरे शाहजान और दलहून पारवार,
पखरे पवंगपर वद जेब यारके,

इन्द्रगिरि हेमगिर गिरिजा गिरीस गिर,
और गिर गिरे सो गिराये गजभारके,
करवाकी कहा गग तर वात तितैं होई,
सरधान पूजे परनाह नव चारके,
तुटी वीची वीची वड वड वोले मेला फूटे,
परिधव वोउ वोला होत तहिचारके ४
शाह जहांगिरको सपुत शाहजहा जम्यो,
मुवर जहान सेप फाड्यो चहू ओरतें,
नाग भयो चूरमातें नागनके पाइनसौं,
टाटे अरिनगर नगारनकी घोरतें,
उडी खुरतार छार छाइ रही अमरम
छातसी हलन लागी छिति और छोरतें,
डोलत है कुडलीकी ऐसे फनि मडली जो,
पुडरीक डोलत है पौनकी झकोरत ५

(खानखाना-प्रशसा)

धमक निसान सुनि धमक तुरान चित्त,
चमक किरान मुल्तान थहरानाजू,
मारु मरवान कामरुके करवान आदि,
मेवारके गन हिंदवान आन मानाजू,
पूर्वगान पछमाध पल्टान उत्तराध,
गुजरात देश अरु दच्छन ववानाजू,
ओरयान हसवान हेहवान रूमसान,
खेल मेल खुरासान चढे खानखानाजू १

नवल नवाव खानखानाजु रिसान रन,
कीने अरि जेर समसेर सेर सरजैं,
मासके पहार समसान करि राखे शत्रु,
कीने धमसान भुमि आसमान लरजैं,
सोनितकी धारसों चुवात चंद्रमासौं धार,
भारी भयो भेद रुद्रनको हा हा वरजैं,
न्यारो पेल चोल्त कपाल मुंडमाल न्यारी,
न्यारो गजराज न्यारो मृगराज गरजैं २

नवल नवाब खानखानाजू तिहारे डर,
वैरी विडराने धुनि सुनिकै निसानकी,
तिनहूकी रानी फिरै थकी बिल्लानी सब,
छूटी रजधानी सुधि खानकी न पानकी;
तेहु मिलीं करिन हरिन मृग वानरन,
तिनहूतें रक्षा भई उनहीके प्रानकी,
सची जानी करिन मृगन मयक जानी,
भवानी जानी केहरी कपीन जानी जानकी. ३

सात सिंध सात दीप थहर थहर करे,
जाके डर तूटत अनूठे गढ रानाके,
मेर मरजाद छांडि कांपत कुबेरहीसे,
सुनिके निसान डंका संका लक थानाके
धरनी धमक कसमसक कसक गई,
सूके बसुधाके खंड खंड खुरासानाके,
सेसफनी फूटी तूटी फूटि चकचूर भये.
चले पेसखानाजू नवाब खानखानाके. ४

(दानशाह-प्रशंसा.)

बाने फहराने फहराने घंटा गजनके,
नांहीं ठहराने राव राने देशदेशके;
नग भहराने अरु नगर पराने सुनि,
बाजत निशाने दानशाहजू नरेशके,
कुकुभके कुंजर कसमसाने गंग भने,
भौनके भजाने अलि छुटे लट केशके,
दलके दरारहूते कमठ करारे फूटे.
केरा कैसे पान बिहराने शिर शेषके. १

(गंगके मृत्यु विषयमें सवैया.)*

सब देवनको दरबार जुर्यो, तंह पिंगल छंद बनाय सुनायो,
काहुतें अर्थ कह्यो न गयो तब, नारद एक प्रसंग चलायो;
मृतलोकमें हे नर एक गुनी, कवि गंगको नाम सभामें बतायो.
सुनि चाह भई परमेश्वरकी, तब गंगको लेन गणेश पठायो. १

---

* कोई कहेते कि यह सवैया गंगका पुत्र कमालने बनाया है.

गंगाराम.

(रागमाला-सभाभूषण-कवित्त)

सज्जन अनेक तहा गुणको विवेक होत,
ऐसी मनरंजन सभाम नित आइये
हास कथ नृत्य विनोद नित आनन्दमें,
हियमे हुलासके मधुर सुर गाइये,
अंग अंग फुरकानि मंद मुसक्यानि यहै,
मन मानी जानि जिय रीझनसु पाइये,
गगाराम कहै सभा भूषन गरथ यह,
भूषणसु कठमाल हियमों छाइये १

(दोहा)

जस भूषन दूषन हरन, गुन समूह सुखधाम,
ग्रथ सभाभूपन मरम, वर्नत गगाराम १

(सप्तस्वर नाम स्थानादि-कवित्त)

प्रथम खरिज सुर दुतिय रिखभ जानि,
तृतीय गाधार नाद गुन अभिगम है,
चौथो सुर मध्यम कहत गुन नाटकते,
पाचमो सुर पचम सुरस गुन धाम है,
धैवतक षष्टम रु सातवो निषाद सुर,
नाभि कठ सीस तन सुर नीके ठाम है,
गंगाराम कहै सभा भूषन गरंथमाहि,
एहि सुर सात तिनके अनेक नाम है १

(दोहा)

खरज रिषभ गंधार मध्यम, पचम धैवत चारु,
अरु निषाद ए सात सुर, गावै सब संसारु १
त्रय स्थान सगीत मत, मंद्र मध्य अरु तार,
तीन ग्राम तीनो प्रगट, नामी गरो कपार २

(सप्तस्वर, उत्पत्ति, भेद, गुण, समय इ)

मोरकी कुहुक मो खरज सुर जानि गुनी,
चातककेे शब्दको ऋषभ सुर मानिये,

छाग उच्चरतही गधार सुर लखि लीजै,
कुरचकौ बौल सुर मध्यम प्रमानिये,
कोकिल उचार सोइ पचम विचार जानि,
हींसत तुरगम सौ धैवत पिछानिये;
धन गरजन सो निषाद एइ सातौ सुर,
गगाराम कहत सगीत वै वखानिये. १
सुरकी अलापनिमें आदि सुर सोइ धाम,
सुरकौ विश्राम तहा मुर्छना वखानिये,
जामे सुर सात फिरै ताकी जात संपूरन,
छट सूर फिरै ताहि खांडवही मानिये,
गावतमें पाच सुर फिरें सुहं ओडव जू,
एइ तीन भांति जाति रागकी प्रमानिये,
गगाराम कहत लहेजे संगीत ज्ञान,
ओर राग रूप सौ गुनीजन ते जानिये २
प्रथमही भैरो राग शिवतें प्रगट होऊ,
मालकौस द्वितीय सुहर कठतै भयो,
तृतीय हिंदोल राग भयो व्रह्मगातते सु,
चतुरथ दीपक सौ भानु नेनतें उयौ,
पचम कहत सिरी राग शेष भूमिहितै,
मेघ राग गाजत अकासहीते उनयो,
गंगाराम कहत बिचारि हनुमंत मत,
सुघर गुनीजन उपाइ गाइकै लयो. ३
भैरवतें घानी बिन बरद फिरात जात,
मालकौस गायेते अगिन प्रजरात है;
हिंदोल अलापतें हिंदोला झोटा लेत भले,
दीपकके गाये गुनी दीपक जु पात है;
श्रीमै यह गुन गुनी प्रगट बखानत है,
सूखो रूखो हर्यो होत फिरिऊ लहात है;
गंगाराम कहत मेघरागकी प्रभाव ई है,
मेघ वरषत घनमाल मंडरात है. ४

भैरव शरद रितु प्रथम प्रहर जानि,
मालवकोश चोथो जाम शिशिर सुनाइये,
हिंदोल वसत रितु प्रथम प्रहर मध्य,
दीपकको ग्रीषम जुगल जाम गाइये,
श्रीको चोथे प्रहरमें हेमा दिन जानि गुनी,
मेघराग वर्षा चोथो जामि चित्त लाइये,
गगाराम एइ खट रागनको समें ऋतु,
गायत सुघर दश दोषहि बचाइये ५
हीन ताल ताल अरु फाफ सुर सुरभग,
वांके भुव ग्रीव मुख अंगहि डुलाइये,
सुर भेद जाने बिनु कैसे मन मानो गुनी,
गाइयो कपाल सुर मोहि न सुहाइये,
समे बिनु गावे अरु ओर न पावे जुग,
सुघर सगीत बिनु और न उपाइ है,
गगाराम तेइ न रस समुजत राग रूप,
एइ दश दोष गुनी गावत बचाइये ६

(दोहा)

इह विध कहे जु सत सुर, राग रूप समुजाइ,
अमते कहु वनिता सहित, सुनि सज्जन मन लाइ १
देह बसन तन रूप रति, हाव भाव सुर जाति,
भूषन भवन विचारि सब, तीस रागनी भाति २

(भैरव रागस्वरूप-कवित्त)

शिवको स्वरूप शशि भाल सुरसरि जटा,
सेतसे वसन मुडमाल नेन तीन हे,
ककन उरग मृग चरम बिछोना पर,
सोहत सहज सिद्ध महा परवीन हे,
धनी सगम प सूर औडौ याकी जाति,
प्रातही शरद ऋतु गावत नित्ति नवीन हे,
धैवत है सुर मह शिवते प्रगट होत,
याको नाम भैरव सु महा गुनी लीन है १

(भैरव लच्छनकी पांचो रागनी-दोहा.)

भैरव वैरारी कही, मधुमाधवी बिचारि;
सैधवि बंगाली सुनो, यें भैरवकी नारि. १

(भैरवी, वैराटी लच्छन-कवित्त.)

सुंदर सुगोरी नेन अतही विशाल बाल,
बैठी स्वेत पट पर उंझलसी सारी है;
आंगी लाल पंचककी माल गरे पहिरकै,
बजावति ताल शिव रिझावति भारी है;
मध्य महीसुर ग्रह जाकौ गुनी जानी लेही,
मपधनि रिगमजु गायकै बिचारी है,
संपूरन याकी जाति सरद प्रभात समे,
रागिनी सुभैरवी या भैरवकी नारी है. १
कनक कनक करि नागिनसे छूटे केश,
अति गुन भरी बेस उरज बनायो है;
सुमन कलप वृक्ष काननि धरति तिय,
कंचुकी सुसेत पिय रंग मन भायो है;
खेल्योइ चहत है पिहसग संपूरन,
जाति सरिगम धनि खारि यह पायो है.
सरद सुरितुमै पहर दिन अंग गुनी,
गावत अलापि नाम वैरारी सुनायो है. २

(मधुमाधवी बंगाली लच्छन.)

रतिकौसौ रूप रंग राजत मधुर बेन,
अधर स्वरूप तिय कुंदनसो तन है;
बसन जु पीत पिय प्यारी सब सुखदानि,
हसि हसि चुंबन करत पिय सन है;
कंठ भुजमै लैही रहति पिय संग नारि,
मपधनि सरिग जु जाति संपूरन है;
गावत सरद रितु प्रातहिमे मध्य ग्रह,
मधुमाधवीसौ पियसौ मगन है. १

मृग मद भाल मन मोहै शोभावत याल,
खोरिहिं विराजी सु विभूति तन छायो है,
जटा जूट करमें त्रिशूल लिये छबिमंत,
केसरसो भीनी सारी अति मन भायो है,
संपूरन जाति शोभावतसी विराज रही,
सरीगम पधनी सरीज गृह गायो है
गावत सरद रितु चौथो जाम दिन मध्य
सगारी गुनीके मन आनद वढायो है ७

(द्वितीय मालकोश)

चतुर पुरुष कलि करत वधूनिसग,
धवल सुदेह तन भरन जु श्याम है,
सरल सुगध हाथ छरीह विराज रही,
हिय कुरवनी गन मोतिनकी दाम है
भयो कठ हरते प्रगट संपूरन जाति,
मरिगम पधनि सरिज गेह गाम है,
सिसिर सुरितु रेन चोथे हीय हर गाह,
नायक सरूप मालकौस राग नाम है १

(मालकोश पांचा रागिनी—दोहा)

टोडी गौरी गुनकली, खंभावतीक कुभ,
मालकोसको उर यसी, ए तिय पांचो सुभ्र १

(विविध रागिनी—कवित्त)

अतिहि सुमार नारि करत कराक्ष भीरी,
बोलत मधुर सुधानिधसी बचनमें,
धवल मधुर स्याम कचुकी दिपति अति,
खोरि घनसारकी बनाइ सब तनमें,
काम रस पागे खरी हरीन सुनावें,
वित्त भवन परिज अरु जाति संपूरनमें,
सरिगम पधनिसि सिर दिन दूजे जाम,
टोडी नाम कहत सरस गुनियनमें १
कोकिल वयन तन बरन सुश्याम याम,
सुन्दर सूक्ष्म नाद आंव कलीकन है,

धवल बसन मुख दुति देखे चंद लाजें,
विधि रचि पचिके बनाइ सुखदान है,
सरिगम पधनि खरिज गेह संपूरन,
शिशिर दिन चौथें पहर बखान है;
अतहीं सलोनी गौरी रागिनी बखानी यहे,
सुर समयौ विचारि गुनी जन मानी है. २

बसन मलीन प्रानप्रिय बिन तन खीन,
बिरहन बीन बैठी कदम तरु तरे,
भीज रही आंगी सब नेननके नीरहूतें,
दीरघ उसास लै लै हियमें हरबर,
छूटें बार बिरहकी पीर तनवे सभारि,
तनमें वियोग मन कैसे कै धरू धरै,
निस गम पनिषाद औडौ जाति सिसिरमें,
गुनकली प्रात सुनी सुनिये हर हरे. ३

बोलत बचन पिक बेनी मृगनेनी नारि,
सुंदरि चतुर अति राग रगलीन है,
कसुभी सुरग सारी शोभा सो दियत भारी,
धैवत भुवन धनि सरी गम कीन है,
कठिन उरोज अति अंग मृदु सोहत हें,
चंदसो बदन कलहंस गति भीन है,
ललित सिसिरहुमें तीसरें पहरमांहै,
खांडौहुं कहत तीजें गावत प्रवीन है. ४

अति रस रंग लीन मानी रति प्रीतमसों,
दलिमलि गये अंग आंगी उर दरकी;
भरी है बिलास निस जागे एउनींदे नेन,
तूटे सब हार छूटे बार चूरी करकी,
नैन निकी छबि देखि अरुन कमल मोहै,
धनि सरिगम संपूरन है सिसिरकी;
निशि चौथे जाम गाइ धैवत सदनई,
रागिनी ककुभ जनु कला सुधाधरकी. ५

(दोहा)

सत्रह सत संवत सरस, चतुर अधिक चालीश,
कार्तिक शुदि तिथि सप्तमी, वार सरस रजनीस १
सागनीर सु नगरमें, रामसिंध नृपराज,
तहां कविजन सब वयनसों, राजत सभा समाज २
गंगाराम तहा सरस, कीनो बुद्धि प्रकाश,
श्रीगोपाल प्रमादतें, यह शुभ सभा विलास ३

गंगादत्त.

(तंबाकु कुदृष्य-कवित्त)

जहरकी सासु दुष्ट दुव्ही हलाहलकी
विंछीकी बहिन परपंच रूप साजी है,
नानी करियारेकी धतूरेकी ममानी,
पितियानी वच्छनागकी जहानमों विराजी है,
कहे गंगादत्त यह पचावे घनप्रानी औ,
अफिमकी जिठानी विष खोपरेकी आजी है,
माहुरकी मौसी महतारी सिंगियाकी यह,
तमाकु वहमारीकी किने उपराजी है, १

गोपालशरण.

(कुरंगान्योक्ति)

वार वार मुख धनियोंका नहि देखता तु,
झूठी चाटुकारी नहि उनको सुनाता है,
सुनता नहि तुं कटु वाक्य अभिमान सने,
पीछेभी कदापि उनके तुं नहि धाता है,
खाता है नवीन तृण तोभी तु समयमेंही,
सोता सुखसेंही जब निंद काल जाता है,
कौन एसा उग्र तप तुंने था किया कुरग,
जिससे स्वतत्रता समान सुख पाता है २

गुमान.

(विचित्र भूपती-कवित्त.)

दिग्गज दवत दवकत दिगपाल भूरि,
धूरिकी धुंधेरीसों अंधेरी आभा भानकी;
धाम औ धराको माल बाल अवलाको अरि.
तजत परान राह चाहत परानकी,
सैयद समरथ भूप अली अकबरदल,
चलत बजाय मारु दुंदुभी धुकानकी,
फिरि फिरि फननु फनीस उलटतु ऐसे,
चोली खोलि ढोली ज्यों तमोली पाके पानकी. १

(सवैया.)

देश प्रवाहनकी सरिता सब, और बहें बहुतें सरसानी,
कानन कोठि अगोठि कुचाचल, भार भरी धरती अकुलानी,
सूक्ष्म छांह सरूप भई, चित चाह नई निहिचें नियरानी.
शीतल आप पिये शशिमें पर, हीतलकी तब ताप बुझानी १

ग्वाल.

(प्रस्ताविक उपदेश-सवैया.)

कोल हजार करे कितने फिर, एकहु तो तिनमें निबहे ना,
होय सके न रति भर काम, बिना बकवाद जवान रहे ना,
यौं कवि ग्वाल लखे जन लाख, पशु सम रंच विचारहि हे ना,
हे बिरले नर या जगमें, जो कहे सो करे व करे सो कहे ना १

(कवित्त.)

जिसका जितेक सालभरमें खरच उसे,
चाहियें तो दूनापें सवाया तो कमा रहै,
हूरसा परीसा नूर नाजनी सऊरवारी,
हाजर हमेश होय दिल तो थमा रहै;
ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोबत हो,
यादमें गुसैयांकी हमेशां बिरमा रहै;

सानेकी हमा रहै न काहुकी तमा रहै जो,
गांठमें जमा रहै तो सातरजमा रहै १
दिया है खुदाने खूब खुशी कर ग्वाल कवि,
खाना पीना लेना देना यहा रह जाना है,
केतेक अमीर उमराव बादशाह भया,
कर गया कूच फिर लग्या ना ठिकाना है,
हिलो मिलो प्यारे जान नरंदगीकी राह चलो,
जीदगी जरासी तामें दिल बहलाना है,
आवे परवाना मने एक न बहाना याते,
नेकी कर जाना फेर आना है न जाना है २
आश कर आये ह मलिंद मनवारे मजु,
उपमनवासी सुखपुंज सरसावेंगे,
गुंजत गुमान तज याको सनमान कर,
कर अपमान तो जरूर मुरझावेंगे,
ग्वाल कवि कहै तोर्म मृदुल सुगध दोहु,
याहीको सुजश यह जगमें बढावेंगे,
एरे ए गुलाब गुल गाल्बि गुलोंमें यार,
काटे तन छाये हो सा फेर नहिं आवेंगे ३
द्वारेपर झूठ पछवारे पर झूठ झुक्यो,
दोहुन किनारे पर झूठउ रहत है,
अंगनमें झूठ औ दालानमाहि झूठ बसै,
कोठे मांहि झूठ छत ऊपर बहत है,
ग्वाल कवि कहत है सब्बहनमें झूठे झूठ,
सेननमें बेननमें झूठेही कहत है,
हाथीभर झूठ जाके उरमें बसत सदा,
ऊट भर झूठ जाके मुंहमें रहत है ४
चाहिये जरूर इनसानियत मानसको,
नोबत बजे पै फेर नेर बजनो कहा,
जात औ अजात कहा हिंदु औ मुसल्मान,
ज्यासों कारि प्रीति तासों फेर भजनो कहा,

ग्वाल कवि जाके लिये सीसपै बुराई लई,
लाजबी गमाइ तासों फेर लजनो कहा;
केतो काऊ रंगमें न रंगियो सुजान प्यारे,
रंगे तो रंगेई रहो ताको तजनो कहा. ५

आदरमें फरक परै न बहु बीते दिन,
छिन छिन चाह बढै दिलकी सरस है;
बैठबेकी बोलबेकी एकहीसी रहै रीत,
जातें होत प्रीतकी प्रतीत सरबस है;
ग्वाल कवि कहै खानपानको न टरै नेम,
आगे रहो दानसो नसीबहीके बस है,
चाहे दिन दस राखौ अथवा बरस राखौ,
यांपे एक रस राखौ जातें होत जस है. ६

(घनाक्षरी, कवित्त.)

वाज गजराज साच चिता फोज कामदार,
राखिये जरूर ज्याते सबै राजकाज होय;
भांड बहुरूपिया सरूपिया नचैयनकों,
कांचनी कलावंतको आदर अपार होय;
ग्वाल कवि कविनको राखवो सहज है न,
हमे वाहि राखे ज्याके रेख लेख चार होय;
गुनको बिचार होय, अति रीझवार होय,
अमित उदार होय सुजस लेलार होय. १

गंगाके न गोरिके गिरीशके न गोविंदके,
गोतके न जोतके न जाये राह गिरके;
काहुके न संगी रतिरंगी व्हेन भानजीके,
मन अति खोटो सोटे खाई हे जमवीरके;
ग्वाल कवि कहे देखो नारीको खसम जाने,
धर्मको पशम जाने पातक शरीरके;
निमकहराम बदकाम करे ताने ताजे,
बाजे बाजे बेशहुर गुरुके न पीरके. २

धीर कह्यो वीर कह्यो, निधिसों गंभीर कह्यो,
हर पर पीर कह्यो, कीरत विनोदको,
दानी कह्यो मानी कह्यो, सब गुन ज्ञानी कह्यो,
बहुत बखानी कह्यो, बानी घर मोदको,
जग सुखकारी कह्यो, दीन दु खहारी कह्यो,
पर उपकारी कह्यो, पोपक सहोदको,
इन्द्र कह्यो चंद्र कह्यो, बंदु उर वाको अब,
कैसे के रिझावु मन मेलो कमजातको ३

(वियोग-प्रेम-शृंगार)

शशिमुख सूफ गई तबतें व्याकुल भई,
बाल्म विदेशहुको चल्वो जबें कयो,
दूध दहीं श्रीफल रुपैयो धरि थारिमाही,
माता सुत भाल जेंबे रोरिको टीको दयो,
तादुर विसर गई बधुसें कह्यो ले आव,
तबतें पसेनो छुट्यो मन तनकों तयो,
तादुर ले आई तिया आंगनमें ठाडी रही,
करके पसारवेमें भात हाथमें भयो १
सोंह खाय साचि सो सुनाय हो सरोज नेनी,
कोनसी सखीतें सीख सीखी ऐसी चाही है,
केलि करवेकों चह्यो जब मैं मयंकमुखी,
तब तकी बंक अरु लागी गल बांही है,
ग्वाल कवि बाहिको गहत बांहि खेंच लेत,
बाहिको छोडावे अरु दारें गर बांही है,
हांही है कि नाहि है कि नांहीमांही हांही है कि,
हांहीहीमें नांही है ये कैसी तेरी हाही है २
सोई दुपहरिका समोय अति आलसमें,
पावसकी धार जिम स्वेदन रहा रहा,
जानि यह परत सुपनपें पियाने गही,
चल्तो तकाओंमें तमासो ए ल्हा ल्हा,

ग्वाल कवि भौंहे सत रौंहे तिरछौं हे येंह,
लेत हर मनको सुनाओं मैं कहा कहा;
निवी गह गही रही अंह अंह कही रही,
वकी रही नही नही ऊंहुं ऊंहुं अहा अहा. ३

केलि करि बैठी वाल वालसो बिथुरै परे,
मांग मोती भरे गिरियत निरमलासी;
बोर गई बगर पसेनाकी पसर भई,
ओठतै उसर गई लाली भोंर मलासी;
ग्वाल कवि चंद्रहार चंपकलि टूट परी,
ऐसे सब छूट परे माला सब छलासी;
आंगी गई दरक तरक गई तनी सब,
चुरियां चरक गई फैली चंद्र कलासी. ४

आधी रात कालकी गोविंद सपनेमें आये,
करि करि वचन पियूषमें पगा लई;
लेटे आधि सेज औ समेट्यो सुखपुंज सबै,
बंद कंचुकीके छोरि अंकमें लगा लई;
ग्वाल कवि कीन्हो उन पान अधराको फेर,
चितवन चोखी चित मेरैमै लगा लई,
तेरी सोंह आली फिर निवीकी खुलाखुलीमै,
सीवीके करत मोहि नींदनै दगा दई. ५

एकाएकी भेट भई तबतै सकुच गई,
मिटी कुलकानि जानि घूंघटको करिबो;
लगी टकटकी उर मिटी धकधकी गति,
थकी मद छकी ऐसो प्रेमको उघरिबो;
चित्र कैसे काढे दोऊ ठाढे रहें ग्वाल कवि,
नाहिं न प्रवाह लोग लाखनको लरिबो;
बशिको बजैबो नटनागर बिसर गये,
नागरि बिसर गई गागरिको भरिबो. ६

(धनाक्षरी.)

आज वन वीप्पिन बिछोहैं पर्यो आलिनसौं,
भई मै अकेली पै गईरी बीर थक थक;

औचक कहूं तें कपि काठिनसो कुधो आनि,
उचक छराके छोर तोरी डार्यो तक तक,
ग्वाल कवि थीन गही कचुकी बिदार्या फेर,
उछल कदंब पै जरयोरी लखै टक टक,
आई में मरके भजूहूकै न मिटत उर,
कर धर देख्यो क्यौं न छाती होत धक धक १

(भेषक वर्णन-कवित्त)

चदवदनीके हूव नीके सीत लगे दाग,
आननपें रहे जाग जेथ सरसत है,
काम जोंहरीके मोती फैल परे फोक कहै,
यावनकों फूल्यो बाग फूल बिलसत है,
ग्वाल कबि कहै फोक फोक यौं जतावत है,
मेरे मनमाय कछु और दरसत है,
चिकने कचन वो फिसल फूट्यो कंध मन,
भये टूक टूक ताके कनिके लसत है १

(बासुरी वर्णन)

गोधनके पूजिवेकों गोपी चढि जातहुती,
छाकनसों थार भरे गहे जात सिरके,
पायजेब झाझनकी होत झनकार जैसी,
तैसी किलकार गीत प्रीत पुज घिरके,
ग्वाल कबि त्यूही कान बांसुरी बजाई सुन,
आसुरी उमगि चले अंग अग थरके,
फिरि परी चिरि परी मिरि परी गिरि परी,
उंचे परी नीचे परी बिचे परी भीरके १

एक ओर बीजना डुरावत चतुर नार,
एक ओर झारी ले जमुन जल पानकी,
एक ओर पाछेतें खवासन खवावै मान,
राधे मुख लाली श्रै है ऐसे रस मानकी;
ताही समें बांसुरी बजाई नद नदनसों,
सुध नां रही है तिन्हे भजके लतानकी,

दांए गिरि नीर वारी बाएतें समीर वारी,
पाछे पान दान वारी आगे वृखभानकी. २

दीपनसी बाला दीपमालमें दीपेइ राति,
कहत दिखैया जिन्हे नरी हैकि परी हे;
ताई समें तेनें निरदई काग जब कियो,
आगें कहूं नंदहूने एक चाल करी हे;
ग्वाल कवि गोपिनकी गावन हसन तामें,
फूकितें न वंसीमें न आगि फुकि धरी हे;
चोंकि परी चकि परी तकि परी छकि परा,
वकि परी थकि परी मूराछित परी है. ३

कहां जाय व्रज तज वसिवो मुहाल भयो,
फैलवो विसाल भयो वसी धुन जालको;
यह तो अनोखो नयो रसिक उताल भयो,
व्याल भयो मंत्र याकी फूकमें रसालको;
ग्वाल कवि एतो भलो जसोदाको लाल भयो,
जादू जंत्र जाल भयो चलन कुचालको;
हिये हिये साल भयो गोपीन जंजाल भयो,
ख्याल भयो दैया निरदैया नंदलालको. ४

(वसंतऋतु)

वाग वन उव्वे फव्वे फवनि अनेकनसों,
सरसों प्रसून पुखराज दरसायो है;
मोति ये सु मोति ये है सेवती सरस हीरै,
ठौर ठौर वौर भौर पन्ननको लायो है;
ग्वाल कवि कहत कुसुम मंजु मानिक है,
सौरभ पसार पुंज पानिप सुहायो है;
शोभ सिरताज व्रजराज महाराज आजु,
रितुराज जौहरी जवाहिर ले आयो है. १

सरसोंके खेतकी बिछायत बसंती बनी,
तामें खडी चांदनी बसंती रतिकंतकी,
सोनेके पलंग पर बसन बसंती साज,
सोनजुही मालैं हालैं हिय हुलसंतकी;

ग्वाल कवि प्यारो पुखराजनको प्यालो पूरी,
प्यावत प्रियाकों करै बात बिल्संतकी,
रागमें बसंत बाग बागमें बसत फूल्यो,
बागमें बसंत क्या बहार है बसंतकी २

(सवैया)

फूल रही सरसो चहुओर ज्यों, सोनेकी बेरा बिछायत साचे,
चीर सजे नर नारिन पीत, बढी रस रीत वरंगना नाचे,
त्यों कवि ग्वाल रसाल्के बोरन, भौंरन झौंरन ऊधम नांचे,
काम गुरू भयो फाग शरू भयो, खेल्यिे आज बसंतकी पांचे १

(कवित्त)

गहगहे गिरद गुलाबनके वृंदावन,
किंसुक अंगार गुलमांहि परचत है,
मजुल कुसुम गोलो किसलय प्यारे लाल,
मारुत कहै चेला भौंर ढोल छै पचत है,
ग्वाल कवि कहै कोकिलानकी कतारें वर्त्त,
पतिहिं बिहारें बास छहक्यो चहत है,
राजनके राज महाराज रघुराज आगे,
आज रितुराज नटराज सो नचत है १
बाजी बाजी बिरियान शीतल गरम बात,
मंद मंद तुतरात बालक सरूपिया,
जेठकी जलाकासी सलाक होय आवैं कभू,
सौरम सुहावैं तरुनापन अनूपिया;
ग्वाल कवि कहै अग थरथर कांपै कभू,
कछू न बसाय जू न चाहे भयो धूपिया,
आनंदके कंद रामचंद हेतु आयो आजु,
बनि छबिवंत है बसंत बहुरूपिया २
बाजत मुरज मजु मारत मरोरदार,
बीनको बनाव तुंब धृंद बिल्सत है,
ताल्की अवाजें साजें चटक गुलाबनकी,
सुदर सुरंगी भौंर गुंज सरसत है,

ग्वाल कबि कहै तार ताजे अमराइनके,
साधे सुर कोकिल कुहुक हुलसंत है;
राजे महाराजे रघुबीरजूके आगे आयो,
आज बनि वानिक कलावत् ये वसंत है. ३

(घनाक्षरी.)

वाहवा है आपकों विहारीलाल ख्याल भरे,
वाला विरहागि तची अव न तचैगी यह;
वानी कोकिलाकी विपदारसी पचायो करी,
अवलौ पची सो पची अव न पचैगी यह;
ग्वाल कवि केते उपचारन सचाई करी,
अवलों सचीसो सची अव न सचैगी यह;
आयो पंचवान लै वसंत व्रजमांहे वीर,
अवलों वची सो वची अव न वचैगी यह. १

(कवित्त.)

ऊधो यह सूधो सो संदेसो कहि दीजो जाय,
श्यामसों सितावी तुम विन तरसंत है;
कोप पुरहूत तें वचाई वारिधारन तें,
तिनपै कलंकी चंद विष वरसंत है;
ग्वाल कवि सीतल समीर जे सुखद ही ते,
वेधत निसंक तीर पीर सरसंत है;
जेई विपिना गिनते वरत वचाये तिन्हे,
पारि विरहागिनमें वारत वसंत है. १

(ग्रीष्मऋतु.)

पूरन प्रचंड मारतडकी मयूखै मंड,
जारै ब्रहमंड अंड डारै पंख धरियें;
छ्वैं तन छूयें विन धूयें की अगिनि ताते,
चूयै स्वेद बुन्द दुंद धारै अनुसारिये;
ग्वाल कवि जेठी जेठमासकी जलाकनतें,
प्यासकी सलाकनतें ऐसे चित्त अरिये;
कुंड पियें कूप पियें नद पियें नदी पियें,
सर पियें सिन्धु पियें पीयवोई करिये. १

ग्रीषमकी गजब धुकी है धूप धाम धाम,
गरमी झुकी है जाम जाम अति तापिनी,
भीजे खस–बिजन झुलेहु न सुखात स्वेद,
गात न सुहात बात दावासी डरापिनी,
ग्वाल कवि कहै कोरे कुंभनते कूपनतें,
लै लै जलधार बार बार मुख थापिनी;
जब पियो तब पियो अब पियो फेर अब,
पीवतहू पीवतें बुझै न प्यास पापिनी २
सिंधुतें कढी है किधौं बाडवा अनल अब,
दावा औ जठर मिलि कीनी ताप भरकी,
कीधौं महारुद्र जूके तीसरे बिलोचनकी,
खुलन लगी है कहूं कोर तेज तरकी,
ग्वाल कवि कहत सुदर्शनको म्यान किधौं,
उघर्या कहूंतें टूटि सीवन है सरकी,
हाय बिरहीनकीकि अब बिरहागिनकी,
देत है जराय जेठी धूप दूपहरकी ३
बरफ सिलनकी बिछायत बनाय करि,
सेज सन्दलीपै कदंजल पाटियतु है,
गालिब गुलाबजल जालके फुहारे छूटे,
खूब खसखानेपै गुलाब छांटियतु है,
ग्वाल कवि सुंदर सुराही फेर सोरामाहि,
ओराको बनाय रस प्यास डाटियतु है,
हिमकर आननी हिमाला सी हियेत लाय,
ग्रीषमकी ज्वालाके कसाला काटियतु है ४
जेठको न त्रास जाके पास ये बिलास होय,
खसके मवासपै गुलाब उछर्यो करै,
बिहीके मुरब्बे डब्बे चांदीके बरक भरें,
पेठे पाग केवरेमें बरफ पर्यो करै;
ग्वाल कवि चंदन चहलमें कपूर चूर,
चंदन अतर तर बसन खर्यो करै,

कंजमुखी कंजनैनी कंजके विछौननपै,
कंचनकी पंखी करकंजतें कर्यो करै. ५

भानकी तपन वन ऊपवन जारै लगी,
तैसी तेज छयें लोल लागे ज्वालजालसी;
ताल नदी नालनके नीरतें रॅधन लागे,
तातें लाल सुनहुं उपाय एक आलसी;
ग्वाल कवि प्यारीकी छवीली छाती छांह छिप्यो,
चंदनसी हांसी देह चंदन रसालसी;
पालसी विलोकन हिवालसी लिपट जाकी,
लीजै चलि कंठ मेलि मालतीकी मालसी. ६

(सवैया.)

कस पीहर जवो जरूर हमेंपें, किरने रविकी अति ढागति है,
चलि भोरहि जाय टिकोंगी उहां, जहां छाह तमालकी जागति है,
कवि ग्वाल अबेरे चलेतें अबें, सिथिलाइ शरीरमें पागति है,
इक जामही घोस चडे ते अली, अजवागजवी लुव लागति है. १

(वर्षाऋतु–कवित्त.)

झूम झूम चलत चहूंवां घन घूम घूम,
छूम छूम भूम ह्वै ह्वै धूमसे दिखात है;
तूल कैसे पहल पहल पर उडे आवै,
महल महल पर सहल सुहात है;
ग्वाल कवि भनत परम तम सम केते,
छम छम छम डारे बूंद दिनरात है;
गरज गये हे एक गरजन लागे देखो,
गरजत आवै एक गरजत जात है. १

रंग रंग रंगके पयोधर तुरंग तीखे,
मुखकी सुरंग चीने सुघर समाजके;
त्रिविधि बयार सो सवार बेग बाग धार,
बीज चमकार तोप प्याले खुस काजके;
ग्वाल कबि अंबर अनूप रूप खेमा खूब,
धुरवा तनाव तने दढता दराजके,

हेरेमें फेरेर दल घेर चहु फेरे अब,
आइ परे डेर देखो मेघ महाराजके २
प्यारसों पहिर पिसवाज पीन पुरवाई,
ओढनी सुरग सुर चाप चमकाई है,
जगाजोति जाहिर जवाहिरसों दामिनी है,
अमित अलापनकी गरज सुनाई है,
ग्वाल कवि कहै धाम धाम लसि नाचें राचें,
चित्त वित्त लेत मोद नाचत महाई है,
पंचनी विरागहूकी अति परिपंचनी सी,
कंचनी सी आज मेघमाला मन आई है ३

(सवैया)

यह सावन आयो सुहावत है, तरसावन मानसों भागि रहो,
जलधारनसों थल पूरी रहे, सुर मींडे मलारन रागि रहो,
कवि ग्वाल दया करि देखो इते, रिस दागनतें जिनि दागि रहो,
अनुरागि रहो निशि जागि रहो, रस पागि रहो गल लागि रहो १

(कवित्त)

गेह अति होय खुले होय टेक होय दरे,
होय गोखे होय चौक एसें होय रंग सी,
बन होय बाग होय बीन होय बग होय,
केकी होय भेकी होय पवन अभंगे सी,
ग्वाल कवि गरम गिलौरी होय गिला होय,
बूंदे होय दूंदे होय दामिनीके संगे सी,
प्यारी होय प्यारे होय प्यार होय प्याले होय,
होय परजंक पर जंघनकी जगे सी १
तरल तिलंगनके सुग तेह तेजदार,
कानन कदंबको कदंब सरसायो है,
सुमेदार मोर घोर दादुर हवलदार,
बग जमादार औ तंबूर पिक गायो है,
ग्वाल कवि नादें गरराट घन पट्टनकी,
कपनीको कंपू मुला होय छबि छायो है,

भूपति उमंगी कामदेव जोर जंगी जान,
मुजराको पावस फिरंगी बनि आयो हैं. २

कूकै कोकिलनकी कुहूकै मंद मोरनकी,
भूकै पौन सूकै सेल सर सम मारती;
घनकी चमूकै संग दामिनी हरुकै हूंकै,
गरज चहूंकै हूकै नाहर सी पारती;
ग्वाल कवि ऊंकै औधि चूकै वा वधूकै लाल,
बेदन अचूकै लखि आली किलकारती;
हूंकै करै टूकै विरहागीनि भभूकै उठि,
लूकै लागि अंबर दिनेस फूकै डारती. ३

मेरे मनभावन न आये सखी सावनमें,
तावन लगी है लता लरजि लरजि कै;
बूंदे कभू रूंदें कभू धारै हिय फारै दैया,
बीजुरीह वारे हारी बराजि बरजि कै;
ग्वाल कवि चातकी परम पातकीसो मिल,
मोरहू करत सोर तरजि तरजिकै;
गरजि गये जे घन गरज गये है भला,
फेर ये कसाई आये गरजि गरजि कै. ४

(शरदऋतु.)

मोरनके शोरनकी एकौ न मरोर रही,
घोरहू रही न घन घने या फरदकी;
अंबर अमल सर सरिता विमल भल,
पंकको न अंक औ उडनि गरदकी;
ग्वाल कवि चित्तमें चकोरनके चैन भये,
पथिनकी दूर भई दूखनी दरदकी;
जल पर थल पर महल अचल पर,
चांदीसी चमकि रहीं चांदनी शरदकी. १

आज अबरखतें लिपाय मंजु मंदिरन,
तामें सेत बिछात करी है चौक हदमें;
ताने समियाने जरीदार सेत जेब भरे,
मोतिनकी झालरै झलाझलकै सदमें;

ग्वाल कवि चासर चमेलीके चगेरनमें,
चुनमा चमंके चिर बावला विशदमें,
चदते सुचद मुख अमल अमव अति,
बैठे मजचंद चद पूरन शरदमें २

(हेमन्तऋतु)

हरखि हिमंतमें इकंत कत संग मिलि,
मौज लै अनंत छविवंत तेरो गात है,
रविकी मयूख सो पियूखसी लगत मीठी,
खेतनमें ऊखकी पहार दरसात है,
ग्वाल कवि तल्प तुलाई कीहि तान लागी,
भान लागी लगन नरफ भरी घात है,
दिन दिन घटन लग्यो हैं दिन खिन खिन,
छिन छिन छनदा सरस होत जात है १

सीरे सीरे नीर भये नदिनके तीर तीर,
सीरे भये चीर धरा सीरी सब पर गई,
दशहू दिशानि दिन रात लागी कुहरान,
पौन सररान साफ तीरसी निकर गई,
ग्वाल कवि ऐसें या हिमंतमें न आये कत,
सो तुम्हें न दोष सल्सत और दरि गई,
सूख गये फूल भौर झौंर उडि गये मानो,
कामकी कमानकी कमानसी उतारि गई २

कातिकादि चारों मास तखत बिछाय बैठ्यो,
नहल सजल जत्र छत्र छवि छाई है,
जब तब मेह धार चौंर चारु ढोरियत,
सूर दूर पौनकी वजीरी सरसाई हैं,
ग्वाल कवि बरफ बिछावत कुहर दल,
झिरनी प्रबल नीकी नौबत बजाई है,
शीत बादशाहसो न और कोऊ दरसाय,
पाय बादशाही बाटे सबको रजाई है ३

वारियां महल्की न हल्की मुंदीही जहां,
राशि परिमल्की अंगीठियां अनल्की;
जोतेमे न भल्की चंगेर हैं न कुल्की सु,
प्यालियां अमल्की पलंगे मखमल्की,
ग्वाल कवि थल्की सचीसी लंक बल्की वो,
फूल सम हल्की प्रभामें झलझल्की,
विपरीत लल्की कहे को बात कल्की सु,
वाले छवि छल्की दुशालेमें उछल्की. ४

(घनाक्षरी.)

झर झर झांपे बडे दर दर ढांपे तउ,
थर थर कांपे मुख बजत बतीसी जात;
फेर परमीननके चौहरे गलीचा तांपे,
सेज मखमली बिछी सोऊ सरदीमी जात,
ग्वाल कवि कहै मृगमदके धुकाये भौन,
ओढि ओढि छार भार आगिहू छपीसी जात;
छाकें सुरा सीसी तौलौ सीरीपै मिटेगी कभू,
जौलौ उकसीसी छाती छाती सौंन मीसी जात. १

(कवित्त.)

सोनेकी अंगीठीमें अगिनि अधूम होय,
होय धूम धारहूतें मृगमद आलाकी;
पौनको न गौन होय भरक्यो सु भौन होय,
मेवनको खौन होय डब्बिया मसालाकी;
ग्वाल कवि कहै हूर परीसो सुरग वारी,
नाचती उमंगसो तरंग तान तालाकी;
बालाकी बहार औ दुशालाकी बहार आई,
बेलीकी बहारमें बहार बडी प्यालाकी. १

विविध बनातें किनखापकी कनातें तामें,
दीरघ दुचोवे है सिचोवे हक हद्दीमें;
चांदनी है चौवनपै परदें दरीचनमें,
दुहरे दुलीचे है गलीचे गोल गद्दीमें;

ग्वाल कवि भाति भांति भोजन हैं भामिनी हैं,
दीप हैं दुशाले हैं मशाले मैन मदींमें,
चांपिके चुहरी साज सोज पै विहरी वेश,
कर्यो शीत रही तब हुन्यो जाय नदीमें २

(शिशिरऋतु)

रैनि घटि घटिके नदन लाग्यो दिनमान,
लाजी गरमान भानु दुति घट संगकी,
सीरी सीरी पवन हितान लागी हियामें,
धीरी धीरी आवत सुगंध रग रंगकी,
ग्वाल कवि कहे टढ साझते सवारे लग,
उठत तरग तामे मदन उमगकी,
सीतमें शिशिरकी लगी है होन डगमग,
मग मग होन लागी जगमग रंगकी १

(होरीवर्णन-सवैया)

फागकी फैल करी मिलि ग्वालिनि, छैल विसाल रसालन ऊपर,
लालकी लाल मुठीको गुलाल, पर्यो उडि बालके बालन ऊपर,
त्यों कबि ग्वाल कहै उपमा सुखमा रहि छाय सो ख्यालन ऊपर,
पख पसारि सुरग सुआ उड्यो, डोले तमालकी डालन ऊपर १
फागमें रागकी लाग दिखी, खिसि आंख मिलामिल प्रानन वारे,
बालके ओछे उरोजन ऊपर, लाल दई पिचकारीका धारे,
ते उचटी कबि ग्वाल तबै, तिंहिकी सुखमा उपमा जु उचारे,
मानो उतग उमग भरे, सुछुटे इक रंग फुहारे हजारे २

(कवित्त)

आई एक औरते अलीन लै किशोरी गोरी,
आयो एक औरते किशोर बाम हालपैं,
भाजि चल्यो छैल धरी धोरिये छबीलिनतें,
छरीको उठाय धाय मारी उर मालपैं,
ग्वाल कवि होहो कहि चोर कहि चेरो कहि,
बीचमें नचायो थेई ततथेई तालपैं,
तालपैं तमालपैं गुलाल उडि छायो ऐसो,
भयो एक और नंदलाल नवलालपैं १

ल्याई श्यामसुन्दरै छबीली ब्रजवाम छलि,
ठाढी जहां पौर वृषभानकी किशोरी है;
बोल उठी नारी किलकारी गारी तारी देके,
आयो यह आयो अरी छाड्ड निज चोरी है;
ग्वाल कवि कोऊ गुल चावे औ रचावे रग,
अंगन लचावे औ नचावे डारि रोरी है;
केती कहै गोरी वरजोरी कौ न मानो बुरो,
होहो लाल होरी लाल होरी लाल होरी है. २

फागमें कि वागमें कि भागमें रही है भरि,
रागमें कि लागमें कि सौहे खान झूटीमे;
चोरीमें कि जोरीमें कि रोरीमें कि मोरीमें कि,
झूमि झकझोरीमें कि झोरिन कि ऊठीमे,
ग्वाल कवि नैनमें कि सैनमें कि वैनमें कि,
रग लेन देनमें कि ऊजरी अंगूठीमे,
मूठीमें गुलालमें कि ख्यालमें तिहारे प्यारी.
कांके भरी मोहनी सो भयो लाल मूठीमें. ३

घनानंद.

(प्रेमप्रसंग-सवैया.)

खोय गई बुद्ध सोय गई शुद्ध, रोय हसे उनमाद जग्यो हे,
मौन गहे चख चौकि रहे चलि, वात कहे तन दाह दग्यो हे;
जानि परे नहि जानि तुम्हे लखि, ताहि कदा कछु आहि पग्यो हे,
शोचतही पगिये घनआनंद, हेत लग्यो किधो प्रेत लग्यो हे. १

गति मेरि यही निशद्योस रहे, नित तेरि गलीनकों गाहिवो हे,
मन कीनो कठोर कहा इतनो, कपटी कबहू न सराहिवो है;
घनआनंद देत नहि दरसों, इत बैरिनकों चित चाहिवो है,
मन माने तुम्हे अब सोई करो, हमें नेहको नातों निवाहिवो है. २

अति सूधो सनेहको मारग है, जहा नेको सयानप बाक नहीं,
तहा साचे चलें तजि आपपनो, झिझकें कपटी जो निसांक नहीं,
घनआनंद प्यारे सुजान सुनो, इत एकतें दूसरो आक नहीं,
तुम कौन धों पाटि पढे हो लला, मन लेहुपें देहु छटांक नहीं ३

घन श्याम

(कान्ता, कविता-कवित्त)

झुलिवेके रस वस नवल हिंडोरे प्यारी,
काहू नर किन्नर असुर किधों सुरकी,
कवि घनस्याम अति चचल दृगचलमें,
अचल उडत कहूं कोन छवि उरकी,
श्रम करमचति लचती लोंक बार बार,
मानो विपरीत रति सीखिवेकों दुरकी,
उचटि उचटि चोटी पीठिपें लगत जेसे,
खाटीके परत हुचि मोटी काम गुरुकी १
रूपहीके गाहक चतुर जगमाहू एपे,
रूप गुन गाहक चतुर अबतसही,
मीठे हें सबेही गुड दाख मधु दूध सुधा,
मधुराइ न्यारी न्यारी जाने बुधिर्बसही,
त्योंहि कविता मरम मानसमें पुण्य पुर,
पिछानेसे वे जो हरिहीके असही,
स्वाति बूद जमि सीपें माझ भयो मोती ताकी,
सोभा जानी सबन सबाद जान्यो हंसही २

घासीराम

(काममहिमा-कवित्त)

कवपे खरे हे कान, तदपि न छांडे मान,
करके गुमान काहे करत चबाबरी,

विधनां दइ हे केंधो रूपकी निकाइ कान,
ऐसी मन भाइ कहो बने न बनावटी;
कहे घासीराम एक आवत अचंबो नयो,
रीतही ठइ है के भइ है मति बावरी;
सेवा किये पथ्थरकी मूरत पसीजत हे,
एती बडी सुरत न पसीजत है रावरी. १

मंदही चंपेते इंद्रवधुके बरन होत,
प्यारीके चरन नव निनहुते नरमें;
सहज ललाई बरनी न जात घासीराम,
चुईसी परत कविहुकि मति भरमें,
नायनी ठकुरायनीको पायनी गहत जबे,
ईगुरको रंग दौरि आवे दरबरमें;
दीओ है कि देयो कै विचारे सोचे बार बार,
बावरीसी है रही माहावरी ले करमें. २

कहत कछु न कहि काहुकी सुने न कछु,
आहक कराह सीस धुनत घनेरो ह;
खानकी न पानकी न पानीकी कहानी सुने,
पीर न पिछानी परे किनोई नवेरो है;
जात दुवराई देह द्युति पियराइ छाई,
एरी सुन सुरभी अनंग दल घेरो है;
जोग है के जादु है के मारन प्रयोगे है के,
रोग है के रसिक वियोग यह तेरो है. ३

तिमिर निवासी सुधानिधि सो सहोदर हे,
बाप रतनाकर कल्पवृक्ष वारो हे;
बहुत कृपालु दुज दीननको रच्छपाल,
सुनियत सांच अति पुरुष तिहारो हे;
घासीराम सुकवि सलोनो गात कंचन लों,
सांचे सो सुधारी कै विरांचि अवतारो हे;
एसी गुन आगरी समूह सुखदानी व्है,
गरीबनके ऊपर वडाई बैर पारो हे. ४

फरसों गहत घिरि आई सब आसपास,
चित्रकीसी पूतरी श्रवन मग दे रही,
कजल कलित चख सजल उमटि आई,
भरि आई छतियां अनगरस ष्है रही,
घासीराम सुकवि सनेही स्याम लिखी सुनी,
प्रेम कालिंदीकी वै सुरति फलु कै रही,
बहुरि वियोगके हरफ सुनि ऊधो मुख,
हेरिके सलोनी दिह सास ले चिते रही ५

देवताको सुर औ असुर कहे दानवको,
दाइको सु धायदार पैतिये लहत है,
दर्पनको आरसी त्यों दासको मन्नका कहे,
दासको खवास आम खास विचरत हे,
देवीको भवानी और नेहराको मठ सदा,
याहि विधि घासीराम रीति अचरत है,
दानाको चबेना दीपमालाको चिरागजाल,
देवेके डरन कवी ददो ना कहत है ६

(सवैया)

स्याम लिखे गुनपातिके आखर, जोग चिठी वह जो सुनि पैहे,
बाचतही उडि जायगो प्रान, कपूरलों फेरि न हाथन ऐहे,
ऊधो चुपाउ सुनी सबरें, वृषभानलली तन क्यों विष वैहे,
कौल कली सम राधे हमारी सो, वा कुबजाकी खवासिनि है हे १

चतुर.

(स्वानुभव संगति-कवित्त)

जबलों न कोउ पीर लागे उर आपनेकों,
तबलों पराइ पीर कैसें पहिचानि हों,
जानती हों आजलों न काहूसों लग्यो है नेह,
जब नेह लागि है तो हित अनुमानि हों,
कहत चतुर कवि मेरे कहिबेकी तब,
एको न रहेंगी जब हित मन मानि हों,

जैसें नीके मोहि तुम लागत हो प्राण प्यारे,
ऐसी नीकी कोऊ तुम्हे लागि हे तौ जानि हौ. १

मानसर ताजि हंसे कूप ना करत गेह,
मोती नहि देख्यो कहूं गरे तिया भीलकी;
मनी परखत कहूं देखे ना मुकुट हाथ,
वैश्या नहि देखे चाल चलत असीलकी,
वाज कहूं बैठे ना वटेरनके झुंडनमें,
मढत नगारा नहि चरम पपीलकी;
याचक चतुर कहू बैठे ना कृपिन पास,
अलि ना विलंबे कहूं संगति करीलकी. २

चतुरसिंह.

(फिकिरी-कवित्त.)

काहेको तूं घर छोडा कोहेको घरनि छोडी,
काहेको तूं इज्जति खोइ दुरवेशवानेकी;
कोहेको तूं नंगा हुवा कोहेको बिभूति लाई,
किनेरे सीख दई तुझे जंगलके जानेकी,
आदतिको छोडि देता परेशान मति होता,
लिखि सुनि लेता एक चतुरसिंह रानेकी;
गोशा जाइ एक लेता खानेको खुदाइ देता,
जोपै फिकिरि ना मिटी रे फकीर दानेकी. १

चिमनेश.

(परोपकार, उपदेश.)

तुम मुष्टिका बांधके आये यहां, कर खोले विना फिर जावनो नां,
चिमनेश दया कर दीननपें, दिल काहुको देव दुखावनो नां;
उपकार भलाइ बने सो करो, वदनामीको ढोल वजावनो नां,
दिन चारको यार तुं पावनो हे, मर जावनो हे फिर आवनो नां.

मजबूतपनो रखनो मनमें, तुखि दीनपनो दरशावनो ना,
यहनो कुल रीति सुमारगमें, हरितें हिये हेत हरावनो ना,
चिमनेश हँसी खुशी बोलनमें, बिन स्वारथ बेर मसावनो नां,
जग जेति भलाइ बने सो करो, मर जायनो हे फिर आवनो ना २

चौरामल्ल.

(कलिधर्म-कवित्त)

आया हे कलूका दोर, घरोघर कागारोल,
पोल पोल ठेर ठेर पाप बेठी जागी हे,
केती हुती रिद्ध सिद्ध केते होते सब वृद्ध,
छोडा हिंदुवाना तुरकाना हद लागी हे,
झूठनको साचे करे साचेको बनात झूठे,
पैसे विन वात नाहिं लोम ज्वाल जागी हे,
राजनकी रीत गई पंचकी प्रतीत गई,
अब तो अतीतसों अनीत होन लागी हे १
पुन्य गयो पूरव प्रतीति गइ पच्छिमको,
दया गइ दख्खनको धर्मोत्तरकों धायो हे,
शरम गइ सरिता, भरम गयो हे भाग,
आयो और बैठो काहू, विरलो ठगायो हे,
चौरामल कहे गजब चली चतुराइ हाथ,
हाय हाय देखोजी जमाना कौन आयो ह २
कूडनकी कचेरीमें चत्रनकी चाहेना हे,
चाहिया चकोरनसें वाटते वतन हे,
सिंह शार्दुलहूसे ठाडे हो न वन कीप,
लपट लबारनसें हेतारथ जन हे,
कागनके काननमें हसनको कहा काम,
चंदनके वागमें अरड कहा बन हे,
*
चूप करो चंदनी बबूरनको बन हे ३

---

* यह चरनमें कितनेक बिभत्स शब्द होनेसें कमकर दिया गया है

चंद.*

(कवि प्रतिज्ञा.)

सरस काव्य रचना रचों, खलजन सुनि न हसंत;
जैसे सिंधुर देखि मग, श्वान सुभाव भुसंत. १
तौ पुनि सज्जन निमित गुन, रचिये तन मन फूल;
जूका भय जिन जानिकै, क्यों डारिये दुकूल. २

(पृथीराज महिमा-कवित्त.)

मंडन महीके अरि खंडे पृथीराज वीर,
तेरे डर वैरी वधू डाग डाग डगे है,
देश देशके नरेश, सेवत सुरेश जिमि,
कापत फणेश सुनि वीर रस पगे है;
तेरे श्रुति मडलनि कुडल विराजत है.
कहे कवि चंद यहि भाति जेव जगे है:
सिंधुके वकील संग मेरुके वकील किले,
मानहु कहत कछु कान आनि लगे है. १
महाराज तेरी सब कीरत वखाने कवि,
चंद यह केवल अकीरत वखाने है,
आंधरेने देखी दोखि हमको वताइ दई,
वहिरेने सुनी जैसी हमहुं पिछान है,
कच्छपीके दूधहीके सागरपै ताकी गति,
वाझसुत गूंगे मिलि गावत यों जाने है;
तामें केते वडे शशश्रृंगकै धनुपवारे,
रीझि रीझि तिन्हैं मौज दैके सनमाने है. २

(दोहा.)

सीक वाण पृथिराजकी, तीन वांस गज चारि,
लगत चोट चौहानकी, उडत तीस मन गारि. १

---

* चंद भाटकी और दूसरे कवियाकी कवितापर कहाता है कि—
(दोहा) चंद छंद पद सूरके, कविता केशवदास;
चोपाई तुलसीदासकी, दुहा बिहारीदास. १

घर पल्टयो पलटी धरा, पल्टयौ हाथ कमान,
चंद कहै पृथिराजसों, मत चूके चहुआन २
बारह बास बतीस गज, अगुल चारि प्रमान,
इतने पर पातशाह है, मत चूके चहुआन ३
फेरि न जननी जनमि है, फेरि न खेंचि कमान,
सातवार तुम चूकिये, अब न चूक चहुआन ४
तीनुं मिल्के मारियो, रण जसराज कुमार,
मारे भर पृथिराजके, शिर बिन एक हजार ५

(क्षत्रीयधर्म छप्पय)

प्रथम अंग बल होय, द्वितिय अभ्यास शस्त्रको,
तृतिय सदा सब भोग, चतुर मदवहन शत्रुको,
पंचम सब बल जान, छठेको मो मन मूले,
सप्त समज कर काम, अष्टमें चित्त न डूले
नये निडर जल जाय अरु, सीत घाम सम कर भमे,
कवि चंद कहे पृथिराजसों, (ए) दश गुन क्षत्रीधर्मके १

(चहुआन बान प्रशंसा)

इही बान चहुआन, राम रावण उथप्यो,
इंही बान चहुआन, करण शिर अर्जुन कप्यो,
इही बान चहुआन, शंकर त्रिपुरासुर सध्यो,
इंही बान चहुआन, भमर लछुमन कर बिंध्यो,
सो बान आज तो कर चढयो, चद बिरद सचो चवे,
चहुआन राम सभर धनी, मत चूके मोटे तवे १

इसो राज पृथिराज, जिसो गोकुल्में कानह
इसो राज पृथिराज, जिसो हथ्थह भीमकह,
इसो राज पृथिराज, जिसो अहकारी रावन,
इसो राज पृथिराज, जिसो रावन सतावन,
बरस तीस छह अगारो, लछन बतीस संजुत्त भन,
इम जंपे चद बरदाय वर, पृथिराज उनिहार इन २

(भुजंगी)

जहां आसन सूर ठठे सनाह, तिने क्षत्रि बश किये एक राह,
जिने धनि दिक्पाल धर्धर विरूद्ध, धरे नुप छत्र दुती कनकद्द १

जिने हेम पर्वत्तसे सव्व ठाहे, जिने एक दिन अठ्ठ सुल्तान साहे;
वरं जंपियो सच्च जो चंद चंडं, सुते थप्पियो जाय तिर्हूत पंडं. २
जिनं दख्खिनं देश अप्यो विचारे, तट ऊत्तर्यो तुर्त वधं पहारे,
जहां करनडा हाल दुव्वान वेध्यो, जिने संधि चालुक्कके चार खेध्यो. ३
जहां तीन दिन जुद्ध भिरि भूमिदंड, तंहां तोरि तिल्लंग गोवालकुंडं;
जिने छंडियो वंधि इक गुंड जीरा, ग्रहे लीध वैराग रे अवहीरा. ४
जहां गज्जने सूर साहाव साही, तिन मोकल्यो सेव निरखुरत भाई,
जहां छोडि विभीपणे जो मरोर, तहां रोसके सोस दरिया हिलोरे. ५
जिनं वंधि खुर्सान किये मीर वंदा, सुतो राव राठोर विजपालनंदा;
इते वंश छत्तीस आवे हकारे, तहां एक चहूवान पृथिराज टारे. ६

(सवैया-छिनाल लच्छन.)

एकनकों जपि हाथ दिखावत, एकनकों छपि देत हे सेना,
एकनके घर दूतिकों भेजत, एकनके घर रेत है रैना;
एकसें एक हजार जु आवत, तौ न मिटे कहि आगम वैना,
चंद उपाय करोर करो तव, छाने रहे न छिनारके नैना. १

(प्रस्ताविक दोहा.)

पीया रणमांही मरे, नारी सती न होय;
अगति जाय भटकत फिरे, कही गोरज्या सोय. १

राजा रणमांही मरे, करे स्वर्गको भोग,
दुनियामें जश विस्तरे, हसे न दुरिजन लोग. २

जा धरतीकुं खायके, मरे न जातें कोय.
अंतकाल नरकहि परे, जुगमें अपजश होय. ३

श्याम सांकरे जानके, रहे अवर घर सोय;
सो राणी फिरतो लियो, कुल रजपूत न होय. ४

पिया मरत त्रिया रहे, करे पुत्रकी आश;
सो नारी फिरतो लियो, कुल रजपूत न तास. ५

रतन बूंद बरसे नृपति, हय गय हेम सुहद्द;
लगे न बूंद मॅगीत तन, शिरसो छत्र दरिद्र. ६

(प्रश्नोत्तर.)

तब मुनिंद हों चंद कवि, पूछत इह अंदेह;
सकल कुटुंबी लोकमें, कोनहु साचो नेह. १

पूरन सकल विलास रस, सरस पुत्र फलदान,
अंत होइ सह गामिनी, नेह नारिको मान २

कोन नगन अंबर छते, को ढको बिन चीर,
को हारे अंघो फिर, को जीते तजि तीर ३

बस हीनो नागो गिनहु, ढक्यो जग जसवान,
लपट हारे लोह छन, त्रिय जीते बिन बान ४

जुगति जुगति किन निकट हे, फाते दूर दिखाय,
किन आवध जग जिति यहि, किन हारत जग जाय ५

समदरसीतें निकट हे, सुगति सुगति भरपूर,
विपम दरस या नरनतें, सदा सरवदा दूर ६

परयोपित परसे नहिं, ते जीते जग बीच,
परत्रिय तक्कत रेन दिन, ते हारे जग नीच ७

पद्मावती खंड प्रकरण

(दोहा)

पूरब दिस गढ गढनपति, समुद शिखर अति दुग्ग,
तहं सुविजय सुरराजपति, जादू कुल्लह अभग्ग १

हसम हय गयदेस अति, पति सायर मज्राद,
प्रबल भूप सेवहिं सकल, धुनि निशान बहु साद २

(छप्पय)

धुनि निशान बहु साद, नाद सुर पच बजत दिन,
दस हजार हय चढत, हेम नग जटित साज तिन,
गज असख गजपतिय, मुहर सेना तिय सखहु,
इक नायक कर धरी, पिनाक धर भर रज रख्खर,
दस पुत्र पुत्रिय एक समरथ सुरंग उम्मर डमर,
भडार लछिय अगनित पदम सो, पदमसेन कूंवर सुघर १

(दोहा)

पदमसेन कूंवर सुघर, ताघर नारि सुजान,
ता उर इक पुत्री प्रकट, मनहु कला शशि भान १

(छप्पय)

मनहु कला शशि भान, कला सोल्ह सो बन्निय,
बाल बेस ससिता समीप, अमृत रस पिन्निय,

विगसि कमल मृग भ्रमर, वैन खंजन मृग लुट्टिय,
हीर कीर अरु विम्ब, मोति नख शिख अहि घट्टिय;
छत्रपति गयंद हरि हंसगति, विह बनाय संचै सांचिय,
पदमिनिय रूप पद्मावतिय, मनहुं काम कामिनि रचिय. १

(दोहा.)

मनहुं काम कामिनि रचिय, रचिय रूपकी रास;
पशु पंछी सब मोहिनी, सुर नर मुनिवर पास. १
सामुद्रिक लच्छन सकल, चौसठि कला सुजान;
जानि चतुरदस अंग षट, रति बसंत परमान. २
सखियन संग खेलत फिरत, महलनि बाग निवास;
कीर इक्क दिखिय नयन, तब मन भयौ हुलास. ३

(छप्पय.)

मन अति भयौ हुलास, विगसि जनु कोक किरन रवि,
असन अधर तिय सधर, विम्बफल जानि कीर छवि;
यह चाहत चख चकत, उह जु तक्किय झरखि झर,
चंच चहुट्टिय लोभ, लियो तब गहित आप कर;
हरखत अनंद मन महि हुलसलै जु महल्ल भीतर गई;
पंजर अनूप नग मनि जहितसों, तिहिं महं रख्खत भई. १

(दोहा)

तिहि महं रख्खत भई, गई खेल सब भूल;
चित चहुट्यो कीर्यो, राम पढावत फूल. १
कीर कुंवरि तन निरखि दिखि, नख सिखलौं चह रूप;
करता करि बनाय के, यह पदमिनी सरूप. २

(छप्पय.)

प्रिय पृथिराज नरेश, योग लिखि कागद दिन्नेव,
लगन वार गुरु चौथ, चैत्र बदि दस्श सुतिन्नेव;
सें अरु ग्यारह तीस, साख संवत परमानह,
जो क्षत्री कुल शुद्ध, बरणि बर रावेहु प्रानह;
देखत दिखिवत करि व पल, छनक न विलंब न करिय,
पल गारि रैन दिन पंच मह, ज्यों रुकमनि कान्हर वरिय. १

(दोहा)

ज्यौं रुक्मनी कान्हर करी, ज्यौं करी संतर कांत,
शिव मंडप पच्छिम दिसा, पूजि समय सप्रांत　१
लै पत्रि सुक यों चल्यो, उड्यो गगनिमँह भाद,
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर, अट्ठ जाममें जाव　२
विप्र कागद नृपराज कर, खुल्लि बचिय प्रथिराज,
सुक देखत मनमें हँसे, कियो चल्लनको साज　३
पद्मावति इम लै चल्यो, हरखि राज प्रथिराज,
पर्ते परि पतिसाहकी, भई जु आनि अवाज　४

(छप्पय)

भइ जु आनिसवाज, भाय साहबदिन सुर,
आज गहौं प्रथिराज, बोल बुल्लंत गजत घुर,
क्रोध जोध जोधा अनंत, करिय पंती अनि गज्जिय,
बाँन नालि हय नालि, तुपक तीरह सब सज्जिय,
पवे पहार मनोसारके, भिरि भुजान गजने सबल,
आये हकारि हंकार करि, खुरासान सुल्तान दल　१

(भुजंगप्रयात)

खुरासान सुल्तान खधार मीरं, बलक्क सो वल तेग अच्चूक तीरं,
रूहंगी फिरंगी हल्बी समानी, ठटी ठट बल्लोच ढाल निशानी　१
मँजारी चखी मुक्ख जंबक्कलारी, हजारी हजारी हकें जोध भारी,
तिन पक्खरं पीठ हय जीन सालं, फिरंगी कतीपास सुकलात लालं　२
तहां बाघ धार्य मरूरी रिछोरी, घनं सार समद्र अरू यो रंमोरी,
एराकी अरब्बी पटी तेज ताजी, तुरकी महा भान कम्मान बाजी　३
ऐसे असिव असवार अग्गेल गोलं, मिरे जून जेते सुतत्ते अमोलं,
तिनं मद्धि सुल्तान साहाब आपं, इसे रूपसों फौज बर्नाय जाप　४
तिन घेरिय राज प्रथिराज राजं, दिल्ली भौर घनघोर निशान वाजं.

(छप्पय)

बज्जिय घोर निशान, राज चहुआन दिल्लीदिश,
सकल सूर सामंत, समरि बल जंत्र मंत्र सस,

उट्ठिराज पृथिराज, बाग लग मनो बीर नट,
कढग तेग मनोबेग, लगत मनो बीज झट्ट घट;
थकि रहे सूर कौतिग गगन, रगन मगन भइ श्रोनधर,
हर हरखि वीर जग्गे हुलस, हुरव रंगि नव रत्त बर. १

(दोहा.)

हुरख रंग नवरत्त वर, भयौ जुद्ध अति चित्त;
निस वासर समुझिन परत, न को हार नहि जीत. १

(छप्पय.)

न को हार नहि जीत, रहेइन रहहि सूरवर,
धर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर;
कहौ कमध कहौ मथ्थ, कहौ कट यट न अंत दुरि,
कहौ कंध वहि तेग, कहौ सिट बुट्टि कुट्टि उर;
कहौ दंत मंत हय खुट खुपरि, कुंभ भृसुंडह रुंड सब,
हिंदवान रान भयभान मुख, गहिय तेग चहुआन जब. १

(भुजंगप्रयात.)

गहि तेग चहुआन हिंदवान रानं, गजं जूथ परिकोप केहरि समानं;
करे रूंड मुंडं कही कोप फारे, बरं सूर सामंत हुकि गर्ज भारे. १
करी चीह चिक्कार करि कल्प भग्गे, मदं तज्जियं लाज ऊमंग मग्गे;
दौरे गजं अंध चहुआन केरो, करीयं गिरद्द चिहौ चक्र फेरो. २
गिरद्दं उडिभान अंधार रैनं, गई सूधि सुज्झै नहिं मज्झि नैनं,
सिरं नाय कम्मान पृथिराज राजं, पकरिये साहि जिमि कुलिंग बाजं. ३
लै चल्यो सिताबी करी फारि फौजं, परे भीरसें पंच तहँ खेत चौजं;
रजपूत पच्चास जुज्झे अमोरें, बजे जीतके नद नीसान घोरं. ४

(दोहा.)

जीत भइ पृथिराजकी, पकरि साह लइ संग,
दिल्ली दिसि मारग चल्यो, उतरि घाट गिह गंग. १
वर गौरी पद्मावती, गहि गोरी सुरतान;
निकट नगर दिल्ली गये, चत्रभुजा चहुवान. २

महोवा खंड प्रकरण.

(संजयराय औदार्य-छप्पय*)

छोह छागि चहुवान, परे मुरछा व्है धरतिय,
उड गीधनि बैठिके, चंच वाहैति विरतिय
देख्यो सजमराय, नृपति द्रग दाद्वति पच्छिन,
अपने तनको मास, काटि भखु दियो ततच्छिन
अपनै सुनयन देख्यो नृपति, अंत समै भ्रम पच्छियव,
आये विमान वैकुंठके, देह सहत धरि चच्छियव १

(दोहा)

गिद्धनिकों पल भखु दियो, नृपके नेन बचाय,
देह हसत वैकुंठको, पहुच्यो सजमराय १

चदन.

(विरहव्यथा-सवैया)

छितिमंडलके नभमंडल मेघ, उमंडि दशौ दिशि धाय रहे,
कवि चंदन चारुसों चातक मोर, हरे मन सोर मचाय रहे,
पिय पावसमें बिछुरे बनितान सो, आवनहार सो आय रहे,
केहि कारन हाय विहाय हमे, हरि आय विदेशमें छाय रहे १
ब्रज नारि गँवारि अनारि सबे, यह चातुरता न छुगाईनमें,
बर बारिनि जानि अनारिनि सो, गुन एक न चंदन ना इनमें,
छबि रंग सुरंगके बुंद लसे, छवि इन्द्रवधू लघुता इनमें,
चित जो चहैंदी ठगि सी रहैंदी, कहैंदी महँदी इन पाइनमें २

चद्रकला.

(लेखिनी उक्ति-कवित्त)

पाप सरसावनमें दोप दरशावनमें,
जंन तरसावनमें दीन दुःख दानमें,

---

* आल्हा और पृथीराजके युद्धमें पृथीराजके मूर्छित होनेपर एक गिद्धनी पृथीराजकी चक्षु निकाल रहीथी, उस वखत एक और घायल गिरा हुआ संजमरायने उस दृश्यको देख गिद्धनीको अपना मांस देकर पृथीराजकी चक्षुको बचाया -

उठिराज पृथिराज, बाग लग मनो बीर नट,
कढग तेग मनोबेग, लगत मनो बीज झट्ट घट;
थकि रहे सूर कौतिग गगन, रगन मगन भइ श्रोनधर,
हर हरखि वीर जग्गे हुलस, हुरव रंगि नव रत्त बर. १

(दोहा.)

हुरख रंग नवरत्त वर, भयौ जुद्ध अति चित्त;
निस वासर समुझिन परत, न को हार नहि जीत. १

(छप्पय.)

न को हार नहि जीत, रहेइन रहहि सूरवर,
धर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर,
कहौ कमध कहौ मथ्थ, कहौ कट यट न अंत दुरि,
कहौ कंध वहि तेग, कहौ सिट बुट्टि कुट्टि उर;
कहौ दंत मंत हय खुट खुपरि, कुंभ भृसुंडह रुंड सव,
हिंदवान रान भयभान मुख, गहिय तेग चहुआन जब. १

(भुजंगप्रयात.)

गहि तेग चहुआन हिदवान रानं, गजं जूथ परिकोप केहरि समानं;
करे रूंड मुंडं कही कोप फारे, बरं सूर सामंत हुकि गर्ज भारे. १
करी चीह चिक्कार करि कल्प भग्गे, मदं तज्जियं लाज ऊमंग मग्गे;
दौरे गजं अंध चहुआन केरो, करीयं गिरद्द चिहौ चक्क फेरो. २
गिरद्दं उडिभान अंधार रैनं, गई सूधि सुज्झै नहिं मज्झि नैनं;
सिरं नाय कम्मान पृथिराज राजं, पकरिये साहि जिमि कुलिंग बाजं. ३
लै चल्यो सिताबी करी फारि फौजं, परे मीरसें पंच तहँ खेत चौजं;
रजपूत पच्चास जुज्झे अमोरं, बजे जीतके नद्द नीसान घोरं. ४

(दोहा.)

जीत भइ पृथिराजकी, पकरि साह लइ संग;
दिल्ली दिसि मारग चल्यो, उतरि घाट गिह गंग. १
वर गौरी पद्मावती, गहि गोरी सुरतान;
निकट नगर दिल्ली गये, चत्रभुजा चहुवान. २

महोबा खंड प्रकरण.

(संजयराय औदार्य-छप्पय*)

लोह लागि चहुवान, परे मुरछा व्है धरतिय,
उड गीधनि मैठिके, चच चाहैति विरतिय
देख्यो सजमराय, नृपति द्रग खावति पंखिन,
अपने तनको मांस, काटि भख दियो ततछ्छिन
अपनै सुनयन देख्यो नृपति, अंत समै भ्रम पछियन,
आये विमान वैकुंठके, देह सहत धरि चछियव १

(दोहा)

गिद्धनिकों पल भख दियो, नृपके नेन वचाय,
देह हसत वैकुंठको, पहुच्यो सजमराय १

चंदन.

(विरहव्यथा-सवैया)

छितिमंडलके नभमंडल मेघ, उमंडि दशौ दिशि धाय रहे,
कवि चंदन चारुसों चातक मोर, हरे मन सोर मचाय रहे,
पिय पावसमें बिछुरे बनितान सो, आवनहार सो आय रहे,
केहि कारन हाय बिहाय हमे, हरि आय विदेशमें छाय रहे १
ब्रज नारि गंवारि अनारि सबे, यह चातुरता न लुगाईनमें,
बर नारिनि जानि अनारिनि सो, गुन एक न चंदन ना इनमें,
छबि रग सुरंगके बुंद लसे, छबि इंद्रवधू लघुता इनमें,
चित जो चहैंदी ठगि सी रहैंदी, फबैंदी महँदी इन पाइनमें २

चंद्रकला.

(लेखिनी उक्ति-कवित्त)

पाप सरसावनमें दोष वरसावनमें,
जन तरसावनमें दीन दुःख दानमें,

---

* आल्हा और पृथीराजके युद्धमें पृथीराजके मूर्छित होनेपर एक गिद्धनी पृथीराजकी चक्षु निकाल रहीथी, उस वखत एक और घायल गिरा हुआ संजमरायने उस दृश्यको देख गिद्धनीको अपना मांस देकर पृथीराजकी चक्षुको बचाया -

माता पितु द्रोहनमें सती तिय छोहनमें,
असतीके मोहनमें विप्र अपमानमें;
चंद्रकला वृद्धनकी निंदा अभिशायनमें,
सुर गुरु संतनकी वृत्ति विनसानमें;
येती ठौर भूलिकेंहू मोंहि जो खैंचिहे तो,
व्हैहे मुख मेरोसो कलम कहे कानमें. १

(वर्षावर्णन.)

बरषि बरषि वारि हरख बढावत हे,
करखत चितरी मल्हारनको गावनो;
और भांति केकिनकी केका सुनियत आली,
चातक सुनात बैन सुख सरसावनौ;
चंद्रकला मंद मंद शीतल समीर बहे,
फरकत वाम अंग मेरो मन भावनौ;
ऐहं घनश्याम घनश्यामनमें बीसौ बिसै,
आवन लग्यो हे अब सावन सुहावनौ. १

(राधास्वरूप उपमा.

आई तजि गेह मैन आये बलवीर वीर,
कैसें धरौ धीर नीर नैननमें भरिगो;
पीरी परी देह सीरी मोतिनकी माल भई,
बीती हे निसीथिनी चकोर चैन ढरिगो;
चंद्रकला होत चटका हट चहूंघा घोर,
ठौर ठौर ताम्रचूड शोर जोर करिगो;
लाल लाल बादर भये हे नभमंडलमें,
तारन समेत तारापति फीको परिगो. १

जावक रजो गुन है पद जलजात चारु,
नख शशि भान ऊरु करी कर चारीमें;
कुच शिव शैल ग्रीवा विष्णु शंख दंत हीरा,
हास्य जोन्ह वानी बीना मीन नेन वारीमें;
चंद्रकला भृकुटी मनोज धनु मुख चंद,
वरपद भूषनकी सुखमा निहारीमें;

बेग चलि देखो भ्रजचंद बिहु लोकनकी,
सारी छवि छाइ भ्रपभानकी दुवारीमें २

(राधाकी याचना)

आइ होत प्रातही पठाइ कुल लोगनकी,
जैहों दधि बेचि धाम यामें मोर सारी ना,
तुम सजि होरी साज छीनी मोहि घेरि आज,
व्हैहे मों अकाज लाज राखौ गाज पारौ ना,
चंद्रकला सासु सौति ननद जिठानी सदा,
रावरोही नाम छै ववात खात टारौ ना,
यातें तन लेय मुख मिनती विशाल करौ,
पाय परौं हाहा लाल मोंपै रंग डारौ ना १

(वंसीताम-सवया)

कानन मूंदि रहो निसि बासर, आन उपाय न ब्याधि टरैगी,
कै धसि भौनन बैठि रहौं नतु, दामिनिसी उर आय अरैगी,
चंद्रकला किन चूकि चले पर, आय व्यथा सब शीश परैगी,
नींद छुधा बिनह नसिहै कहु, बासुरी तान जो कान परैगी १

छितिपाल.

(सवैया)

[क्रियाविदग्धा-प्रमोदगर्विता]

यह केस सकेलि सम्हार रही, यह बेनि निहारि नई घतिया,
यह बधुक फूल चलाय दिया, हरदि यह देखि गहि गतिया,
छितिपाल इते पर घुघट ओंट, किया मुख हाथ धर्या छतिया,
सब भौन मुरावन सेन भकि, ठकुराइ न नाइनकी बतियां १
कोउ कहै निज बुद्ध उर्दै, इन मत्तमनो गजकी गत भानी,
कोउ कहै लखि मातकी चाल, मरालनकी अवली सकुचानी,
यौंहि अनेक कुतर्क करै, छितिपाल यहै मनमें अनुमानी,
मंद चले किन चंदमुखी, पग लसनकी आखियां अरुमानी २

(शरद वर्णन.)

मुख चंद मनोहर हांस छटा छवि, पुंज मिले क्षितिपै छहरै,
दृग खंजन खेले सरोज कलीन, उरोजन ओप लखै लहरे;
गति हेरि मरालनकी मनसा, हठि मानसरोवरमें हहरै,
छितिपाल विकास वनोपटमें, घट शारद थान थकी थहरै. १

जगलाल.

(धूर्तनार विचार.)

अन्न लाउ धन लाउ भूषन वसन लाउ,
आग लाउ साग लाउ लाउयें वढी रहे;
लरिका खेलाय लाउ अंगिया सिलाय लाउ,
लाउ लाउ करिवेमें छप न घडी रहे,
बाजीगर वंदरको जा विधि नचावत हे,
लिये लकडीको निस वासर खडी रहे;
मरद लुगाइ पर चढत हे घडी एक,
मरदके शीशपर जनम चढी रहे. १

चातुर कनैयाजुपे वालाजुर आइ आठ,
कहो जु कनैया आज हमको दिराइयें;
गोद लेहो फूल देहो नाकन पिरावो मोती,
पातलकी पातली हुतास प्यास लाइयें;
उचेसे झरोखे वीच मोहन बेठावो मोहि,
रतिपतिकी सूरत चलो सेज जाइये;
वारी ना उत्तर एक दयो भेद सबे लह्यो,
ऐसी जगलाल तेरी जुक्तिको सहाइये. २

विदेशको होवे त्यार हाथ जोड बोले नार,
आपसों अधिक प्यार पाछा झट आवज्यो;
करिके कमाइ सार लावज्यो मोतीको हार,
कंदोरो ने टोटी कडा सोनारा घडावज्यो;
बिछ्या बाजुबंध, झेला बंगडी घडावज्यो पैला,
नाकवाळी दांत चुंप रतन जडावज्यो;

चद सूर बिंदी भोरं पुंची पति तुसी भोर,
पतडीवाला तिमण्णाने हीरासु मढावऱ्यो ३
फाच टीकी सुरमो सार आडकुं टे आग्यो ष्यार,
हींगळफी पूडी षार ष्यार ष्टेता आवग्यो,
फूलने फनारी फोर जरी बूटा तार भोर,
ओढनेके फाज चीर रेशमथि ष्यावग्यो,
घाघराफी चोसी घीट सोना फेरी ष्याग्यो ईंट,
भोर फोइ नवी चीज भूल मति आवग्यो
ज्ञान सेती जाण सही धूर्त नार चोठी नहि,
तिन्ही फेरो पेचो एफ आपफेभी ष्यावग्यो ४

जटमल्ल॰

(पद्मिनी स्वरूप-ताल रेखता)

थीं गोट गोटा खूब देखी नार एक सुनारकी,
दिल ष्याइ साहिबने समारी सिफत सरजनहारकी,
मुख चद भौंह फबाण चादी नेन घासी सारकी,
अलमस्त अच्छी नार जनफरी फजा जान भनारकी,
भव आरसी ज्युं गाल चमके नाफ नथ्थ हजारकी १
बिन पान खाई अधर ष्याली पदमनी है पारकी,
दोय जुल्फफ विरह जजिर ल्टके बांधि छे दिल प्यारकी,
दिल बीच पसे घाउ घाले जानेहु तरवारकी,
ठमकत ज्यु गजराज चाले फोज जाणे मारकी २
दोय फमल उपर भमर सोहे बिचे शोभा हारकी,
घमघाइ घूघरपाय घमके जाण धुन घनसारकी,
सुर चद ईंद फरे हमेशां तलब जरा दीदारकी,
मुख देख जटमल सिफत कीनी पदमनी है प्यारकी ३

जमाल.

(समस्या.)

जोगन व्है सब जग फिरी, कमर बांधि मृगछाल,
बिछुरे सज्जन नां मिले, कारन कौन जमाल. १

वायस राहु भुजंग हर, लिखति बाल ततकाल,
फिरि फिरि मेटत फिरि लिखत, कारन कौन जमाल. २

सजि सोरह बारह पहिरि, चढी अटायक बाल;
उतरी कोयल बोल सुनि, कारन कौन जमाल. ३

उमडि घटा घन देखके, चढी अटा पर बाल;
मोती लर मुखमैं लहि, कारन कौन जमाल. ४

दधिसुत कामिनि कर गह्यो, करत हंस प्रतिपाल;
झझक हंस चुग चकोर, कारन कौन जमाल. ५

मालिनि बेचत कमलको, काहे वदन छपाइ;
याको अचरज कौन है, कह जमाल समुझाइ. ६

बाला गई बाग मंह, फल देख्यो रसाल;
फल फाडी दर्पण दिख्यो, कारन कौन जमाल. ७

तृषावत भइ कामिनि, गई सरोवर पाल;
सर सूख्यो आनंद भयो, कारन कौन जमाल. ८

सजन बिसारेहीं भले, सुमरन करै बेहाल;
देखो चतुर विचार कै, साची कहै जमाल. ९

मनरजक छाती तुपक, बिरह पलीता लाल;
आहि अवाज न निकसती, जाती फूट जमाल. १०

मुख ग्रीसम पावस नयन, जिय माहे जडकाल;
पिय बिन तनतें तीन ऋतु, कबहु न मिलत जमाल. ११

अहि शिव पावक बाज तम, बाल लिखी ततकाल;
लिखि भस्मासुर घन बाधिक, हरि फिरि लिख्यो उताल. १२

(भलपन-छप्पय.)

जदपि कुसंग संग लाभ, तदपि वह संग न कीजे,
जदपि धनिक होय निधन, तदपि घट प्रकृति न छीजे;

जदपि दान नहि शक्ति, तदपि सन्मान न छूटे,
जदपि प्रीति उर घटे, तदपि मुख उघर न टूटे,
सुन सुजश द्वार कीवार दै, कुजश जमाल न मुकिये,
जिय जाय जदपि भलपन करत, तऊ न भलपन चूकिये १

(विरह शृंगार-दोहा)

तिस जू लगी तीसकी, तिस बिन तिस न बुझाय,
आनि मिलावी तीसको, तिस देखै तिस जाय १
दिन्हो होय सु पाइये, कहते बेद पुरान,
मन दे पाई बेदना, वाह हमारे दान २
ओर अगन मेटत सुगम, बिगरत बसरत तोय,
विरह अगन विपरीत गति, घनतैं दूनी होय ३
चित चकमक छतियां पथर, काम अगनि कप गात,
नैन नीर बरषत नहीं, तो तन जर बर जात ४
रगत मांस सब भख गयो, नेक न कीनी कानि,
अब विरहा कूकर भयो, लाग्यो हाड चबानि ५
ज्हां इकठो मन जात है, तहांठी ये तन जाय,
तो बा पापी विरहके, वस है मेरे बलाय ६
यह तन तो लंका भई, मन भयो रावन राय,
बिरह रूप हनमंत भयो, देत लगाय लगाय ७
विरह अगनि विपरीत गति, कही न जाने कोय,
दूर भयै येही जरै, नियरै सीरी होय ८
जे नित देखे चाहिये, ते नैननतैं दूरि,
अस नेही अनभावते, रहै निकट भरपूरि ९
एक कलाधर शिर धरत, तन विष जरन सिरात,
चंदमुखी चितमैं बसत, तातैं मन न अरात १०
सेज ऊजरी कुसुम रचि, और ऊजरी राति,
एक ऊजरी नारि बिन, सबै ऊजरै जाति ११
चंदमुखी चित चोरियो, दिनकर दुख दै मोहि,
जब निशि तारा देखिये, तब निशतारा होहि १२
प्रीतम भंवर वियोगकी, सुन लीजो यह बात,
मुख तो पीरा है गयो, स्याम भयो सब गात १३

जो संग्रहौ तो तन दहै, तजों तो प्रेमहि लाज;
भई छछुंदर सापकी, नवल विरह पिय बाज. १४
रह्यो ऐंचि अत न लहे, अवधि दुशासन वीर;
आली बाढत विरह ज्यों, पंचालीको चीर. १५
अवधि बीति जोवन वितै, म्हेर करो मनमांहि;
जियकी जियमें रहत है, ज्योंहि कूपकी छांहि. १६
विरह शकति लंकेशकी, हिये रही भरपुरि,
को ल्यावे हनमंत ज्यों, सज्जन सजीवन मूरि. १७
शीतकाल जल मांझतें, निकसत बाफ सुभाय;
मानहु कोऊ विरहिनी, अबही गई अन्हाय. १८
जरती वरती हों फिरि, जलधर दौरी जाउं;
मो देखत जलधर जरे, जरती कहा समाउं. १९
पियबिन दिया न वारि हों, मो अंखियांरे सूख,
करि उजियारो हे सखी, काको देखूं मुख. २०
जब सुधि आवत मित्तकी, विरह उठत तन जागि;
ज्यों चूनेकी कांकरी, जब छिरको तब आगि. २१
होंही बौरी विरह बस, के बौरो सब गाउं;
कहा जानिये कहत है, ससिहि सीतकर नाउं २२
हरि बिछुरत कुंजन महीं, लगी विरहकी लाय;
हम जलि बलि धैला भई, द्रुम कठोर हरियाय. २३
लाल तुम्हारी देखियतु, सब काहूसों प्रीति;
जहा डारिये तहा बढै, अमरवेलिकी रीति. २४

(सोरठा.)

मै लखि नारी ग्यान, करि राख्यो निरधार यह;
वहई रोग निदान, वहै वैद औषध वहै. १
भादौ अति सुख दैन, कही चंद गोविंद सौं,
घन अरु तियके नैन, दोऊ बरषे रेन दिन. २
ताला जडिया ज्याह, कूंची ता पासे रही;
ऊवड सीआ यांह, (कै) जडिया रहसी जेठवा. ३

जयकृष्ण.

(विविध जाति-संकरछंद.)

सारग दोधक छंद कहिये और मोतीदाम,
तोटकौ सारल नैन जानहू फिरि भुजंगी नाम,
कामिनी मोहन जानिये मैनावली मुनराज,
परमानिका मल्लिका सोहै शंखनारी थाज १
मालती तिलका विमोहा दोहरा गनिआन,
सोरठा गाहा उगाहा मणिचुल्लिका पहिचान,
चौपाइ और अरिल्ल तोमर देखिये मधुभार,
अनुकूल हाकलि चित्रपाद औ पवंगम धार २
रासावरी पद्धरी कहिय फिरि दुवैया जान,
संकर त्रिभंगी द्विपदछ मरहटा फेरि बखान,
लीलावती उपमावली गीयासुपंडी होय,
रोला कुडलिया कुडली भणि रंगिका गनि सोय ३
रंगी घनाक्षर दूमलायो मत्तगयंद गनेव,
करखा बखानो झूलना जैसे सवैया लेव,
छप्पय बतायो फेरि तोटक छद भावन पाय,
सबै रूप बखान प्रथन दियो विन्ध्य दिखाय ४

जयकर्ण.

(दयानंदविरह-कवित्त)

जोगको अगार गिरि धार दृढ आसनको,
शिक्षक महीशनको, त्रिदेव सिधायगो,
कुटिल कुरायनको, वाम मग चाहिनको,
हाय पशु हायनको, इष्ट दिन आयगो,
कहै जयकर्न चार वेदके विमर्ननको,
धर्मनिधि दयानद धर्मगति पायगो,
तीन वेद सासनको, समृति प्रकाशनको,
आज सत भासनको, वासन विलायगो १

जसुराम.

(राजनीति-रायअंग.)

(दोहा.)

सबको वखत बनायवो, ज्यों सोहे जगजीत;
कबहू वखत न चूकिये, राजनीतिकी रीत. १

(कवित्त.)

वखतके लिये झांझ नोवत टकोर वाजे,
वखतके लिये वाजे घरी घरियालकी;
वखतके लिये देवपूजनके घंट वाजे,
वखतके लिये सब रात वरे हालकी;
वखतके लिये रोज बेठवौ अदालतको,
वखतके लिये राग रागनी रसालकी,
कामकाज अरजी अनेक भांति जसुराम,
वखतको बांधिवो निशान छत्रपालकी. १

रोज उठि नाहिवो, फिराहिवो तुरंगनको,
पान फुल चाहिबो, विवेककुं वडाइयें;
धारिवो विचित्रनकुं, मित्रकुं न धारी धारी,
शत्रुकुं विसारिवो न हारिवो सराहिये;
साहनकुं मारिवो न, चोरकुं उवारवो न,
एक घरीहूको गुन ऊमर निवाहिये;
राजनीति राजवंशी राजनकूं जसूराम,
एक एक दिनमें उपाय एते चाहिये. २

केते देश केते गाम केते ठाम लोक केते,
वामें फेर केते दूर केतके हुजूर है;
केती मेरी आमंद खरचको प्रमान केतो,
केतनो विकार वामें केतो साच कूर है;
केतो मेरे सेन राज मेरे सुख चाहे केतो,
केतो मेरे देनो केतो खजानाको पूर है;
राजनीति राजवंशी राजनको जसूराम,
रोज उठ इतनो बिचारबो जरूर है. ३

भूखन आभूखन सुबास अग भांति भांति,
आसन बनाईबो सदाई तमामको,
बेठबो अदाल्तको मिसल मिटायबो न,
जहा जेसो होय वेसी ताजीम तमामको,
राजकी सिलामती सिखामती सिपाहनकी,
रंग रोशनाई दोउ चाहत मुदामको,
राजनीति राजबंशी राजनकुं जसूराम,
एसो तो बनाय कीजे होत नीम सामको ४

दान बूज रीत खीज परीक्षा अनेकनकी,
कागदके देखे बिन महोर न कीजिये,
काछ दृढ धीरज धरम मोम नीत नीम,
बने ठने धनहूसें भंडार भर छीजिये,
आपहूको रष्छन रष्छन प्रजानहूको,
धरनीको रष्छन सों कीरन न दीजिये,
राजनीति राजबंशी राजनकु जसूराम,
करिबेको कह्यो एतो एतो सब कीजिये ५

(दोहा)

जेसी उनकी नोकरी, तेसो उनसों हेत,
इतनो दूध न बुजिये, जीतनो होवे स्वेत १
एक नेन अमृत झरे, एक नेनमें खीज,
एक नेनमें विख बसे, एक नेनमें रीझ २
चातक दादुर मोर थिति, सदा निवाहित नेह,
नृप एसें चहिये जसू, जेसें कहियें मेह ३
फिरि ए लच्छन चाहिये, राजनीतिको राय,
जो मन रीझे आपको, मौज न खाली जाय ४
जो दीजे परधानपद, तो कीजे इतबार,
जो इतबार न होय जसु, तो परधान निकार ५

(कवित्त)

जो जो बोल बोलिबेके धारी चित्तहूमें ल्याहि,
येही बोल बोलनतें आगेही विचारबो,

कहु बोल गयो तो निवाह वाकों कीजिये रु,
घरूनी परायनीकी नाहि चित्त धारिवो;
समो देख आपहूको दीरघ विचारि देख,
कामकाज भोग जोग सबहीं संवारिवो;
राजनीति राजवशी राजनकु जसूराम,
पटितको पूछके सदाइ एसो पारिवो. १

जहा जहा बने जने बेठे प्रीति जोर जोर,
उनकों करोर भाति फोर फोर दीजिये;
दाना देख देखके बुलाइ आगें लिजिये जु,
मूरखकों देखके बुलाय दूर कीजिये;
दीनहीं परेख देख उनकु बढाय दीजे,
वढि वढि गये वाकों वाढन न दीजिये,
राजनीति राजवशी राजनकूं जसूराम,
करीवेके कहे एते एते सब कीजिये. २

होय काज जिनहूसे उनहीतें होय काज,
ओरसो न होय काज एसो जिय जानिये,
एकहुकूं देखि एक कहे होमें बराबरी,
याकी एक दोउ वेर परीक्षा प्रमानिये;
परीक्षामें सरस तो ऊनहुतें लीजें काम,
नीरस जो परे वाको कबहू न मानिये,
जगतमें राजनीतिहुकी रीत एसी जसू,
विना देखे काहुको न कामहीमें आनिये. ३

(मेघान्योक्ति)

रच्छन प्रजानहूको उमंड घुमड रहे,
कालकों मरोरि मारिवेकी गति गही हे;
सूके सर सरिताको भरि देत छिनहीमे,
भरे सिंधु जेसेकों सुकाय देत सही हे,
सुकविसें अनेक जीवजंतहुकी मिटे प्यास,
कुकवि पपैयाकी एक प्यास रही हे;
राजनीतिहूकी रीत देखी देखी जसूराम,
मेह अरु महीपति एक रीति कही हे. १

जो जो कवि कलाधारी आय मिले जाचवेको,
सोउ एक गुनो दान पाय पथ गहे हैं,
जो जो कवि पढी दरगाहनतें आये सोउ,
पाये दान दोऊ गुनो राह लखी हिये हैं,
जो जो कवि समर्थाके पाय दान तीन गुनो,
विद्यावंत चार गुनो पाय चित्त चहे हैं,
राजनीति राजवंशी राजनकूं जसूराम,
उनके प्रकार चार करिबेके कहे हैं २

नींदनको जोर सब आलस शरीरनको,
पलही घटायबो न छिन छिन पारिबो,
कामकी कचाइ और हुकम परायनको,
रैन दिन तर्स वांको मवहीसें पारिबो,
धारे चकी कानहूकी मोरहु विलोचनको,
मोमिको उखारिबो सो मब्हीतें दारवो,
राजनीति राजवंशी राजनकूं जसूराम,
धारिबो तो नीतिको अनीतिको न धारिबो ३

गुनही गभीर खैरपना और धागपना,
शिलैखाना वारुत न मेट कीजे कबहू,
बडेसो वकील चर छोटसें ध्याय रहे,
बोल साच अदब अदाजे लीखे जबहू,
हुकम बहाल पेच मनसूबे छल बल,
दलनको एकदिल होवे काज तबहू,
राजनीति राजवशी राजनकू जसूराम,
जेते जेते कहे एते राखिबेके सबहू ४

जिनहूके द्वार हस जैसे तो घेरेई रहे,
भकहूकी बहुत बखानी बात गई है,
जिनहूके द्वारकों तुरंगनसें ठाढे रहे,
बसर बनाईके जु स्वारी साधी लई है,
जिनहूके द्वार फूल चंपकसे कुमलात,
सबल्के फूलकी बडाइ सीह दई है,

एसीही अनीति वाकूं कबहू न चले जसू,
चार घरी चादनीत अंधारि रात भई हे. ५

(छप्पय.)

कहो अमृत कहा करै, जहा बिखपाश बिराजै,
कहो मुक्ता कहा करै, जहां पथ्थर छबि राजै;
कहो नीर कहा करै, जहां निकसत दव झारा,
कहो बेद कहा करै, जहां मदिराकी धारा;
गुन समझी मथयों गयो, नहि जानी विध नीतकी,
मति कोउ करो जगमें जसू, एसी रीत अनीतकी. १

राणी अंग.

(कवित्त.)

कीजे धाय बुंनिआदि पुत्रकी सहाय कीजे,
क्रोधहू न कीजे चेरी दानी राखि लीजिये;
कीजे धन संग्रह अवासकी जल्दस कीजे,
दान पुन्य अदब मिटायके न दीजिये;
तनक आहार अहंकारहू तनक कीजे,
नींदहू तनक पानी छान छान पीजिये,
राजाहूकी रानी राजधानीहूके जसूराम,
कीजिये तो रीत राजनीति एसी कीजिये. १

जोरे जो जो बाताचित कन्तहू ज्यों राजी रहे,
सो सो बातनसें कन्त राजी कर लीजिये;
भार अधिकार ओर चातुरी अनेक भांति,
तीनो पख आपके बढाइ सोंह दीजिये,
कामकाज राजनीति हुकम प्रमान कारि,
कीजिये तो रीत राजनीति एसी कीजिये;
पतिसों न अभिमान सोंतनसों ना गुमान,
आवे वाको सनमान जसूराम दीजिये. २

विविध रसोइ कीजै दीजै खान पान वित्त,
औरका हल्न चलन सबें देख लीजिये;
नाथ मिले लाज कीजे आबरू बढाय दीजें,
देखे बिन औरके परिछा कर लीजिये,

सुची हो रहीजे प्रीत कुटूंबसो कीजे,
गृहकाज चित्त दीजें सुघ सबहींको लीजिये,
राजहूकी रानी राजधानीहूको जसूराम,
कीजिये तो रीत राजनीति एसी कीजिये ३

एक ओरसो तेजन चल्न न देत आगे,
एक ओर प्रीतम बिराजे छोह भार ज्यों,
एते दुख भाग्यके पसार्यो न गयो जाय,
दुख दूजो लागत है फेरे जे कटार ज्यों,
दोउहूको एक ओर कबहू हल्न पावे,
यों नाउ पावे कामनीके ना करार ज्यों,
राजनीति पुरी राजधानीहूकी जसूराम,
सुरीहूके बीच आय रही है सुपार ज्यों ४

(सोरह सिंगार)

आदि किये मजन शरीर चीर कर एन,
नेनहूको अजन तिलक भाल दीजिये,
कटि मनीं छुद्रावली घंटी कापें नेपुरनी,
नाकनकों मोती खोर चवन लीहीजिये,
काननकों कुडल उरोजहीकों कंचुकी रु,
मुखकों तबोल केशपास भरि लीजिये,
राजनीतिहूकी रीति देख देख जसूराम,
करिबेके सोरह सिंगार एसें कीजिये १

अमृतसी बानी सबें बातमें सयानी,
राजहुंमें लपटानी जाके प्रीतमसो प्रीत है,
गुनमें गहरानी जाके अधरमें मुसकानी,
पीया मन मानी सब ऐसी रस रीत है,
पतिव्रता जानी नहि कपट कुपानी लोक,
लछमीसी मानी सो कहानीजुक्ति रीत हैं,
सुखनकी दानी प्रजा मात ज्यों प्रमानी,
जसूराम राजधानीकी बखानी राजरीत हे २

(दोहा)

प्रीतम कहै सो कीजिये, रहिये प्रीतम पास,
जो नहि कीजे तो जसु, महोरों होय बिनास १

(मर्याद उल्लंघन दोष-छप्पय.)

सीता जैसी सती, राम जैसे पति राजा,
फिरे न कोऊ काल, सदा ऐसे विध साजा,
जो आगें पद दियो, रामहूकी हद मेटी,
तो रावण हरि गयो, लाज कहां गई लपेटी,
जग नीति रीति ऐती जसू, सब ऐसी सुनि लीजिये,
मन जानि पिया हद मेटिके, कारज काहु न कीजिये. १

(प्रेमस्वरूप-कवित्त.)

दिनको वियोग होवै विरहा अंगार चुगे,
भूलि जात पवन सुगंध सीत मंदको,
नेननकूं देखवेकी टगमगी लगी रहै,
रेनिकों अपारही वढावत अनंदको,
एहि विध एसी प्रीत ऊमर नभाई जात,
कबहू अघात नां मिटत दुख दंदको,
राजनीतिहूकी रीत राजनकूं जसूराम,
चंदमुखी चाही ज्यों चकोर चाहे चंदको. १

राजकुमार अंग.

चार घरी रात रहे उठिवो अटंक चाहे,
चढिबो सवारी आई सबें साथ जितने,
जोर खेंच चले भुजदंडको वनाय देहि,
वाक पटे सबें घात पेच होय तितने;
रोज रोज मल्लविद्या चढिबो शिकार रोज,
कसब कमाये विन कह्यो जात कितने,
राजनीति राजके कुमारनकूं जसूराम,
एक बालपनेहूमें साधनेके इतने. १

बापहूकी अदब अदब उस्तादहूकी,
मातापिता अदब जरूर कह्यो इतनो,
सबनको मन रीझ आमंद निगाह मांझ,
खरच नगर हों परिछा भेद कितनो,

चपलता साच गुरु गभीरता दान पुन्य,
महोतें ना खाम्रो भूखन सुवास कितनो,
राजनीति राजनके कुवरकू जसुराम,
एक माल्पनेहूमें राखिबेको इतनो २

गजकी सवारी भो सवारी तुरंगनकी,
राजनीति रागमाल कोकभेद कितनो;
देश देशहूकी भाषा पढके विलोकवोई,
बोलिवो संभारिये सबेके गुन जीतनो,
बांचवो ओ लिखनो हरेक भेद चातुरीको,
जितनेइ सिखीए सो याद रहे तितनो,
राजनीति राजनके कुवरकू जसुराम,
एक बाल्पनेहूमें सीखवेको इतनो ३

(दोहा)

पहिलें विद्या चौद पढि, कीजें सबही काम,
रायनके उपचार हे, जिनकों आठो जाम १

(चौदविद्या-कवित्त)

चाबुक सवार जल्तरन अरु धनूर,
घात जोत ज्ञान भक्ष भेद कोक लहिये,
गीतन सगीत नट विद्या वेद व्याकरन,
अष्छर अमोल तपहूकी गति सहिये,
एती बात सुरखासों चतुरसों चाह माति,
वाहनको फेर फेर वेगे गुन गहिये,
जसु मीन सुरतमें हंसके कुमार जेसे,
कहे राज हसके कुमार एसे कहिये १

(सुसग-कुसंग विचार)

उदधी जल सोवती भटी भई मुक्तनकों,
राय रानी माल हार हिये कर रहे हें,
वाही फिर सोवती जो माननीको भई आय,
कामदेव जेसे सोऊ चपल गुन चहे है,
वाही फिर सोवती जो तुरगनकू भई आय,
सूर जेसे चढिके फिराय गुन गहे है,

राजनीति राजनके कुंवरकूं जसूराम,
येही सब सोवतीके गुन सोई कहे है. १

कागहूकी सोवती जो कोकिलाकूं भइ आय,
श्याम रंग भयो सो सुपेत रंग ना धरे;
अनिलकी सोवती जो भई आय वसतीकूं,
छोरकें उजर वन रही वासमें धरे;
रावनकी सोवती जो भइ है समुद्रनको,
भइ सेतु बीचमेंसो वांदरने वांधरे;
जो नही तो कोउसों वीगरे अमेट जसु,
सोवत कुसोवतमें सुमति न सुधरे. २

देख लोक सोवतीमें मुक्तासों लेते गुन,
दुनियासो दूर करीवेके गुन गहे है;
कीतीसें अंग रंग उज्वल धरे हे जानी,
छीर अरु नीर दोऊ जूदे करी चेहे है;
वालहिमें माल वाधिवेके गुन साधन है,
चाली कुलहूकी चालहिकों मंडी रहे है;
राजनीति राजनके कुंवरकूं जसूराम,
येही सब सोवतीके गुन सोइ कहे है. ३

(छप्पय.)

जो राजा धृतराष्ट, कुंवर दुर्योधन जैसो,
आप तुरगी भयो, और माने नहि ऐसो,
आप बीरसो कटे, पांच पांडव धर लीनी,
जग बिच परी हसाइ, निज अपकीरत कीनी,
भयो नाश कुल आपको, जसूराम कुतरंगकी,
राजेंद्र कुंवर कोउ मति करो, एसी या खतरंगकी. १

मंत्री–वजीर अंग.

(दोहा.)

जैसे भाग्य ह भूपके, सब जाने संसार;
मंत्री आगें मिल रहे, ऐसे बुद्धि उदार. १

रैयत सब राजी रहे, मिटे न रावत मान,
आमद घटे न रायकी, तो प्रधान परमान २

(कवित्त)

अवसरके बिना बात कबहू न वाही करे,
अवसरके आयेतें न मूले कोऊ मारके,
कियहूके आगे काज करत न कबहूकों,
समे सावधान गुन आगेके विचारके,
रायके हजूर एक दोऊ मित परे रहे,
मनसों न न्यारे कहिवेमें वे हजारके,
राजनीति राजके वजीरनकू जसुराम,
कहे एसे लच्छन समेंइ कारभारके १
जेसी होय आमद ऐसोई खरच राखे,
मगर कहूको राह कितसों न गयो है,
नींद और अहंकार आलसकों घाट करे,
ऐसो जानि कारभार विन कोन रयो है,
साल साल हर साल कागद जुदे रहे जु,
चाकरीको दावा एक चित्त चाह चयो है,
राजनीतिहूकी रीत देखि देखि जसुराम,
कारभारहूको बीरबल एसो कयो हे २
एसो मोल मोले नहि आपहू न मांग्यो जाय,
बातहूको आपके मनाय कहे जानिये,
चचलता धीर गुन हेमत हसाव सूधो,
लेखन पढन सब चातुरीसों जानिये,
घरेही न रंक छांड बडेकू न गृहे रहे,
अदल नियावहीको मेटत न मानिये,
जेसी रीत देखे एसी जगत बखाने जसू,
एसी रीत कारभार उनको बखानिये ३
जैसी हे कचेरी वाको देखे पीछे पार वाको,
रोस भरे रहे वाकों आगेंही बढाइये,

कामहूको बिगरे बिगारे सो निकार धरै,
कामहूको भये वाको सदाई सिराइयै;
केते राखे राख लीजै केतेक विदाय दीजै,
तोंलो संग रहे जोंलो ऐसेही निवाहिये,
रायके वजीरनकों सबे लोक जसराम,
तबोलीके पान ज्यों संवारवोही चाहिये. ४

पथ्थरसो बोल कहुं डारिये न काहूपर,
डारियै तो हीरसें लपेट कर डारियै;
मुखतें बिगारियै न चितर्ते विसारियै न,
महा रोस भयो तोऊ मनमांहि मारियै;
एक घावहीसो कूप खोयो नहि जात कहू,
धीरे धीरे लिये काम सबही सुधारिये,
राजनीति राजके वजीरनकुं जसूराम,
गुडहीतें मरे वाकूं वीखतें न मारियै. ५

जाको हे कचाई वाको आगेही बताय दीजै,
पाछेतें न दोप दीजे रोष न बताइये,
कामहूतें बिगरे बिगारे सोई काढ डारि,
कामहूके भये वाकों सदा कर साइये;
केते राख राख लीजे केतने बिदाय कीजे,
जोंलों रंग रहे तोंलों एसेंइ निभाइये,
राजके वजीरनकुं सबे लोक जसूराम,
तंबोलीके पान ज्यों संवारीबोइ चाहिये. ६

ज्ञान जजमानहूकुं कितने बताय देऊं,
जो कछु अजान तो सुजान करि लइये,
विद्या बल आपकुं देखाइ सबें साचों करे,
जूठ कारभारके नजीकहू न रहिये,
आप लेत घरहीको उनहीको पुन्य होत,
दोउहूको होय काज एसें तीर वहिये,
राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
बिप्रकी बजीरनकी एक गति कहिये. ७

नेननेमें बात प्रीत कपटीको जानत है,
एक नाडी देखत हजार बूझ लहये,
एक घात मरनमें कितनी मिलाय दीजें,
एक रस गारनमें केते बना रहिय,
जाको राग जेसो वाको तेसोइ इलाज देत,
जाके चेन भयो वापें मागनकों चहिये,
राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
वैदकी वजीरनकी एक गति लहिये   ८

(निमकहरामको शिक्षा-छप्पय)

भस्मागद तप कियो, शिवहि अपनो करि भाप्यो,
जार करे अगार, शिवहि एसो वर आप्यो,
सो गिरिजाकूं देखि, शिवहिंके पाछे धायो,
कोन विध किरतार, आप उल्टो दुख पायो,
सब मत्री रहो साचे सदा, कूर बने नहि कामही,
जग बीच कोइ एसो जसु, हारे निमकहरामही   १

मुसाहिब अग.

(कवित्त)

रोज रोज काहू बिन अरज हवाल कीज,
रीस लोभ लालचके नजीक न रहवो,
करे जे जे काम सावधानके खाहिगीर,
मवहर चार हट काहूसें न गहवो,
आपहींकी जानकों सभाव सवे छांड दे के,
साहिबके ज्ञानको सुभाव सबे सहवो,
राजनीति रायके मुसाहिबकों जसूराम,
कामकाजहूको अवकास देख कहवो   १
एक नैनहूकी कोर करै बात कोऊ भाति,
पाय पाय जाय ऐसी रायनकी रीतसों,
हाकमके हुकम कुचायनसें दूर रहे,
जाहर भरत प्रीत एसी जुग जीतसों,
नांहि अभिमान रहे सबसों समान वुद्ध,
पख्यपात करे नांहि आपहिसों कीतसों,

लाजके जहाज देवे दान पुन्य जसूराम,
रायके मुसाहिवकों रहै राजनीतसों. २
साहिबके खास वरदास सेंबे राजी रहै,
साहिबको शत्रु मित्र निगा होत जितने;
साहिबको होय मन दोख वह जाय नहि,
साहिवके मन भावे करे राजनीतने;
साहिवके आगे सदा अदबकी रहे वात,
साहिवकी जातके जतन करै कितने;
साहिब सुजानहूकै सेवा गुन साहिवके,
जसूके मुसाहिबके लच्छन हे इतने. ३
कोऊ बात भीतरकी वाहिर न जाने कब,
सोवतके लोककों पिछान है न सानमें;
सुपनमें साहिवकी बुरी बात कहे नाहि,
कोऊ कहे सुने नांहि एसे गुनगानमें,
जा दिनतें लागै प्रीत वाहि दिन याद करे,
परीछा अनेकहूकी धरे कर पानमें·
कबहू नां रहे दूर कबहू ना होय क्रूर,
जसूराम सोऊ करै साहिब जिहानमें. ४
दीन दगाबाजनकों सवही पिछान लेत,
कामकाज साच जूठ सुर्त ठहरायबो;
जबहीके सीर गुन राखत गेहरे आगें,
आलमतगीरीहूमें बेसेही निबाहबो,
ज्यों ज्यों सुख देत त्यों त्यों दुखको सरीख होत,
जानो कछु चूक नाहि देत चित्त चाहेबो;
किनहूकी भली बुरी मुखतें न कहे कछु,
जसू एक जुग बीच कठिन मुसाहिबो. ५
जेसी कही मित्रताइ त्यारी करी जाओ जीत,
लागी पशु पंखी जीव जेते लोक जनसो;
रेसमके कापडसों हट्टसों दूसाल साल,
जाई तज धनसों मिटे न रात दिनसों;

जेसें जुग आगेहूकी सोबतमें रहे जसू,
एसें रहे सोबतसें मुसाहिब मनसों,
होव जो दूर तोहि मिल्न हे हजूरी केसो,
होय जो नजीक तो मिल्न नाहि तनसों ६

चंचल चपल गुन बाहिरकी ल्हेत शुद्ध,
बेठ जब भीतर हजूरनमें सही हे,
रग छबी मुरतकों बनाये अनूप रहे,
गादी फरी चाह रह गादीनकी मही हे,
कबहू न मेटे सुख आपतें विलासहूकी,
देखि देखि जाहल्कों यों कवित्त रही हे,
राजहूकी रीत देखि देखि जसुराम सबें,
मितकी मुसाहिबकी एक रीत कही हे ७

राग रंग ल्यिये आगे सदा बने ठने रहे,
दोउकी बहार सब जगतमें जही है,
नैनसें मिलाय नैन सकोचत चित्तहूपें,
बोल्त भुलावे न छुपावे बात रही है,
एक एकहूसें बात कबहू न टह जात,
दूरतें नजीकतें निभाय ल्हेत सही है,
राजहूकी रीत देखि देखि जसुराम सबें,
सिद्धनकी साहिबकी एक रीत कही हे ८

(दोहा)

राजनकी सोबत महा, कठिन कहे सब कोय,
बीस बिसा जाने सबे, सोउ मुसाहिब होय १
दिन दिन बाढत रंग रस, दिन दिन बाढत हेत,
सोउ मुसाहिब जान ज्यों, फीकी परन न देत २
साहिब तेज प्रतापतें, रहे मुसाहिब मान,
कबहु गरब न धारिये, जानत सकल जिहान ३

(छप्पय)

अर्जुन जेसे एक, महा जग बीच मुसाहिब,
जिहिं सोबत ब्रजराब, नंद नदनसें साहिब,

प्रिय रच्छन गिरि धर्यो, संग साहीवकी छूटी,
जिहि भारत जुध कियो, सोइ देखत तिय लूटी;
गोपी सिंगार सवहीं गयो, एक न वच्यो उगारवो,
जग वीच मुसाहिवकों जसू, इतनो गरव न धारवो. १

रावत—पटावत अंग.

(दोहा.)

भूपन वसन सुवास अरु, मिटे न कवहू मान;
हिम्मत आयुध टेक दे, रावत सोहि सुजान. १

रायनके वेठे हुवे, पीक न डारत पास;
खेंचन दे तल्वारकों, रहत न कवहु उदास. २

जों लों राय खरे रहे, तों लों वेठत नाहि,
जाहींतें मन भंग हे, छोडे चाहे तांहि. ३

विन वुलाय वोल्त नहि, पूछें वोल्त वोल;
आसन राय न वेठहीं, सो रावत अनमोल. ४

जसू करे किमत नहिं, रावतहूकी राय,
रावतका राखे हिये, साची प्रीत सदाय. ५

लोकलाज राखे रहे, कहूं करे नहि त्याज;
देवो मरवो मारिवो, लोकलाजके काज. ६

(कवित्त.)

शरनको आयो वाकुं कवहू न सोंपत हे,
निमक जो खायो वाको वाहत न हीन है;
सामे घाव सूरकें रहत हे सिंगार सदा,
दूर गयेहूतें कछु भाखत न दीन है,
करे नहि अर्ज सुख टरे नांहि पचहूते,
जसुराम एसेही संग्राममें प्रवीन है;
सावधान शूरवीर राखत है महाधीर,
मनमें महरवा न वाकों तन छीन है. १

समधीसों नोकरीतें रहत हे शूर रस,
दारुन दगासों कवे भावत न दीन हैं;
शरनकूं आय वाको कवहू न सोंपत हे,

निमककों चाहे वाकु चाहत नहीं नहै,
रायनके पास बैठि देत न इनाम आप,
जगनके जोरावर मागन अधीन है,
करत ना अरजी मुख टरत ना पंच होत,
जसु ऐसें रायनके पटावत प्रवीन है २
एक बेर मुजेरेकु आवत हे दिनहूतें,
राजको पटावत हे ना कछु अनीत है,
मिशल्कू चूकत ना बेटत न पाम बांधी,
घटत हैं वेसें सिद्ध जेसी जो जो रीत हे,
हसत न बोल्त न विहरत समे विन,
मद्दो डर राखत ना बहुत ना प्रीत है,
जगतमें राजनीतहूकी रीत देखी जसू,
राजके पटावतकी सदा ऐसी रीत है ३
अदबहीत रहे नीच कसब न गहे भूप,
सबनकु एहे सोउ सेवककी सान है,
बुध रीत रहे न्याय मुखहीतें कहे चोल्लो,
चाकरीमें रहे नित विघसों सुजान है,
आबरूको चहे भार अधिकार सहे गुन,
ओगुनकू गहे नाहि वीर सावधान है,
दश्मनकों देखि टले नाहि रंच कहीं जसु–
राम रायको सो पटावत ही प्रमान हे ४
कसबेको भूतल नां फूल्नको हेत कछु,
आबरूकें गये प्रान तजें जात इतनी,
भीनें रहे लाल रंग जंगमें न पाछी फरें,
लालसें न कुरकी फरे न रीत जितनी,
काहुको उठत अटककी न छूटत कबु,
पर त्रिया लुटत न जीये वासी तितनी,
रायको जो रष्छन करत रहे जसूराम,
रायके पटावतकी कही बात कितनी ५

लोक सरदारहूके राजी सब राखे जाय,
चाकरीके किय बिन लालच नां चाहिये;
एकहूकी भली बुरी कहे नहि एक आगे,
सबके कुलच्छन कबू न आप साहिये,
रायके बजीरनकूं राखि राखि लीजें रंग,
आपकी करे तें बात ऊमर निवाहिये,
राग बाग सरे कूच राखी लेत जसूराम,
रायके पटावतकूं एत गुन चाहिये. ६

जगहूमें भली तरवार हे तो कहा करे,
जब कोऊ लायक जो मारी हे न कबहू;
चढवेके लायक तुरंग कहो कहा करे,
शूरवीर पीठ सकुचाय रहे जबहु;
शूर पीठकुं जो सुराहे तो कहा करे,
करे शिरदार जहा किमत नहि कबहू;
भली तरवार नाहिं मारे ना सीपाह भले,
भले सिरदारनको कींमत हे सबहू. ७

एक बेर उत्तरहीं एक बेर चढी जाय,
देखतही देखत जो चढत हे पानी ज्यों;
लाखनके म्हेलसुं बिकाय पाच लाखनसों,
बिना पानी मालवाको कोडीकी कहानी ज्यों;
जात कुल भातहीकूं बडे दधि जात जेसो,
भये तोपं कहा भयो पत्थर प्रमान ज्यों,
जगतमें पानीकी पिछानी जात बात जसु,
पानीहू पटावतको मोतिनको पानी ज्यों. ८

काछत हे लोहके मनाह बार काछ जेसे,
खुदहूके सबहूके होदे गहि रहे हे,
लाजहूके लंगर बिराजत हे पायनमें,
जीनहूके बेठन कढन कारे ठहे हे;
रात दिन बानहूकी धजा फरकत रहे,
रायके अंकुश सदा सिथिल जु रहे हे;

जगरन गहराते मदमाते जसूराम,
अटक नेह हस्तिसे पटावतकू कहे हे ९
मन मानी चपळसें चले जु बखत हे मुराद,
वाकी जाके नाम सुने वेरी त्रुटसे सही हे,
जाके शिर शोभाहूके चढे फुळ रात दिन,
जीतहूके डके बाज मोळ साच गही हे,
जाके भार एक लाख हजारजु ऊठे नीके,
जाके तन हीरनकी मंदिखन रही हे,
राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
पीरकी पटावतकी एक गति कही हे १०

(छप्पय)

ज्यों तारे नव लाख, चंदहू एकके आगे,
गहे राहु जम आय, काम तव एक न लागे,
ल्याज भये तन रहे, कोउ जानत नहि नीके,
जबहीं देखत चंद, तमहि लागत मुख फीके,
दिन कोऊ मुख देखे नही, दोष जगत सब दीजिये,
जन घीच पटावत व्हे जसू, एसो कबहु न कीजिये १

रैयत अग

(दोहा)

चोरी चुगळी पर तिया, कोऊ काम कुकाम,
एती बात न जानिये, सोऊ रैयत नाम १
घरहूमें कजियो चुके, नातनमें न सुनाय,
नातनमें चूके जसू, दिवानकु न सुनाय २
हय हाथी अरु सूरमा, जान ल्याज मरजाद,
एतो तो राजे जसू, जो रैयत आबाद ३
कहा पारस कहा किमिया, कहा दक्षनाउत शख,
जहां रैयत छाई जसू, रही हिमाऊ पंख ४

(कवित्त)

बडी बेर जागे नहि गृहि राखे चचळता,
देशहूके पुन्यमें धनीको नाम धारिबो,

कसबकूं राखे सो तो ता दिनाही ताजे करे,
त्रियासों बिगार नाहिं अमलीसों डरबो;
कूपरोस बसिबो ना बेठिबो कुसोबत ना,
उधारको करिबो ना न्याय चोक भरबो,
राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
रैयत हे नाम वाको सबें एतो करबो. १

भजन बेपारके उपायमाहि शील गुन,
धनहूको संग्रह धरम नेम धारिबो,
शाहूकार कार बेहेवार सोई सबें सांचो,
नात बेहेवारमें अन्याय नाहि लरिबो;
बनावन आभूषन भूषन सब नीतहूको,
नीतिहूको चालबो अनीतिहुतें टारिबो,
राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
रैयत हे नाम वाको एतो सब करबो; २

धनहीकों दूर राखे मुखतें न कहे घनो,
अमलीके काम सबे देखि देखि करबो;
करजकूं लेन देन करिये ना आमीलसो,
करजमें पावे सो तो हरें हरें हरबो,
जो जैहें दीवारी बधुवाको देवो राखिबो ना,
खतहीके मेटेतें जु एक लेनो करबो,
राजनीतिहूकी रीति देख देख जसूराम,
रैयत हे नाम वाको एतो सब करबो. ३

जेतो रस पैये तेतो पलहीमें बढें जाय,
मुखकी सुवास आसपास लोक लही है;
अधिको अंधेरो होय रातिकुं कुमुदी जाती,
प्रभातकुं हजार कली खीलीसी रही हे,
भंवरके अमलसें वाहिके सहे कराई,
इनसें सुहाई देन हेत प्रीत सही हे,
राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
राजीवकी रैयतकी एक रीत कही हे. ४

जो जो देख्यो चाहे तो सोरह सिंगार सजी,
चाहे तो न कोउ काज अनमनिसी व्ही हे,
जोइ थान छेत सोइ देत जो छगी हे प्रीत,
छके कारभार येंहि कुछ्वधू सही है,
नाह छोहे दच्छन तो उनपेही रहे सदा,
शठकों सख्राम करी दूर जाय रही है,
राजनीतिहूकी रीति देखी देखी जसुराम,
रानीकी रु रैयतकी एक रीति कही है ५

अमृतके बीज बोए होइ जामे अमृतही,
बिसहूते बीज बोये बाके बिस सही हे,
जेसो रस पैयें तेसो रस होय जाय बामें,
ढरहु परीत्त सदा आप मुकी रही हे,
फूल तहा चंपक गुलाब जाकी किमत हे,
आकही धतूरा जहा कीमत न व्ही हे,
राजनीतिहूकी रीति देख देख जसूराम,
कापिकी प्रजानहूकी एक रीति कही हे ६

वाके बडे भाग्य जाके रैयतसी कामधेनु,
जमें रस राजत है माया मन मोहिनी,
वृच्छकु जो वृच्छपति पालनकूं पोखत है,
वृच्छ जो कलपवृच्छ सदा रहे रोहिनी,
घरी घरी फेर फेर उहे देखे घरे धीर,
पीरही जो हीत नाही होय प्रीत ओहनी,
राजनीति मंत्रिनके बोउनकू जसूराम,
दूध एसो दोहियो न फूटि जाय दोहनी ७

(छप्पय)

रैयत राजा राम, तिही अपनी करि जानी,
राजा ऐसो राम, बारि जीहिं जात बखानी,
देखी रैयत आय, दगा उनहीते कीनो,
आखी जमीहु खाइ, अंधने कछू न दीनो,

कर भरत राजआज्ञा, विलंब न करे कोऊ कामकी,
जो अगे राज कर जइ जसू, रैयत राजा रामकी. १

कवि अंग.

(दोहा.)

लोभ नही आग्रह नहीं, सुच्छम वसन शरीर;
सो पूरे कविता जसू, जो गावत रघुवीर. १

सूख मनाइ कहे खरो, विद्या पढे जु राय,
सभा सोहत बोले जसू, जो पूरे कविराय. २

जाने वाकुं व्होत हे, अतही शीख अनंत;
जाने नहि वाको जसू, वहिर आगे शंख. ३

जसू न जाचे जामखुं, वडो भाटनको टेक,
तेरे मागन व्होत हे, (तो) मेरे भूप अनेक. ४

(कवित्त)

पहोर रात पीछलीकुं उठकें हरेक विद्या,
पढे भाषा धीर सब बोलके निभाइयें;
छपें राजसभा मांहे एसो परविन रहे,
जेसो हे विचार एसो बोलिबे सराहिये;
कोउसें विवाद नांहि काम क्रोध दोउ नाहि,
मेटन म्रजाद ठांहि सदा एती साहिये,
राजनीतिहूकी रीत देखि देखि जसूराम,
चतुर हे राय वाकूं एसे कबि चाहियै. १

रंगहू न देखे उठ चले एक साहीतमें,
जायके हजार कोश रहे एसो सही है;
प्रीत जोइ लागे कोऊ समे फेर आय मिले,
नाहीं प्रीत लागी वाकूं यादहू ना रही है,
जोइ जोइ वार वाके संग रहे आठो जाम,
जो जो हे गुहार बातचित्त ताकी गही है,
कोऊ भाषा सुनत सुनावत है जसूराम;
पंछी अरु पंडितकी एक रीत कही हे. २

जहां कछु मोळ्चो न चाल्यो ना ढंग ढाल,
ताजीम तवाज नाहि ऱ्हां कहा कहिये,
कोइ कछु कहे नाहि कहिये तो सुने नाहि,
सुने जेसे कहे एसे रुठी रुठी रहिये,
आपहूकी खेचें बात और कूट मारे भळी,
बूरी बात जहा रहे शेर स्राजे व्हीं है,
राम राम करिके बिदाय होत जसुराम,
एसी सभा बीच घरी एकहू न रहीए ३

रही है अनीत और नीरल्ज राजा रानी,
मुरख मुसाहिबको केसें करी मानिये,
रावत गरीब जहा रैयत बिगार तहा,
फिरहे बजीर जहा एसो जिय जानिये,
पढित ल्रकासे कुमार नीच सगत है,
राजनीतिहूकी रीत देखी चित्त आनिये,
वहां भलेहूकी बाट देखिये न जसुराम,
पूतहीकें लच्छन सुपाळने पिछानिये ४

काच जेसें राय जोइ राजनीति शील छेत,
विना पार किये कछु अर्थ नां सरत है,
वाकों कवि कारीगर भातकै चढावे पूट,
बहोत बहोत वाकों पढवोइ करत हे,
देवगुन दान बहु बेमानक गुननसें,
जेसा काम होय एसी जीनको धरत हे,
जगतमें ताहि आगें जाय अस जसुराम,
जेसो जहा चहे तहा जाहेर करत हे ५

जसवंत

(श्रीकृष्ण विलास, आध्यात्मिक,-१)
बृदावन निशि दिन गैया चरावे प्रभु,
राधेपति मुरली बजावे ठोर ठोरहीं,

कबहू गोवर्धन पर गैया बेठावे आप,
बेठत एकात जहां नहीं कछु शोरहीं;
सुचल सुदामा लिये संग ब्रछ ब्रछनपें,
लता पुंज पुजनमें करे दोर दोरही;
कबहू जया सहेली सुखसों एकेली मिले,
भले जशवंत यों रसिक सिर मोरही. १

राधेती सकल कर्म साधती सो राधा कही,
माया नाम पति ताको कृष्ण नाम कहिये,
वृंदावन व्रंद नाम कहीए समस्त देह,
गो नाम इंद्रियोंको तत्वहुते लहिये;
ताहिको चरावन प्रवृत्ति देखो यान मध्य,
मुरली बजावनो अनहद नाद कहिये;
मन गोवरधन हे इंद्रियोंके वर्धनतें,
एसा जशवंत अर्थ चित्त नित्य चहिये. २

इंद्रिय सकल मनमध्य लीन करके सो,
गौवन बेठावन समाधि नाम जानिये,
सुचल सुदामा नाम चित्त अहंकृतको हे,
ताखुं मिल ब्रछकोस मध्य सुख मानिये;
लता सुखमना आदि नारी जामे नित वसे,
जया मति नाम जामे विश्वनाम महानिये;
परम आनंदरूप कृष्ण जशवंत कब,
अंतरमै खेलैयों निरतर पिछानियै. ३

(दोहा.)

मुख शशि वा शशिसों अधिक, उदित ज्योत दिन रात,
सागरतें उपजी न यह, कमल अपर सोहात. १

नेनकमल ए एन है, ओर कमल केहि काम,
गमन करत नीकी लगे, कनकलता यह वाम. २

धुरम दुरै आरोपतें, शुद्धाहुति होय,
उरपर नाहिं उरोजये, कनकल्ता फल होय. ३

परजस्ता गुन औरको, औरविषे आरोप;
होय सुधाधर नाहिं यह, वदन सुधाधर ओप. ४

जीवन.

(चित्तशुद्धि)

कान कथा सुने तव सुनिवेको रह्यो कहा,
जीभ रटे राम तव फेर कहा रटिवो,
नैन रूप लखे तव लखिवेको रह्यो कहा,
पाप आप कटे तव कहा रह्यो कटिवो,
दान पानि करे तव कहा रह्यो करिवको,
हटे यम हाथ तव कहा रह्यो हटिवो,
ब्रह्मज्ञान भासे तव जीवा कहा भासिवो है,
जन्म मृत्य मिटे तव कहा रह्यो मिटिवो १

जंगलमें जाये कहा पान फल खाये कहा,
वारकों वढाये कहा अग रहे नगा है,
भोगकों वहाये कहा जोगकों जगाये कहा,
तनकों तपाय कहा वस्त्र गेरू रंगा है,
द्वारकाकों धाये कहा छापकों लगाये कहा,
मुड मुडवाये कहा धार धाय अगा है,
जीवा जगमाहि ऐसे भेप धरे होत कहा,
होत मन शुद्ध तव गेहमांहि गगा है २

(जीवनसुधार-सवैया)

पानितें दान कियो न कवू अरु, पायतें विष्णुपदी नहि धायो,
नैनतें ना रनछोर लखे पुनि, कानमें वेदको शब्द न पायो,
रामको नाम लियो रसना नहि, सत समागममें नहि आयो,
जीवन तो नरदेह धरी कहा, या जगमें तुम आइ कमायो १
चिंतन एक चितें करिये, करिये नहि फेर ससारके माई,
पार उतारन जे भवसागर, मारके मारनहार सदाई,
धीरज धारना धारि उरे अति, मारि सवे ममता मनमांई,
जीवन सो भजिये निशिवासर, वेद वेदांत तजी चतुराई २
धीरज तात क्षमा तम मात रु, शांति सुलोचनि वाम प्रमानी,
सत्य सुपुत्र दया भगिनी अरु, भ्रात भले मन सयम मानी,
ज्ञानको भोजन वस्त्र दशो दिशि, भूमि पलंग सदा सुखदानी,
जीवन ऐसें सगे जगमें सव, कष्ट कहा अव योगिको जानी ३

जन्म लियो जगमें जवतें, तवतें शुकने सव आशकों त्यागी,
पुत्र कलत्र धरा धन धाम, जनक भयो तिनमें अनुरागी;
क्रोधि महा दुरवासा भयो, जडभर्त रह्यो नित शांतिमें पागी,
जीवन कर्म जुदे सवके पर, पाय हैं मुक्ति वे चारौ सुभागी. ४

जुगलकिसोर.

(लींवडी शहर-कवित्त.)

शोध सव अचल अटूट शुद्ध सोननतें,
जाने धों कहालों जड जडी गहरीली है;
दसो दिस रही फैल सुकवि किसोर ऊंची,
सबे सुख संपतके पातन गसीली है;
पछी गुनी गननतें भरी भरपूर छाया,
पथिक त्रितापहारी सुखद नवीली है,
पायके कन्हैयासी महीप जसवंत मौर,
नींवडी निपट भई मधुर रसीली है. १

(राजवंशी होरीवर्णन.)

आनंद विविध विध राग अनुराग जुत,
आई ऋतु फागन अरिन उर सालकी;
केसर अत्तर तर कुमकुम अवीर वीर,
माची धूम मधुर मृदंगनके तालकी.
कहा लग किसोर छवि वरनो छविली आज,
जेसिंग महीपतके आनन रसालकी,
लोचन विसाल पर भोंहे भ्रंगमाल पर,
भाल भरे भाग पर गरद गुलालकी. १

अंवुधि छटासी छवि छाजे पिचकारिनकी,
वारन हजारनकी कुकुम रसालकी,
धधक धधक धुन मधुर मृदंगनकी,
ध्रुपद धमारनकी आनंद विसालकी;
कौने कौने फागनमे वरते किसोर छवि,
ऐसे छेल रसिक छविले छितपालकी,

सुंदिर समातें कढ मदिरके द्वारनसें,
अबरलों छाई आज गरद गुलालकी २
गरजन लागी गुञ्ज गगन मृदगनकी,
बीजरी तरी न पातुरी न पायमालकी;
झरके झरनसी परन पिचकारनकी,
घरनपें धाई धूम आनंद रसालकी,
जेसिंग महीपतके आज दरवार विच,
पावससी भई ऋतु फागन बिसालकी,
घरी घरी घरमें किसोर घनघोर सम,
धुम धूम आई घटा गरद गुलालकी ३

जेष्ठलाल.

(सूम स्वरूप)

सूमने रुपैयो दीनो करमें पसीनो देख,
जेष्ठ कवि किन्हो उपदेश यौं रुपैयातें,
काहे अकुलात आंसुपात कर जारे गात,
है तु प्रिय मोकों मात तात ब्हेन भैयातें,
दाता घर जातो तो कुटातो ना विराम पातो,
आतो परो मेरे हाथ हार मत हैयातें,
जीत रहों जोलों तोलों दारों नां घटाऊ तोय,
मैं जो मर जैहा तो सिखाय जैहों छैयातें १
सुनहो सुजान श्रुति देके हम सत्य कहे,
हारी हें जरूर जेही हमसें बिगारी है,
नांहि न हमारे पास ढाल करवाल छुरी,
बरछी दुनालतें थचन मार भारी है,
कायर कपूत सूम निछजपें जौर नहि,
शूर मर्द दानीनपै हिंमत हमारी है,
कहे कवि जेष्ठ जीय चाहे जापै जीन धरो,
कविके तबल्येमें तुरग स्वर त्यारी है २

गोरे गोरे भुजदंड दीरघ बने हे नैन,
शोभाके सदन सबहीके मन माने हे,
अजब जलेब सुं जलेबदार जेव देन,
द्वारे गज बाज हेम पूरन खजाने हे,
ऐसे सुने नरनाह सुजशकी बाढी चाह,
यातें कवि आसपास आन मंडराने है;
हम मरदाने जान जशको कवित्त पढे,
द्वारे दरबान कहे साहेब जनाने हे. ३

(सूम मनोरथ-सवैया)

पिंगल कोक पुरान पढे, शुभ अच्छर काव्यको दाखनो है,
गुनवान घनो बिन दान खुशी, उर मान नही सत भाखनो है;
निज गांठको खायके गाय रिझावत, ईसकी बातको आखनो है,
कोउ ऐसो कविश्वर आन मिले तो जरूर हमे वह राखनो है. १

(लेखिनी आदि उक्ति.)

कान चढी कलम सान देत कारबारीनकौ,
मान कहो मेरो तो नफो है बहु तेरेसो;
आये यह लोक परलोकको न सध्यो काज,
कहे सब लोक तो तो फोक जग फेरोसो;
चलेगे कुचाल तो पडोगे जमजालमांहि,
कहै जेष्ठलाल ख्याल बाजीगर केरोसो,
पायो अधिकार नां करोगे उपकार और,
कहों अंत वार वार व्है है मुख मेरो सो. १

एरे बागबान मेरे बेन कान दे के सुनो,
तोरे फल पात आन नेकहू निहारों ना;
करके बिवेक नेक टेक न नमेकों देत,
भये एक एकके अनेककुं उखारो ना,
कहे जेष्ठलाल श्रेष्ठ तरुकी संभाल राख,
श्रेष्ट श्रेष्ट व्रछ आल बालतें उखारो ना,
निंदरके मारे लेट रहे कहा मंदिरमें,
पैठे बाग अंदरमें बंदर निकारो ना २

प्रेमल्ल

(प्रेमपंथ-सवैया)

सोच पिहाण सकोच दियारण, मोहवा सिंहवा दाह कुनेहा,
दिदादि प्यास सहंदे महंदे, दुखांणदि खोह पिहाणदा तेहा,
मितवा ध्यान विहगदि पखण, झोला भोटा विरहणदा वेहा,
लाजदि गग अतगदि पारण, प्रेमदा पथ फेदारका पेहा १

टोडरमल्ल.

(विविध प्रयोजन-कवित्त)

नीर विन कूप कहा तेज विन भूप कहा,
लच्छ विन रूप कहा त्रियाको बखानवो,
कायरको खेत कहा कपटीको हेत कहा,
दिल विन दान कहा चित्तमाही आनवो,
तप विन जोग कहा ज्ञान विन मोज कहा,
कहा जो कपूत पूत छुम्यो कुल जानवो,
जिह्वा विन भूख कहा नेन विन नेह कहा,
रामसें विमुख नर पशु सो पिछानवो १

गुन विन चाप जैसें गुरु विन ज्ञान जैसें,
मान विन दान जैसें जल विन सर है,
कठ विन गीत जैसें हेत विन प्रीत जैसें,
वेश्या रस रीत जैसें फूल विन तरु है,
तार विन अत्र जैसें स्याने विन मत्र जैसें,
नर विन नारि जैसें पूत्र विन घर है,
टोडर सुकवि जैसें मनमें विचार देखो,
धर्म विन धन जैसें पंखी विन पर है २

जारकों विचार कहा गणिकाको लाज कहा,
गदहाकों पान कहा आधरेको आरसी,
निगुनीको गुन कहा दान कहा दारदीकों,
सेवा कहा सूमकी अरंडनकीसी डारसी,

मद्यपिको सोच कहा साच कहा लंपटको,
नीचको वचन कहा स्यारकी पुकारसी;
टोडर सुकवि ऐसे हठीतें न टाऱ्यो टरे,
भावें कहों सूधी वात भावें कहों फारसी. ३

(दंडक)

जेहि जेहि सुखित भये तेहि तेहि, कवि टोडर विछुरे जदुपत्ती,
शीतल मंद सुगंध समीर जेहि जेहि, सव अवही अनल भये तत्ती;
जम भये जोन्ह व्याल भये वो॰, तरु भये तीर कुसुम भये कत्ती,
जेहि वन हमहि हरिसंग विहरत,वेहि वन अवहि दहन लग्यो छत्ती. १

ठाकुर.

(विधि दोष-इत्यादि.)

अनघड तेरी वातें कहालों वखानो दई,
मानसमें प्रीति दिन्ही प्रीतमें विछोहतो;
कुरनकों धन दीनौ, सुघरन सौच दिनौ,
एसौ नांह कीनौ, जाकों जैसौ जहा सोहतो
ठाकुर कहत जौपें विधिमें विवेक होतो,
सुरनर मुनि पशु पंछीकैसे मोहतो,
रूपवत मानस जोपें कसकवंत होतो,
होती सोनेमें सुगंध तो सराहवेंको को हतो. १

सामिल होय पीरमें शरीरमें न भेद राखे,
अंतर कपट को उघारे तो उघरि जाय,
एसो साच ठाने तो विनाही जंत्र मंत्र जाने,
सापके जहरकों उतारो तो उतर जाय,
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानी जाय,
हिमतके किये कहो कहा न सुधरि जाय,
चार जने चारहु दिशातें चार कोने गहि,
मेरकों हिलायकें उखारे तो उखरि जाय. २

(कविकी निरंकुशता.)

सुकवि सिपाइ हम उन रजपूतनके,
दानवीर जुद्धतामे नेक नहि मुरके;

जसके करैया हैं मही में महिपालनके,
नेही उनहीके जे सनेही साचे उरके,
ठाकुर कहत हम बरी बेवकुफनके,
जालम जमाइ हैं अदेनिया ससुरके,
चोजनके चोजी रस भोजनके पातशाह,
ठाकुर कहावे हम चाकर चतुरके १

(अदाता-लोभी प्रकृति)

पौरके किंवार देत, घेरे सबे गारि देत,
साधुनको दोष देत, प्रीति ना चहत है,
मागनेको जवाब देत, बात करे रोइ देत,
देत लेत भाज देत, ऐसे निबहत है,
बारनके तो बंद देत, बारनकी गाठ देत,
पर धनीकी काढ़ देत, काममें रहत है,
ऐतेपें सवाई कहै छाला कछु देत नाहीं,
लालाजु तो आठों जाम ऐतहीं रहत है १

दानी कोऊ नाहिं जे गुलाबदानी पीकदानी,
गोददानी धनी शोभा इनहीमें लहै है,
मानत गुनीको गुनहीमें प्रगटत देखो,
यातें गुनीजन मन सावधानी गहै है,
हयदान हेमदान गजदान भूमिदान
सुकवि सुनाए औ पुराननमें कहै है,
अब तो कलमदान जुजु दान जामदान,
खानदान पानदान कहीबेको रहै है २

परी मेरी बीर कत कोनपें कमान जाही,
राजनकी मतिपें न चलत उपावरी,
बन घन छीन भई मनुवा मलीन भयो,
मनसा विकल कल पावत न बावरी,
ठाकुर कहत या जहानमें जरब फैली,
भइ मति मैली कछु जतन बतावरी,
खैबे काजे सोंट राखी कीबे काजे पाप राख्यो,
छीबे काजे अपजश, दीबे काजे लावरी ३

(कविता, कान्ता महत्व.)

अगन बचावै शुभ वचन सुनावै वेद,
भेद मति लावै अरु कठ शुभताई है,
चुके ना चुकावै जीय अनी पर लावै सोइ,
कविता कहावै जामै इती फविताई है;
जानत सुजान जे अजान कहा जानै भेद,
याते कविराजनके राजन वताई है;
कोटि कोटि ग्रथनको अंतर जनावै तुक,
लावै न अनूठा तो लों जूठी कविताई है. १

कोमलता कंजते गुलाबतें सुगंध लैकें,
चंदतें प्रकाश कियो उदित उजेरो है,
रूप रति आननतै चातुरि सुजाननतै,
नीर ले निवाननतै कौतुक निवेरो है;
ठाकुर कहत यो मसाले विधि कारीगर,
रचना निहार जन होत चित चेरो है,
कंचनको रंग ले सवाद ले सुधाको--
वसुधाको सुख लूटकें वनायो मुख तेरो है. २

(पतीता-भाविगति)

अबका समुझावति को समजे, बदनामिको बीज तो बो चुकिरी,
तब तो इतनो न विचार कियो, यह जाल परे कहुं को चुकिरी;
कवि ठाकुर जो रस रीत रंगी, सब भाति पतिव्रत खो चुकिरी,
अरिनेकि बदी हुती जो लिखी भालमें, होनि हती सो तो हो चुकिरी. १

(दोहा.)

अणगटती इच्छा करे, अणदीठी कहै बात;
कहै ठाकुर सुन ठक्करों, एहि मुर्खकी जात. १

नाम रहंदां ठाकरो, नाणां नांहिं रहंत;
कीरति हुंदां कोटडा, पाड्यां नांहिं पडत. २

डुंगरसिंह.

(दुर्मिल प्रसंग)

बिलासी बिधवा सोहाग भाग बुढरीकुं,
जुवान घर जोए नांहि वृद्ध घर तरुनी;

छत्रधर पुत्र नाहि पुत्र बहु रंक घर,
रंक घर रिजक नाहि दोउ दु:ख भरनी,
नागरवेल निष्फल रु तूमरी सुफल फरी,
डुंगरसिंह कहे एक सिंगार रत बरनी,
करमही करे हे के किरतार ना करे हे,
कर्ताहू करे देख कर्मनकी करनी १
सुंदर सुहानी नार कंथ विन सुनी जैसे,
जोगी विन धुनी जैसे पंछी बिन पर है,
दधी विन मच्छ जैसे कूप विन कच्छ जैसे,
मान विन हंस जैसे कमल विन सर है,
दाम विन शाह जैसे मोज विन वाह जैसे,
शीश विन घर जैसे पोचे विन कर ह,
मोती विन ल्हर जैसे, दीप विन घर जैसे,
विना मन केसरी इश्क विन नर है २

(वियोग-दोहा)

सज्जन गये सिकारकु, सिरपर धरे रुमाल,
जाकी हेली हल गई, वाको कोन हवाल १
सज्जन चले सिकारकु, धर घोडे पर जीन,
एसो जो में जानती, चाबुक लेती छीन २

तानसेन *

(खल सज्जन भेद-कवित्त)

गौवनके जाये तेसो, धूरसें ल्पट रहे,
गधियां न गौ होत, गगके नवायेसें,

---

* यह कवि संगीत विद्यामें बहुत निपुण था, जिस्की कहावत लोकोंमे प्रसिद्ध है कि,–

(दोहा) तानसेनके तानमें, सबी टान गुल्तान
आप आपके तानमें, राजा भी मस्तान १

सिंहनके जाये ताकी, ऐरावत आन माने,
शियाल न सिंह होत, मांसके खिवायेसें;
हंसनके जाये वो तो पीवत मधुर पय,
बगले न हस होत पयके पीलायेसें;
कहे मियां तानसेन, सुनो शाह अकव्बर,
नफा नहीं होत खल ऊच पद लायेसें. १
बाजनीके जाये बाज लाज ना लुपाय लेपे,
मुरगीके जाये बाज होत ना सधायेतें;
गौवनके जाये सदा घरसो लपटी रहे,
गधियां न होत गाय गगअ नवायेतें;
हंसनके जाये रहे उनमुख मोती चुंगे,
कगवा न होत हंस मोतीके चुगायेतें;
कहे मियां तानसेन सुनो शाह अकव्बर,
हित नहि होता हे गुलामके वढायेतें. २

(सुर प्रशंसा-दोहा.)

किधौ सूरको सर लग्यो, किधौ सूरकी पीर;
किधौ सूरको पद सुन्यो, तन मन धुनत शरीर. १

तुलसी.*

(श्रीराम बालस्वरूप)

अवधेशके द्वारे सकारे गई, सुत गोदकै भूपति लै निकसे,
अवलोकिहौ सोच विमोचनको, ठगिसी रही जे न ठगे धिकसे;
तुलसी मन रंजन रंजित अंजन, नैन सुखंजन जातकसे,
सजनी ससीमें समसील उभै, नवनील सरोरुहसे विकसे. १
पग नुपुर औ पहुंची कर कंजनी, मंजु बनी मणिमाल हिये,
नवनील कलेवर पीत झॅगा, झलके पुलकै नृप गोद लिये,

*इनके देहान्तके सवत्का दोहा किसी कविने कहा है कि,—
संवत सोलहसै असी, असी गंगकी तीर;
श्रावन शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर. १

अरविन्द सो आनन रूप मरन्द, अनदित लोचन भृग पिये,
मनमें न बस्यो अस बालक जो, तुलसी जगमें फल कौ न जिये २
तनकी दुति स्याम सरोरुह लोचन, कजकि मजुलताई हरै,
अति सुंदर सोहत धूरि भरे, छवि भूरि अनंगको दूरि धरे,
दमकें दतियाँ दुति दामिन ज्यों, किलकैं कल बाल बिनोद करैं,
अवधेसके बालक चारि सदा, तुलसी मन मंदिरमें बिहरैं ३
कबहूं ससि मांगत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारि डरैं,
कबहूं करताल बजाई के नाचत, मातु सबै मन मोद भरैं,
कबहूँ रिसिआई कहैं हठिके, पुनि लेत सोई जेहि लागि अरै,
अवधेसके बालक चारि सदा, तुलसी मन मंदिरमें बिहरै ४
बरदंतकी पंगति कुंद कली, अधराधर पल्लव खोलनकी,
चपला चमकै घन बीच जुगै, छवि मोतिन माल अमोलनकी,
घुघरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर, कुंडल लोल कपोलनकी,
निव छावरि प्राण करै तुलसी, बलि जाऊ ललाइन बोलनकी ५

(सीता स्वयंबर-घनाक्षरी)

छोनीमेके छोनी पति, छाजे तिन्हे छत्रछाया,
छोनी छोनी छाये छिति, आये निमिराजके,
प्रबल प्रचड बरबड बर बेष बपु,
बरबेकी बोलै बैदेही बर काजके,
बोले बंदी बिरद बजाइ बर बाजतऊ,
बाजे बाजे बीर बाहु धुनत समाजके,
तुलसी मुदित मन, पुर नर नारी जे ते,
बार बार हेरे मुख अवध मृगराजके १
सीयके स्वयंबर समाज जहां राजनके,
राजनके राजा महाराजा जान नामको,
पवन पुरदर कृशानु भानु धनदसे,
गुणके निधान रूप धाम सोम कामको,
बाण बलवान यातुधानपति सारिखेसे,
जिन्हके गुमान सदा सालिम सग्रामको,
तहा दशरत्थके समर्थ नाथ तुलसीके,
चपरी चढायो चाप चंद्रमा ललामको २

भले भूप कहत भले भदेस भूपनसों,
लोक लखि बोलिये पुनित रीत मारखी;
जगदंबा जानकी जगतपितु रामभद्र,
जानि जिय जोहो जीन लागे मुँह कारखी;
देखे है अनेक व्याह सुने है पुराण वेद,
बूझे हे सुजान साधु नर नारी पारखी;
ऐसे सम समधी समाजना बिराजमान,
रामसे न वर दुल्ही न सिय सारखी. ३

वाणी विधि गौरी हर शेषहू गणेश कही,
सही भरी लोमस भुसुंडी बहु चारिखो,
चारिदश भुवन निहारी नर नारि सब,
नारदको परदान नारदसो पारिखो,
तिन कही जगमें जगमगत जोरि एक,
दुजीको कहैया औ सुनैया चख चारिखो,
राम रमारमण सुजान हनुमान कही,
सीय सी न तिय न पुरुप राम सारिखो. ४

(सवैया.)

दूलह श्री रघुनाथ बने, दुलहि सिय सुंदर मदिर माही,
गावति गीत सबै मिली सुंदरि, वेद युवायुव विप्र पढाहीं,
रामको रूप निहारति जानकी, कंकणके नगकी परछाही,
याते सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारति नांहीं. १

पंचवटी वर पर्णकुटी तर, बैठे है राम सुभाय सुहाये,
सोह प्रिया प्रिय बंधु लसै, तुलसी सब अंग घने छविछाये,
देखि मृगा मृगनैनी कहै, प्रिय बेनते प्रीतमके मन भाये,
हेम कुरंगके संग शरासन, शायक लै रघुनायक धाये. २

(लंकादहन-धनाक्षरी.)

भूप मंडली प्रचंड चंडीशको दंड खंड्यो,
चंड बाहु दंड जाको ताहीसों कहतु हौ,
कठीन कुठार धार धरिवेको धीरताहि,
वीरता विदित ताकी देखिये चहतु हौं,

तुलसी समाज राज तजि सो बिराजे आज,
गाज्यो मृगराज गजराज ज्यों गहत्रु हौं,
छोनीमें न छांड्यो छप्यो छोनीपको छोना छोटो,
छोनीप छपन बाको बिरद बहत्रु हौं १
जहां तहां बुबुक बिलोकी बुबकारी देत,
जरत निकेत धावो धावो लागि आग रे,
कहां तात मात भ्रात भगिनी भामिनी भाभी,
ढोटा छोटे छोहरा अभागे भोरे भाग रे,
हाथी छोरो घोरा छोरो महीप वृषभ छोरो,
छेरी छोरो सोवैसो जगावो जागि जागि रे,
तुलसी बिलोकी अकुलानी यातुधानी कहैं,
बार बार कह्यो पिय कपिसो न लागि रे २
देखी ज्वाला जाल हाहाकार दशकंघ सुनि,
कह्यो धरो धरो धाये बीर बलवान है,
लिये शूल शैल पास परिघ प्रचड दंड,
भाजन सनीर धीर धरे धनु बान है,
तुलसी समीन सॉज लंक यज्ञकुंड लखि,
यातुधान पुगी फल यव तिल धान है,
श्रुवा सो लंगूल वल मूल प्रतिकूल हवि,
स्वाहा महा हाँकि हाँकि हुनै हनुमान है ३
गाज्यो कपि गाज ज्यौं बिराज्यो ज्वाला वाल्युत,
भाज्यो वीर धीर अकुलाइ उठ्यो रावनो,
धावो धावो धरो सुनि धाये यातुधान धारी,
वारि धारा उलदै जलद ज्यौं नशावनो,
लपट झपट झहराने हहराने वात,
भहराने भट परेऊ प्रबल परावनो,
ढकनि ढकेली पेलि सचिव चले लै ठेलि,
नाथ न चलैगो बल अनल भयावनो ४

(हनुमंत पराक्रम.)

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहु दंड बीर,
धाय जातुधान हनुमान लियो घेरिकै;
महाबल पुंज कुंज रारि ज्यौं गरजि भट,
जहां तहां पटके लंगुर फेरि फेरिकै;
मारे लात तेरे गात भागे जात हाहाखात,
कहै तुलसीस राखि रामकी सों टेरिकै;
ठहर ठहर परे कहरि कहरि उठै,
हहर हहर हर सिद्ध हंसे हेरिकै. १

जाकी बाकी बीरता सुनत सहमत सूर,
जाकी आंच अबहुं लसत लक लाहसी;
सोई हनुमान बलवान बांको बान इत,
जो है जातुधान सेना चले लेत थाहसी,
कंपत अकंपन सुखाय अति काय काय,
कुंभउकरन आइ रह्यौ पाइ आहसी,
देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो,
बीर रघुबीरको समीर सूनु साहसी. २

(रावण परिस्थिति प्रसंग.)

बडो बिकराल बेष देखि सुनी सिंहनाद,
उठ्यो मेघनाथ सविषाद कहै रावनो.
बेगि जीतो मारुत प्रताप मार्तंड कोटि,
कालऊ करालता बडाइ जितो बावनो,
तुलसी सयाने जातु धाने पछिताने कहै,
जाको ऐसो दूत सो साहेब अबै आवनो;
काहे को कुसल रोषै राम बाम देवहूंको,
विषम बलीसों बादि बैरको बढावनो. १

पानी पानी पानी सब रानी अकुलानी कहै,
जाति है परानी गति जानि गज चालिहै,
वसन विसारे मनि भूषन संभारत न,
आनन सुखान कहै क्यौहू कोऊ पालिहै;

तुल्सी मदोवे मींजि हाथ धुनि माथ कहै,
काहूकान कियो न मैं कह्यो केतो कालि है,
बापुरे बिभीषन पुकारि बार बार कह्यो,
बानर बड़ी बलाइ घने घर घालिहै २

(सवैया)

तु रजनीचर नाथ महा, रघुनाथके सेवकको जनमें हौं,
बलवान है श्वान गली अपनी, तोहि लाज न गाल बजावत सौहौं,
बीस भुजा दश सीस हरौं, न डरौं प्रभु आय सु भंगते जौहौं,
खेतमें केहरि ज्यौं गजराज, दलौंदल बालीको बालक तौ हौं १
कौसलराजके काजु हौं आजु, त्रिकूट उपारि लै वारिधि बोरौं,
महाभुज दंड द्वै अंड कटाह, चपेटके चोट चटाक दै फोरौं,
आयसु भंगते जा न डरा, सब मींजि सभासद श्रोनित घोरौं,
बालिको बालक तौ तुलसी, दसहू मुखके रनमें रद तोरौं २
रजनीचर मत्तगयंद घटा, बिघटै मृगराजके साज लरै,
झपटै झट कोटि मही पटके, गरजै रघुबीरकी सौंह करै,
तुल्सी उत हाक दसानन देत, अचेत भे बीरको धीर धरै,
बिरुझो रन मारुतको बिरु देत जो, काल्हु कालसो बूझि परै ३

(गई सो गई)

काल भयो कलिकाल कराल, बेहाल सबे सुखहाल नहिं को,
काम तो बाम नचावत है, पकि आवत जात मोकाम महिंको,
जानि सदा छिनभग शरीर, भजो रघुबीरहिं मान कहीको,
धोखेहिमें वय बीतत है, जो गई सो गई अब राख रहीको १
रावनके सम बावन वीर, रह्यो न गयो सो भयो कहे नीको,
शेष सुरेश महेश गणेश, सबै चलि जाइ तो ओर रहीको,
काल करालके आननमें सब, जाय ध्रुवे अरु खाय अमीको,
चेतके हेत करो हरिसें, जो गई सो गई अब राख रहीको २
देहिक दैविक भौतिक पाप, सबै करि दाप नचावत हीको,
जन्म अनेकमें सचित भुरि, मनो वच कर्मज पाप सहीको,
भाग्य सजोग लह्यो नर देह, भज्यो सुत गेह कह्यो नहि नीको,
होवेहु प्रेत अजौ कछु चेत, गई सो गई अब राख रहीको ३

पुत्र कलत्र सुमित्र चरित्र, धरा धन धाम हे बंधन जीको,
बारहि बार विषै फल खात, अघात न जात सुधारस फीको;
आनहु मान तजो अभिमान, कही सुनि कान भजो सिय पीयको,
यो तन हीरसो हाथसों जात, गई सो गई अब राख रहीको. ४

(कवि विनय.)

आगम वेद पुरान बखानत, कोटिक मारग जाहि न जाने,
जे मुनि ते पुनि आपही आपको, ईस कहावत सिद्ध सयाने,
धर्म सबै कलिकाल ग्रसे, जप जोग विराग लै जीव पराने,
को करि सोच मरे तुलसी, हम जानकिनाथके हाथ बिकाने. १

कस करी बृज बासिनपै, कर तृति कुभांति चली न चलाई,
पडुके पूत सपूत कपूत, सुजोधन भो कलि छोटो छलाई,
कान्ह कृपाल बडेनत पाल, गये खल खेचर खीसखलाइ,
ठीक प्रतीति कहे तुलसी, जग होइ भलेको भलोई भलाई. २

अवनीस अनेक भये अवनी, जिनके डरते सुर सोच सुखाही,
मानव दानव देव सतावन, रावन घाटि रच्यो जगमाहीं;
ते मिलये धरि धूरि सुजोधन, जे चलते बहु छत्रकी छाही,
वेद पुरान कहे जग जान, गुमान गोविंदहीं भावत नाही. ३

(कवित्त.)

जीनको पुनित वारी, शिर शिव हे पुरारी,
त्रिपथगामिनी अस वेद कहे गाइकै;
जिनको योगिंद्र मुनीवृंद देव देह धरि.
करत विविध योग जप मन लाइके;
तुलसी जिनकी धूरि परसि अहल्या तरी,
गौतम सिधारे ग्रह गौनेसी लिवाइकै,
तेई पॉय पाइकै चढाय नाव धोये विनु,
खैहौ न पठावनी कहै हो न हँसाइके. १

(दशावतार-छप्पय)

जय जय मीन वराह, कमठ नरहरि श्रीवामन,
परसुराम श्रीराम, कृष्ण जनहीत खलदामन,
जगन्नाथ कल्की, नमामि दश विधि वपु धारन,
अमित रूप अगणित, चरित्र कृत नाम उदारन;

सुर रजन सज्जन सुखद, सियानाथ अरि जापना,
कृपा करहु श्रीरामचंद्र, मम हरहु शोक सतापना १
बधि ताडिका सुबाहु, विप्र मख रक्षक रघुपति,
मोचित वाहन शाप भक्त वरदायक शुभ गति,
प्रण विदेहको राखि, राम खंड्यो धनु शंकर,
दीन्ह शरासन बाण, जानि रामहि सुपरसधर,
सिय विवाही गयने अवधें, छूटे जनक कल्पापना,
कृपा करहु श्रीरामचद्र, मम हरहु शोक सतापना २

(रामायण माहात्म्य)

रामचरित सत कोटि, शेष शारद शिव भाखे,
नारद शुक सनकादि, वेद कहि वीचीहि राखे,
वीचिहि राखे चरित, पार कहि पावत नाहिन,
कहि कहि हारे सकल, राम यश कहत सिराहिन,
नहिं सिराही रघुवीर गुण, सो तुलसी मनमे टरत,
भजन भाव वेदन कहा, कहे चरित भवनिधि तरत १
रामचरित अवगाह, सिधु कोइ पार न पावा,
शेष सारदा निगम, नेति कहि निज मुख गावा,
शम्भु उमासन भरद्वाज, सो याज्ञवल्क मुनि,
कागभुसंडीसो गरुड, मानसिक कहि तुलसी गुनि,
कहें सुने रति रामपद, एक राज मति आपना,
कृपा करहु श्रीरामचद्र, मम हरहु शोक सतापना २

(दोहा)

(सीता-राम वर्णमहिमा)

सी कहतें सुख ऊपजे, ता कहतें तम नास,
तुलसी सीताजी कहत, राम न छाडत पास १
मथुरा शब्द अनूप है, दो अक्षर लखि लेत,
जा मुख थत न आघ नहि, ता मुख वचलो देत २
तुलसी अघ सब दूर गे, रा अक्षरके लेत,
फिर नेटे आवत नहि, म अक्षर पद देत ३

(तीर्थश्रेय-महिमा)

चित्रकूट सम कोट नहिं, अवध धामसें धाम,
सुदर बनसें मन नहिं, राम नामसें नाम १

वृंदावनसें वन नहिं, नंदगामसें गाम;
वंसीवटसें वट नहिं, कृष्ण नामसें नाम. २
क्षमा विमल वाणारसी, सुर अपगा सम भक्ति,
ज्ञान विश्वेश्वर अति विपद, लसत दया सह शक्ति. ३

(विविध अंक संज्ञा विचार इ.)

मान राखिवो मांगिवो, पियसों सहज सनेह,
तुलसी तीनों तव फवे, जव चातक मत लेह. १
तूटहि निज रुचि काज करि, रूठहि काज विगारि;
तीय तनय सेवक सखा, मनके कंटक चारि. २
शिष्य सखा सेवक सचिव, सुतिया शिखवन साच;
सुनि करिये पुनि परिहरिय, पर मनरजन पाच. ३
तुलसी या संसारमें, पंच रत्न हे सार,
साधु मिलन अरु हरिभजन, दया दीन उपकार. ४
सदा भजन गुरु साधु द्विज, जीवदया सम जान;
सुखद सुनै रत सत्यव्रत, स्वर्ग सप्त सोपान. ५
मंत्र तंत्र तत्रि त्रिया, पुरुष अश्व धन पाठ;
प्रति गुण योग वियोगतें, तुरत जाहिं ये आठ. ६
चारा[1] चौदह[2] अष्टदश,[3] रस समुझव भरिपूर;
नाम भेद समुझे विना, सकल समुझमह धूर. ७
राम सनेही रामगति, रामचरण रति जाहि;
तुलसी फल जग जन्मको, दियो विधाता ताहि. ८

तेही.

(अनन्य भक्ति.)

कोऊ कहै पिता और कोऊ कहै सुत,
कोउ कहै नना व (वातन) तीनों ताप तयो है;
प्रभु कोऊ कहै जन कोऊ कहै मोल लयो,
तुम अव कहौ मोहि काहि काहि दयो है;
तेही भनै जित तित चालि चालि होड रही,
सुख नहिं कहूं वह हाथ गेंद भयो है;

---

१ चार वेद २ चौद विद्या. ३ अठरा पुरान.

कियोहू तिहारो अरु पाळेहू तिहारोही हौं,
नीचके लोगनि इन नांटो नाटि लियो है ७

तोष (पहिला.)

(इश अनुग्रह–इत्यादि)

तेरी कृपा विधि वेद बनाइ, सबै जगकी रचनाहि बनावत,
राजसभा विच नैननिमैं, अति तेरिह चातुरता छवि छावत,
तेरि कृपा कहि तोष तिहू, पुर नाग नरौ सुर उकि सुनावत,
तेरि कृपातें गिरा जननी, निज मैं पदवी कविराजकी पावत १
राज तज्यौ सुखसाज तज्यौ, पितु मातु तज्यौ हठि मो सग दीनो,
कानन आइ बनाइ निऊे, दुख रासि सबै सुख एक न चीनो,
सीय तज्यौ कहि तोष तुम्है, तजि मोहि करो जिनि भाग विहिनो,
पूरि हरि करुना सो तिहुपर, जो करुना करुनामय कीनो २
मद मोह महा ममता तजिके, श्रुति संस्मृति संत कहा करु तूं,
तजि पातककों परपच सबै, पग पुन्यहिके पथमें धरु तू,
कहि तोष उम्है सिर जो जिनही, जितको जश श्रौननिमें भरु तू,
डरु तूं भवसागरके गुनते, गुनसागरके गुनमैं परु तूं ३
जगमें लघु जीवन जानिय जू, श्रुति सत कह्यौ चितमै धारिये,
अपनो हित आपनो पुन्य गनी, रिपु पातकके न कदा परिये,
लखि मानुप दुर्लभ देह महा, सो इहां भवसागरको तरिये,
सुनि तोप बिनै मन वाच रु काय, सदा पर कारजको करिये ४
गुनकै हरिको गुनगान सबै, अरु ध्यानहिको महरा करु रे,
पतवार गह्यो जपमालहिकी, कवि तोप कहै मनमें धरु रे,
चढि जापर सत तरे सिगरे, कछु तापर नेकु नहि डरु रे,
गुरुकी शिखको तरनी करिकै, भवसागरकी तरु रे तरु रे ५
आनके प्रान सुखी विन ज्यों न तो, क्यों न जहान परो जस लीजै,
वेद कही कवि तोप कह, पर स्वारथको धर पुन्य न छीजै,
मो चख चारु चकोरनिको, छवि आनन चदको देखन दीजै,
आसिख देत लट्ट मन है, अब मोहि भट्ट तुम जीवन दीजै ६

श्रीहरिकी छवि देखिवेको, अखियां प्रति रोमनिमें करि देतो,
बैननके सुनिवे कहं श्रोन, जिते तितशो करितो करिहेतो,
मो ढिग छोडि न काम कछू, कहि तोष यहे लिखि तो विधि येतो.
तौ करतार इती करनी, करिके कलिमें कलकीरति लेतो ७

(गोपिका प्रेमभक्ति.)

कान्हरकी छवि देखिवेको, यह गोपकुमारि महा छवि छाई,
सीस धरे मटुकी लट छूटि, वृंजे दधि वेचनके मिसि आई;
नंदलल्लाको लख्यो कहि तोष, हिये उनमाद दसा अधिकाई.
भूलि गयो दधि नामसो वागहि, लेहु रे लेहु रे माइ कन्हाई. १
तो तनमें रविकी प्रतिबिंब, परे किरिनै सो घनी सरसाती,
भीतरहूं रहि जात नहि, अखियां चकचौंध है जाति है राती
बैठि रहो बलि कोठरिमें, कहि तोष करों बिनती बहुभाती,
सारसी नैन लै आरसि सों, अंग काम कहा कटि धाममें जाती. २
पतिते न करे तन बाहिर औ, जिमि जाहिर स्रम करै न धनै,
गुन सील सुभाव सनेह पतिव्रत, वारिधिको भयो मीन मनै.
कवि तोष कोऊ न कवि: बरते गुनि, हारकि देहरी ना गमनै,
निज नैननिसें जति नंदकिसोरहि, औरहि चौथिको चंद गनै ३
भाग विरंचि बनाइ रचे, अनुरागसों कंत सोहागिनि कीनी,
तोष दियो गुन गौरि गरूरानि, दीन्हि गिरै सिगरी परवीनी.
सुंदरता अति मैन दियो अरु, दीन्हि मनो सुरधेनु सधीनी,
प्रीतमके पग प्रीतिकी रीति, सप्रीति सिखाइ सिये जनु दीनी. ४
रघुनाथ कह्यो हसिके अनुजे, तुमही घननादको लेउ जियो,
सरबंग सुरंग भयो जनु ईंगुर, कंचनको गिरि रंग दियो,
फरके अधरा खरके सर तून, सरासन तोष टकोर कियो,
तजि आसन वीरको वा छन लच्छन, सासन संग सलाम कियो. ५
दौरिहौ देखि दुरेहि न काल, मरोरि हौ मीचुको पंक लतासी,
तोरि हौ तोष सबै सुर आजु, कढोलि हौ रावनै लंकविलासी.
तै तो विदेह न जानै कछु, रघुवंसिनकी कलकीरति खासी,
बोरिहौ सैलनको लै समुद्रमै, तोरिहौ या धनुही तिनुकासी. ६

डारि दियौ गिरि ते निरदै, अरु मंथनकै बहुधा बिधि मार्यो,
कोपि कह्यो कब रे सठ तुं, कित है जेहि तुं बहु बार पुकार्यो,
श्रीप्रहलाद कह्यो कहि तोष, सो है बहि सबहिम रस धार्यो,
दासको त्रास हर्यो नरकेहरि, है हिरनाकुसको उर फार्यो ७
कुल्के डरसों परलोकसों लोकसों, हौं न डरी व डरी सो डरी,
कहि तोष वे हैं मनमोहनसो, वह मो मन मूढ ढरी सो ढरी,
मुहि देखि जरी सो जरी जगमै, ओ मरी सो मरी औ लरी सो लरी,
करि कौल करार टरौं न कबौं, करि कौल्करार टरी सो टरी ८
जाहि जँही चितकै हितकै, कहि तोष तेही तेहि लागत प्यारे,
मीन जियै जल्माहि सदाहि, मरै छनमाहि पयोनिधि डारे,
जीवनको तनको धनको, डर लाजहूको हरि हेत बिसारे,
कामरिवारे अहीरके ऊपर, वारौं हजारन पावरिवारे ९

(बंसी महिमा)

जितही तित धूमत हो विसुसो, बसुरी सुर श्रौननिमैं भरिगो,
बढही अखियाके कटाछ्छके बाननि, प्राननि साननिमैं धरिगो,
हरि गोहियगे कहि तोष अबै, कछु चेटकसो करिकै टरिगो,
वह छोहरो छैल छबिलो छली, छिनमैं वृज छोहरियो छरिगो १
कौन कहै नर नारि निकी, सुनि चेत रहै न सुरी असुरीमै,
चैन गवावति बैन न आवति, मैनके बान गडै पसुरीमै,
ज्यौं जल मीन बिना तलफै, स्वर बेधि उठै न सुरी न सुरीमै,
मारन मोहन चाट उच्चाट, बसीकर मत्र बसे बसुरीमै २

(नायकाभेद-सवैया)

प्रीतमके सुखसों सुख औ, दुखसों दुख सो सुकिया जिय जानी,
जो परनायक सो रति मानति, ता तियको परकीय बखानी
औ धनदायक सो जो रम, कहि तोष तिन्है गनिका पहिचानी,
लच्छन जानि यही क्रमतें, पुनि लक्ष्य अनेक प्रकार बखानी १
भृकुटी दग नाक कपोल नचाइ, कहै बतियां हरि डीठि दई,
छतिया दरसावति है कहि तोप, हिये सरसावति मैनमई,
रसमै रस देति महेत सबै, हितसों चित प्रीतकी प्रीति दई,
बिभिचारिनको परकीय तिया, यहि लोकहिमैं परलोक भई २

सबके दिसि हेरति है हरिके, हित तीछन ईछ चलावति है,
केहि भांति मिलावति दीटि सों दीठि, सखीनिकी दीठि बचावति है,
बूझत भेद हितूनक तोप, सरोप तिन्है बहरावति है,
जिमि चोर चोरावत है तबहीं, पुनि बूझे मरे न बतावति है. ३

(स्त्रीभूषण-दोहा.)

सुंदरता अरु सुघरता, सील सनेह सुभाव,
नैबो तियको जानिबो, यह माधुर्य बनाव. १
औदारिज माधुर्य पुनि, प्रगल्भताहि विचारि;
पुनि धीरत्व बखानिये. तियके भूषन चारि. २
बूडे प्रेम समुद्रमें, पार न पावत सोइ;
तन धन जोवन लाजकी, सुधि बुधि ताहि न होइ. ३

(निर्मल भक्ति-कवित्त.)

छापा मुद्रा लावै कि चढावै तनमें विभूति,
कहे कवि तोष संत भेखऊ बनावै तूं;
ओढि मृगछाला जपमाला लै करन केती,
जटाको बढावै कितनी लह घोटावै तूं;
बातन बैठाओ तीरथन ध्यावै नगे,
पाइ जाइ गिरि दरौ समाधि लगावै तूं;
रामको न भावै केती कलाको देखावै जौन,
प्रेम उमगावै करि सरल सुभावै तूं १
धूम धौरहरसो बादरकी छाहहि सो,
ग्रीपमको लहरसो मृगपास आसासो,
लागत अमूलसो गंजीफाको गुल्लासो,
नीरके बल्लासो सोछरको बनासा सो;
कहै कवि तोष भजु ताहिकी बनाथो जिन,
मायामें न भूलु है सरापही बासासो,
गोरखकी लेखनासो सपनेको देखनासो,
पेखनेको पेभनासो जगत तमासासो. २
संत श्रुति संमत पुरान ज्ञान मान नर,
निंदत है ताहि अरु देत सबै दोसो है;

किन्हो सव अंगीकृत आपने उधार हित,
अधम कृपामें चित दीनो फिन मोसो है,
गीध ब्याध गनिका अजामिल उधार्यो नाथ,
पूरी परतीति ना विरदपाल तोसो है,
तातें यह मति अति तोप मन मान्यो मोहि,
अधम उधारन ये नामको भरोसो है ३
गीध ब्याध गनिका अजामिल सुपच ग्राह,
औरऊ अनेक अव कौनिको गनाइ है,
कहै कवि तोप उन कीनो कव जप तप,
जोग अरु रावरेकी भगति वनाइ है,
अधम उधारन विरदको निवाहे वनै,
धरनि धरि जो सो धरैही वनि आइ है,
मेरे गुन औगुनको अक जो लिखौगे तो,
सुजश मयकमें कलक लगि जाइ है ४

(शृगार सौंदय)

वैठनि उठनि चित चलनि चितौनि चारु,
रहनि गहनि गति मति अति औजकी,
वीनकी बजावनि सुरस गीत गावनि ज्यौ,
जोवनकी आवनि सोहावनि सो मोजकी,
कहै कवि तोप सुर नर नागमे न ऐसी,
भई वृपभानकी निपट थोरे रोचकी,
सव सुखदायक सुशील वडे कीमतीकी,
भई है तलीम तल्वेलि यो मनोजकी १
कचनकी वेलीसी सहेली मिली आसपास,
केलिके अवास सुने वतियाँ तरंगकी,
भूपन कनक घुघुरूनकी धनक, रति-
कुंजकी भनक वढ लालमा प्रसगकी,
येकै कहै सुने वडी येकै रसनाको धरे,
येकै कानासानी करै जीवन उमंगकी,
ज्यौं ज्यौं रतिमंदिरमें माचै रतिरंग तोप,
त्यौं त्यौं या नचाइ नाचै नायिका अनगकी २

जाहि हित हानि आनि कहा हम लीनी मानि,
छोडै कुलकानि ह्वै है हांसी जग जोनिमै;
दैहुं जब ज्वाब तब तैहुं मानि लैहै आली,
जानति हौ मैहुं चतुराई सब औनिमै;
कहै कवि तोष तेरे पाइकी दोहाई खाउं,
कहां सति भाइ सो करौ उपाइ कौनि मै;
लाज हरि जाति गृहकाज ऊ बिसरि जात,
गाज परि जात बृजराजकी चितौनिमै. ३

जडित जराऊ जन भूषननि भूषितन,
दूषनसो लगे ताते दूरिही करति है;
कवित प्रसंग औ संगीत राग रंग आदि,
सुनि सुनि गुननिकै हियरे भरति है;
कहै कवि तोष तासों मोहै मनमोहन जू,
ता ते सब सोतै ताकी डरनि डरति है;
रूप मदमाती गुनमाती पतिप्रेममाती,
सूधे प्रानप्यारी मग पाय ना धरति है. ४

मैन कोम लीग दीनी रति ना रतीक कीनी,
तिनसी तिलोतमाकी लगाति निकाई है,
धोखासी लगति मंजुघोषा ढिग मेरे तोष,
चाउरी घृताचीकीन देख्यौ चारुताई है;
चंद्रमा कलंकी कंज कंटको निपटि कहा,
कुंदनकी कठिन अति दुति पीत पाई है,
मेरी छबि ताकी सखी छबितान पावै छबि,
कबिता बखानै सो तो फबिता झुठाई है ५

तोष (दुसरा.)

(वीर, शृंगार-कवित्त.)

शक्र जो न मांगी लेतो कुंडल कवच पुनि,
चक्र जो न लीलती धरनि रथ धारतो,

कुन्ती जो न शरन समेटि लेती द्विजराज,
शाप जो न होतो शल्य सारथी निबाहतो,
तोपनिधि जोपे प्रभु पीतपटवारो भनि,
सारथीपनेको कछु कारज न सारतो,
तौ तौ धीर करन प्रतापी रविनंदन सु,
पांडुसुत सेनाको चबेना करि डारतो १

जुद्धम अपार भार रथी महारथी वीर,
मारिके गिराउ कपि धुजहीं हराउ में,
जोपे सुत सतनुको तौ न रन पीठ देहु,
इतनो न करों गगाजननी ब्जाउ में,
तोपनिधि शिर न झुकाउ सब सेनै आजु,
पाहवन पुहुमी न मुख दिखराउ में,
धनुष वहाउं धर्म्र कुरु न कहाउं जोपे,
हरिको न सजुगमें शस्त्र पकराउं में २

देखे अरुनाइ करुनाइ ज्यो खजनको,
मृगन गुमान तजि ब्याज गहिबे परी,
तोपनिधि कहे अलि छौननहु दीनताई,
मीनन अधीन ह्वैके हारि सहिबे परी,
चरचा चकोरनकी कोरि डारि कोरनसों,
कविन कवीशता गरीबी गहिबे परी,
आई वीर चचलाई राधिकाके नेननमें,
खासे खजरीटन खरामी सहिबे परी ३

(काव्यप्रसाद सवैया)

भूषण भूषित दूषणहीन, प्रबीण महा रसमें छबि छाई,
पूरि अनेक पदारथतें, जिहिमें परमारथ स्वारथ पाई,
औ उकतें युकतेंउ रही, कवि तोप अनोप भरी चतुराई,
होति सबे सुखकी जनिता, बनि आवत यो बनिता कविताई १

त्रिकम.

१

(गुण महत्व.)

चंदा बिन रेनी मृगानेनी दृग काजल बिन,
कविता बिन कहेनी जो नगीना बिन सूना हे;
दान बिन दाता जोगी जन ज्ञान ध्यान बिन,
मान बिन परोना जो पान बिन चूना है;
जल बिन सरवर जो राव बिन नरवर,
केखु बिन गरवर त्यों पेशु बिन पूना हे;
त्रिकम प्रकाश करे अम्बखास दीप बिन,
रज बिन रजपूत अन्न ज्यों अलूना हे. १

(दोहा.)

कहता हे करता बि हे, तलका त्रीजा भाग;
कहता नहि करता नहिं, वाका बडा अभाग. १
पारसके परतापसें, सोना भइ तरवार,
त्रिकम तीनो ना मिटे, मार धार आकार. २
संतरूप सोनार कर, धरो प्रेमको खार;
त्रिकम तब तीनो मिटे, मार धार आकार. ३
बेरीके मन वसत हे, घटहीमें वाडि घात;
सज्जन रहिये शत्रुतें, सावधान दिन रात. ४
दुश्मन दावादार सो, करहि कदापी हेत;
शत्रु सज्जन होत नहि, चलनां प्यारे चेत. ५
मधुर वचन मुख वोलहिं, भीतर विष भरपूर;
दाव परे तो पलकमें, लेवे जीव जरूर. ६
वेठहि मीठा वोलके, प्यार करी जू पास;
मित्र कवू मत कीजियो, वेरीको विश्वास. ७

दयाराम

(सृष्टिकी विचित्रता)

कहु कहु पथ्थरमें हीरनकी खान होत,
कहु कहु सागरमें मोतीनका वासा है,
कहु कहु धरणीपर मेवा मिष्टान्न होत,
कहु कहु धरणीपें उगत न घासा है;
कहु कहु पकनकुं भोजन अनेक होत,
कहुं कहु पकनकुं चिवनेका मामा है,
कहत है दयाराम घन तेरी साहेबीकु,
आप सृष्टि न्यायके देखत तमाशा है १

हाथीके दातनके खिलौना बने भाति भाति,
बाघनकी खाल तपी शिर मन भाई है,
मृगनकी खालनको ओढत है योगी यती,
छेलिनकी खाल थोग पानी भर लाई है,
सावरकी खालनको चाहत सिपाही लोग,
गेंडनकी खाल राना रायन सुहाई है,
कहै कवि दयाराम रामके भजन बिन,
मानसकी खाल कछु काम नहि आई है २

(व्रजभाषा महिमा-दोहा)

श्लोक पुरानी संस्कृत, वाचत सब इतराय,
कुल्य सुकवि गिरवान जब, श्रोता है समुजाय १

बुध कहि भाखा वाद जो, सुरवानी इक सांच,
तो हम कहि ये मूर्ख है, साच न लावे आच २

वेद बड गिरवानतें, नारायनकी बानि,
व्रजभाषा भल ताहितें, व्रजपति भाखि मुख जानि ३

दादु.

दादु अमृत नाम है, आतमतत पोखे,
सहजे सहज समाधिमा, धरणीजल सोखे १

पंचोका मुल मूख हे, मुखका मनवा होइ,
यहु मन राखे जतन करि, साध कहावे सोइ. २

बहुरूपी मन तव लगे, जब लग मायारंग,
जब मन लाग्या रामसुं, तव दादूके अंग. ३

दादु मन पगुल भया, सब गुण गया विलाइ,
हे काया नवजोवनी, मन बूढा हो जाइ. ४

अपने कसव कर लिये, मन इद्रिय निज ठोर,
नाम निरंजन लागि रहुं, प्राणी परहरि ओर. ५

सव काहूके होत हे, तन मन पसरे जाय;
एसा कोई एक हे, उलटामांहि समाय. ६

मनहीं मजन कीजिये, दादू दर्पन देह;
मांही मूरती देखिये, इहि औसर करि लेह. ७

ध्यान धरे क्या होत हे, जो मनमेल न जाय;
ध्यान धारि बक मीन जिम, पशू विचारे खाय. ८

जिस्का दर्पण ऊजला, (सो) दर्शन देखे मांहि;
जीस्की मेली आरसी, सो मुख देखे नाहि. ९

दादू जीवे पलकमें, मरतां कल्प बिहाइ,
निश्चे यहु मन मस्करा, जिन कोई पति आइ. १०

निश्चय करते जुग गये, चंचल तवहीं होय,
दादू पसरे पलकमें, यहु मन मारे मोय. ११

यहु मन पंगुल पच दिन. सब काहूका होय;
दादू उतरि अकाशतै, धरती आया सोय. १२

दादू मन मरतक भया, इद्रिय अपने हाथ,
तोभी कदी न कीजिये, कनक कामिनी साथ. १३

शब्द अनाहद हम सुन्या, नख शिख सकल शरीर,
सब घट हरि हरि होत हे, सहजेंही मन थीर. १४

शून्य मंडलमें थिर किया, गरजै शब्द रसाल;
रोम रोम दीपक भया, प्रगटे दीनदयाल. १५

खोजि तहा पिय पाइये, शब्द ऊपने पास,
तहां एक एकांत हे, जहां जाति परकाश. १६

काया अतर पाइया, त्रिकुटी फेरे तीर,
सहजे आप उखाड़्या, ध्याप्या सफल शरीर १७
जहा राम तहां मन गया, मन व्हाते ना जाय,
जहां नेन तहां आतमा, दादू सहज समाय. १८
जे पहेले सद्गुरु कह्या, नेमहु देख्या आइ,
अरसपरस उन एकमें, दादू रह्या समाइ १९
मन पवना जब बस भया, ध्यैन भया जब नाद,
अल्ख पुरुष जब मिल गया, दुबधा मिटी उपाध २०
खोजि कपाट देखें जहा, अचरज तहा अनूप,
आतमतत्त्वज जागतें, देखे अल्ख स्वरूप २१
उनमुनि ध्यागी सुनेंम, निशदिन हे गुल्तान,
तन मनकी जब शुद्ध गई, पाया पद निरवान २२
दादू दारु तो कहों, जो इक ठोरे पीर,
रोम रोम भेद साचरी, ध्यापी सकल शरीर २३
आठ पहरका रोखनां, घडी पल्कका नांहि,
रोते रोते मिल गया, दादु साहेब मांहि २४
हसा सो ज्ञानी खरा, राखे अतर एक,
विखसें अमृत काड ले, दादू बडा विवेक २५

दीहल.

(सूमकथम-सवैया)

दीहल दूर करो घरकी अरु, आवन जान करो इक नाले,
चावल दाल कहे मत रांध तुं, शाक सदाहित राय उवाले,
सूमको पूत कहे सुन कामिनी, सोय रहुं घरमें अंधियारे,
जो जग जीवनो चाहे कितोक तो, दरेके नाम दियो मति चाले १

(गर्भधारका कोल)

दश मास रहो जब गर्भ महा, तवहीं प्रभुसें तुम कोल किया,
हरि माहिर है तब भाक्ति करूं, इहि कारन तोहि निकाल दिया,
इत आय सबे अब भूलि गये, तिहि कारन लोग भये दुखिया,
कवि दीहल चेति सदा मनमें, भज राम सिया जिन जन्म दिया १

दीनानाथ.

(प्रार्थना और कर्म.)

जाही हाथ धनुषको चढायो है सीतापति,
जाही हाथ रावण संहारे लंक जारी है,
जाही हाथ तोर औ उवारे हाथ हाथी गहि,
जाही हाथ सिंधु मथी लच्छमी निकारी है,
जाही हाथ गिरिधर उठाय गिरिधारी भये,
जाही हाथ नंदकाज नाथे नाग कारी है;
हौं तो अनाथ जोरि हाथ कहौं दीनानाथ,
वाही हाथ मेरो हाथ गहिवेकी वारी है. १

घर घनश्याम कहो आंगन अनंत कहो,
द्वारमें दामोदरके दास होय रहु रे,
टाढे होत ठाकुर वेठत विश्वंभर कहो,
चालत चतुर्भुजके चर्ण चारु गहु रे;
पथमें पुरुषोत्तम वासुदेवकों विदेश,
नदी नारसिंह कहो पाप सब दहु रे,
दिन कहो दीनानाथ रात कहो राधाकृष्ण,
आठो याम सीताराम सीताराम कहुं रे. २

जानत हौं ज्योतिष पुराण और वैद्यकको.
जोरि जोरि अक्षर कवित्तनकों उचरौं;
वैठि जानौ सभामाझ राजाको रिझाइ जानौ,
अस्त्र वाधि खेतमांझ शत्रुनसों हौलरौं,
राग धरि गाऊं औ कुदाऊ घोरे वाग धरि,
कूपताल वावरी नेवारनमें हौतहौ,
दीनबन्धु दीनानाथ एते गुण लिये फिरौ,
करम न यारी देत ताको मैं कहा करौ ३

दीनदरवेश.

(कर्तव्य, व्यवहार-कुंडलिया.)

बंदा वोत न फूलिये, खुदा खमदा नाहि,
जोर जुलम नां कीजिये, मृत्युलोकके मांहि,

मृत्युलोकके माहि, तुजरयो तुर्त दिखावे,
जेता करै गुमान, सोहि नर खचा खावे,
कहे दीनदरवेश, मूल मत गाफिल गदा,
खुदा समंदा नाहि, योत मत फूले बंदा १
राजा रारण मर गये, कट गये कुंभकरन,
इंद्रजीत वी उठ गये, हरणाकेश हरंन,
हरणाकेश हरन, भाण सरसा वीछाया,
एसे कोटि अनंत, सवी राक्षस सीघाया,
कहे दीनदरवेश, प्रगट तुम देखो परखा,
मानवि केतिक मान, रहा नहि रावण सरखा २
गडे नगारे कूचके, छिनभर छाना नाहि,
को आज को काल को, पाव पल्कके माहि,
पाव पल्कके माहि, समज ले मनवा मेरा,
धरा रहे धन माल, होयगा जगल डेरा,
कहे दीनदरवेश, गर्व मत कर गुमारे,
छिनमर छाना नाहि, कूचके गडे नगारे ३
बदा बाजी झूठ हे, मत साची कर मान,
कहां बीरबल गग हे, कहां अकबरखान,
कहां अकबरखान, बडुकी रहे बडाई,
फतेसिंग महाराज, देख उठ चल गये भाई,
कहे दीनदरवेश, समर पेदाहि करदा,
मत साची कर मान, झूठ हे बाजी बदा ४
रुपैया तोहि रग हे, जगत भगत वश कीन,
सचा तुजकू तो कहु, जो वश कर ले दीन,
जो बश कर ले दीन, दाम कछु दिन पल्टावे,
धन्य ताहि अवधूत, झपटमें कबू न आवै,
कहे दीनदरवेश, दीन क्यूं नहीं तपैया,
जगत भगत वश कीन, रंग है तोहि रुपैया ५

राम रुपैया रोक हे, खर्च्या खूटत नाहि,
साहेब सरखा शेठिया, वसे नगरके मांहि,
वसे नगरके माहि, हुंडियां फिरे न कच्ची,
ओर साख सब जूठ, साख सत्गुरुकी सच्ची,
कहे दीनदरवेश, त्याग वेराग रखैया,
खर्च्या खूटत नांहि, रोक हे राम रुपैया. ६

हिंदु कहे सो हम बडे, मुसल्मान कहे हंम,
एक मुगकी दो फाड हे, कुण जादा कुण कंम,
कुण जादा कुण कंम, कबी करना नहि कजिया,
एक भगत हो राम, दूजो रेमानसें रजिया,
कहे दीनदरवेश, दोय सरिता मिल सिंधू,
सबदा साहेब एक, एक मुसल्मान हिंदू. ७

दाता नहि शूरा नहीं, नहि धरम नहि नेम,
सो आया संसारमें, जाण जनावर जेम,
जाने जनावर जेम, करी नहि सुकृत करणी,
जाण्या नहि जगदीश, भार मारी व्हे जननी;
कहे दीनदरवेश, जीवता अवगत जाता,
नहीं धरम नहि नेम, नहीं शूरा नहि दाता. ८

डबियां राखो दंतकी, माहि भरो तपकीर,
एक चपट भर सुंघिये, मिटे मगजकी पीर,
मिटे मगजकी पीर, नेनमें निंद न आवे,
काम दाम हुशियार, अंगही आल्स जावे,
कहे दीनदरवेश, रेन ओर दिनही जांखो,
माहि भरो तपकीर, डबियां दंतकी राखो. ९

छारू जयसी छीकणी, ताका व्यसनी बोत,
एक चपटभर सुघिये, (पण) देवत आवे मोत,
देवत आवे मोत, डबीयां गोद छुपावे,
बेइमान हो जाय, जूठ सोगन बहु खावे,

कहे दीनदरवेश, आपसें अकल विचारू,
ताका व्यसनी चोत, छीकणी जयसी धारू १०
होका राखे हाथमें, तवाकुके चोर,
गूल पराये दुन्ते, ठाठी रखते ठोर,
ठाठी रखते ठोर, और कुडम बरताते,
कसुंबेके यार, नीत उठ मावा खाते,
कहे दीनदरवेश, ईनका मत धर घोखा,
तमाकुके चोर, हाथमें रखते होका ११

दीनदयालगिरि.

(दृष्टांतिक तत्त्वबोध)

बचन तजे नहि सतपुरुप, तजें प्रान धर देस,
प्रान पुत्र दुहु परिहर्या, बचन हेत अवधेस १
जनम ल्यियो हरिभजनको, दियो विषैमें खोय,
गयो टैन पायो न गज, आयो पंगुल होय २
हियमें हरि हेर्या नही, हेरत फिर्या जहान,
ज्यौं निजमें मृग भूलि मद, खोजत फिर्यो अजान ३
चिद हरितें लीला करे, जग जडको सदोह,
ज्यों चुमक परतापतें, करत क्रिया जड लोह ४
चिदानदकी सकतितैं, मन इंद्रिनका भोग,
होत जथा रविके उदै, कृपा करै सब लोग ६
प्रभु प्रेरक सब जगतको, नटनागर गोविंद,
ज्यों नट पटके ओट है, नटी नचावत वृंद ५
एकै सबहीमें बस्यो, बासुदेव करी वास,
ज्यों घट मठ भीतर बहिर, मूच्यो एक अकास ७
सबे काम सुधरै जबै, करैं कृपा श्रीराम,
जैसे कृपी किसानकी, उपजावै घनस्याम ८

जैसे जल लै बागको, सिंचत मालाकार,
तैसे निज जनको सदा, पालत नंदकुमार. ९
सील सुमति सरधा बिना, बुध संग सठ सुधरै न,
होहि न सुजन पिसाच गन, शिवहि सेइ दिन रैन. १०
साधु रहैं नहि सकल थल, कविजन कहें बखानि,
वन वन चंदन होंहि नहि, गिरि गिरि मानिक खानि. ११
रचै सठहि बुध आप सम, वैन सुनाय अनूप,
जैसे भृंगी कीटको, करत सैन निज रूप. १२
सठ सुधरै सतसंगतै, गए बहुत बुध भाखि,
जैसे मलय प्रसंगतें, चंदन होहि कुसाखि. १३
मागतहीमें बडनको, लघुता होति अनूप,
बलि मख जाचतहीं धरै, श्रीपतिहूं लघु रूप. १४
भाग्य फलति है सफल थल, नहि विद्या बलबांह,
पायो श्री अरु गरलको, हरिहर नीरधिमांहि. १५
विश्वासीके ठगनमैं, नहीं निपुनता होय;
कहो सूरता ताशु हनि, रह्यौ गोद जो सोय. १६
करम करै कोऊ अशुभ, लगै संग बसि काहु,
यथा चोर संबंधतें, बंध होत है माहु. १७
लखियत कोऊ वस्तु जग, विना चाह मिलिजाय,
अचरज गति विधिकी जथा, काक-तालिका न्याय. १८
निरबल जुगल मिलाप करि, काज कठिन बनि जाय;
अंध कंध पर बैठि करि, पंगु यथा फल खाय. १९
नीच न सोहत मच पर, महिमै सोहत धीर;
काक न सोह पताकपै, सजै हंस सर तीर. २०
मूरख खलको साधुजन, उपदेसत न विचारि,
कपिको दीनी सीख खग, कीन्हों गेह उजारि. २१
गहै दीन गुनहीन प्रभु, नहि गरबी गुन पूर,
छोडि केतकी कुसुमको, हर शिर धरे धतूर. २२
सूरहु निरबलको हनै, नहि एकै नर जान;
सिंह बाघ बृक छोडि कै, लेत छाग बलिदान. २३

काचे घटमें जल जथा, श्रवित होत अति जाय,
जाचकको कुल शील गुन, विद्या तथा घटाय २४
पाय बहुत सहवासको, पुरुष नहीं प्रिय होय,
छीन चंद चवत सबै, पूरन चंद न कोय २५
सगदोषतें सत जन, अत न होहि मलान,
जैसे जल मल संग तजि, निर्मल होत निदान २६
राजभ्रष्ट लखि भूपको, त्यागि जाहि सब दास,
ज्यों सर सूखो देखिकै, हंस न आवहिं पास २७
जो मन प्रिय सो प्रिय लगै, गुन अरु रूप विहीन,
त्यागि रतन हर जतनसों, पन्नग भूषण कीन २८
पर संपति अति सुरतिकै, खलमति है जरि छार,
पय पूरन लखि कुंभको, करैं झूठ मंजार २९
दोष गहैं गुन नहि गहैं, खल जन रहैं अधीर,
लगी पयोधर रुधिरको, पिये जोंक नहि छीर ३०
जामें बहु श्रम होइ तिहिं, लोग सबै फल छंद,
जप तीरथमें दु:ख लहै, नहीं गहै गोविंद ३१
जैसे घन गन गगन छन, आवत करत पयान,
तैसे धन जग छनक है, विद्या दुर्लभ मान ३२
पराधीनता दु:ख महा, सुख जगमें स्वाधीन,
सुखी रमत सुक वन विषैं, कनक पींजरे दीन ३३
तहा नहीं कछु भय जहा, अपनी जाति न पास,
काठ बिना न कुठार कहु, तरुको करत विनास ३४
अतिसे सूधे मृदु भने, नहीं कुसल जगमाहि,
काटत सरल सुतरुनको, सों वल कुटिलहि नाहिं ३५
धनी सुखी नहिं तोष बिन, तुष्ट निधन सुखवान,
नृप सुख हित पचि पचि मरैं, मन मुनि मोद महान ३६
प्रियवादी प्रिय लोकमें, तैसे नहि कटु बैन,
पिक प्रिय तथा उलूकसों, कोऊ प्रीति करै न ३७
केहरिको अभिषेक कब, कीन्यों विप्र समाज,
निज भुजके बल तेजतें, विपिन भयो मृगराज ३८

प्रिय अप्रिय जानै नहीं, जे समरथ है लोक,
संभु जरायो कामको, नहीं जरायो सोक. ३९

कृपिन धनी नहि जाचिये, वरु निरधन दातार;
तजिकै कुसुमित आक अलि, करै कमल कृस प्यार. ४०

करै सुजन सतकार पर, परे व्यथाके बंध,
दहत देत सबकों अगर, अपनो सहज सुगंध. ४१

छीर होत तृन खायकै, पयतें विष है जाय,
यहि विधि धेनु भुजंगरद, पात्र कुपात्र लखाय. ४२

खल जनको विद्या मिलै, दिन दिन वढै गुमान;
वढै गरल वह भुजगको, यथा किये पय पान. ४३

चहै मोद नवनीत जग, हरिसों हेत बिसारि,
मथै वारी ज्यौं डारि दधि, अंध ग्वारि श्रम धारि. ४४

जग दुखको दारन करै, साधक लहि सतसंग,
पाय जडीवल नकुल ज्यौं, नासै भीम भुजंग. ४५

मृदुवादी बुध जग लसत, बसत वुदनके संग,
सारगी हित साजतें, जैसे सजै मृदंग. ४६

दारिद सुरतरु ताप ससि, हरै सुरसरी पाप,
साधु समा गतिहू हरै, पाप दीनता ताप. ४७

भाषत थॉर सरीरको, नहीं छनक इतबार,
ज्यौं तरु सरिता तीरको, गिरत न लागै वार. ४८

संबंधिनको संग है, जगमै छनक बिचारि;
मिलै कूप पर आनि ज्यौं, घरघरतें पनिहारि. ४९

चलिवो है चेतै न जग, भूल्यो देखि समाज,
जैसे पथिक सराय परि, रचै सयनके राज. ५०

पुलकित होंहि प्रबीन सुनि, बुधवानी न अजान,
ससि मयूषतें चन्द्रमणि, द्रवै न कठिन पखान. ५१

चचल खलकी प्रीतिको, गए अलप बुध गाय,
ज्यौं घन छाया गगनकी, छनमै जाय नसाय. ५२

सरल सरलतै होय हित, नहीं सरल अरु बंक,
ज्यौं सर सूधहि कुटिल धनु, डारै दूर निसंक. ५३

प्रीति सुखद है सुजनकी, दिन दिन होय विसेख,
कबहु मेटे ना मिटै, ज्यौं पाहनकी रेख ५४

नेह सारखी रजु नहिं, कविवर करै विचार,
वारिज बंध्यो मलिन्द लसि, दार विदार निहार ५५

पीछे निंदा जो करै, अरु मुखपैं सनमान,
तजियें ऐसे मीतकों, जैसो ठग पकवान ५६

गुनी रमाल रसालसें, नमैं सुमन फल पाय,
नीरस तरुसें नीच नर, नवै न कोटि उपाय ५७

उत्तम थल सेवै सुजन, नीच नीचके बस,
सेवक गीध मसानकों, मानसरोवर हस ५८

जितेन कोऊ पारखौ, सो थल नहि बुध जोग,
गुजा मानिक एक सम, करैं जहा जड लोग ५९

मलिन पिताके विमल सुत, उपजत नहि सदेह,
होत पकते पद्म है, पावन परमागेह ६०

करको मानिक निदरि नर, हूंत दूर भ्रमात,
गंग तीर निवसै तऊ, दूर तीर्थनि जात ६१

तूठे जाके फल न हो, रूठे बहु भय होय,
सेवजु ऐसे नृपतिको, अति दुरमतितें लोय ६२

नहि धन धन है परम धन, तोपहि करैं प्रवीन,
बिन सतोप कुबेरऊ, दारिद हीन मलीन ६३

नीच संगते सुजनकी, मानहानि न्है जाइ,
लोह कुटिलके सगते, सहै अगिन घन घाइ ६४

गुनतें होत प्रधान जग, और उंचतें नाहि,
हरि हित अतिसै मालती, तथा न सेमल माहि ६५

नहि जोजन सत दूर जों, दुहु मन पूरन प्यार,
कासमीर मलयज मिले, करैं विहार लिलार ६६

श्रीको उद्यमतें बिना, कोऊ पावत नाहि,
लियो रतन अति जतनसों, सुर-असुरन दधिमाहि ६७

बिनै मिलत विद्या मिले, सो जों कृत अभिमान,
कासों कहिये जौ हरै, जननी विष दै प्रान ६८

पूजत लोग मलीनको, पावन जन पूजे न;
करन आन सुवरन लसै, लेपत कज्जल नेन. ६९

बुधजन क्रूर सुभावको, नही करै उपकार;
खाय मधुर घृत कर धरे, करे अगिनि छिल छार. ७०

अरथवान समरथनिसों, अरिहुं करै हित बात;
निर्धन जनतें सुजनऊ, दुरिजन लौ बनि जात. ७१

(प्रेमपचक-सवैया.)

छल वंचक हीन चले पथ याहि, प्रतीति सुसंवल चाहनो है,
तह संकट वायु वियोग लुवे, दिलको दुःख दावमें दाहनो है;
नद सोक विषाद कुग्राह ग्रसै, कर धीरहितें अवगाहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है. १

सजि सेज सुवारि बिछलनकी, तहं मीत मतंग सो आवनो है,
वरु नीर रखै सिकता घटमै, मकरी पट सिंह फसावनो है,
सुगमै बड वारिधि पैरिवो है, पय ऊपर तारिवो पाहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है. २

रसना अहिकी गहिवी सुगमै, वन कंटक गौन उवाहनो है,
गिरि तें गिरिवो भिरिवो गजनें, तिरिवो वडवागिको थाहनो है,
रन एक अनेक नितें जु लरै, तिमि ताहि न सूर सराहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है ३

पछलत्त तुरीनके है सुगमै, नख नाहरको हठि गाहनो है,
विष नीरकी पीरको धीर सहै, चढि चीर सरीरहि दाहनो है,
मरु कूपके बीच फसे सुगमै, वरु मीचतें वैर बिसाहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है ४

खल निन्दक सूकर भै जह है, गरजै गज मत्त उराहनो है,
कुलकानि अपार पहार जहां, गुरु लोक सकोच कुपाहनो है,
नल नीर भरी विपदाकी सरी, तह पंक कलंकहि गाहनो है,
हित दीनदयाल बडो वन है, कठिनो अति अंत निवाहनो है. ५

दुर्गादत्त.

(प्रियाविरह)

जौं न होती तेरी मुख इंदुकी उजेरी हिये,
तौ तो तो विरह अंधेरी कौन हरतो,
होती जो न यादि तेरी अकथ कथानकी तो,
तापके कलापनको कहो कौन हरतो,
जौं न होती तेरी गुन पांतिकी गुनावत त्यों,
कैसें इन पायनतें पथ पार परतो,
हो तो जो न ध्यान तेरो मोहि सुन प्रानप्यारी,
तौ तो इन प्राननकी पेरे कौन हरतो ,
तव मुख चंदकी सुधाको सुखपायके व,
लोचन चकोर मेरे पानके अघाय हैं,
तेरे कुच कुंभतें परसि मम छातीसोंहि,
ताती विरहागिकी त्यों तापको मिटाय हैं,
तेही नूपुरादिकी सरस धुनि प्यारी कथ,
मंद मंद आय मेरे कानन समाय है,
कामके दरेरे दुख घेरे कत्र मेरे अंग,
तेरे अंग अंगको उमंग भरि जाय है १
औषध मगावे कोऊ वैद घर जावे कोऊ,
कोऊ ले जडीनको सु पीस पीस छाने है
वाइ को कहत पियराइको कहत कोई,
मेरे या शरीरमांहि कोई जर जाने है,
प्यारी तो वियोगकी बिमारी पहिचाने नाहि
रोग उपचारी ये विवावे ग्रह ढाने हैं,
गात्र को वखाने कोउ गेहको वखाने,
दोष पौनको मखाने कोउ पानीको वखाने है २
धरतीमें धाममें सुधामनकी भाति माहि,
ताकमें तम्बतम तमामठ लख्यो करे,
द्वारमें किवारमें सुखज्जम रु छातमाहि,
कोनमें सुकौगाऊम मोहिकों चख्यो करे,

वाटमें रु हाटमें सुघाटमें घनीही भांति,
सामु है सुभाय आय आयके फद्यो करे;
जिते जिते देखों तिते तिते सुनि इंदुमुखी,
आनन तिहारो आंखि आगेही रह्यो करे. ४

मोतिनकी वेंदी वर कनक जराव जरी,
पाटी विच मांग मेरे मनको मह्यो करे;
भारे कजरारे वै तिहारे अनियारे नेन,
रेन दिन मेरे हियरेइको गह्यो करे,
मीठे वै सु अधर कपोल मुसुक्यान लीने,
मंद मंद मोहि कछु वातसी कह्यो करे;
जिते जिते लखों तिते तिते सुनि इंदुमुखी,
आनन तिहारो आंखि आगेहि रह्यो करे. ५

वेठत उठत जात आवत सकोरे सॉड,
कामके करार वान हिये डोलियतु है;
देखें वन वाग भले लागत भयानकसें,
खान खान मोंहि मानो विषै घोलियतु है;
धायके हिंमत वायें वेधत दुखद काय,
छायके करे जो छनमांहि छोलियतु हैं;
लखे क्यों न जाय ताहि विरह संताय तायो,
तो विन सहाय हाय हाय वोलियतु है. ६

प्रानकी पियाकों कव दोरिके उठाय अंक,
चूमिहों मयंक मुख छातीतें लगायके;
विरह विथाकी लखि थाकी देह ताकी कव,
हाथनकों फेरि फेरि पैहों सुख जायके;
ज्यों ज्यों सु सुकैहे हे त्योंहि राखिहों लगाय कंठ,
कौन दिन हियरेके तापकों मिटायके,
आंसुनकी धार पोंछि पोंछि वह लैहों चित,
देश परदेशनकी वातन सुनायके. ७

(**सवैया.**)

केलि कथा मंह लाजको नाम, सुनै हसिके मुख आचर दैवो,
मेंहदीमें वडे हाथ रु पायमें, छेडत मो लखि वीनती सैवो;

स्नात समे छप्यो पास खडो लखि, भूल्यो न जात है नैन नचैबो,
न्हात समे मुहि देखत देखि, कैवाड पर्फ उठि धोवती लैबो   १

(कुंडलिया)

तेरी पाय सहायको, सगर जित्यो सग्राम,
सोइ अक्षस अक्षर रक्खें, सहृन विदारत काम
सरन विदारत काम, सरन कहु मिले न मोकों,
खोजत इत उत फिरों, कतहुंपें लखु न तोकों,
तो बिन कोन बचाय, लेय रष्छा कर मेरी,
हाय हाय करि रहों, सुरत्ति करि करि अब तेरी   ८

(राधिकाविलास-सवैया)

रति कोविद स्याम सुजान प्रिया, परिरभ लै भुज बीचन कीन्हो,
चुबन कै सु कपोलनको, अधरामृतकों दद कै पुनि पीन्हो,
हीयन स्पर्शतकै अतिसें, जु कछू मन भावन सो करि लीन्हो,
नूपर किंकिनिकि धुनिकै, सुख देन गुपाल घनो सुख दीन्हा   १
तिहिं औसर शब्द भयो नभतें, अलि सोचति क्या हरि तो पिय हैगो,
रसरास विलास कला करिकें, सखि तोहि घनो सग लै सुख दैगो,
वन वेनु बजाय रिझाय भली विधि, गाय बनाय सुवेष नचैगो,
उठि वेगि अबै गृह जाउ चली, तजि सशय स्यामन तोहि तजैगो २

(अथ गौरव-सोरठा)

यह हरिप्रिया विलास, लख्यो ब्रह्मवैवर्ततें,
भाषा सहित हुलास, कीन्हो दुर्गादत्त तिहिं   १
राधावर गुन गान, राधावरको ध्यान करि,
राधावर सनमान, कलि अवलंबन दूसहो   २

(कविपरिचय-दोहा)

आदौ जैपुरनगरके, अब काशीमें धाम,
गौड विप्रवर जानिये, दुर्गादत्त सु नाम   १
तिन यह राधाकृष्णको, कीन्हो गुप्त विलास,
इहिं पठिवेतें देत हरि, जा मनकी अभिलाष   २

दूलह.

(शृंगारसौंदर्य-कवित्त.)

रति रमणीय तीय रभामी सरोजमुखी,
रमा वाम लसै चारु मेनका प्रमानी है,
कोकिलसे वचन मधुर जाके सुखदान,
मृग दृग छवि महा सुंदर सुहानी है,
कहै कवि दूलह सु केहरि समान कटि,
जगपति जाकी सब जगत वखानी है;
देखि नंदलाल मोहै उरज उतंग सोहै,
कौ है जो न जोहै मुनि मानी महा ज्ञानी है. १

विषयी विषे है फुरै जानो परिनाम मित्र,
कपि नाघ्यो सिंधु रामपंकज प्रभावतै,
सोई कपि वहुतनि वहुनौ उलेख लेल्यो,
देव कहे देवदानो दानो कहे दावतै,
गुन करि एकको अनेक भांति एक लेख,
दूसरो उलेख लेल्यो सीता जू वनावतै,
वारि मध्य वारि जान्यो कोटमें कृशानु जान्यो,
ढेतमें अंगूठी संत जान्यो सत भावतै. २

लंककी विसालता लै उरज उतंग भये,
रंग कवि दूलह है तेरे मनसूबेको,
ताहि कटि छीनताकी नाती मानि सिह हनै,
तो गति गहैया गज अजव अजूबेको,
सिद्धा औ असिद्धा चारो तुकमें विचारो भेद,
छेद सह्यो मुक्ता तिहारी तन छूवेको;
पोखराज भानको चढावत कलान सीत,
मान मानो तो मुख समान सखी हूवेको. ३

सिद्धको विधान तासों कहत विवुध विधि,
रास मंडलीमें गोपिकेश गोपिकेश है,
हेतु मान सहित वखानै हेतु जाको वाम,
चारो फल आठो सिद्धि दीवेहीके पेस है,

हेतु हेतुमानको अभेद वरनन दूजो,
कान्हकी कृपा धनतें धरमनि वेस है,
सूनत कवित्त नित्त रीझि बृजराज मांहि,
कारिके मुचित्त चित्त वसत हमेस है ४
हरख्ति गात स्वेद भरे दरसात बात,
कहत बनै न रंग छायो अखियानमें,
कुंन गई यानें जान्यो किंसुककी माल साजी,
चन्द्रसी विराजी सो सखी लच्छी तियानमें,
शब्द वेद वाक्य श्रुति स्मृति औ पुरानागम,
योंही निज तोष कयो आचारो प्रमानमें,
है कहै गहै न कहि कान भज समवेरी,
कहा देखिबो न कहा सुनिबो जहानमें ५

देवकीनदन.

(विरह, वसंत-कवित्त)

वैठी रंग रावटीमें जोहत पियाकी वाट,
आये न बिहारी मैं निपट अधीरमें,
देवकीनदन मनमें उमगि आई छोलि,
अति गति प्रऽयकी डरानी महाभीरमें,
सेजपै मूरत सदाशिवकी बनाय पूज,
ती न डर वीनहूके किन्ही तदवीरमें,
ता स्तनमें सावरो सु राखनम अक्षी वट,
पाखनके अम्बनमें लिखी तसबीर मैं १
रग रंग फूले वेलि, विपट अनेक संग,
देवकीनदन कहै शोभा यों अनतकी,
त्रिविध समीर डोलै बोलै पिक प्यारे बोल,
पुंज अलि गुंज मति मोहै मैन मंतकी,
सखिन समेत साजे जेवर जडाउ सबै,
बसन बसति शोभा भारी प्यारी कतकी,

बेस बंगलापै बेस सुनत वसंत राग,
बाग बन बन कवि लोकन वसंतकी. २

(विराग-सवैया.)

देखत जातन हे जितनो, तितनो सब देखत नाश बनैगो,
राव गये पुनि रंक गये, सुनता बकता कहो कोन रहेगो;
जोगि गये ओर भोगि गये, पुनि रोगि गये स्थिर को न रहैगो,
याहितें आनदरूप बनी, भज रामको नाम अखंड रहेगो १

देवदत्त.

(नंद-ब्रजवासीन विनोद.)

लूटैं पट पाट कहू वूटैं लै लै हाट कहूं,
हाट कहूं राखी न कपाट कहूं बंदकै;
औघटहू घाट कहूं पचे तिन बाट कहूं,
भाट कहूं भट नट नाट कहूं छंदकै,
कोलाहल गोकुल सम्हारिये न गोकुलको,
कुलको उज्यारो उचै गोकुलके चंदकै,
जसुदा उदार वसुधार बरसंती देव,
धाई परै वसुधा वधाई परे नंदकै. १
वीथिन सुधारै वरसति वसुधारै काम,
दुधाते दुधारै जे उधारै जम सासनी;
गाये ते मंगाये गाये दानियौ जगाये पौरि,
पूरन पलाकी है भलाकी आजु पासनी;
लोम लोम जसोदा पुलोम जालो हरषति,
विधि अनुलोम होम हविकी हुतासनी;
नंदके अवास ब्रजवासिनको भाग खुल्यो,
खुलत सम्हारियै न वासन न वासनी. २

(राधा-कृष्णका प्रेम, शृंगार.)

संग ना सहेली केली करति अकेली एक,
कोमल नवेली वर वेली जैसी हेमकी;

लालच भरेसे लखि लाल चलि आये सोचि,
लोचन चलाय रही रासि कुल नेमकी,
देव मुसुकाय उरमाल उरझाय फह्यो,
दीजो सुरझाइ बात पूछी छलछेमकी,
नायक सुभाय भोरे स्यामके समीप आय,
गाठि छुटकाइ गांठि पारि गई प्रेमकी ३

सोहति किनारी लाल बादलाकी सारी गोरे-
अगनि उज्यारी कसी कचुकी बनाइकै,
जेवर जडाऊ जगमगत जवाहिरके,
जूती जोती जावककी जीती पग पाइके,
भौंहनि भमाइ भुरि भाइ करि नैननसों,
सैननिसों बैननि कहति मुसकाईकें,
चीकनी चितौनि चारु चेरे करि चतुरनि,
चित्त लियो चाहै चित्त लियो है चुराइकें ४

रीझि रीझि रहसि रहसि हसि हसि उठै,
सासैं भरि आसु भरि कहत दई दई,
चौंकि चौंकि चकि चकि औचक उचकि देव,
थकि थकि बकि बकि उठति घई नई,
दुहुनके गुन रूप दोऊ बरनत फिरैं,
घरत थिरात रीति नेहकी नई नई,
मोहि मोहि मोहनको मन भयो राधामय,
राधा मन मोहि मोहि मोहनमई भई ५

देखि न परति देव देखि देखि परीवानि,
देखि देखि दूनि दिख साध उपजति है,
सरद उदित इदु बिंदुसो लसत लखे,
मुखित मुखारबिंद इंदिरा लजति है,
अदभुत अमृतकी पियूखसी मधुर बानी,
सुनि सुनि श्रवननि भृखसी भजति है,
मार कियो मंत्री सुकुमार परतंत्री बैन,
बिना तार तंत्री जीम जंत्रीसी बजति है ६

बंसी–धून बांधि चित चंगसों चढायो सुनि,
ताननकी तुंग धुनि चंग मुहचंगकी;
मधुर मृदंग सर उपज उपंग भई,
पंगु परबीन बीन बोलनि अभंगकी,
बधिक बिहंग बधू व्याध ज्यौ कुरंग ताहि,
हनी है कुरंगनैनी पारधी अनंगकी;
संग संग डोलति सखीनिके उमंग भरी,
अंग अंग उठति तरंग श्याम रंगकी. ७

चंपा कचनारके सु केसर कदंब कुल,
बकुल असोक राजी राजति रसालिका,
माधुरी मधुली रसधूली बस भुली भौर–
पांति झौर झूली झांकि फूली बनमालिका,
सीतल सुगंध मंद गंध वह वहै महं,
महे मल्ली मालती निबल्लरी बिसालिका,
केली तजि डोलति अकेली बाल बेली देव,
कोकिलाकी बानी अकुलानी कुल बालिका. ८

देव प्रीति पंथा चीर चीरि गरे कंथा डारि,
भसम चढाइ खान पान पौन छूजिये;
दूरि दुख द्वंद राखी मुंदरा पहिरि कान,
ध्यान सुंदरानन गुरूके पग पूजिये;
शृंगीकी टकी लगाय भृंगी कीट व्हैके मन,
धारिके विराग विरहाग मैं न भुजिये;
केली तजि राधिका अकेली होइ जोगिनि तौ,
अलख जगाइ हेली चेली चली हूजिये. ९

(वैराग्य.)

बालतें तसन अस तसनतें बूढो भयो.
बूढेतेंन वढती विधाता गढि जाइगो;
महितें महल चढी कोटिनि अचल चढ्यो,
अचलतें ऊंचे आसमान चढि जाइगो,
हरि भजि लेहि यह सबै सब खेह कहा,
गेहसो सनेह देहहीसों कढि जाइगो

घिर न कुबेर इंद्र दौरे देव रवि चन्द्र,
बैठ रहु धीरा तुं कहांतो चढि जाईगो १०

(काव्य परीक्षा-दोहा)

तत्वबोध सम सत्व मति, छूटे मोह महत्व,
शांत बाढि रस शांत जहं, जाने जगत असत्व १
सत्य नित्य चैतन्य वस, शांतिरस है नेम,
जोग अनन्य सरन्य गति, एक भक्ति अरु प्रेम २
सेवक सेव्य रु भाव दृढ, भक्तिनि भक्ति अनन्य,
प्रेमीजन तन मन वचन, अर्पन असरन सरन्य ३
शांत रस सु निवर्ग बढि, होत ज्ञान वैराग,
रीझ तुच्छ सुहे विना, प्रेमभक्तिको त्याग ४
यदपि मधुर रस माधुरी, मधुकर पर अनुकूल,
मूल्त नहीं गुलाबके, तदपि कँटीले फूल ५
रन वैरी सन्मुख दुखी, भिक्षुक आये द्वार,
युद्ध दया अरु दानकी, त्रिविध उछाह उदार ६
सुभट उदार उछाह बढि, उर आनद गभीर,
अंग पुलक सुख अश्रु दृग, होत विविध रसवीर ७

देवीदत्त.

(भक्त लच्छन)

दया दिल राखे सबहीसों मृदु भाखे नित,
काम क्रोध लोभ मोह मत्तसों दबावें जू,
काहूमें न तेखें ब्रह्म सबहीमें देखें,
आपु को लघु लेखें करि नेम तन तावे जू,
देवीदत्त जामें हरिहीको पक्ष चित्त और,
जगतको रीतिमें न प्रीति सरसावें जू,
दुखित है आपु दुख औरको मिटावे ऐसो,
शांत पद पावे तब भगत कहावें जू १
बडे बडे गुणी पुरुषारथी अपार फिरें,
केते द्वार द्वार कवि पंडित सिपाही हैं,

वाने मति मन्द सबै जानत बजिद तौ न,
बखत बिलंदहू अमंद उतसाही है;
देवीदत्त होत कहा कीन्हे कर तूति दई,
दइकी विभूति सोन मानत थराही है;
सेंति मेति आपनी बनाई गुमराई मूठ,
मदके उदोत होत हरिके गुनाही है. २

देवीदास.

(राजबोध-राजनीति.)

नीतिहितें धरम धरमतें सकल सिद्धि,
नीतिहितें आदर सभानि बीच पाइये;
नीतितें अनीति छूटे नीतिहीतें सुख लूटे,
नीति लीये बोलै भलो वक्ता कहाइये;
नीतिहितें राज राजे नीतिहीतें पातशाही,
नीतिहीकों नोहूं खंडमाहि जश गाइये:
छोटेनिके बडे करै बडे महा बडे करै,
तातें सबहीको राजनीतिही सुनाइये. १

मूसे परि सांप राखें साप परि मोर राखें,
बैल परि सिंह राखे वाके कहा भीति है;
पूतनिकौ भूत राखें भूतकों बिभुत राखें,
छमुखकौ गजमुख यहें वडी रीति हें,
काम परि वाम राखें बिसकों अमृत राखें,
आगि परि पानि राखें सोई जगजीत हें,
देवीदास देखौ ज्ञानी शंकरकी सावधानी,
सब विधि लाइकपें राखें राजनीति हें. २

कौन यह देश कौन काल कौन वेरि मेरो,
कौन मेरो हितु मोहि ढिगतें न टारिबौ;
केतिक आमद मेर खरच केतोक बल,
तेहि उनमान मोहि मुखतें निकारिबौ,

सपतिके आवनिकौ कोन मेरे अवरोध,
ताहूको उपाउ यह दाउ उर धारिवो,
राजनीति राजनिकौं दिनप्रति देवीदास,
चार घरि राति रहै इतनो बिचारिवो ३

बातनि महनहार चित्तके लहनहार,
अतरमें कारे और ऊपरतें गोरे हैं,
जानियो उनहि थोर दिनके रहनहार,
दे कौरि कुमत्री स्वामी संकटमें बोरे हैं,
ताहिनें अनीतिके सहनहार हम ठेरी,
पेरिके रहनहार धामन हैं भेरें हैं,
राजानिके चित्तके गहनहार घने परि,
देवीदास हितके कहनहार थोरे हैं ४

एक पाउं पेटसों लगाइ लीनो लपटने,
ग्रिवा पाई ठाढों मुख महा मौन है गयों,
नारिहि नवाइ करि ठोर कर बेठ चंचु,
पीठिमें दुराइ राखी रूप जाइ ना कयों,
हलिबो चलिबे मेटे सास बाउ रोकी राखीं,
आसिनमें जीउ वैम कापें जात ना कयों,
छोटी छोटी माछरीनि छलिबेंको देवीदास,
देखीयो बगुला यह पंगुलासों है रयों ५

तनुतों पतन सील असकों अमर जानि,
यह जीव आनि दानि देवों चाहियत हें,
बडे महिपति सोतों दीपनिके दीप कैसें,
बिना दान कहू पेस दान पाइयत हें,
बलिकीतों पीठि सिबि मांसु अविनास भयो,
जगदेव देखो देह यों लुटाइयत हें,
देवीदास करनकी खालहि खलक जानें,
दधीचिके हाड गाड अज्यों गाइयत हें ६

ऊजरे महल नांहि पालिकी महल नांहि,
चहल पहल नाहि होमकी हवनसी,

माते गजराज नांहि मागनेकी लाज नांहि,
कविको समाज नांहि दास अरवनसी;
देई नाहि खाइ नांहि जोरत अघाइ नांहि,
देवीदास कहें वह वसु हें वमनसी;
घने दुख जोरी घने दुखनिसों राखत हें,
यहें जोपें संपदा तो आपदा कवनसी. ७

कुवा मांझ मेडकौ तिमंगल है रह्यो तिहा,
आयो हस उड्यो देखि नीचे कूप पानिये;
बैठ्यो उपकंठ बोल्यो मरोरसों मेडक तू,
कौहै होंतो राजहंस तेरो घर जानिये;
मानसर केतो वडो मो फलंग हूतें वडो,
मेरे घर हूतें वडो जूठ कैसे जानिये;
जा जीवनकी जहां लों पोंच नाहि देवीदास,
ताको बूरो मनमांहि तिनको न मानिये. ८

तनकसो चिनगा छिनक मांझ वाउ फरे,
व्है करें प्रचंड करें छार वारि वनियै;
कौने मांज वालकसों बिलवा सकुच बेठ,
दाउ परे उंदरहि चूकें नाहि हनियें;
जैसी हें सुबेलि काटी ज्योंकी फिरि त्यौहि होइ,
भुलिये न जोंलों तोंलों मूलेंतहि खनियें;
वसुधाके बीच जौ विजय चाहे देवीदास,
व्याधि वैरि वैसंनर छोटे नांही गनियें. ९

आपन अकेलो आस पास सब बेरी तब,
दांतनिमें जीभ जेसे तेसी भाति रहिये;
जानिये निकसि पेठि चलीए नरम ह्वै के,
नेह करे तोपे वा सनेहसो न बहिये;
अनमिले मिल्यो सो दिखाइ परे इते पर,
सतावे तो देवीदास समो पाइ सहिये;
दाउ परे एक बोल एसो बोलिये जु जुठौ,
ओरपै दिवये जब ठेरु कयों चहिये. १०

सूमनतें जश जाइ गरवतें लच्छ जाइ,
कुनारीतें कुल जाइ जागे जाइ सगतें,
भुखतें म्रजाद जाइ ल्हाएतें पूत जाइ,
सोचतें शरीर जाइ सीलता कुसगतें,
कपटतें धर्म जाइ लोभतें बडाइ जाइ,
मागिवेतें मान जाइ पाप जाइ गंगतें,
नीति बिन राज जाइ क्रोधसौं तपस्या जाइ,
देवीदास रजपूति जाइ मुरें जंगतें ११

सूरवीर राखे सो तो भोगवे बसुधराको,
कविनिकौ आदरेगो सोइ जस पावैगो,
भीर परे तबै कोन लरै रजपूत बिना,
कविनिके दीये बिन कौन जस गावैगौ,
देवीदास कहै जाके वेई ल्वाजम है,
जगमांहि नीकी भांति सोइ सरसावैगौ,
ठाकुरकौ जायौ वही ठाकुर कहायौ चाहै,
सौ तो इन वैनहिकौ अगिहि ल्गावेगो १२

वैरीनिकों हेरि मारै गढ कोट पेलि पारे,
अगजिन गज डोर होत ग्वाल गौन है,
परखे आसरे सारै दारिदु दरेरे मारे,
देवीदास धा जिनिके जसके उद्योत है,
एसे कविराज निक कहै गुन राज नीकै,
ये गुन रहीत गार्दी तकिया न सौत है,
उंचो मुहु गुरुता निलेपता रु अभिषेक,
पटबंध चौर ये तौ हुसनेकै होत हे १३

उचो मोहु किये गार्दु तकियासौं टिकि बेन्यो,
सबसौं अलेप बिना नेह महु रुसनौ,
तातें पानी न्हाइ नित नये पट बांधे और,
अंबरमें रातौ रातौ दिसे मनो पुसनौ,
करपीर फेरे जाके सीस पर चौंर ठरे,
साथी ढीग रहै घेरे कंचनके भूपनो,

देवीदास तेग त्याग हीन सव भांति बन्यौ,
कहियो विचारि यह ठाकुर विदुपनौ. १४

(शेठ-सेवक विचार.)

मौन बेठि रहे तो सभामें मूक नाम पावें,
बोले वार वार तो लवार सगरे कहें;
ढिग जाइ घढे कहें ठीटु दूरि वैठ कहें,
अप्रगल्भ तहां कैसी भांति करके रहें;
छमा करि रहें तो डरप स्यार कहें सव,
वरावरी करें कहें नीचके लछन हें;
देवीदास कहे जे पराए भये चाकर हें,
ते विचारे कहो कोन भांति सुखको लहें. १

पहिलेतो आगिलेसों प्रीति करि परिनाम,
पदवीकों पहुचावे हेके परकाजसों;
करि सनमान ले समान ताहि वैठे वह,
गिरिमाकों पाइ जव होइ नेक साजसों;
हलुके उठाइ ऊंची पदवीकुं पहुंचावें,
नीचो कीजे गरुवो जु होइ सिरताजसों;
देवीदास तासों कित राजी होइ चाकर जो,
गुनकों न जाने राजा होहि वितराजसों. २

भाइपें वडाइ हे अलोकिक सगाइ देवी-
दास सुखदाइ भृत्य सो कहाइयत हे,
बिन कहे सव जाने सासन सिरपें माने,
साहिबकी भीर माने मन भाइयत हे;
निडरमें डर राखे डरमें निडर होइ,
लाजसों लपेटे रहें छवि छाइयत हे;
घरी घरी अरजीन होइ बरजी न करें,
ऐसे चाकर तो पुरे पुन्य पाइयत हें. ३

प्रान सम राखें ताकों सुख अभिलाखें आछें,
आछें बेन भाखै सदा वेइ तो सराहियें;
चित हित पागे कहे काहूके न लागे पीर,
परे भीर भागे ज्यों दुश्मन डर दाहियें;

बार बार तुठे तकसीराहिसों रुठे घोस,
लीसत न रूठे दु:ख परेतें निबाहिये,
कृत्त अति प्रीति औ प्रतीति करें एकरस,
एसें चाकरनकों तों ऐसे प्रभु चाहियें ४
सदा चाकरीमें छीन सब बातमें प्रवीन,
पाये अनपाये हीन कबहु न भाख्यो हें,
कुलके कुलीन कपटीन अधीसीन जिनी,
देवीदास लोक पर लोक अभिलाख्यो हें,
ऐसें पुरे पुण्यनि मिलें हें जाहि चाकर जे,
सांकरेमें सुर लोक बेद यह भाख्यों हें,
साहिब किर्तोक देहें केतो सनमान केहें,
मानके बदले उनि प्रान करि राख्यो हें ५
बात बात उपर खुसामदी करत हे जे,
मुहपर मीठी पीछें चबाइ नीकों गरों,
सपत्तिके साथी स्यार मकसूदी बेहुस्यार,
लेवेंकों हुस्यार ऐसें चाकर कुत्वा परों,
कृत्यकों न मानें एक ढरे डर जाने जेठा,
रंजमें अरज ठानें तिहों बिनाही सरों,
देवीदास सरे पेट सेवक निबा बिसोध,
परेंसनि अदफाको तो सीस दे बिदा करों ६
बडेनिके सीसपेंतें तनक तिनुका लेत,
ताभिरतासों बाधे बडेजु प्रीतिकें पने,
सावधान भारी जनमावधीलें मूर्ल नाहि,
प्रान बाके काजे देहि एसें प्रीतिसों सने,
देवीदास अब सुनो नीचनिकी एसी गति,
कोन भांति कीजें हाथ बसे उनके मने,
प्रानहूलौं देकें उपकारहि करेजो कोउ,
साहूं खल तिनुकाकों किनुका किये गने ७
जाहीको वो चाकर हें ताहीकी लगाइ तके,
बत कोर मारो यह ग्यान कित को गहा,

जो कहोगे प्रारबंधसेती वह आवत है,
आइ बरताइ देउ यहो मतौ है महा;
आपनीसों तौरौ याहि लेके तुम गांठि जोरो,
यह विपरीत देखे हमें तो लग्यौ चहा;
एरे भैया रामकै हो रामकी तौ छिटकाइ,
रामकी लुगाइ सेती प्रीति करिबो कहा. ८

अनुचर चातकसों बगलाकों जातकसों,
भौरसों भलाइ कहों कैसें परिहरि हें;
हाथीसों हीरनसों पानीकौसों अंग जाकों,
बनकों बिहंग सोऐ जाकी ढिग परि हे;
देवीदास ऐसें भट बारह जो द्वार होइ,
कैधौ बिचार ताकों बेरी कहा करि हें;
बिन कहे सब जाने सासन सिरपें माने,
साहिबकी भीर भाने मन भाइयत हें. ९

दुबरेसें आवे भूखे कामको किलिकिलावें,
जितही लगावें हम सोइ करे सो कहें;
साहिबनें भूखों जानि दुर्बलकी दया आनि,
मेल दियो मालपर कहू न आटोक हें,
जहां मुख घाल्यो तिहां गिलि गए सरबस,
माति भये पलमांहि कोन सुनें कों कहें;
फेर दुहि लीजें तब काम आवें देवीदास,
कोहियों विचार यहां चाकरके जो कहें. १०

हितकारि हैकें बे सदाई निज साहिबसों,
हितकी न कहें तो हितुपनमें खामी हे,
वसें सभासदकी सुबुद्धिनिकी हदकी जों,
सुनें नहि देवीदास सो तो सठ स्वामी हे;
मंत्रि होइ हितकों कहैया और राजा होई,
सारकों गहैया तोहि जोरी बहु नामी हें,
नांतरु नृपति हे विपतिहीको गामी और,
मंत्री वह निहचै नरकहीको गामी हें. ११

(मित्रधर्म-सग कुसग)

पहिलें विवाद व्यवहार धनको न कीजें,
जाचिये न तापे आई मांगे ताहि दीजियें,
मित्रके घरमें घरुनीसों मिलि बैठिये न,
हसिये न दूरि बैठि बैन छोरि लीजिये,
कोउ भेद पावें तो न भूलें देवीदास कहें,
मनकी दुराइये न तातें भये खीजिये,
प्रीति खोयो चाहियें तो कीजिये पर सु प्रीति,
प्रीति राख्यो चाहिये तो इतनो न कीजिये १

सरदकी चादनीसे उजर अमोल शुभ,
सुदर सुवृत्तते दुराए दुरिबेकेहैं,
बडे गुनवंत देवीदास मन मोहि लेत,
पानिपसों पुरन सुढार ढुरबेकेह,
काहु एक क्रूरकी कुराइ करि फूटि गए,
फिरि मूढ मोर्या चहें है न सुरियेकेह,
मीतनिके मन मोती फाटी टुक ह्वै भये सु,
लाख वैके जोरों कहा फिरी जुरियेकेहैं २

जासों अति प्रीति सब जगमें विदित होइ,
तासों पुनि बैर होइ दसें दाह दीजियें,
देवीदास कहें ज्यों जिहाजको बनिज कर,
धूरत कहाय ताकि मातें नहि धीजियें,
जोपै कछु पहिले कदापि चोरी करी होइ,
कुल सिल रहित विचार करि लीजियें,
सुख चाहो आपको तो सबको सदाकों सीख,
इतने मनुस्यहिसों सगति न कीजियें ३

कूरनसों पातकीसों मनके गरूरनसों,
मलिनसों तातकीसों मिलियें न खीजियें,
मोलके चल चलेसों मीतके छल छलेसों,
भेदपभके हलेसों कबहु न धीजिये,

चोरसों परवधूके तर वारे मतवारे,
हीन जातिनिसों तजि जौलौ जग जितिये;
देवीदास देह धरे सुख चाहो आपकों तो,
इतने मनुष्यनिसों संगति न कीजिये. ४

जौ गुन गाहक होइ तौ गुन गहै जो वाहि,
सुगुन सिखाइये तौ औगन कहा करे;
लोकलाज लेपै एक पापहीकी प्रीत जाहि,
ठीक बात एको नांहि चीकनौ रहा करे;
लाज न कहे कियेकि नेकि नही टेकी नेक,
टेकी ओर सुनौ बेठो यदि ये कहा करै,
संगती प्रसंगते बुरौ उ भलौ होत देवी,
वेसें वा असंगतकी संगती कहा करै. ५

नरके न धाम ना नपुंसकके काम नाहि,
ऋणीके अराम वाम वेश्या ना सहेलरी;
ज्वारीके न सोच मांसहारीके न दया होत,
कामीके न नातो गोत छाया नास हेलरी;
देवीदास वसुधामें वनिक न सुनो साधु,
कूकरके धीरज न माया है सहैलरी;
चोरके न यार वटपारके न प्रीति होत,
लाबर न मिंत होत सोति ना सहेलरी. ६

(बाकू चातुरी-सत्य, असत्य.)

एक निकों बोल लोल तोल हलुकेरे मोल,
एक कोडीहिके अविचारनि सभत हें;
कहिकी रहीतो भले न रहितो अति भले,
ऐसें तो मनुष्य मन कौन जाने केत हें;
सांच सिर लियें विरले सरल देवीदास,
रेनि दिन आपनें विचारिमें सचेत हें,
ताहितें बडे पुरुष बोले बडी बेर क्यौ जु,
बोल काजें बोलता पुरुष जान देत है. १

कीरतिको मूल एक रैनिदिन दान देवो,
धरमको मूल एक साच पहिचानिवौ,
मढिवेको मूल एक ऊचो मन राखिवो हैं,
जीनवको मूल एक भक्ति बात मानिवो,
व्याधि मूल भोजन उपाधि मूल हांसी देवी,
दारदको मूल एक आलस बखानिबो,
हारिवेको मूल एक आतुरी हैं रनमांझ,
चातुरीको मूल एक बात करी जानिवौ २

औसरसों सनी आछी दृष्टताकी छबी लीये,
जुक्तिसों जटी हैं जाके अंग अवदात हैं,
सांचसों सनीपें मनुहारीसों मिलि विचार,
परिनाम नीकी मीठीसी ता न अघात हैं,
आखरनि थोरी औरू अर्थ करी महा मही,
औरके हित हैं जाके सुन दुख जात हैं;
वेदकीसी बानी बात सोइ बात कहावति,
देवीदास और बात बातनीकी बात हैं ३

मानसमें लखन बतीस दातहु बतीस,
दोउ ए समान एसे राजनीतिमें कहै,
दोउ आछे उजरे है दोउ सोभा देत देवी,
दोउ आछे राखिये अपुने हाथमें गहे,
दोउ एक साथी है पै कदाचित लखन जो,
रहै तो रहेइ मोरु दात जो रहे रहै,
सभामांझ बैठि बडो मानस कहाइ जय,
दांत कढि दीने तब लखन कहां रहै ४

काहुके घरेहैं काग बेठो काइ काइ करे,
देवीदास वाहि वाकी मारिबो मनि धर्यो,
बोलनिमे सुदरीसौ कह्यो स्वाडो लाठ मेरो,
सनानि धनुप बान मार्यो यें छुकि कर्यो,
निधरक घाइ सवा बोल पर बेठ्यो रह्यो,
याहि खेचि तुका मार्यो मह्निमें गिर पर्यो,

गिरतमे काक कह्यौ हों तों सदा जीवतु हों,
जाको बोल मर्यो ताको तोल मर्यो सो मर्यो. ५

पंचन प्रतीत सांच सांचके समीप हरि,
सांचहीतें देव मन वांछ्छित करत हें;
सांचहीतें भगति मुगति होत साचहीतें,
देखो दीप देत आगि पानिन वरत हें;
सब पुण्य फल साच सांचको न आंच कहूं,
सांच विन सांचे जन चित न धरत हें,
साच लग्यो सांच देव अनुकूल औरु देवी,
धरमको मूल जहा साच आचरन हें. ६

झूठते सकल नेम धरम सुपुत्र हानी,
झूठतें संसार दुःखसिंधु ओ लियत हें;
झूठ वोले सभामाहि झूठि साख भेरे ताकों,
पित्रनिकों नरक किवार खोलियत हें,
इहि लोक पर लोक झूठेको नठोर कहूं,
झूठ साच कैसें एक संग तोलियत हें;
देवीदास कहें तीन ताप आपदाको मूल,
पापहिको मूल जहां झूठ वोलियत हें. ७

राजा हरिचंद्र हरि भांति करि राख्यौ देवी,—
दास वाके वदले विपति झुंड औडियौ;
चेरी याकी लछीसी सुजसु याको पूत दया,
दानमय देहु कछू चूकननि गोडियो,
विगर्यों न अंग कछु पातकू कियौ न जाति,
यांति ते उतर्यौं कछु चाहत न कौडियौ;
एरे या सपूते सहसाही काहे छांडत हो,
संत कहूं दुखनु लगाउ तव छोडियौ. ८

(**खल-सज्जनादि विविध वर्णन.**)

भले बुरे मानिसको पटंतरो देवीदास,
भांति भांतिको ये उष औरु सन देतु हे;
चारु आपकों छिलाइ खंड खंड है पिलाइ,
मार खाइ परिनाम रसको निकेतु हें;

अब सुनौ सन धनौ फूलि फलि धुदि फारि,
जरतें कढाय पर्यो पानीमें अचेतु हैं,
आपकों सराइ पुनि आपकों सराइ सठ,
निज नाम उपराइ परबध हेतु हैं १
भले बुरे मानिसको पटंतरो देवीदास,
दरजीकी सूई कहें अपेखीय देति हैं,
पैनो औरु अमरके गुन मांहि छेद पोरें,
आप गुनहीन तासों कहें नेति नेति हैं,
अब सुनों दुजें औरु दोरेकी भलाइ यह,
गेरलो चलाइ परि गुनसों समेति हैं,
ढिग ढिग दूरि दूरि नेह छेद पारे यह,
तेइ यह और करि पूरि पूरि ऐति हैं २
भूखे निकें भोजन थके निकु सु थानरूप,
आसरो निरासरेको निघरेको घर है,
ठोर है निठोहरकों आदर अनादरकों,
देवीदास एसे निको कीरति अमरु है,
मूल दल फूल फल नव फल पल्लवनि,
देह देत फसके न मानउ अजरु है,
ताती सीरी सम कीये सबहीकों सुख दिये,
तरुकि तरज लीये ते कल्पतरु है ३
पूरे कुल जनम निरोग है सरीर घर,
वैभव विसाल सुरसरी-तीर धाम हैं,
साहसी सुपुत्र सुखदाइक कुटुंब घर,
पतिव्रता नारि यह पूरों मन काम हैं,
रामजूकी भगति सकति दान देवैहीकी,
चाकर हुकुमकारी जाकों जस नाम हैं,
देवीदास एते गुन पाइये जगतमें तो,
सुनसान मुकतिको दूरसें प्रनाम हैं ४
तालस मिल्ति जगजीवनसों प्रीति राखें,
सीतल सुभाव देखें तीन तापकों नसें,

मित्रको उदय देखें फूलि उठे आछी भांति,
कोसहि धरेंहें सुभ वासना लीयें लसें,
देवीदास कहें उर संग्रह गुनको ग्रहें,
दंडको कठोर मधु मधुक लीयें रसें,
ऐसें कुल कमलके गुन होहि जाहां यहें,
निहचै हे तिहि छांडि कमला कहां वसें. ५

छोटे कुल जनम कुठोर वास देवीदास,
रोगिल सरीर दिन दुःखसो भरत हें;
दुःखदाता पुत धूत घरमा कलह खान,
करकसा नारि नेन देखत जरत हें;
पराधीन जीवतु अजस लोक पूरि रह्यों,
मुरख है हारें दोउ हरत परत हें;
ऐसेंको जनम देखें जग मांझ मेरे जान,
जनमके नरकमे साहिवी करत हें. ६

केतो जग जोग करी केतो सुख भोग करि,
केतो गुन रूप करि नामना कडाइ हें;
केतो दानशील ह्वेके जोरावर डील ह्वेके,
सूरशिर मोर हेके गीतन गवाइ है;
केतो जगपूज ह्वेके तप तेज पुंज ह्वेके,
इनिमेंते एकहू जसै न उपजाइ है;
जाइ ऐसे पूतहि सपूती भई तौ देवी,–
दास कहे कहौ वांझ कौनसी कहाई हे. ७

सजन कुलीन निकें पहिलें तौ कोप नाही,
कदाचित करे छिन एकमें परिहरे;
छिनेंमें न छूटे कौप काहे एक कारनतें,
तौ परि विरोधीके विकारेकों नहीं धरै;
देवीदास वडेनिकै कोपके फलकी बेर,
छोडिके विकार वैरीहूको सुखसों भरे;
वडेनिकी वै रुखकी बोलनि गरमरीसु,
नीचनिके नेहको बराबरी तऊ करै. ८

आरंभत जाहि बहु लोगानिसों मेरु होइ,
दुसरो करत जाहि धर्म ल्है रहे नहीं,
कहत कहत जाहि उपजें कलेस बहु,
फल एसौं लगें जासों पेटहू भरे नहीं,
अति छोटो काम जैसो कुलमें कीयो न होइ,
अतिहि दुरंत जाको पुरोही परे नहीं,
देषीदास जामें लाभ खरच बराबरीहिं,
बुद्धिवान व्हैके ऐसो कारज करे नहि ९

कूत्रम कुरूप करतार मेरें कदरज,
औजसके भाजन रु नास्ती तहालौं हे,
आवत गुनीही देखी कोरे पारि जाहि तारे,
जोरे नही डीठि तिनकों तो कबि काले हे,
उजरे उदार जिनें पाचनमें बेठनो हे,
जिसके निकेत और रसकौ रसाले हे,
रीझें बार बार मने मेरुकौं तिनुका गने,
देवीदास बेती कवि तिनिको मसालो है १०

होले नहीं घने घर बने सारदाके बर,
बाहनि सुघर खाल डारत उदारमें,
पहिले बडाइ देइ पीछे कछु लेइ फिरि,
जसका प्रकासैं तिहौ राखी करि हारमें,
पुराचीन पापनितें सुमस ल्वारानिमें,
जाइ परे कहैं कहा मूजे मना भारमें,
बेवीदास बेइ है बिकानै कविराजनिके,
आयु घरबारमें के राजदरबारमें ११

पेटकौ निपट सिंधु आखिनिनि आलजीली,
उरकौ गभीरु होइ महा मीठो मुखकौ,
गवांइकौ पगारु पुनि याइकौ आढिगु हौइ,
बौलनिकौ साचो देवीदास सूधे रुखकौ,
मनको उदार ढीलो हाथुकौ अकेली एक,
काहहीकौ गाठो हे सहीया दु ख सुख कौ,

पचिकें पितामहिने एसो कौ सिगार्यौं तब,
यातें कछु औरहू सिंगार है पुरुषकौ. १२

सुंदर सुघर मृदु आखर मधुरतर,
मनोहर मोदकर गुनसों समेति हें,
काहू कविराजकी आवाज हें अमृतरूप,
जामे भारी भारती कलोल मोल लेति हें;
ताहि सुन कर कहें हों तों मूढ समज्यो न,
निज दोष और मह देवेकों सचेति हें;
देवीदास जैसें ढीली चोली देखी सूकी नारी,–
हीकों तों न खोजे दरजीहि दोष देति हें. १३

(सवैया.)

वाहिर औरहि भीतर औरहि, वापकौ पूत न पूत है माकौ,
भीर परे नहि कोडिके कामको, अच्छर एक पढ्यौ जिहि ना कौ;
आस करी तें निरास भये देवी, नेक कर्यो निकस्यो तव आंको,
ठाकूरु तीकुरु जानत है, यह ठाकूर तौ निकस्यो मल माकौ. १

(प्रकीर्ण प्रबोध.)

लोभ सौ न औगुन पिसुनता सौ पातक न,
सांच सौ न पुन्य नांहि ईरषा सौ दहनौ;
सुचि सौ न तीर्थ सुजनता सौ सेवक न,
चाह सौ न रोगी तीन लोकमेंहें कहनौ;
धरम सौ सीत न दुरित जीव घातक सौ,
काम सौ प्रबल नांहि दत्त बु सौ लहनौ,
चिता सौ न साल देवीदास तीनो लोक कहै,
संतोष सौ सुख नांहि कीरति सौ गहनौ. १

पचे नहि भात दारि मूगहूंकी पचै नांहि,
पचै नहि मीसी रोटी पेट अहटाति है;
लवाके परे दूधहूसौ फूलि आवें पलकमें,
फुलका फलौरा पचें नांहि यह भाति है,
कढीहूके चाटे दौदि बढी है नदी समान,
देवीदास एकों पिल उदर न माहि है;

एसें मद भूल मांस देह रासिबेको एक,
प्रभुकी कृपातें भारी रीस पचि जाति है २
दाबिले बकार पांच, पांच पुनि चूकै मति,
छाडिदे चकार चारि चारिनिमे बसीयै,
छोडे मति च्है दकार, छोडिदे दकार सात,
तीनिमैं हिलिमिलि अतिही न गसीयै,
हह्हा चारि परिहरि तीनि हहा मानिलैं तूं,
मुल्कि मकार मांस कबहु न रसीयै,
देवीदास कीजे द्वै उकार ले भकार तीनि,
एकही नकार मास सारो गुनु नसीयै ३
भागु थाको थापु कर तूती महतारी मिलि,
बेटी भइ ताकी नामु जगमै बढाइ है,
पारी गुनी धारवनि, बुधि दूध पीपु देकै,
दिन दिन बडी देवीदास सुखदाइ है,
व्याहकी विचारु करि बडेनिकें देन गये,
बडे निके मन यह नेकहू न आइ है,
छोटे याहि चाहै तिने बडे न कबुल करै,
यातें जग माहि यह क्यारी एक माइ है ४
सपति गढिये छोडी रसोइ चढिये छोडी,
सुदरी मेढिये छोडी सुपनौ सौ कै गयौ,
बूढे पितु मात छोडे भाइ बिख्यात छोडे,
बेटा बिख्यात छोडे आपु निउपैं गयौ,
ठाडे दासी दास छोडे घोरा खात घास छोडे,
यार आस पास छोडे सबै दु ख दै गयौ,
देवीदास आपने ल्गे न कौऊ एकौ साथ,
देखौ बह आपने कीयेहि साथ ले गयो ५
उरग सुरग ह्वैके तुरंग कुरग ह्वैके,
कोल अजगर ह्वैकै थिर जग माइमें,
नाह रु व्युर ह्वैके न्यारे गीध कीर ह्वैके,
नीरचर ह्वैके नीठि नर जोनि पाइमें,

ताहू मांझ मुथ है सुबुद्धि सभासद हैके,
समझको इद हैके सबै सरसाइमें;
एक चिंतामनिके चरन चित लाग्यो नांहि,
देवीदास यहै वडी चूक चतुराइमें. ६

के तो देह पाइ धरे धरमके ऐसे पाइ,
आसन छिडाइ लेहि जातें पुरुहूतको;
कै तो करि उदिम अपार धन जोरि कोटि,
धूजी तूं कहाइ काम कर ले सपूतको;
कै तो मन कामना असेष सुख भोगवेकें,
मुकतिकों मिलें जहा मूल पाच भूतको,
इनमेंते एकहू न वनें तो जनम पाइ,
छेरीके गरको थान दूधको न मूतको. ७

दाताकी उदारताई सूमकी कृपनताई,
क्रोधकी तपनताई कहें कौ वखानि हें;
मागनकी हलुकाई गुनकी सुगमताई,
घोराकी तताइ ताहि कैसें उर आनि हें;
मीत मीले सीतलता मानकी रुखाई और,
वोलकी मिठाइ देवीदास सुखदानि हें;
कुचकी कठोरताई अधरकी मिष्टताई,
सुकविकी सरसाइ जानि हें सुजानि हें. ८

सांचकौ सरमको सरन आये पालककौ,
सरधाकौ धरमकौ औरांजसु चाल है;
सूरनिकौ सीलनिकौ औरु दान पुनिनकौ,
जननिकौ दयाकौ संतोषही निहाल है;
राजकौ रु तेजकौ भलाइको मिताइको रु,
भक्तिभाव भावनाकौ पति लीन वाल है;
देवीदास कहै देस हेत दीप दीप देखौ,
आज कलिकाल मांझ इनिकौ दुकाल है. ९

पंडित गुसांइ साऊ साहेब समर सूर,
सिरदार नीकी लोक लोकमें कढाइ है;

राजा राउ उमराउ राइजादे साहिजादे,
देसपति महिपति दौलति वढाइ है,
धनवारे पूतवारे सुंदरी सजूतवारे,
जिनि जाइ सागर लौं कीरति पढाइ है,
देवीदास येतो सब दुखहिके भाजन है,
ऊपर सुखकी नेंक कलइ चढाइ है १०

जो तू याही धौककी फिकरि करै तौ तू सुनि,
याकी चिंता चित ताहि तनकौ न धरनी,
पाछिलै करम तेरे तिनिहि बनाइ राखि,
सोई तोहि इच्छा आवे भोगवनी भरनी,
पूछि बेद चारि देखि मनमें बिचारि अब,
आवे सु कबूल करि नांहि क्यौंहु टरनी,
देवीदास जानि कहै यह पुरुषारथ है,
मानिसहि चिंता परलोकहिकि करनी ११

देवेते दरद नाहि दया जाहि मनमाहि,
नाना भाति तरुनको तूंहिवों सिंगार ह,
तूहि चिंतामनि और तूहि हे कल्पतरु,
और कौन ऐसो तीन लोकम उदार हैं,
गराजि गरव सार्यो औरतें लरजि पूरि,
धारनि सु धरनी कहू न वारुपार हें,
देवीदास कहें धन्य परजन्य देव जग,
जाइबेगो मेरे जान तेरे सिर भार हूं १२

करतार मारे जग आइके जनमहारि,
कौरनि परे हें धिक उनिके समाजकौ,
पीर न पराइ एक स्वारथ पराइ न ह,
पेटहीके चेरे जे गुमार्यो बीज लाजकौ,
एसो कोन बिरलो बिरिंचिने बनायो है जु,
पेटहू पराए काज लेतु नारि राजकौ,
आपनें उदर काजें पीबे बडबागि जोइ,
सोइ पानी पीवत पयोद परकाजकौ १३

(खल-सज्जन भेद.)

लाजकेसों जड कहे व्रतिकों कपटि कहे,
सुचिसुं कहत यहि जैसो दंभ लीनो है,
सुरसो निठुर कहे मतीहीन छमावंत,
कहे असमर्थ यह कैसो भय भीनो हे,
आपनेतो टेटराको देख्यो अनदेख्यो करे,
ओरनके फूलाको प्रकास करि दीनो है.
देवीदास कहे ऐसो कौन हे जु इनि मूढ.
दुर्जन जनन करि अंकित न कीनो हे. १

दावानल दारिदकी देह मांहे दौ लगे जो,
सोऊ तो संतोष वारि लेके सियराइये;
आपने अदृष्ट पर हाथ डारि बैठि रहे,
वाहि जाचि जाचि कोउ काहेको सताइये,
होई जब सज्जन समीप आइ बैठे लोग,
अतिथि निरास मागनोउ फिर जाइये,
तिनिकों धिकार सुनें काननिमें दौ लगे सु.
देवीदास कहे कहा काहेसों बुझाइये. २

पानीतें कमल भयो तातें कमलासनस.
कमलासनतें जग हे तुहि दिखाइको,
तीन लोक लोकनाथ विश्वंभर महद् बिज,
ताकों मूल पानी जीव जातिके सहाइको
तासों वडो हे कें कोउ ऐसो काम करे ऐसो,
काहें झख मारें लहे पीर न पराइको,
जालमें बंधाइ सरनागतिनि जात भयो,
धिक तोय तोकों तेरी इतनी वडाइको. ३

बहिरेके आगे बीन बजाइबों एक ओर.
आंधरेकु आरसी दिखाइबो किने करौ;
ऊसरमें चारि मास बरसिबो करौ क्यों न,
स्वान पूछि सूति कै सुधारि सुधीके धरौ;
मूरखके आगे एसे गुनकों प्रकासि बांदि,
रचि रचिके बनाउ पचिय चिकें मरौ;

देवी यों कबुल है जु पाले हूतौ परो परो,
मूरखके पाले परि कबहू जिने परी ४
आरत गुमान करें दारीदी व्है घेंसे घरें,
सुखी ओरें अनुसरें एसे मूढ और हें,
मानी व्है प्रपच राचें संसारी गिनें न पाचे,
राजा व्है कृपनताकें सूम सिर मौर हें,
गनिका कुरूप धनुवान व्है फकीरी धरु,
माधिके सिथिल भयो राति दिन जोर हें,
जगमें जो वसीयों तो हसीयों न कोउ देवी,
हस्योइ जो चाहोतो ये हसिबेको ठोर हें ५
बार बार मोहोत जतन कीय बालुहमें,
पीलेतें परम कष्टें तेल पुनि पावेगो,
काहु एक काल करि कोउ एक केहू फेर,
मरुकी मरीचिकामें प्यासहि बुझावेगो,
पुहुंमी पहार परि पुरन पर्यटनतें,
कदाचित सोधिके ससाको मिग ल्यावेगो,
देवीदास कहें ऐसो तीन लोग कोहें नहि,
केहूं किहू भाति करि मूर्ख समझावेगो ६
तजे राजनीतें करे गाजत अनीतें भारे,
भागत अनीतें घरुनीते जीतयाये है,
मांगने बुलावे नाहि मांगेने बुलावें अरु,
भागने खुलावे खाइ तेई मन भाये है,
रीझत नों रिझाए मुरझायें सुहुखि ऊठे,
जानत न दाए देवी जानतपै दाये हें,
राजा राइ राने गुन गानें वौ न मानें मागे,
सब तेज मानें अब ते जमाने आए है ७

(विधि–भाग्य–संतोष)

जो कछु विधिने लिख्यो करिके लिलाट पाट,
ताहि परि आपनो अमल आप करिलें,
सौनैके सुमेरु भावे मारुवारु मांहि जानि,
घटे बढे नांहि यह निहचैमे धरिले,

देवीदास कहे जोइ होनहार सोइ व्है हे,
मनमें संतोप रेन दिन अनुसरिले;
वापी सर सरिता भरे हे सात सागरपें,
तूं तो तेरे वासन समान पानि भरिले. १

कौन दिन कमल बुलावतु है भोरनको,
रूखन पंखेरु निकौ वे जु मंड रात है;
सारस बुलाए कबु कहोधौं सरोवरने,
सरितानि छांडिये जु उहोइ समात हैं;
चंद्रमाकी प्रिती कबु आइहि चकोरनिकौ,
घनके बुलाये बिन चातक चिचात है;
देवीदास कहै त्यौ सुकवि गुनी लोग ये तौ,
उनी मोह जांहि कछु देखे तांहि जात है. २

देवीसहाय.

(शिव-काशी माहात्म्य.)

शिव कहो शंभु कहो, शिवपति ईश कहो,
गौरीनाथ शंकरको सुमिरत रहु रे;
हर कहो शूली कहो, मनमें महेश कहो,
काशीविश्वनाथ कहो केते सुख लहू रे;
गिरिको विहारी कहो, गंगा शिशधारी कहो,
विपको अहारी कहो, यही गाढे गहू रे;
काशीजीको वासी कहो, सुखको निवासी कहो,
तीनो ताप नासी अविनाशी क्यों न कहू रे. १

एरे मतिमंद क्यौ न त्यागि द्वंद फंद सबै,
सेवत स्वच्छंद है अनंदकी सु राशी है;
काटै मोह फांस औ छुटावै यमत्रासहूते,
सुखको निवास करै ज्ञानकी प्रकाशी है;
महिमा महेश काहि पावै ना हिरण्यगर्भ,
अघ ओघ नाशी बसै यामै अविनाशी है;
अर्थ धर्म काम मोक्ष चारौको विकाशी यह,
कलिमें सुकामनाकी कामधेनु काशी है. २

द्विजराम.

(स्वाद,मध्य,दोष ३)

यशको सवाद जोपें सुनौ कवि आननसा,
रसको सवाद जोपें औरकों पिवाइये,
जीमको सवाद मूरो बोलिये न काहू कहुं,
देहको सवाद जो निरोग देह पाइये,
घरको सवाद घरनीके मन भाये रहे,
धनको सवाद शीश नीचेकों नमाइये,
कहे द्विजराम नर जानिके अजान होत,
खैबेको सवाद जोपें औरकों खवाइये १

कचनमें यही दोष बासना न धरी जोंमें,
कस्तुरीमें यही दोष रगहू न पाइयो,
रामहीमें यही दोष मृगको शिकार कीनो,
रावनमें यही दोष सीता हर ल्याइयो,
इन्द्रहीमें यही दोष गौतम घर गौन कीनौ,
अहल्यामें यही दोष चन्द्रमा बुलाइयो,
कहत कवि द्विजराम बिना दोष कोऊ नहिं,
एक एक दोष प्रभु सबमें लगाइयो २

डारि नील अंबर पीतंबर पहरि लाल,
कछनी कछनि सीस मुकुट धरति हे,
चदन चढाइ बनमाल उर लाइ हसि,
बासुरी बजाइ धाइ गाइमें परति हे,
कबहूक सुबल श्रीदाम नाम ले ले टेरे,
कहे द्विजराम आठो जाम यो भरति हे,
बिहरति बावरी व्है बिरह बिकल बाल,
न कल परति यातें नकल करति हे ३

धनीराम.

(विधिदोष-कविगौरव.)

अनल शिखामें करी धूम मलिनाइ तेसे,
आवरन कारको विमल वारी वटमें;
कोमल कमलनाल कटक निहारो कीनो,
जलनिधि खारो सो तिहारो भुमि तटमें;
वेन सुने जगत कुवोली ठहरैहे धनी,—
राम कोऊ काहूको न जानी शके मरमें;
बंक विधि बुद्धिको निशंक कहियत कान्ह,
पक कीने सरानि कलंक सुधाधरमें. १

सगनके भाले उर कटत हे साले सदा,
औधि जिन पाले जे न ओटचोट चीन्हे हे;
रगनके वान छूटे आनन कमान प्रान,
घातक जगत जमदाढ वाढ कीने हे;
धनीराम तगनकी तीखी तरवार जिने,
लीने फिरे देश देश निधरक कीने हे;
मनमे विचारी मूम शत्रुनके मारिवेको,
कालिमोहि गुपत ह'थार चार दीने हे २

द्रोण.

(हास्यरस-सवैया.)

शीशके भूपण भूमि परे, कटि सातकी वीरके वानके मोर,
द्रोन कहे हँसिके कुरुराज जू, आय भले कर मुंड उघोरे,
बीजको बोवत पूत दुशासन, जान्यो नहिं फल लागि हे खारे,
जो प्रिय होइसो जाहिर कीजिये, पाग मंगावोकि चूनरी प्यारे १

द्रोन कहे भ्रुकुटि वरि बंक, भये सुत कायर मंगल गावे,
राज सभा विच नाहररूप रु, काम परे पर स्यार कहावे,
क्यों तुमसें नृप सूत दुशासन, गाल बजाय के वीरता पावे,
सत्यकितें वचे जन्म नयो भयो, सूप वजावे कि थाल वजावे. २

धर्मधुरंधर.

(भाग-भाग)

खानेको भग नहानेको गग, चढेको तुरंग ओढेको दुसाला,
धर्मधुरंधर औ महिपी, पतिदार झूले गजयूथक हाथ्या,
पान पुराल सोहागिनि सुदरि, गोद विराजत सुदर माला,
दो मंह दीजियें एक दयानिधि तो, मृगनैनी कि दो मृगछाला १

धर्मसिंह.

(नागरोक्ति)

खोदि कुदाल चढाइके रासभ, ऐ पुटकी छटकी जलधारे,
लातन मारके चाक चढायके, डोरिकी फांसि दे देह उतारे,
मारि टिपेल जराय है आगिमें, तोमि लगाइन टाकर मारे,
यों धमसी सिगरी गगरी कहे, कोउ न पारकी पीर बिचारे १

धुरधर.

(प्रेम पीडा)

लगनि लगाय बिन कपटी दीपक जैसो,
प्यारे करि डारत जले पतग देहतें,
छोडि छहो रितुके विलास आश वाहिकी सु,
नेकहू न टारत पपीहा मन मेहतें,
सुकवि धुरंधर चकोर नित चदके सु,
रहे वनवासी व्है उदासी ज्ञाति गेहतें,
प्रेमिनकी दशा प्रेमवंतही जु जान व्है हृ,
जेतो होत दु ख तेतो सुख न सनेहतें १

ध्रुवदास.

(राधिका छवि)

रूप रसीली हसीली छबीली, रगीली रंगीलेके प्राणतें प्यारी,
सालें सुरंग सु नेन विशालनि, शोभित अजन रेख अन्यारी,
महा मृदु बोलनी मोतिकी डोलनी, मोल ल्ये ध्रुव कुंजविहारी,
रहें सुख पावन और सुहाय, भये बस नेहकै देह विसारी १

राधिका वल्लभ लालकी प्यारी, सखीनुके प्रान महा सुकुमारी,
रूपकि वेलि फली फल फूल, मनोज उरोज भरे रस भारी;
पत्र लावन्य हरे भरे रंग रु, जोवन मौजनियां निप न्यारी,
प्रीतम नेनन चेन तऊ तिहि देखतही ध्रुव वाढे तृपारी. २
भिंजी नवेलि चमेलि फुलेलसों, फूलनके पट भूपन सोहै,
लोइन वंक विशाद सचिक्कन, अंजनकी छवि प्राननि मोहै;
रूप तरंगनि पानिप अंगनि, प्यारि सखी ललितादिक जो है,
भूलि रही ध्रुव तौ छवि श्री अरु, मोहनी मेनकी नारियौं को है. ३

(कवित्त.)

सोनेतें सुरंग गोरी सोंधेतें सुवास अति,
मृदुताइ पर वारों जेतक सुमनरी;
रूपहीको रूप जगमगत सकल वन,
आरसीको आरसी लगत ऐसौ तरी;
फैलि रही छवि प्रभा जहांलों विराजे सभा,
हित ध्रुव चिते लाल भये है मगनरी;
प्राननकी प्रान मेरी नैननकी नैन राधा,
रीझि रीझि वार वार कहे छै चरनही. १

रूपकीसी फूलवारी फूलि रही सुकुमारी,
अंग अंगना नारंग नवल निहारहीं;
नैन कर कमल अधर हे वंधूक मानों,
दसन डलक पर कुंद वारि डारहीं;
बैदी लाल हैं गुलाल नासिक सुवर्ण फूल,
मोती वने जहां जहां जुहीसी विचारहीं,
छविहीके खंजन रसाल नेन प्रीतमके,
खेले तहां ध्रुव चितें सखी प्रान वारही. २

अलबेली चितवनि मुसकनि अलबेली,
अलवेली चलनि ललन मन हर्यो है;
वृंदावन मंही सब भई छवि मई आली,
पग पग परमानों रूप डरि पर्यो है,
कनक बरन भये पत्र फल द्रुमनके,
आभा तन रही छाय कुंदनसो ठर्यो है;

हित ध्रुव ऐसी भांति उलफत तनकांति,
चितवत पिय चित्त नेकहु न टर्यो है ३

बड़े बड़े ऊजल सुरंग अनियारे नेना,
अजनकी रेख हेरें हियरो सिरात है,
चपलाई खजनकी अरुनाई कजनकी,
उजराई मोतनकी पानि पल जात है,
सरस सलज नचे रहत हे प्रेम रचे,
चचलन अंचलमें फैसेंहु समात है,
हित ध्रुव चितवनि छटा जेंहि फोद परे,
तेही पार वरपासी रूपकी व्है जात है ४

सुरंग कसुभी सारी पहेरे रंगीली प्यारी,
आली अलबेली घने रग माहि ठाढी है,
केसरी सुरंग भीनी सोंधे सगवगी कीनी,
सोहे उर अंगिया कसनि अति गाढी है,
फैली रही अरुनाई तैसी ध्रुव तरुनाई,
मानो अनुराग रूपमें झकोरि काढी है,
चदन छलक पर परी हे अलक आय,
देख पिय नेन निठ लाक अति वाढी है ५

कचनके वरन चरन मृदु प्यारीजूके,
जावक सुरंग रग मनहि हरत है,
हित ध्रुव रही कवि सुमिर जे हरि छवि,
नूपुर रतन खचे दीपसे वरत है,
रीझि रीझि सुदर कहन पर पदु धरे,
आरसीसी लिय लाल ऐखिवो करत है,
नख मनि प्रभा प्रतिबिंब झलमले आय,
चदनके जूथ मानों पाइन परत है ६

रूपवन प्यारी तन मही हे जोवन तहा,
सहज हरित ताई पानिप अनंगरी,
दसन झलक हरे छविके सुरंग फूल,
मेंन सुख फल मानों उरज रतगरी,

अंग अंग माधुरी श्रवत मकरंद मानों,
भुज रस वेलि नख पल्लव सुरंगरी;
हित ध्रुव तिहि मधि राजे नाभि सरवर,
क्रीडे तहां पिय मन मदको मतंगरी. ७

अलबेली सुकुमारी नैननके आगें रहे,
तब लग प्रीतमके प्रान रहे तनमें;
यह जानी जिय प्यारी रंचको न होत न्यारी,
तिनेहीके प्रेमरंग रंग रही मनमें;
परम प्रबीन गोरी हावभावमें किसोरी,
नये नये छबीके तरग उठे छनमें;
हित ध्रुव प्रीतमके नेन मीन रस लीन,
खेलिवो करत दिनप्रति रूप वनमें. ८

नथुराम.

(शिवस्तुति-छप्पय.)

अंबक तीन बिशाल, भाल मधि रह्यो हिमंकर;
देवधुनी शिर बहे, कण्ठ बिष महा भयंकर;
मुण्डमाल गल धरी, भव्य वपु है भस्मी भर;
वाम अंग नगसुता, बहुत लपटाये बिषधर,
वाघम्बर गजचर्म अरु, त्रिशूल डाक डमरू धरे,
नथुराम घोर धुनि भेरकै, गन सब हर हर हर करे. १

इते हिमंकर भाल, उते अच्छत शुभ चर्चिय;
इते सु अंबक रक्त, उते बिन्दी अरुन रचिय;
इते हलाहल कण्ठ, उते मृगमद सुशोभित;
इते जटामधि गङ्ग, उते मुकता मनलोभित;
वाघम्वर गजचर्म इत, उत नीलाम्बर तन धरे,
यह छबिसो नथुराम नित, साम्ब शिवा मो मन ठरे. २

इते सुपन्नग पान, उते भूखन नग धरिय,
इते सुवाहन वेल, उते स्वारी हरि करिय;

जटाजूट है इते, उते है वेनी उरग सम,
इते सुताण्डव नृत्य, उते शुभ लास्य अनूपन,
इते सुगाजा भग है, उते आसव प्याले भरे,
यह छविसों नथुराम नित, साम्ब शिवा मो मन ठरे ३

कवि–भक्तिभाव

शीत रु मंद सुगन्धी समीर, रहे परसे तनको मुद छाकर,
शम्बके शब्द अती गहरे, छहरे गिरिकंदरतें रहे धाकर,
त्यों नथुराम सु ध्यानकी धुनि, आपके छाय रहे श्रुति ऊपर,
हे शिव हे शिव हे शिव यों भनी, काल व्यतीत करु कब मैं घर १
धाय घसों नगके पगमें, सु सरीनके तीर तमालनके तर,
स्वच्छ शिलापर बैठि अहोनिश, ध्यान धरुं मृगसालनकुं धर,
त्यों नथुराम सुकुम्भक पूरक, रेचककी गतिको नित आदर,
हे शिव हे शिव हे शिव यों भनी, काल व्यतीत करु कब मैं वर २
कुंडलीनीकुं जगावु जबे, परिपूरन भक्तिक कुंभकयु कर,
पूर्ण पीलावु पीयूप तिन्हे, भक्षर घन भेज अनद उरे घर,
त्यों नथुराम मिलो खट देवन, पंथ सुशुमणको शुभ पाकर,
हे शिव हे शिव हे शिव यों भनी, काल व्यतीत करु कब मैं घर ३
धारुँ सिंघासन स्वच्छ बनी, सब दृष्टि विकारन दोष दुरें धर,
रुंधन प्रानहुको करुं पूर्न, अपाननकी गतिको सुफिरा कर,
भेटुं जबे खट चक्रनको, नथुराम सुतेजमें तेज मिलाकर,
हे शिव हे शिव हे शिव यो भनी, काल व्यतीत करु कब मैं वर ४

नरहर

(अकबरशाहको अरज–कुंडलिया)

नरहर घरहर क्यों करे, जननि सुतहिं विष देय,
चार जो खेतहिं हठ चरैं, साहु परधन लेय,
साह परधन लेय, नाव करिया गहि बोरैं,
जे पाहरु ते चोर, प्रीत प्रीतम हठि तोरें,

नृपति प्रजहि दुःख देय, कौन समरथ कर धर हर,
छितिपति अक्कबरशाह, सुनौ विनती कर नरहर. १

गो प्रार्थना.

(छप्पय.)

अरिहु दंत तृण धरे, ताहि मारत न सबल कोइ,
हम संतत तृण चरे, वचन उच्चरहि दीन होइ,
अमृत पय नित स्रवहिं, वच्छ महि थंभन जावे,
हिंदुहि मधुर न देहि, कटुक तुरकहि न पियावे;
कहत नरहरि अकबर सुनो, विनवत गउ जोरे करन,
अपराध कोन मोहि मारियत, मुयहु चाम सेवइ चरन. १

(परमात्माका आधार-छप्पय.)

भूमि परत अवतरत, करत बालक विनोद रस,
पुनि जोवन मदमत्त, तत्व इंद्रि अनंग वस;
विषय हेतु जड फिरत, बहुरि पहुच्यो वृद्धापन,
गयौ जन्म गुन गनत, अंत कछु भयो न आपन,
थिर रहत न कोऊ नरपति, एक रहत जुग च्यार जस,
(सोई) अजर अमर नरहर निरखि, जपत भक्ति भगवंत रस. १

न कछु क्रिया विन विप्र, न कछु कायर जिय छत्री,
न कछु नीति विन नृपति, न कछु अच्छर विन मंत्री.
न कछु वाम विन धाम, न कछु विन गथ गुरुवाइ.
न कछु कपटको हेत, न कछु सुख आपवडाई;
न कछु दान सन्मान विन, न कछु सुभोजन जास दिन,
जन सुनो सकल नरहर कहत, न कछु जन्म हरिभक्ति विन. २

सर सर हंस न होत, वाज गजराज न दर दर,
तर तर सुफल न होत, नार पतिव्रता न घर घर,
तन तन सुमति न होत, मोति जल बूंद न घन घन,
फन फन मनि नहि होत, मलयज होत न वन वन,
रन रन शूर न होत है, जन जन होत न भक्ति हर,
नरहर कवि सुकवित्त किय, सर्व न होई एक सर. ३

(कवित्त.)

कोपे रघुनाथ जब धनुष चढायो हाथ,
दच्छन भुजासें वाम, बोल्यो रोष भरकें,

दाननमें माननमें भोजनमें आगें होत,
गाढे रन बीच पीठ, देत अरी डरकें,
दच्छन भनत ऐसें, लच्छन न मेरे पास,
गुजहूकी बात जाय, पूछतहु हरसें,
शंकरकी आशिषसों, दशाननके दशों शीश,
एक बेर तोरं के एक एक करकें १

नरराय.

(बिहारी दुहा प्रशंसा)

सुनेतें सरस लागे, पढेतें हृदय जागे,
भवके तिमिर भागे, ऐसो वाको तत्र है,
जोगिनको जोग घटे, बिजोगीको दिन कटे,
भोगी दिन रात रटे, मानो बीसो जत्र है,
पंडितको दे बिश्वास, मूरखको देत हास,
मानहू मजीठ पास, अरथको अंत है,
कहे कवि नरराय, छिनहू न छोड्यो जाय,
दोहरो बिहारीको सिहारीको सो मैंत्र है १

नरसिंगदास भाणजी, कुतिआणा

(उपासना-अमृतध्वनि)

जय जय जगधर नटवर नगधर
नमत अमर वर तवपद कर धर
पदपर पत्रधर कर यक कट धर
नचत लच्छन सह करत रहस वर
भव अज गनपत रटत अमरपत
जगमह हरकत रहत शरणतर
प्रणय रदय घर अमय अमय कर
नरहर मनखग तवपद मनसर १

(प्रसन्नता-घनाक्षरी.)

राजा जब रीझे तब, देवें धन धाम गाम,
श्रीमतके रीझवेतें, विपुल धन पावे है;
बनीक जब रीझे तब, हसे और देवे ताल,
योगीओंके रीझवे सों, मुक्तिद्वार जावे है;
नारी जब रीझे तब, बुद्धि बल तेज हरे,
कोविदकी करुना हो, तत्व सों अघावे है;
नरसिंग नारायन, कृपा भव पार करे,
कबि जब रीझे तब, सुज्जन जश गावे है. १

(कवि अरु वायस.)

कवियनकी बानीकों, चाहत चतुर नर,
वानी सुन कौवनकी, काहेकों दुखात हे;
कवियनकी बानीमें, चाहिये बिचार अति;
दग्ध बरन कुगन करत उतपात हे;
तदपि न लेश क्लेश, मानत कोविद नृप,
देत धन धाम गाम प्रेम सरसात हे;
कहो कौवा श्याम जासों आदर न पावत हे,
मृगमद रु कोकीलकी श्यामता विख्यात हे. १

कंज–कल–कोक–काग–कांचन–कपुर–काम,
कोविद–कृपालु–कवि–कन्या मनात हे;
मानत शकुन शुभ, सज्जन मिलाप जानि,
बाल युवा वृद्ध सबें, मनमें हरखात हे;
श्राद्ध पाख कागनसों, तृप्त होत पितृदेव,
काग द्विजराज सदा, रामयश गात हे;
बिनती सुन कवेकी, कहे नरसिंगदास,
कवि कर्णप्रिय बानी, तेरी कर्ण खात हे. २

(उत्प्रेक्षा पादपूर्ति-सवैया.)

मंजन मंजु मनोहर अंगनिपें करिकै मुदमें मन छायो,
अंबर धारि अनूपम बालसु भूषन भार विभाति बनायो;
अंजन दे द्रग वेनि गुही शिर भूषन यों उपमा बर पायो,
दास नृसिंग कहे यह मानहु मेंडक जाय भुजंग दबायो. १

एक समे हरि कौतुक हेत, सुमोहिनिरूप अनूप बनायो,
त्यों कल गायन नाच मनोहर, कों करिके हर हिय लुभायो,
काम बिकार विहीन दिगंबर के मन काम विमोह बढायो,
दास नृसिंग कहे यह मानहु, मेंडक जाय भुजंग दबायो २
सुंदर नारि सुसाज सिंगारनि, दीपति दिव्य सुअंग सुहाये,
रश्मि प्रभा मनि लाल ललाम सु, टीको जटीत महा छबि छाये,
प्रेम पतीमन पूंज बढावन, भाल बिसालनेपेहि लगाये,
यों मुखकी सुखमा भइ मानहु, चंदकु देखके सूर छिपाये ३

(धनाक्षरी)

पढि पढि पंडित प्रविणहु भयो तो कहा,
विनय विवेकयुत जोपें ज्ञान आयो ना,
सहस धनद सम धनिक भयो तो कहा,
दान करी जोपें निज हाथ यश छायो ना,
गरजि गरजि घनघोरनि किये तो कहा,
कहे नरसिंग नीर, चातक मुख नायो ना,
अमलको पाय अमलदार भयो तो कहा,
अमलके अमलमें रंक अपनायो ना १

नरोत्तम

(श्रीकृष्ण, सुदामादि प्रसंग)

तें तो कही नीकी सुन बात हितहीकी यह,
रीति मित्रईकी नित प्रीत सरसाइये,
चित्तके मिलेतें चित चाहिये परस्पर,
मित्रके जो जेंइये ता आपहू जिमाइये,
वे है महाराज जोरि बैठत समाज भुप,
तहां यह रूप जाय कहा सकुचाइये,
दुख सुख सब दिन काटेही बनेगो भूल,
विपति परेपे द्वार मित्रके न जाइये १
लोचन कमल दुखमोचन तिलक भाल,
श्रवणन कुंडल मुकुट धरे हाथ है,

ओढ पीत वसन गलेम वैजयंती माल,
शंख चक्र गदा और पद्म लिये हाथ हे;
कहत नरोत्तम सदीपन गुरुके पास,
तुमही कहत हम पढे एक साथ हे;
द्वारिकाके गये हारि दारिद हरेंगे पिय,
द्वारिकाके नाथ वे अनाथनके नाथ हे. २

दृष्टि चक चौंधि गई देखत सुवरनमयी,
एकतें सरस एक द्वारिकाके भौन हे;
पूछें विन कोउ काहूसें न करे वात जहां,
देवतासे वेठे सव साधि साधि मौन हे;
देखत सुदामा धाय पुरजन गहे पाय,
कृपा करी कहो कहां कीने विप्र गौन हे;
धीरज अधीरके हरन पर पीरनके,
वताओ वलवीरके महल कहां कौन हे. ३

छांडी अनुराग विराग मेरे कोन करे,
कोन करे जाग कोन आतमा सताई हे;
सु कवि नरोत्तम कहाइ हे जु दीनवंधु,
सवकी वनाइ हे सो मेरी ओ वनाई हे;
देख्यो चतुराननन पेख्यो पच आननन,
लेख्यो जो षडाननन ताहिको वताईये;
को कटे उपाधि पंच तत्वकी समाधि साधी,
सहज समाधिमें जो आई हे तो आई हे. ४

(सुदामास्वरूप इ.)

शीश पगा न झगा तनमें, प्रभु जाने को आहि वसै कदि ग्रामा,
धोति फटीसी लटी दुपटी, अरु पांव उपायनहूकी न सामा;
द्वार खडो द्विज दुर्वल देखि, रह्यो चकिसो वसुधा अभिरामा,
दीनदयालुको पूछत नाम, वतावत आपनो नाम सुदामा १

एसे विहाल विवायनसों भये कंटक जाल लगे पुनि जोये,
हाय महा दुख पायो सखा, तुम आये इतेन किते दिन खोये;
देखि सुदामाकि दीनदशा, करुणा करिके करुणानिधि रोये,
पानि परातको हाथ छुयो नहि, नेननके जलसों पग धोये. २

आगे चना गुरु मातु दिये ते, लिये तुम चावि हमे नहि दीने,
स्याम कही मुसकाय सुदामासों, चोरिकी बानिम हो जु प्रवीने,
गांठरि कासमे चापि रहे तुम, खोल्त नाहिं सुधारम भीने,
पाछिली बानि अजो न तजी तुम, वैसेहि भाभिके तंदुल कीने ३
द्वारिका जाहुजु द्वारिका जाहुजु, आठहु याम यही झक तेरे,
जो न कहा करिये तो बडो दुख, पैहो कहा अपनी गति हेरे,
द्वार खडे प्रभुके छडिया तंह, भुपति जान न पावत नेरे,
पाच सुपारि तो देखु विचारिके, भेटको चारि न चाउर मेरे ४

नवनीत.

(प्रीति महिमा)

दे दिउ ये दिव्यदारहिकों फिर, ये दिउ होय मने मन भाने,
त्यों नवनीत वही उर ध्यान, वही गुनगान वही तन प्राने,
या बिन और न कोउ हितु जिहि, की चरचा कविराज वखाने,
जाने कहा जग जाहिरसें पर, प्रीतकी रीति रंगीलोइ जाने १
रीत यहे कुल कोविदकी मन, एक रहे नित निन्य प्रतीको,
त्या नवनीत नई चित चाह, उचाट मनोरथ वेग नदीको,
पाय वियोग बढे उर हेत, निकेत यहे जग जीवन जीको,
मो मनमें परतीत यहे इक, प्रीति बिना सिगरो जग फीको २
अव साधि वियोगकी घोर समाधि, अनाहद शब्द अनगसो है,
नवनीत तहां हदके तट सुंदर, मोह कुटी मृदु कगसो है,
शुचि यन्कल पेरे जवे हितके, गमकी गुदरी तन संगसो है,
जिनके तन प्रीतको रंग चढ्यो, फिर जोगको रग पतंगसो है ३
कारे करारे ठरारे महा चहु, ओर छये घन घूम घरारे,
जारे सवे विरहीनके जीव, चढे तरु पीवही पीव पुकारे,
न्यारे भये नवनीतसों हाय, रिसाय अजो उर लाय विचारे,
प्यारे तिहारे निहारे बिना, दिन रेन चुचावत नैन हमारे ४
लाग बुरी इन लोगनकी, मनके ल्यागें तन होत हें झूरो,
त्यों नवनीत नई चित चाह, अथाह सनेह चहूं दिशि रूरो,

क्यों उझरेगे भरे घट ज्यों, झलके छिनकों नव नेह अधूरो,
बात खुले दरदीकी जबें, दरदीको मिले दरदी कोउ पूरो. ५

(प्रेमरंग प्रभाव.)

प्रीत पंथ गहिवे सु लहियें संजोग सुख,
रावरे विजोग दुख पान भजिवो कहा;
नवनीत एक प्रान जीवन सुजानहीसों,
सुख सरसाय हाय फेर लजिवो कहा;
विदित जहान बदनामकी बजी तो भेरि,
हेरि दग देखतकों फेर बजिवो कहा;
याती रंग काहूके न रंगिये प्रवीन प्यारे,
रंग तो रंगेही रहे फेर तजिवो कहा. १

नागर

(नेह निरूपण.)

नागर वेद पुरान पढ्यो सब, वादके कीनी कहू मति पागुरी,
गंग औ गोमती न्हात फिर्यो अति, सीतसें प्रीतसों हाथ ले कांगुरी;
गल्की न्हाय गोदावरी न्हायो सु, त्यागि दे अन्न रु खावत सांगुरी,
औरहु न्हायो सु में न बदी जोपें, नेह नदीमें न दी पग आंगुरी. १

(नेह निभावन-प्रीतिरीति.)

गहिवो अकाश अरु लहिवो अथाह थाह,
अति विकराल काल व्यालही खिलाइवो;
शेल समशेर धार सहिवो प्रहार वान,
गज मृगराज ले हथेरिन लराइवो;
गिरितें गिरन तन ज्वालमें जरन पुनि,
काशीमें करौत तन हीममें गराइवो;
पीवो विष विषम कबूल कवि नागरपें,
कठिन कराल एक नेहको निवाहवो. १

रावरी ये अंखियां छुधित अब धीरी भई,
सीरी भई लगन दवागिनकी दाहवा;
आंचनि गलीमें नित नैनन मिलवन औ,
मंद मुसकावनकी किते गइ चाहवा;

नागर नवीननके कपट कल्पवृक्ष,
कहाधौं दुराई प्यारे उमंग उमाहवा,
पहिले प्रगट प्रीति कीनी तुम कानाकानी,
दई अब आनाकानी वाहवाजी वाहवा २

(प्रथमदर्शन नायकाछवि)

व्है गयो अचानक उजास वन गहवरमें,
घेरी आये पंछी मृग मूटे गौन गेहरी,
छाई गई सौरभ अघाय चलि अलिसेनी,
नाच उठे मोर महा आनद अछेहरी,
आगमके होतही ध्यानमें निहारी कोऊ,
नागरि बरसि गई रूपकोसो मेहरी,
कहा जानु को नहीं कहांते आई किते गई,
घनसें वसन तामें दामिनीसी देहरी १

(नारीकथम हानि)

केकैके कहेते उदगल अमंगल भो,
दशरथ प्रान देके ऊर्ध लोकको गयो,
मथुरीके कहेतें जु सर्वस गमायो शनि,
ताको अपवाद सदा लोकनमें व्हे गयो,
जानकीके कहेते गयो है उठि देवरजु,
भये विन भाभी दशकंध हरी ले गयो,
नागर निपट कथा जगमें उजागर हे,
नारिनके कहे कहो कौनको भलो भयो १

(खटमल मच्छर)

हाथी फेरे छातीपर मुग्गर रूंदे अग,
केतक उपाय किये कोउ एक लागे ना,
याहुतें अधिक श्रम क्यों न करो दशकंध,
अनुजके अतरतें निद्रा नेक भागे ना,
कहि आये नागर जे आपकाज महा काज,
यातें काज कीजे उठि और जिय पागे ना,
वेग लेके आइयेजू खटमल खाटनतें,
खटमल काटे विन कुमकर्ण जागे ना १

सुनीही कहावत सो सांची कीनी **मच्छरन,**
छोटे इत खोटे महा दशन कराल है,
सूइनकी शिन्हेकि विपके फुहारे परे,
किधो ले एके वचको करे तन लाल है,
सुरनर नागर ये सबे नाक आये तन,
काटि काटि खाये भये निपट विहाल है,
विष्णु दुरे जलमांझ ब्रह्मा कौल नाल मधि
महादेव हारि मानो ओढि गजखाल है. २

नाथ.

(जानकीहरन हानि.)

प्यारी नारी आनकी अनारी जन ठान चाहे,
आनकी है बताये कुठारी निरवानकी;
ये मति न दानकी है गतिहू अजानकी ह,
छोटी खोटी वानकी है लति पतितानकी;
जानकी कुचाल नाथ जानकी जवाल लाये,
वह भक्ति ध्यानकी है शक्ति भगवानकी;
कहे तिय मेरी वात ज्ञानकी है ध्यानकी है,
जानकी न लाये हो निशानी घर जानकी. १
गम खैहो सारी वात नाम खैहौ निज वात,
पैहो केतौ उतपात सैहो निज हानकी,
लैहो नहि दड मोहि अष्ट सिद्धि नवो निद्धि,
देव पदहूते ना उछैहौ प्रनठानकी;
सकल गवैहो चीज पछितैहो करमीज,
नाथ ना कहैहौ खीज पैन पैज जानकी,
सबे सिंधुमें वहैहौ सारी हान लैहो फरे,
जान देहौ जानपे न जान देहौ जानकी. २
पतिनी कहत यातु धान पतिनीकी वात,
पति पति राखौ लति छाडौ पतितानकी;
सानकी न बात जैहै अवसानकी सऽहैहै,
जान देहु अभिमान घात दुखखानकी;

मेरे अरमानकी पुजेये आस सुख रास,
नाथ ये निदानकी है मात तुव ध्यानकी,
मुगति ति दान की है उन्नति सुमान की है,
जानकी दिये विना कुशल नाहि जानकी ३

(प्रिया कटाक्ष)

हरि जैसें भाउवारी हरि जैसें घाववारी,
हरि जैसी चालवारी हरिकी कटारी है,
हरि जैसें रंगवारी हरि जैसें अंगवारी,
हरि मुखवारी आखे हरि अनियारी है,
हरि सो खनकवारी हरि जैसें ऐंकवारी,
हरि सिर सारी तामें हरिही किनारी है,
कहे कवि नाथ ऐसी सरस त्रियाके सग,
नेह न किया तो यह जीन्दगी अकारी है १

चंद्रमुखी कहना नहिं कवी पूकहते ष्याम,
चदमें कलंक मेरो मुख ना कलंक है,
एक पख मंद एक पखमें अमद शशी,
मेरे तुंदपै हमेश तेज निरशक है,
सागरकी छाया परै सागरके नंदहूपै,
मेरी रूप छाया सदा अवनि अनंक है,
कहै कवि नाथ कंथ मदन हो देखे विन,
कहां श्रीराम अरु कहां पति एक है २

कसें धरा धीर तन तावे पंचतीर होत,
व्याकुल शरीर पीर अंतर मसोसेकी,
हों अति विहाल अपसोसके भवर जाल,
शोक जनमाहि जिन करी प्रीति तोसेकी,
योग कर ताले देते हसत उताले नाथ,
बायेरसों बात काहि कहियें रकोसेकी,
व्हेकें रसराशि ऐसे मारियत प्यासी मोही,
एरे ये विसासी दई फांसी तें भरोसेकी ३

(सद्‌साधक पणमैत्रि-दोहा)

अच्युत अविनाशी अकल, अमल अनादि अनूप,
अलख अनीह अजर अमर, अर्च अगोचर रूप १

आसन आश्रम आर्द्रता, आमत्रोव आचार;
आतिथेय आधीनता, आगमके आधार. २

इष्टदेवने इष्ट इंदि, इन्दु कहो इतिहास:
इभ इव इङ्गित इति करहु, इतर रसादिहि नास. ३

ईप्सित ईशहि ईक्ष नित, ईश्वरता पहिचान;
ईदृश ईश्वर ईशिये, ईर्षा ईतिहि जान. ४

उग्र उपाधि उचाटना, उद्वेगहि उनमाद,
उदय उछाह उदारता, उपकारहिं उपपाद. ५

ऊतपना ऊधमपना, ऊटपना ऊटार,
ऊंचकार ऊपर करौ, ऊब ऊनपन मार. ६

ऋजुगुन ऋषिहि ऋषिनमें, ऋण ऋच्छहि सम मान;
ऋषभदेव ऋतु ऋतु भजौ, ऋग्वेदहि धर ध्यान. ७

एकाकी एकाग्र मन, एक चित्त एकात,
एक रूप एकाधिको, एक भक्ति एकान. ८

ऐंचा ऐंची ऐंठपन, ऐसे ऐगुन ऐन,
ऐक्य ऐन ऐश्वर्यके, ऐहिकने मन खैच. ९

ओछापन ओताप नहिं, ओखी चाल वहाव.
ओघ अघनको ओरकर, ओजहि ओप वढाव. १०

औशटपन औधी चलन, औचक औचट चोट:
औसर चुकिबो औ शुचि, औढमपन तजि खोट. ११

अंत करहु अंतरपना, अंशी अंश न मार·
अंजनकर अंगीकृतहि, अंधनको कर प्यार. १२

कर करनी करतूत कछु, कपट कुढता काढ:
कलिमल काल करालके, करता करहिं कुचाट. १३

खलहूकी खोटी खरी, खोल न खलता खार;
खनि खोदहु खेचड खुचड, खोवहु खुन्स खभार. १४

गुनि गुनि गुनि गनको गिरा, गूढाशय गुरुज्ञान;
गहु गौरव गभीरता, गोविंदा गुनगान. १५

घनश्यामहि घेरहु घने, घोराडहिं घिनघाल;
घुलौ न घान घमडके, घिरे घात घडियाल. १६

चहोगि चोरी चुव्चुवी, चुगली चचल चाल,
चारु चतुरता चेत चित, चिदानद चिरकाल १७
छेड छाल छल छिद्रते, छुटत छानके छेम,
छोरि छिछोरता छिप्ता, छजहु छमाकर नेम १८
जुल दैयो जोरी जुआं, जगत जाल जजाल,
जडता जाचकता जुल्म, जल्दी जियते टाल १९
झगडा झझट झूट झुल, झुक्षलपन झटफार,
झांसा झुखन झपासपन, झवरामन झकझार २०
टर्र टेंट टेढापना, टुच्चपना टुक टार,
टीप टाप टटा टुसुर, टरकनहु फटफार २१
ठोंक ठाफ ठट घट ठसक, ठगी ठगनका ठाव,
ठसपन ठान ठिठोरपन, ठकुराईहि टुकराव २२
डिगि चोडहि चोडाहिचो, डांड डाडि चोडाह,
डावर डीचर डाक्त्रिो, डींग डिंभडर दाह २३
ढेला ढाठी ढंग ढग, ढील ढाल ढच ढाह,
ढाचा ढच रहिं ढीठता, ढाहिहु ठढहि चाह २४
तरुनी तामस तुच्छता, तन्द्रा तरउ तरग,
तर्सीचो तडफाइवो, तज तेजी तम तुग २५
थुक्का थुक्की थरथरी, थोथापन थिर थाम,
थूरहु थायमे थरी, थामहु थिरता थान २६
दीर्घसूत्रता दुष्टता, दुरित दर्प दुरनीति,
दीह दोप दु ख दुर्वचन, दहु दरिद्रता रीति २७
धक्का धक्की धक धकी, धौल धप्प धुमधाम,
धमकी धोखा धूर्तता, धुरधानौ धिक धाम २८
नदन ननी रजनयन, नवनाथनके नाथ,
नवनित नित नयनीतते, नीति नियमके साथ २९
पावनता परितोपता, परम पुरुपता पाव,
परमारथ पर पुण्यमें, पूरण प्रेम पगाव ३०
फोड फाड फक्कडपना, फसव फासिवो टार,
फव फरेच फसाद फनु, फूट फासफन फार ३१

बडी बडाई बडबडी, बोदापन बढ बात;
बाद विबाद बिभेदता, विषय विषम विषभात. ३२
भवपति भयभंजन भजे, भव भारा भजि जाय;
भ्रम भडंग भुग्गापना, भोगहि भूरि भंवाय. ३३
मत्सर ममता मानपद, माया मोह महान;
मति मुगरीते मर्दिके, मनको मेट मलान. ३४
यारी युवती यौवनहिं, यमयातनके योग;
यजन याद रघुनाथके, यह यश युक्ति संयोग. ३५
राम राम रटना रखौ, रोज रहै रस रास;
रगर रोग रिस रुच्छता, रिच्चा रागहि नास. ३६
लुतरापन लुच्चापनहिं, लोभ लोलता लाग,
लोलुपता लत लंठता, लल लीचडपन त्याग. ३७
विनय विराग विवेकता, वेद विहित व्यवहार.
वृथा वाद व्यय व्यर्थही, विषय विशेषहि वार. ३८
शांत शीलता शूरता, शुचिता शौरभ खान,
शंका शठता शिथिलता, शुभता शोषकशान. ३९
षट दर्शन षट कर्म षट, शास्त्रनको व्यवहार,
षट मुख षट ऋतु षट विधी, पुज षोडश उपचार. ४०
सत्य सुसंगति सभ्यता, सतपथ साधन सार,
सदा सदय संतोषता, संशय सोच निसार ४१
हरि है हरछन हीयमें, हेरहु हेत सुहाय;
हरिजनतें हित होत है, हम ता हठ हटकाय. ४२
क्षमा क्षांति है क्षीरसे, क्षोभ क्षुद्रता क्षार;
क्षेम कहे क्षीरोदपति, क्षद क्षेदहिं क्षितिभार. ४३
त्रय मूर्तिक त्रैविद्य है, त्रिकालज्ञ त्रिदशेश,
त्रोटक त्रासहि त्रिगुण है, त्रैवर्णक त्रिपुरेश. ४४
ज्ञाता ज्ञानद ज्ञानमय, ज्ञानगम्य है ज्ञेय,
ज्ञानात्मक ज्ञानीनके, ज्ञेश ज्ञापकाधेय. ४५
वर्णमत्रिका दोहरा, युत मनोहरा नीत;
पढत सुनत गति मति लहत, नाथ साथ सुखरीत. ४६

(दरिद्र भवन)

फूस नहिं फास नहिं छप्परपै घास नहिं,
बडे नहि बास तहा झिंगुर झरा करै,
दिवार आर पार हैं सूराख लाख चार हैं,
कोटिन प्रमाण भूत भवन में फिरा करैं,
मकरीके मेल है बिछौती तहा रेल पेल,
गिरगिटके खेल देख जियरा डरा करै,
गोजर गिरो है सांप बिच्छु अरगो है जहा,
ऐसे भौन नाथ डेरा एईके कहा करै १

नायक.

(कलि कुटिलाइ)

सुरताइ आघरेमें, दृढताइ पाहनमें,
नासिका चनानि मध्य नैन रही हारमें,
धर्म रह्यो पोथिन बडाइ रही वृक्षनमें
बंध पडा पांतिनमें पानी रह्यो घाटमें,'
याही कलिकालने बिहाल कियो सब जग,
नायक सुकवि कैसी बनी है कुठाटमें,
रज रही पथन रजाई रही सीतकाल,
राई रही राईतें रनाइ रही माटमें १

निपटनिरंजन.

(भक्ति-नीति-विवेक)

तुमनेही दीनी मन इंद्रियकू चंचलता,
तुमनेही कही इन्हे जीते सोइ भली है,
तुमनेही कही पुत्र दारा बिन गति नाहि,
तुमनेही कही यही फदेहूकी गली है,
तुमनेही कही माया त्यागकै विराग धरो,
तुमनेही कही माया सबसेंही बली है,
निपटनिरंजनी अबर कोई मालिक ना,
जाके आगे नाथ न्याय हम तुम चली है १

वह मति कहां गई अव मति औरौ भई,
ऐसी मति कीज्यो मति आपनी विगारोगे;
सुधि कहूं सोइ गई बुद्धि कहूं बूडि गई,
अव क्यों न भई सो तो नई वाट पारोगे;
निपटनिरंजनी निहारिकें विचारि देखो,
एकहि विचारी कहा दूसरी विगारोंगे;
तुमसों न उज्यारो (प्रभु) मोसो न पतित भारो,
मोहि मति तारो वैकुंठकों विगारोंगे. २

हांसीमें विवाद वसे वियामाहि वाद वसे,
भोगमाहि रोग पुनि सेवामाहि दीनता;
आदरमें मान वसे शुचिमें गिलान वसे,
आननमें जान बसै रूपमांहि हीनता,
योगमें अभोग औ संयोगमें वियोग वसे,
पुन्यमांहि वंधन औ लोभमें अधीनता;
निपट नवीन ये प्रवीननी सुवीन लीन,
हरिजूसों प्रीति सबहीसों उदासीनता. ३

शिख्यो हे शलोक औ कवित छंद नाद सवे,
जोतिषकों शिखे मन रहत गरूरमें,
शिख्यो सौदागरी वजाजी और रस रीति,
शिख्यो लख फेरन ज्यो वह्यो जात पूरमें,
शिख्यो सव जंत्र मंत्र तंत्रनको शिखी लीने,
पिंगल पुरान शिख्यो शीखि भयो सूरमें,
शिख्यो नहि वातें घातें निपट शयानो भयो,
वोलिवो न शिख्यो सवे शिख्यो गयो धूरमें ४

गांठमें दामरी तो देखि देखि धन धाम,
निश दिन आठौ जाम चिता चितकों दहै;
जासों पहिचान तासों दुखको वखान कहे,
सो तो दुख एकके अनेकनके कहै;
निपटनिरंजन कुटुंव भैया वंधु मित्त,
संपतिके लोभ कोऊ भूलि न भुजा गहै;

झठ मूठ कहि सब खातरकों जमा राखि,
जमा होय घरमें तो खातरजमा रहै ५

(देह स्वरूप)

है जगमृत आ आपहू मृत है, मृतहीके सग मृतन लागा,
सेजमें मृत खटोलीमें मृत है, मृतके सगमें मृतही जागा,
पर अमृत निपटनिरंजन, मृतके वासमें मृतही पागा,
तातको मृत औ मातको मृत, औ नारिको मृत है चुवन लागा १
जागत है फिन सोइवो लोक, जु सोवत है जग योवन सोहै,
आप निहारि विसारिकै आपुस, आप विसारी न खोवन सोहै,
सो निपटा निरअजन जैसे को, तैसो हुओ नहि होवन सोहै,
काहेको रोवत है विन काज, सो तेरो स्वरूप न रोवन सोहै २
आप नहायक याहि नहावत, पाहन तो बदनाम विचारौ,
फूलकै लैन जु वास लई, वसुदेव तो माटहिको वटपारौ,
घट वजाय अगूठो दिखाय सु, खाय गयो निपटा रस सारौ
सेव करी पर भेव न जानत, देवतें दीरघ पूजनहारौ ३
ऊंटकी पुछसों ऊट बध्यो इमि, ऊटनकेसी कतार चली है,
कौन चलाइ कहाकों चली चलि, जैहैं तहा कछु फूट फली है,
ये सिगरे मत ताकी यहै गति, गावको नाव न कौन गली है,
ज्ञान विना निपटा निरअजन, जीव न जाने वुरी के भली है ४

नीलकंठ

(परस्त्रीसग निषेध)

कीन्हें वस लोक तीन रावन प्रतापी ऐसें,
भयो नाश ताको जब कीन्हो हर्न सियाको,
अग्निमुख परे सव कीचक पचालीनसों,
रह्यो नहि रंच रस जस उप पियाको,
इंद चद भये मद भागी अहल्यासें मानो,
दर्प ज्यु गुमायो पछिताइ निज हियाको,
कहे नीलकंठ जाको ऐसो फल पाइवेको,
सोई रस जानि सग करे परकियाको १

परकीय रसवस भयो कर्न घेलो तवें,
गुर्जरमें यवन प्रवेश कीनी ख्वारी है;
रावल पताइ जाकी कीरती सवाई गई,
खाइ माइ काली जवें वूरी चित्त धारी है;
महीपत मल्हार सो ख्वार हैके गयो कैद,
याकोही विचारो भेद तहुं परनारी है;
कहे नीलकंठ केते केते म गिनाओं जिने,
कीन्हीं है छिनारी याने वडी झख मारी है. २

(मयूरान्योक्ति.)

केका है तिहारी कान्हहूको सुधा रूप,
कुसुम जुत वेनी हरे कान्ता कलापतें;
नीलकंठ कैसी नीलकंठकी उदित छवि,
नाहि उपमान आना शोभा अमापतें;
मेघ जगजीवन है तासों अति मित्रताइ,
व्याल विश्वद्रोहि ताहि भक्षक सदापते;
एरे ये मयूर तेरे एकठे विचित्र मित्र,
एते गुन पाये कौन पूज्यके प्रतापतें. १

(सवैया.)

सुंदरि सुंदर पिऊ तजे अरु, जाइ करे कहुं नीच सनेहु,
वाग तडाग विहाय अनाजहि, ऊखर शैल परे अति मेहु;
सूमसो संपत आन रसे, जगना द्रव दानि जीते तित जेहु,
देत कुपात्र वधाय नृपाल, है वाल भुपाल सवे सत एहु. १
वे जग अंधनको मगदा, चलवो इन नीकनहूंको निवारो,
वे वलि वास वसावत है, इन वास उजार कुवासन पारो;
सूरन थाह उजावत वे, इन प्रेम अथाहके वारिधि डारो,
देखहुरि हरिकी वंसुरी इन, कैसे सुवंसको वंस विगारो. २

नंद.

(होरी खेलन.)

वोरी हे पिचक झक झोरी है झटकि पर,
फोरी हे कलश इहां वसै कोऊ कोरी है;

जानो जनि भोरी है कहूंकी कोऊ कोरी है न,
थोरी है ढिठाई जाकी गहिया मरोरी है,
नदजू कहत कवि गोरी है तो काको कहा,
जानत हो कछु काके कुलकी किशोरी है,
गोपगन घोरी है जनक जाको एहो कान्ह,
प्यारे हरि होरि है तो कहा वरजोरी है १

नंददास.

(मोहनमुरली-रोला)

कृष्ण लीनि करकमल, जोगमायासी मुरली,
अघटित घटना चतुर, बहुरि अघटन सुर जु रली,
जाकी धुनितें निगम, अगम प्रगटित वर नागर,
नाद ब्रह्मकी जानि, मोहिनि सब सुखसागर १
पुनि मोहनसों मिली, कछू कल–गान कियो अस,
वाम विलोचन वास, तियन मन हरन होय जस,
मोहन मुरली नाद, श्रवण कीनो सब कीनहु,
जथा जथा विधि रूप, तथा विधि परस्यो तीनहु २
तरनि किरन ज्यों मनी, पखान सबहीके परसे,
सुरजकात मनि बिना, नही कछु पावक दरसें,
सुनत चली ब्रज वधू, गीत धुनिको मारग लहि,
भवन भीत द्रुम कुंज, पुंज कितहु अटकी नहि ३
नादहि अमृत पंथ, रंगिलो सूक्षम भारी,
तेहि मग ब्रजतिय चलें, आन कोउ नहि अधिकारी,
शुद्ध प्रेममय रूप, पंचभूतनतें न्यारी,
तिन्हे कहा कोउ कहे, ज्योतिसी जगत उजारी ४

नेवाज.

(गोप-गोपी शृंगार)

मुख चुंबनमें मुख लै जो भजें, पियके मुखमें मुख नायो चहै,
गलबांहि गोपालके मेलतही, मुख नाहिं कहे मनतें न कहे,

नहि देति नेवाज छुटे छतिया, छतियांसो लगाये ते लागि रहे,
कर खैंचत सेजकि पाटि गहैं, रतिमें रतिकी परिपाटि गहे. १
छतिया छतियांसों लगाय दोऊ, दोऊ जीमें कुहुंके समान रहें,
गइ बीति निशापें निशा न भई, नये नेहमें दोऊ विकाने रहे;
पट खोले नेवाज न भोर भये, लखि दौसको दोउ सकाने रहे;
ऊठि जवें को डराने रहे, लपटाने रहे पट ताने रहे. २

पजनेस.

(भवानी प्रभाव.)

ज्वाला सर्व मेघ मध्य आहुति अहारनी तू,
अग्नि कुंड मंडल प्रचंड परकाजनी;
त्राहि त्राहि त्राहि सरनागतको पालनी औ,
दुष्टनपै रुष्ट उष्ट सरसाक्ति राजनी,
अविलम्ब अद्भूत अभूत उक्त जुक्त कर,
कवि पजनेस कंठ भनत विराजनी;
भूतट विभाजनी ब्रह्माड सब्द वाजनी,
गरीबननेवाजनी गरीबिनि नेवाजनी. १

(युगलकिशोर शृंगार.)

कोटि मारतंड मनि मंडित मुकुट कोट,
चंद्रिका चमक चकचौंधी चहुंओरकी;
सिर पेज पैच किल कलंगी कुलिस कन,
चन्दनी बिचित्र चित्र आसिल अजोरकी;
सतगन नग पर वसन सुकेस राजे,
एकसी प्रकारसी गत दोनों चितचोरकी;
तीन लोक झांकी ऐसी दूसरी न झांकी जैसी,
झांकी हम झाकी झांकी जुगल किसोरकी. १
छहरै छबीली छटा छूटि छिति मडलपै,
उगम उजेरी महा ओज उजबकसी;
कवि पजनेस कंज मंजुलमुखीके गात,
उपमाधिकात कल कुंदल तबकसी;

फैली दीप दीप दीपति दीपति जाकी,
दीपमालिकाकी रही दीपति दवकसी,
परत न ताब लखि मुख महताब जब,
निकसी सिताब आफतावके भभकसी २

नवल सरूप रूप रावरे रुचिर रूप,
रचना विरंची कीन सकुचन लागी है,
भने पजनेस लोल लोयनकी लीकें गोल,
गुल्फ गोराइ लाज सकुचन लागी है,
सुदर सुजान सुखदान प्रीति प्रीतमकी,
एकौ ना परेख अब सकुचन लागी है,
औचक उचन लागी कचुकी रुचन लागी,
सकुचन लागी आली सन्कुचन लागी है ३

कवि पजनेस पुन्य परम विचित्र भूमि,
केतकि फनूस झाड जोतें जरै ज्वालासी,
करत प्रदोप ब्रत पूजन किसोरी गोरी,
डेरे कर आरती उजेरे शीलसालासी,
मुकुर नवीनतैं निहारि वरविन्दनीकी,
मिदुरावलीश दीपदान बहु बालासी,
मानो व्योम गगाकी गमीर धीर धारा धसी,
दीपक चढावै देवकन्या दीपमालासी ४

दौर दौर झालैं झकोरें देत चादनीको,
नीको भौन चित्रित विचित्र चित्रकारीको,
गिल्म गलीचनपै अतर सु पुप्पनके,
चदन कपूरपें फुहार पिचकारीको,
हदभर हारी हौं मैं पजन तिहारी सौंह,
सोचत न गाल्न गुलाल गिरधारीको,
रंग डारि कान्हरे छबीली छिति महलपै,
सग लै सहेली चमकति चित्रसारीको ५

चपक लतासी भासी सेस मदकासी बाल,
ललित लतासी आंख खजन गुपालकी,

पजन अबीरनकी उडत घटासी तामें,
बिज्जुल छटासी बेंदी दमकत भालकी;
केसर सुगंध सरसानी यौ नवेली अग,
संग अलवेली सो नवेली नंदलालकी;
काढे कुच कंचुकी किसोर कसकोर लागी,
लागी लाल जर्द गाल गरद गुलालकी. ६

चोवा चौक चांदनी चंदोवा चिकै चौकी चौक,
चंपक चंपावली चमेली चारु चोज है;
ग्वासे खस फरस उसीर खसखाननमें,
पजन कपूर चंदनादि करि मौज है;
लाली लखि ललित ललीके लाल लोयनमै,
अमल गुलाबदल मलत उरोज है;
अवनि असीतलपै ग्रीषम तपी तलपै,
पिय हाथ हींतलपै सीतल सरोज है. ७

परमेश.

(तुतिका पुकार-शिशिर-विरह)

प्रान जो दहेगी विरहागनमें चंदमुखी,
पापी प्रानघाती कोन फुली है जुही जुही,
भ्रंगी कल गान किधों मदनके पंच बान,
दखिन पवन किधों कोकिला कुही कुही,
मधमें मयंक जों मुकुंद तरुनाई बाल,
रजनी निगोडी रेनी रंगन चुही चुही;
बालम बिदेश ज्योंपें मिलबो बिचार कियो,
तो लों तुती प्रगट पुकारी रे तुंही तुंही. १

आछे चित्रशाले जगे जोतनके जाले धेरे,
गरम मसाले प्याले प्याले समे समेमें;
गिल गिली गिलमें गलीचा गुल बापी पडे,
मंडे हे मकान ऊन वस्त्रके सु बेशमें;
कहे परमेश तोहू थर थर कांपे अंग,
एते दिन आई तेती साहेबी सुरेशमें;

विना प्रान प्यारी पडे निपट कलेश मीत,
शिशीरकी सीत रेन वसवो विदेशमें २

पहार.

कुंडलिया

(मनोभाव)

सचो जहा देखो चलन, मन रुचै तिहि ठोर,
छिति पर वाता वहोत हे, छवि विद्रमकी ओर
छवि विद्रमकी ओर, सो तो बिपती न छुपाइ,
मूरख नहिं समझंत, चरच चातुर चित जाइ
याते कहत पहार, यार हरफनतें बच्चो,
मन रुचै तिहि ठोर, चलन देखो जहा सचो १

पद्माकर.

(रामनाम माहात्म्य)

सुखद सुकंठ सखा साहिवा सरन्य सुचि,
सूधे सत्य सधके प्रवधनकी गहिये,
कहै पद्माकर कलेसहर कौसलेस,
कामद कवध रिपुहीको छै उमहिये,
राजिवनयन रघुराज राजा राजाधिप,
रूप रतनाकरको राजी रायि रहिये,
रैन दिन आठो जाम राम राम राम राम,
सीता-राम सीता-राम-सीता-राम कहिये –(टेक) १
काहेको वघम्बरको ओढि करो आडवर,
काहेको दिगवर है दून खाय रहिये,
कहै पद्मांकर त्यों कायके कलेश हित,
सीकर सभीत सीत वात ताप सहिये,
काहेको जपोगे जप काहेको तपोगे तप,
काहेको प्रपच पच पावकमें वहिये,–रैन दिन० २

आनंदके कंद जग जावत जगत वृंद,
दशरथनंदनके निवाहे निवहिये;
कहै पदमाकर पवित्र पन पालिवेको,
चारु चक्रपानिके चरित्रनको चहिये;
अवधविहारीके विनोदनमें वीथि वीथि,
गीधा गुह गीधके गुनानुवाद गहिये;—रैन दिन० ३

आवतहू जात खात खेलत खुलत गात,
छींकत छकात चुप चाप है न रहिये;
कहै पदमाकर परहु परभात प्रेम,
पागत परात परमातमा न जहिये;
वैठत उठत जात जागत जवात सुख,
सोवतहू सापने न औरे नाव नहिये,—रैन दिन० ४

गोदावरी गोकरन गंगाहू गयाहू यह,
येही कोटि तीरथ कियेको लाभ लहिये.
कहै पदमाकर सु ज्ञान यहै ध्यान यहै,
येही सुख खान सरवस्व मानि रहिये;
येही जप येही तप येही जज्ञ जोग यहै,
येही भव रोगको उपाव एक अहिये;—रैन दिन० ५

भाये पद्माकर न तैसे भाग्य जन्नयके,
जैसे भगवान भीलनीके फल भाये हे,
भोजनकी सामा सत्यभामाकी भुलाइ भले,
दुखी वा सुदामाके सुचाउर चवाये हे;
छप्पन सुभोग दुरजोधनके त्यागी करी,
आसा गहि वेगतें विदुर घर आये हे,
धरा धाये फिरत वृथापै नेम नीरधिमें,
पाये जिन राम तिन प्रेमहीसों पाये है. ६

(सवैया.)

रामको नाम जपो निसवासर, रामहीको इक आसरो भारो,
भूलो न भूलकी भीरनमें, पदमाकर चाहि चितौनिको चारो;
ज्यों जलमें जलजातके पात, रहै जगमें त्यों जहानतें न्यारो,
आपने सों सुख औ दुख दौरि, जु औरको देखे सु देखनहारो. १

भोगमें रोग वियोग सजोगमें, जोगमें काम कलेस कमायो,
त्यों पदमाकर वेद पुरान, पढ्यो पढिके बहु वाद बढायो,
दूनो दुरासमें दास भयो पै, कहू बिसरामको धाम न पायो,
पाय गयायो सु ऐसही जोवन, हाय मैं रामको नाम न गायो २
यों मन लालचि लालचमें, लगि लोभ तरगनमें अवगाह्यो,
त्यों पदमाकर देहके गेहके, नेहके काजन काहि सराह्यो,
पाप किये पै न पातकी पावन, जानिकै रामको प्रेम निबाह्यो,
चाह्यो भयो न कछू कबहू, यमराजहुसा वृथा वैर बिसाह्यो ३
वैठि सदा सतसगहीमें विप, मानि विषय रस कीर्ति सदाहीं,
त्यों पदमाकर झूट जितो जग, जानि सुज्ञानहिंके अवगाहीं,
नाककी नोकमें डीठि दिये नित, चाँह न चीज कहू चित चाहीं,
सतत सत शिरोमणि है धन, है धन वे जन बेपरवाहीं ४

(गगा माहात्म्य)

गगाको चरित्र लखि भाषै यमराज ऐसे,
एरे चित्रगुप्त मेरे हुकुममें कान दै,
कहै पदमाकर ये नरकन मूदकर,
मूदि दरवाजनको छोड यह थान दै,
देख यह देव नदी किये वश देव याने,
दूतन बुलाइके बिदाके बेड पान दे,
फार डार फरद मिटैर रोज नामे डार,
खातो खत जान दै र वही बहि जान दै १
यमपुरद्वारेके किवारे लगे तारे कोऊ,
हैं न रखवारे ऐसे बनके उजारे हैं,
कहै पदमाकर तिहारे प्रणधारे जेते,
करि अघ भारे सुरलोकको सिधारे है,
सुजन सुखारे करै पुण्य उजियारे अति,
पतित कनारे भवसिंधुते टतारे है,
काहूनै न तारे तिन्हें गंगा तुम तारे आज,
जेते तुम तारे ते ते नभमें न तारे है २

(रामसे याचना.)

व्याधहूतें बिहद असाधु हों अजामिल लों,
ग्राहतें गुनाही कहो तिनमें गिनाओगे;
स्यारी हों, न शूद्र हों, न कवट कहुंको त्यों,
न गौतमी तिया हों जापें पग धरि आओगे;
रामसों कहत पदमाकर पुकारी तुम,
मेरे महा पापनको पारहू न पाओगे,
झूठोहि कलंक सुनि सीता ऐसी सती तजी,
साचोहू कलंकी ताहि कैसे अपनाओगे. १

जोग जप संध्या साधु साधन सबैइ तजे,
कीन्हे अपराधते अगाध मनभावते;
ते ते तजि औगून अनंत पदमाकर तौ,
कौन गुन लैके महाराजहि रिझावते;
जैसे अब तैसेंपै तिहारे बडे कामके है,
नाहीं तो न एते बेन कबहू सुनावते;
पावते न मोसों जोपै अधम कहूं तो राम,
कैसे तुम अधम उधारन कहावते. २

(विविध बोध)

आयो मन हाथ तब आयबो रह्यो न कछू,
भयो गुरुज्ञान फेर भायबो कहा रह्यो;
कहे पदमाकर सुगंधकी तरग जैसे,
पायो सतसंग फेर पायबो कहा रह्यो,
दान बलवान बल विविध बितान बल,
छायो जस पुज फेर छायबो कहा रह्यो;
ध्यायो रामरूप तब ध्यायबो रह्यो न कछू,
गायो राम नाम तब गायबो कहा रह्यो. १

एरे जड जीव जानु राखु वेद भेद यहै,
सुमृति पुरान राखी यहै ठहराय है;
कहै पदमाकर सुमाया परपंचनको,
पेख परपंच पेखनेको सब भाय है;

यातें भज दसरथ नंद रामचंदजूको,
आनदको कन्द कौसलेस रघुराय है,
जा दिन परैगो काम जमके जदूसनिसौं,
ता दिन तिहारे काम राम नाम आय है २

एकनसों बैर करि प्रीति करि एकनसों,
एकनसों बैर है न प्रीत कछू गाढ़ी है,
कहै पदमाकर न होत चित चाही बात,
बात करिवेको अनचाही मीच ठाढ़ी है,
एतेपै न चेते फेर केते बाघ बाघत है,
दंत लगे हिलन सपेत भई दाढ़ी है,
बाढ़ी कहू रामकी न भगति हियेमें देखो,
तृपना पिसासिनि या निरदई सौ बाढ़ी है ३

आस बस डोलत सु याको बिसवास कहा,
सास बस बोले मन मासहीको गोला है,
कहै पदमाकर विचार छनभगुर यों,
पानीमके फैन कैसा फूटत फफोला है,
करम करोर पचतत्व नवटोर जोर,
जोरके बनायो तोउ पोर पोर पोला है,
छाडि राम नाम नहि पैहै बिसराम अरे,
निपट निकाम तन चामहीको चोला है ४

धोखाकी धुजा है औ रजा है महा दोषनकी,
मलकी मजूसी मोह मायाकी निसानी है,
कहै पदमाकर सु पानी भरी खाल ताके,
खातिर खराब कत होत अभिमानी है,
राखे रघुराजके रहै तो रहै पानी न तो,
जगी जमराजहीके हाथन बिकानी है,
जौंही लगि पानी तौलों देह सी दिखानी फेर,
पानी गये खारिज पखाल ज्यों पुरानी है ५

आवत गलानि जो बखान करौं जादा यह,
मादा मल मूत मेदा मज्जाकी सलीती है,

कहै पदमाकर जरा जो जाग भींजी तव,
छीजी दिन रैन जैसे रेनुहींकी भीती है;
सीतापति रामके सनेह बस वीती जौ तो,
तौ तो दिव्य देह जमजातनातें जीती है;
रीती राम नामतें रही जो विन काम तो या,
खारिज खराब हाल खालकी खलीती है. ६

(मनमोहन शृंगार.)

सुंदर सुरंग नैन सोभित अनंग रंग,
अंग अंग फैलत तरग परिमलके;
वारनके भार सुकुमारिको लचत लंक,
राजे परजंक पर भीतर महलके;
कहै पदमाकर विलोकि जन रीझै जाहि,
अंवर अमलके सकल जल थलके;
कोमल कमलके गुलावनके दलके,
सुजात गडि पायन विछौना मखमलके. १

तासनकी गिलमें गलीचा मखतूलनके,
झुरपै झुमाऊ रही भूमि रंगदारीमें;
कहै पदमाकर सुदीपमणि मालिनींकी,
लालनकी सेज फूल जालन समारीमें;
जैसे तैसे नित छल-वलसों छवीली वह,
छिनक छवीलेको मिलाय दई प्यारीमें;
छूटि भाजी करतें सुकरकै विचित्र गति,
चित्र कैसी पूतरी न पाइ चित्रसारीमें. २

शोभित स्वकीयागन गुन गनतीमें तहां,
तेरे नामहींकी एक रेखा रेखियतु है;
कहै पदमाकर पगीयों पति प्रेमहींमें,
पदमनि तोसी तिया तूही पेखियतु है;
सुवरन रूप जैसो तैसो सील सौरभ है,
याहीतें तिहारो तन धन्य लेखियतु है;
सोनामें सुगंध न सुगंधमें सुन्योरी सोनो,
सोनो औ सुगंध तोमें दोनो देखियतु है. ३

धोइ गई केसर कपोल कुच गोलनकी,
पीक लीक अधर अमोलन लगाई है,
कहै पदमाकर त्यों नैनहू निरजनमें,
तजत न कप देह पुलकि न छाई है,
चाद मति ठने झूठ यादिन मईरी अब,
दूतपनौ छोड धूतपनमै सुहाई है,
आई तोहि पीर न पराई महा पापिन तू,
पापी लौं गई न कहू वापी न्हाय आई है ४

कान सुनि आगम सुजान प्रानप्रीतमको,
आनि सखियान सजे सुदरिके आसपास,
कहै पदमाकर सुपञ्जनके हौज हरे,
ललित लबालब भरे हैं जल बास वास,
गूदि गेंदे गुलगज गौहरन गजगुल,
गुपत गुलाबी गुल गजरे गुलाबपास,
खासे खसबीजन सुसौन पौनखाने खुले,
खसके खजाने खसखाने खूब खास खास ५

नैननही सैन करै बीरी मुख दैन करै,
छैन करै चुंबन पसारि प्रेम पाता है,
कहै पदमाकर त्यों चातुरी चरित्र करै,
चित्त करै सोहैं जो विचित्र रतिराता है,
हाव करै भाव करै विविध विभाव करै,
वूझै प्यौ न एतेपै अबूझनको भाता है,
ऐसी परवीनिको कियो जो यह पुरुष तौ,
वीस विसे जानी महा मूरख विधाता है ६

रति विपरीत रची दपति गुपति अति,
मेरे जानि मानि भय मनमथ नेजेतैं,
कहै पदमाकर पगीयों रसरग जामें,
खुलिगे सुअंग सब रगन असेजेतैं,
नीलमणि जटित सुबेंदा उच्च कुचनपै,
पर्यो टुटि ललित ललाटके मजेजेतैं,

मानों गिर्यो हेमगिरि शृंगपै सुकेलि करि,
कढिकै कलंक कलानिधिके करेजेतै. ७

मंद मंद उरपै अनंदहीके आंसुनकी,
वरसै सुबुंदै मुकतानहीके दानैसी;
कहै पदमाकर प्रपची पंचवानके सु,
काननके मानपै परी त्यौ घोर घानैसी;
ताजी त्रिवलीनमै विराजी छवि छाजी सवै,
राजी रोमराजी करि अमित उठानैसी;
सोहै पेख पी को विहसोंहै भये दोऊ दग,
सोहै सुनि भौहै गई उतरि कमानैसी. ८

पाती लिखी सुमुखि सुजान पिय गोविदकों,
श्रीयुत सलोने स्याम सुखनि सने रहौ,
कहै पदमाकर तिहारी छेम छिन छिन,
चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहौ;
विनती इती है कै हमेसहू मुहै तौ निज,
पाइनकी पूरी परिचारिका गनै रहो;
याहींमें मगन मनमोहन हमारो मन,
लगनि लगाइ लग मगन वने रहौ. ९

वानीके गुमान कल कोकिल कहानी कहा,
वानीकी सुबानी जाहि आवत भनै नहीं,
कहै पदमाकर गोराईके गुमान कुच,
कुंभनपै केसरिकी कंचुकी ठनै नहीं;
रूपके गुमान तिलउत्तमा न आनै उर,
आनन निकाई पाई चंद्रकी रनै नहीं;
मृदुती गुमान मय तूलहू न मान कछु,
गुणके गुमान गुन गौरिको गनै नही. १०

(कविपरिचय-कवित्त.)

भट्ट तिलगानेको वुदेलखंड वासी कवि,
सुयश प्रकाशी पदमाकर सो नामा है;
जोरत कवित्त छंद छप्पय अनेक भांति,
संस्कृत प्राकृत पढे जु गुणग्रामा है;

हय रथ पालकी गयद गृह ग्राम चारु,
आखर लगाइ लेत, लाखनकी सामा है,
मेरे जान मेरे तुम कान्ह हौ जगतसिंह,
तेरे जान तेरो वह विप्र मैं सुदामा है १

प्रधान.

(कर्कशा और कुपात्र नर)

सासुके विलोके सिंहिनिसी जमुहाइ लेइ,
ससुरके देखे बाघिनिसी मुह बावती,
नणंदके देखे नागिनिसी फुफकारे बेठी,
देवरके देखे डाकिनीसी डरपावती,
भनत प्रधान मोछ जारती परोसिनकी,
खसमके देखे खाउ खाउ करि धावती,
कर्कसा कसाइन कुबुद्धि कुलच्छनी ये,
करमके फूटे घेर एसी नार आवती १
आज जो कहे तो आठ मासमें न लागे ठीक,
काल जो कहे तो मास सोरह चलावहीं,
पाच दिन कहे पाच बरस विताय देहिं,
पाच वर्ष कहे तो पचास पहुचावहीं,
भाखत प्रधान जो वै ताहूपे न त्यागे द्वार,
आप न लजात फेर याहूको लजावहीं,
एसे सत्यभापी सरदार हे देवैया जहा,
काहेको पवैया तहा जीवत लों पावहीं १

प्रवीनराय.

(कलि वर्णन)

कूर भये कुवर मजूर भये मालकार,
शूर भये गुपत अशूर भये जमरे,
दाता भये कृपण अदाता कहें दाता हम,
धनी भये निधन निधन भये गबरे,

साचेनकि बात न पत्यात कोऊ जगमांझ,
राजदरबारन बुलैये लोग लबरे;
भनत प्रबीन अब छीन भइ हिम्मति,
सो कलियुग अदलि बदलि डरे सगरे. १
केते नद नदी नारे भरे हे समुद्र खारे,
हस मन हेत एक मान सरोवरसें;
बन उपबन केते गिनती न आवे एते,
कामनाको काज एक कल्पतरुवरसें;
वर्षाऋतु सरदकाल भरे नीर जल्द ज्वाल,
चातुरक न्याल एक स्वातबिंदु जलसें;
अर्जकी तो गर्ज कोउ जाने लजीर लोक,
गरीबकी अरजी एक गरीबपरवरसें. २

(कुंडलिया.)

यहि संसार असारमें, साखी एकन काम,
सारेको सान्यो जन्यो, सारीसों बिसराम,
सारीसों बिसराम, राम सपन्यों नहि जान्यो,
दया धर्म उपकार, कबहुँ नहि उरमें आन्यो,
कहि प्रबीन कविराय, करौ केहिकी समता तिहि,
श्रुति मारगको छोडि, रहत अप मारग मन जिहि. १
नरकधाम जो तियनको, रमत सदा नर नीच,
धम धूसर मूसर परी, दो नितंबके बीच;
दो नितंबके बीच, कबहुं निकसी नहि काढे,
दिन दिन रहत तन्यात, मनों डोलीके दाडे;
कहि प्रबीन कविराइ, बात मानो नहि तर्कैं,
सांची कहत बनाइ, कुगति है परिहौ नर्कैं. २

प्राग.

(सापेक्षिक दर्शन.)

कहा कामिनि बिन धाम, धाम कहा दाम नई हे,
दाम कहा नहि पुन्य, पुन्य कहा क्रोध जई हे;

क्रोध कहा जन रंक, रंक कहा धक रहावे,
धक कहा कहा छिद्र, छिद्र कहा नाम टरावे,
जुग रीत नीत नर देहकी, जूगत जन जानो नहीं,
गि प्राग लाभ ससारके, समज मन रेहवे सही १

(रोलाछंद)

कहा कामन विन मर्द, मर्द कहा जर्द न अगी,
कहा धीर विन वीर, वीर कहा शास्त्र न सगी,
कहा नवाण विन नीर, नीर कहा प्रीत न रीजे,
कहा दाता विन दान, दान कहा देत न लीजे १

कहा कायर पर शूर, शूर कहा अरिय न मारे,
कहा अरिय विश्वास, वाह कहा नीच सहारे,
कहा नीचसें नेह, नेह कहा करत न बूजे,
बूजे कहा गुनहीन, हीन कहा मती न सूजे २

कहा कामन विन प्यार, प्यार क्या यार देखावे,
कहा यार पर नार, जार जन लाज गुमावे,
कहा लाज विन काज, काज कहा लोमहि अगी,
लोम कहा वहेवार, विना वहेवारको सगी ३

कहा नीर विन वीर, वीर कहा वात न बूजे,
बूजे कहा नहि करे, करे कहा वखत न सूजे,
कहा मरद विन रीत, रीत कहा नीति न जाने,
नीत कहा जन मीत, मीत कहा नेक न आने ४

कहा कायरसो जुद्ध, जुद्ध कहा आप वखाने,
कहा गनकासो प्रीत, नीत कहा पक्ष वखाने,
कहा विद्या विन मान, दान कहा वेत न जाने,
कहा नारि विन शर्म, धर्म कहा ओर चलाने ५

कहा पंडित विन पढे, पढे कहा आप वखाने,
गुनी वोत क्या धुनी, मुनि कहा मेख वताने,
चूगल कहा चकोर, और कहा गनका रानी,
कहा अर्थ विन काव्य, भाव कहा अर्थ वखानी ६

कहा कमल विन भमर, भमर कहा भूत कहावे,
कहा चदन विन वास, घास कहा वृक्ष रहावे,

रजत होत कहां राग, कांगको चावल माने,
बिडल बाघ कहां होत, बोत बोले मनमाने. ७

पिंगलसिंह.

(रूठे तूठे राम.)

मानुष उत्तमको नहि मानत, जानत ना कछु भाखत जूठो,
आश करी कोउ आंगन आवत, याकुं बतावत हाथ अंगूठो;
क्रोध विरोध भर्यो मुख कायम, तापर संत कबु नहि तूठो,
पिंगल सो नर शाति न पावत, राम रहे इनके पर रूठो. १
पच कहे सो कबूल करे नित, रंच प्रपंच नहिं इतराजी,
सत्य जिभान रु दान सुजानकुं, पास न राखत नोकर पाजी;
आनन आप प्रसन्न अहोनिश, गर्व नहिं रही कीरती गाजी,
पिंगल सो नर उत्तम पुरूष, राम रहे इनते पर राजी. २

(भावि प्रबलता.)

करबो थो जहां राज, तहां भयो बनमें निकरबो,
हरबो थो मृग प्रान, तहां भयो सीयको हरबो;
जरबो थो कपि अंग, तहां भयो लंका जरबो,
सरबो थो सुर काज, तहां भयो सुधी बिसरबो;
यह बात देव दानव अगम, पिंगल कहे प्रतक्ष ये,
जक्तके लोक जाने कहा, भावीके वश सब भये. १

प्रियादास.

(श्रीराधाकृष्णभक्ति.)

छोंडि सबै भ्रमजाल कुचाल, सु काम औ क्रोधको दीजै बहाई,
वृषभानुकुमारिको नाम जपौ, तुमको सब ठौर जे होत सहाई;
पुत्र औ दार सबै परिवारसो, स्वारथ हेत रहे लपटाई,
प्रियदास गोपालकी भक्ति गहौ, नर देह धरेको यहै फल भाई. १
ध्यानमें मेरे श्री राधिका नाम है, गानमें राधिका नामको गाऊं,
यह मुखते कहे राधिका नामसो, बार अनेक यही बर पाऊं,

तीरथ मेरे श्री राधिका नाम है, राधिका नामहिको मँह नाऊं,
प्रियादासकी आस यहै विश्वास सो, कुञ्जके वासपै चित्त रमाऊं. २
रोज रिगे मति काहूके जाव, भली विधि बात येहै सुविचारी,
मानकी हानि नितै प्रति होत, सो प्रीतिकी रीतह होत है न्यारी,
ताते रहौ प्रियादास जु दूरिये, बात सबै विधि मानि हमारी,
मूरख जानत है मनमें, अकि आवत स्वारथके हितकारी ३

प्रेम.

(सूम-कपूत अतिशयोक्ति.)

स्याणो होय सूम जब मनमें विचार करे,
दान पुण्य देतो बड़ा बावला चलायो क्यों,
पइसा समान नहि जगी पडदे या घर,
याकों दूनी दूनी खर्च बायदे गमायो क्यों,
कवडीके लिये जात अपनी गमाय देत,
हा हा विश्वनाथ यह दानही बनायो क्यों,
प्रेम कहे ऐसे परिवार बिन सार्यो होत,
मेटन मर्याद ओ कपूत पूत जायो क्यों १
नव मास गर्भमांहि पाल पाल रक्षा करी,
जायो जद कठी देवि देवता मनायो क्यों,
तातो शीलो अन्न खाय कदे भूखी धायी रही,
असली निरोगो दूध कटने चुगायो क्यों,
आप तो सूती रही आलाही बिछावनामें,
पके तल सूको वस्त्र पूंछके बिछायो क्यों,
प्रेम कहे एसे परिवार बिन सार्यो होत,
मेटन मर्याद ओ कपूत पूत जायो क्यों २
पाग देन कही सो मांगत हो आजहीपें,
आवेगो आषाढ तब मनहु बुहावेंगे,
ओट पींज कात कर त्यार करिहिंगे फिर,
धोबी काहू चतुर तापें ऊजरी धुवावेंगे,
बुगचेमें बांधकर राखेंगे कितेक दिन,
आवेगो कसुमो तब गुलाबी रंगावेंगे,

हम बांध पूत बाध पोते परपोते बांध,
ताही पीछे वाही पाग तुमको दिलावेंगे. ३

पृथ्वीदास.

(वृद्धत्व, दैवगत)

पीथल धोलां आविया, वहुली लागी खोड
पूरे जोबन पदमिनी, ऊभी मुंह मरोड. १
पीथल पली टमूकिया, वहुली लागी खोय,
मरवण मत्त गयंद ज्यों, ऊभी मूख मरोय. २
प्यारी कहे पीथल सुनो, धोला दिस मत जोय,
नरा नाहरां डिगमरा, पाकाही रस होय. ३
विद्या भलपन समुद्रजल, ऊंचपनो अभ्यास,
उत्तर पथ रु देवगत, पार न पृथ्वीदास. ४

फकीरुदीन.

(सुरती सिपाई-कवित्त.)

सुरतको सार गयो, लोकको व्यवार गयो,
रोजगार डूब गयो, दशा ऐसी आइ हे,
टूट गये शाहुकार ऊठ गई धारि धार,
नहि कोइ किस्के यार, वेरी सगा भाइ हे;
खानेकुं जहर नहि, रहेनेकुं घर नहि,
वात कहा कहुं यार, सभी दुखदाइ हे,
कहेते फकीरुदीन, सुनो हो चतुर जन,
टूट गये तो भी पक्के सुरती सिपाइ हे. १

फेरन.

(विधिदोष-कवित्त.)

गृहिनि वियोग गृह त्यागिनी विभूति दीनी,
योगिनी प्रमोद पुन्यवंतिनी छलो गयो;

गृहनि गृहेश कियो शनिको मुचित लघु,
ज्यालनि अनद शेप मारनी वलो गयो,
फेरन फिरावत गुनीन गृह नीच द्वार,
गुननि विहीन घर बैठही भलो भयो,
कौन कौन यातें तेरी कहौं एक आननतें,
नाम चतुराननपें चूकते चलो गयो १

वनवारी.

(शब्द चमत्कृति, शृंगार)

नेह बरसाने तेरे नेह बरसाने देखी,
यह बरसाने धर मुरली वजायेंगे,
साजु लाल सारी लाल करें लाल सारी देखी—
वेकी लालसारी लाल देखें सुख पावेंगे,
तुंही उर वसी उरवसी नहि और तीय,
कोटि उरवसी तजी तोसौं चित्त लावेंगे,
सेज बनवारी वनवारी तन आभरन,
गोरे तनवारी बनवारी आजु आवेंगे १

बनारसी.

(शील-स्वधर्म-सत्य-ई)

ताहिन वाघ भुजगनको भय, पानि न बोरे न पावक जाले,
ताके समीप रहे सुर किन्नर, सो शुभ रीत करे अघ टाले,
तासु विवेक बढे घट अंतर, सो सुरके शिवके सुख माले,
ताकि सुकीरती होय तिहु जग, जो नर शील अखंडित पाले १
धीरज तात क्षमा जननी, परमारथ मींत महा रुचि मासी,
ज्ञान सुपुत्र सुता करुणा, मति पुत्रवधू समता अति भासी,
उद्यम दास विवेक सहोदर, बुद्धि कलत्र शुभोदय दासी,
भाव कुटुंब सन्ग जिनके ढिग, यों मुनिको कहिये गृहवासी २
काज विना न करे प्रिय उद्यम, लाज विना रनमाहि न जूझे,
डील विना न सधे परमारथ, शील विना सतसों न अरुझे,

नेम विना न लहे निहचें पद, प्रेम विना रस रीति न वूझे,
ध्यान विना न थंभे मनकी गति, ज्ञान विना शिवपंथ न सूझे. ३
केइ उदास रहे प्रभु कारण, केइ कही उठि जाइ कहींके,
केइ प्रणाम करे गढि मूरति, केइ पहार चढे चढि छींके;
केई कहे असमानके ऊपरि, केई कहे प्रभु हेठि जमीके,
मेरो धनी नहि दूर दिशांतर, मो महि हे मुंहि सूझत नीके. ४
सो करुणा विन धर्म विचारत, नैन विना लखिये कोउ माहे,
सो दुरनीति धरे यशहेतु, सुधी विन आगमको अवगाहे,
हो हियशून्य कवित्त करे, समता विन सो तपसों तन दाहे,
सो थिरता विन ध्यान धरे शठ, जो सत्संग तजी हित चाहे. ५

(कवित्त.)

पावकते जल होय वारिधते थल होय,
शस्त्रते कमल होय ग्राम होय वनतें;
कूपतें बिवर होय पर्वततें घर होय,
वासवतें दास होय हित दुरिजनते;
सिहतें कुरंग होय व्याल स्याल अंग होय,
विषतें पियूष होय माला अहि फनतें,
विषमतें सम होय संकट न व्यापे कोय,
एते गुन होय सत्यवादीके दरशतें. १
मौनके धरैया ग्रहकाजके करैया विधि,
रीतके सधैया परनिंदासो अपूठ हे,
विद्याके अभ्यासी गिरिकंदराके वासी,
शुचि अंगके अचारी हितकारी वेन छूटे हे,
आगमके पाठी मन लाय महा काठी भारी,
कष्टके सहनहार रामाहूसो रूठे हें;
इत्यादिक जीव सब कारज करत रीते,
इंद्रिनके जीते विना सरवंग जूठे हे. २
अगनिसें जेसें अरविंद न विलोकियत,
सूर अथवत जैसे वासर न मानिये,
सांपके वदन जेसें अमृत न ऊपजत,
कालकूट खाये जेसें जीवन न जानिये,

कलह करत नाहिं पाइये सुजश जैसे,
बादत रसांस रोग नाश न बखानिये,
प्राणीवधमाहि तैसे धर्मकी निशानी नाहिं,
याहितें बनारसी विवेक मन आनिये ३

(छप्पय)

अग्नि नीर सम होय, माल्सम होय भुजंगम्,
नाहर मृग सम होय, कुटिल गज होय तुरगम्,
विष पियूष सम होय, शिखर पाषान खडमित,
विघन उल्ट आनद, होय रिपु पल्ट होय हित,
लीला तलाब सम उदधि जल, गृह समान अटवी विकट,
इहि विधि अनेक दुख होहि सुख, शीलवत नरके निकट १

बलदेव.

(शुभाशुभ द्विज)

सुदर सतोष दूरि करत है दोष सब,
नेकहू न रोष वेदशास्त्र परगामी हैं,
सुगम बनाते बल्देव यश छाते जग,
बोले पर आते हरि ध्याते हित नामी हैं,
पूरन प्रताप मान मडित महिपनमें,
मजुल वदत बैन ऐन अभिरामी हैं,
रंचित विधान गति दयाके निधान अति,
ऐसे द्विजराजनको धन्य ते नमामि है १

दान हठ ठाने दोष औरके बखानै,
रीति भांति नहि जानै औ न मान खाड पूरीसें,
विद्याको न लेश त्यौं न वेष रूप रेख कछू,
हुज्जति हमेश याज आवें नहीं कुरीसें,
खीझि केश रासैं विष खैहे इमि भासै,
चट टेढी करि आंखि चीरि डारे तन छूरीसें,
कलियुगके काजनका साजे तजी लाजनको,
ऐसे द्विजराजनको दडवत् दूरीसें २

(शुभाशुभ क्षत्रिय.)

गो द्विजको पालै सत मारगमें चालै निज,
शत्रु दल घालै रणमेंतें मन मोरै ना,
सुखद सजीले वीरतामें गरवीले कुल,
एकहू न ढीले हीनताईके निहोरै ना,
जाको संग धारे ताको पार निरवारै दान-
दयाको संचारे धर्म धारै तौ न छोरै ना;
युद्धनकी पत्री सुनि मोद लहै अत्री अति,
ऐसें शूर क्षत्री समतामें और जोरै ना. १

गावै गीत गेतलसें भेद दरशावै कवी,
कर चटकावै मटकावै मुख फेरतें;
विप्रको न मानै पाव लागिवो न जानै कहा.
शास्त्रकी प्रमानै सुनि वा दिशिन हेरतें,
लंपट लबारीमें लायक लखावत है,
लोहेके लपेट सुनी छकी रहे देरतें,
ऐसें क्षुद्र क्षत्री क्रूर काहे किरतार किये,
कूंजरे न कीने शिर मूली धरी टेरेत. २

(शुभाशुभ वैश्य.)

धारत विधान मंजु शीलके निधान मान,
द्विज बलदेव लख्यो लाभ लहे लोग है,
चेत दान दीरघ त्यों लेत सब कीहि सुधि,
हेत हरिहीसौ सुनि शत्रुनके शोग है,
धनसों धनेश दयो ज्ञानसों गनेश दयो,
फतेसों फनेश दयो भौन भरे भोग है,
साचीके स्वरूप सब लायक सनेह भरे,
शाह सुखदातातें सराहनके योग है. १

लेहै लाभ काढी जापनेको बाढि तौलि पुनि,
शेर आधे शेर फेर औरनकों जो दे है,
कामके समेमें कठिनाइ गहि लेत अति,
आदि अंत नम्र .. श्वके समान वोदे है,

वामके गुलाम धाम धाममें धकाकों व्है,
निमक हराम काम की है नहीं वोदे हैं,
तिया चमार बैठि चौकमें चुराइ लेत,
शाह कहवावें सब चोरनको दे हैं २

(शुभाशुभ वैद्य)

सुंदर सुभग तन सुखद मुदित मन,
आनंदके घन धन क्षण हित साज हैं,
दया दान धारी बल्देव उपकारी जग,
भारी भीर टारी शुचि शीलके समाज हैं,
देशकाल जानै तिमि औषध विधानै-
समर्हाकों सनमानैं ठानै गुण शिरताज हैं,
विशद विचार त्यों अचारें श्री सचारें चारु,
सेई सिद्ध भेई लखु तेई वैद्यराज हैं १
नारी नांहि जानत अनारी कहे गारी देत,
तारी दे हसत है हजारनकों मारामें,
मोटी बीच गोली तौ न गोलीसी लगत यह,
तोली कई वार गई प्रौढनको पाराम,
करणी यही है घर घरनी रिझैवे योग,
वसु वयतरनी मिटैगी यों विचारामें,
बैठ हैं वधिकसें बिसारे बकरूप बनि,
ऐसें वैद्यराजनको बहामें बरि धारामें २

(शुभाशुभ वकील)

न्याय रस राचे आदि अंत गति जाचे,
अपनेसों सदा साचे अंक वाचे दरकारमें,
द्विज बल्देव सुख सिद्धिनको सेव छुपो,
छोहको न भेप औ न लोभ दरकारमें,
रूप गुन काव फैलि रासत है आव अति,
हाजिर जवाब हे न तावत रकारमें,
अमित विचार अधिकार हेत मालिकके,
करै कारावार ते वकील सरकारमें १

पूंछी भूलि जावै समै कैसें को बुझावे तिन्है,
आपुको न आवै कछु एती कहे ऐंठे है;
मामिलेकी वेर भई देर काऊ टेर करै,
चंदरसें वोले आवै अंदरमें पैठें है;
जीते हारि मानी कवौ जीते जे न आजु लग,
तीते गनि लीजें और कीजें कहा ठैठ है;
ढील ढील गात वात नील मुख कीन्है लखौ,
भीलकी सकलके वकील वनि वैठें है. २

(कवि, भाषाविचार.)

द्विज वलदेव कहै आप महाराज तैसें,
वोऊ कविराज कछु जान अनुमानौ ना;
आप वित्त देत त्यों कवित्त वे विचित्र देत,
वरण अधिक एक ताकों पहिचानौ ना;
मानत रहे है जिन्है पुरिषा सनातनतें,
तिनको उचित मानिवो हे हठ ठानौ ना;
नागी शमसेर सी जवान जोर जाको रहे,
ऐसे कवि इन्द्रको खिलाना करि जानौ ना. १

विदित पदारथ प्रयोजन प्रसिद्ध सव,
तासों वलदेव भाषा भाय ठीक ठानिये;
भाषा विन भाखे सन्निपातीसें वकत रहै,
दूजी कौन भाषा व्रजभाषा सम आनिये;
संस्कृत नाम ना सरस्वतीको भाष्यों कोऊ,
भाषा* नाम भाष्यो ऐसी भाषा धन मानिये;
भाषा जो न जानत सो कैसें संस्कृत जानै,
भाषा जो न जाने ताहि शाहामृग जानिये. २

(सपूत-कपूत लच्छन.)

कोश उदार प्रभुहित त्यों, सत रीति सदा वलदेव लहावत,
नाम प्रसिद्ध सभा अति चातुर, आतुर आनंद आनि गहावत;

---

*हिंदी भाषाकि महत्ता वताते कहा है कि,-
हिंदुस्थानी सोरहि आना, अवे तवेका वार,
ईकडं तिकडं आठहि आना, मुं सा पैसा चार. १

क्यो न करै कुलको अधिकार, स्वरूप भरे दुख दूर बहावत,
धूतनको मत कूतत हैं नित, ते मजबूत सपूत कहावत १
आपस मात पिताकी न मानत, नीति तजे कुल रीति बहावत,
नाम त्यों रूप लजावनो है, सतसंगिनहूको गरूर गहावहत,
एकहु काम सरो न कर्यो, निरलाज भयी लघु लोभ लहावत,
कायर काम कुमारगके, कलिकाल ठये ते कपूत कहावत २

(शुभाशुभ स्त्री लच्छन)

शील सुरूप सुलक्षण लाजमें, शुद्ध सुधा बच हैं मन भायक,
प्रेम पतिव्रतसो परिपूरण, संपति साज सजे सब लायक,
चातुरि चचलताको तजे गति, मद निरालस श्रीगुण लायक,
भाग्य भरे पतिमात्र सराहत, ते युवती जगमें सुखदायक १
रोष अहारको रूप घनी, पर मंदिर मांझ सदा सुतिया है,
मद मलीन अलाज अलायक, क्षोभ तजे त्यों छली छुतिया है,
देत सबै बिग जा सतसगसों, धाम रही चहुधा धुतिया है,
दूरि करौ सुतियाको भयानक, ऐसी तियातें भली कुतिया है २

बलभद्र.

(प्रियार्अंग दर्शन)

अवलंबी अलिन नलिनहीं कीरिकामें,
अमीकुंभ ऊपर अनंग छाय दीनी है,
कैंधो शित कंठ कंठ राजित गरल दुति,
कनक गिरिन मनी मंजरी नवीनी है,
सिसुताकी तनुता तनक तम घरी जनु,
तामसकी रीतितें तरुनी तेज कीनी है,
स्यामाके अनुप कुच अग्रनकी स्यामताइ,
मानो बलभद्र रसराज छबि छीनी है १
कैंधो उदयाचल उराजे राका जोबनको,
कैंधो अथवत शिशुताई भान गति है,
अंतरको राग किंधो बाहिर प्रगट भयो,
कैंधो सुखरागकी झलक झलकति है,

कैधो चंद्रवदनीके वदन गयंद कुंभ,
कैधो उभै भास राजे शिवही शकति है;
कैधो बलभद्र जामी मूल द्वै सजीवनको,
एसी कुच अग्रकी अरुनता लखति है. २

पाटल नयन को कनद केसे दल दोउ,
बलभद्र वासर उनिंदी देखी बालमें;
शोभाके सरोवरमें बाडवकी आभा कीधों,
देव धुनि भारती मिली है पुण्यकालमें;
काम करवत कैधो नासिका उडुप बेटो,
खेलत शिकार तरुनीतें मुखतालमें;
लोचन सितासिततें लोहित लकीर मानो,
फंदे जुग मीन लाल रेशमके जालमें. ३

तारसो तगासो बार लीकसो लू कंजनसो,
छंदी केसो छंद कहिवेमें छलियतु है,
चितही परत चोकी जात ह चितोननि जहां,
नेननिकी गतिको गुमान दलियतु है,
पगन धरत धरकत हियो बलभद्र,
टगनि भरत डग डग हलियतु है;
कच कुच हार चीर वारनके भात भार,
एसे छीने लंकपे निसंग चालियतु है. ४

विषकी लतासी बिनु पात दुहितासी आसी,
विष अलपासी भामिनीकी यहि भांति है;
कुच चक्र डेरिनकी डोरी मखतूलहूकी,
जानी अमीघट चढी पिपिलीका पाति है;
जठर अगिनी आभा डोरी नाभिकूपकीकि,
चतुर चितौनिमें चिहुंठी अहटाति है;
अलप उदर पर तेरे रोमराजी किधों,
बलभद्र बानीकी विपंचिहीकी ताती है. ५

पातिप मदनको वदन झलकत अति,
रूपकी तरग तामें प्राण तानियतु है;

जीवनकी जोति झगमगति प्रभाकी मानो,
अजिर उदोत ताको उर आनियतु है,
मुकुरतें अमल बनायो है विधाता विधु,
बलभद्र यह अनुमान मानियतु है,
मेरे जान झांइ झलकत तेरे आननको,
ताहिको उज्यारो जग जोन्ह जानियतु है ६

वल्लभ

(विविध विचार—कवित्त)

कंत बिन कामिनी ज्यों बसत बिन कोकिला ज्यों,
दंत बिन गज जैसे कंज बिन सर है,
दीप बिन मंदिर महीप मिजलस बिन,
मान बिन दान जैसे शीश बिन धर है,
पानी बिन मोती ज्यों वाणी सुमरण बिन,
अक्ष बिन ज्योति जैसे पक्षी बिन पर है,
रीझ बिन वल्लभ कवित्त रस चित्त बिन,
गति बिन हंस जैसे मति बिन नर है १

दूधको कहत क्षीर दुबकों सु घास कहे,
दारमोकों अनार नाम धरिकें रहत है,
दर्पणको आरसी त्यों दलकों कहत पत्र,
दूनीको जहान काहू मुलका कहत है,
वल्लभ दफार कहूं कान परे वाके कछु,
छोडिकें मकान म्हातें भागन चहत है,
दाईहूकों ताई नाई कहिकें पुकारें और,
देयबेमें डरतें वे ददा ना कहत है २

देवतासों सुर कहे दानव असूर कहे,
दाल्नसों पेती कहे धा कहत दाइसों,
देहरेकों मठ कहे देवीकों भवानी कहे,
दाखकों मुनका कहे तापता दरियाइसों,
दपणकों वटा कहे दारम अनार कहे,
द्वारिकाको कृष्णपुरी कहे चतुराइसों,

दियेकों चिराग कहे दानेकों खुराक कहे,
देवेकों कछु नांहांपै ददा केत भाईसों. २

वालकृष्ण.

(आर्यअनार्यविचार.)

प्यार नां प्रभूसों वडे लंपट लवार जार,
यार कलदारके पुकारे पैसे पैसे है;
धर्मसे सरोवरकों पंकिल करन काज,
मानौ यमराजकी सवारीहूके भैसे हैं;
तीरथ पुरान व्रत मंदिर विरोधी क्रोधी,
इनके समान और निंदक न ऐसे है;
कहे कवि वालकृष्ण दिलमें विचार देखो,
ऐसे जोपें आर्य तो अनार्य फेर कैसे है. १

वालचंद.

(देवगुरू स्वरुप.)

सकल पातक हर विमल केवल धर,
जाको वास शिवपुर तासुं लेह लहिये;
नाद बुंद रूप रंग पाणि पाद युक्त अंग,
आदि अंत मध्य भंग जाकों नहि पाहिये;
सघेण सठाण जाण नाहि कोइ अनुमान,
ताको करतहि ध्यान शिवपुर जाइये;
भणे मुनि वालचंद सुनो हो भाविक वृंद,
अजर अमर पद सोय देव जानिये. १

जाको क्रोध नांहि मुल मन माया लोभ दूर,
कर्म किया चकचूर जासु मोह नाणिये;
जाकों नमें इंद्र चंद्र सूर वृंद मुनिवृंद,
जीणंद अनंत गुण मनमें प्रमाणिये;
जाकों है अनंत ज्ञान करत मुक्तिप्रदान,
अहोनिश ताकों ध्यान अंतर वखानिये,
भणे मुनि वालचंद सुनोही भाविक वृंद;
तरण तारण गुरु तार भव पाइये. २

वाजिंद.

(उपदेश चिन्तामणि-छंद अरल)

सुंदर पाई देह, नेह कर रामसें,
क्या लुभावे काम, धरा–धन–धामसें,
यह तन रंग पतंग, संग नहि आवसी,
जमहूंके दरबार, मार बहु खावसी, १

गाफल मूढ गमार, अचेतन चेत रे,
समजी संत सुजान, शिखामन देत रे,
विषयामांहि बेहाल, व्हा दिन रेन रे,
शिर वेरी जमराज, न सूझे नेन रे २

दिलकी अंदर देख, के तेरा कोन हे,
चले न भेला साथ, अकेला गौन हे,
देह गेह धन दार, इनुसे चित दिया,
रख्या न निशदिन राम, काम तें क्या किया ३

खान अरु सुलतान, बडे जग कावते,
देश विदेशा माहा, के हुकम चलावते,
खाग लगे बल भोम, बयाकी खाटिया,
जीय गये जम साथ, मिले तन माटिया ४

जीमत रोज जरूर, मिठाइ ताजिया,
चौसर चौपाट ढाल, रमंता बाजिया,
छल बल चतुरा छेल, अबीछल नारिया,
खेले आतस खेल, फटाका बारिया ५

रहते भीने छेल, सदा रंग रागमें,
गजरा फुलां गुथत, धरता पागमें,
दर्पणमें मुख देख, के मुछवा तानता,
जगमें बाका कोय, नाम नहि जाणता ६

सुंदर नारी संग, हिंडोले झूलते,
पेर पाटंबर अंग, फरता फूलते,
जोते खूबी खेल, के बेठ बजारकी,
सो भी हो गये छेल, देरी छारकी ७

अण कलाया मेल, भंडारी ऊडियां,
देश विदेशा मांहि, चलंती हुंडियां;
जाके आगे देश, कमाता वेठिया,
हो गये फना मकाम, के एसा शेठिया. ८
गादी तकिया नाख, रहेते गमरमें,
रेशम धोती पेर, कंदोरा कमरमें;
ज्याका चलता हुकुम, मसवे मलकमें,
कोटिधज शाहुकार, विलाने पलकमें. ९
सब दिन चाकर पास, रहंते सासते,
कामकाज करनार, के वोत गुमासते;
लेखा करते रोज, हजारों लाखके,
हो गये छिन एक माह्य, के ढगले राखके. १०
नित जाके दरबार, जडंती नोवतां,
मत्री पास प्रवीन, करंता मोवतां;
चतुरा जीना चोज, तरक अति सूजता,
तीनांहूका जगत, नाम नहि वूजता. ११
जहं आगे मल रोज, अखाडा मंडते,
खग वल खाते खंड, उड दंडा दंडते;
थता कचेरी थाट, छटा रंग छायके,
सूता ताणी सोड, मसाणुं जायके. १२
धरे रहते रोज, के अबके रावके,
मछराले मेवास, के को धन मावते;
कनक छडी ले हाथ, नकी पोकारते,
धरे रहे सब राज, गये जख मारते. १३
बंका किला वनाय, के तोपां साजियां,
माते मंगल द्वार, केत ते ताजियां;
नित प्रत आगे आय, नचंती नायका,
याकुं गये उपाड, दूत जमरायका. १४
जोगी करते जोग, के आसन साधते,
अखंड भभुत लगाय, जटा सिर बाधते,
साधि कल्प केदार, के ततपर होय रे,
काल व्यालकी झपट, वचा नहि कोय रे. १५

यह दुनिया बाजींद, पलकका पेखना,
यामें बहुत विकार, कहो क्या देखना,
सब जीवनका जीव, जगत् आधार है,
जो न भजे भगवत, छठीमें छार है १६

रामनामकी लूट, फबै है जीवको,
निस बासर कर ध्यान, सुमर तूं पीवको,
यहै बात प्रसिद्ध, कहत सब गाम रे,
अधम अजामिल तरे, नारायण नाम रे १७

केते अर्जुन भीम, जरा जसवतसे,
केते गिने असंख्य, बली हनमतसे,
जिनकी सुन सुन हाक, महा गिर फाटते,
तिन घर भायो काल, जो इनहि डाटते १८

हो जाना कछु मीठ, अंत कह तीत है,
देखो हृदय विचार, या देह अनीत है,
पान फलों रस भोग, अत कह रोग है,
प्रीतम प्रभुके नाम, विना सब सोग है १९

नबियोंका सिरताज, खास दरगाहदा,
सब ना दाम कबूल, रसूल खुदाहदा,
उम्मत दे पुत जिवन, कसटी जानसर,
कौन साहिबनू अक्खे, यों नहि यों कर २०

विना बासका फूल, न ताहि सराहिये,
बहुत मित्रकी नारि, सो प्रीति न चाहिये,
सठ साहिबकी सेव, कबहु नहि कीजिये,
विधा विद अरु जिंद, अकाज न दीजिये २१

इक राम कहत कल्मा, न हूवा कोइ रे,
अर्द्ध नाम पाषान, तरा निर लोह रे,
कर्मकी केतिक बात, बिलय व्है जायगे,
हाथीके असवार, कुत्ते क्यों खायगे २२

कुंजर मनमें मत्त, मरे तो मारिये,
कामिनि कनक कलेस, टरे तो टारिये,

हरिभक्तनसों नेह, पले तो पालिये,
रामभजनमें देह, गले तो गालिये. २३

जेती बोली वानी, सो तो वह रही,
हृदय कपटकी वात, तो मुखसों का कही;
बोले बोली बोल, बुलाई पीवकी,
ऊपरकी सव जूठ, फलेगी जीवकी. २४

घडी घडी घडियाल, पुकारे कही है,
बहुत गइ हे अवध, अलपही रही है,
सोवे कहा अचेत, जाग जप पीव रे,
चलि हे आजकी काल, वटाऊ जीव रे. २५

पानौ लगे न ताहि, तहां लागोय रे,
रीते हाथ न जाय, जगत् सव जोय रे;
यह माया वाजींद, चले क्या साथ रे,
वहतें पानी पूर, पवाले हाथ रे. २६

पाहन कोरा रहे, वरसते मेहमें,
धाल धरो वाजींद, दुष्टता देहमें,
डसे औचका आय, मूड गहि रोइये,
सर्पहि दूध पिलाय, वृथा हो खोइये. २७

विहारी (पहिला.)

(श्रीराधाकृष्ण भक्ति-शृंगार.)

मेरी भव वाधा हरो, राधा नागरि सोइ,
जा तनुकी झांई परे, श्याम हरित द्युति होइ. १
सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल,
यहि बानक मो मन बसौ, सदा विहारीलाल. २
मोर मुकुटकी चंद्रिका, यों राजत नदनंद;
मनु शशि शेखरके अकस, किय शेखर शत चंद. ३
अपने अंगके जानिके, यौवन नृपति प्रवीन;
स्तन मन नयन नितंबको, बडा इजाफा दीन. ४
देह दुलहियाकी बढे, ज्यों ज्यों जोबन ज्योति,
त्यों त्यों लखि सौतिन सबे, वदन मलिन दुति होति. ५

मानहु मुख दिखरावनी, दुलहिन करि अनुराग,
सास सदन मन ललनहू, सौतिनि दियो सुहाग ६
नेह न नैननको कछू, उपजी बडी बलाय,
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय ७
साजे मोहन मोहको, मोही करत कुचेन,
कहा करों उलटे परे, टोने लोने नेन ८

(दम्पति विरह, प्रेम)

वामा भामा कामिनी, कहि बोलो प्रानेश,
प्यारी कहत लजात नहि, पावस चलत विदेश १
होंही बौरी विरहवश, कै बौरो सब गाव,
कहा जानिये कहत क्यों, शशिहि शीतकर नाव २
सोवत जागत सुपन वश, रस रिस चेन कुचेन,
सुरत स्यामघनकी सुरत, विसरेहू बिसरे न ३
प्रगटयौ आग वियोगकी, बह्यो विलोचन नीर,
आठों जाम हियौ रहै, उड्यो उसास समीर ४
औरे भाँति भये व ये, औसर चदन चद,
पति विन अति पारत बिपति, मारत मारुत मद ५
तजत हठाव न हठ पर्या, सठमति आठो जाम,
भयो बाम वा बामको, रहत काम बेकाम ६
मरन भलो बर विरहतें, यह विचार चित जोय,
मरत मिटे दुख एकको, विरह दुहुँन दुख होय ७
लाल तिहारे विरहकी, अगनी अनुप अपार,
सरसे बरसे नीरहू, झरसे मिटे न झार ८
देखत बुरे कपुरलों, उडे जाय जिन लाल,
छिन छिन जात परी खरी, छीन छबीली बाल ९
कहा कहों वाकी दशा, हरि प्राणनके ईश,
विरह ज्वाल जरबो लखे, मरिबो भयो अशीस १०
रग राति राते हिये, प्रीतम लिखी बनाय,
पाती काती विरहकी, छाती रही लगाय ११
कर ले चूमि चढाय शिर, उर लगाय भुज भेट,
लहि पाती पियकी लखति, बांचति धरति समेट १२

कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात;
कहि है सब तेरो हियो, मेरे हियकी बात. १३
अति अगाध अति ओथरो, नदी कूप सर वाय;
सो ताको सागर जहां, जाकी प्यास बुझाय. १४
गति दै मति दै हेत दै, रसद जस दै दान;
तन दै मन दै सीस दै, नेह न दीजै जान. १५

(नायिकादि शृंगार.)

कहा कुसुम का कौमुदि, कितक आरसी जोति;
जाकी उजराई लखे, आंखि ऊजरी होति. १
नख सिख रूप भरे खरे, तउ मांगत मुसक्यान,
तजत न लोचन लालची, यें ललगौंही बान. २
ज्यों ज्यों जोबन जेठ दिन, कुचमिति अति अधिकात;
त्यों त्यों छिन छिन कटि छपा, छीन परत नित जात. ३
भई जु तनछबि बसन मिलि, बरनि सकै सु न बेन;
अंग ओप आँगी दुरी, आँगी अंग दुरे न. ४
चलन न पावत निगम-पग, जग उपजो अति त्रास;
कुच उतंग गिरिवर गह्यो, मीना मेन मवास. ५
कुचगिरि चढि अति थकित व्है, चली दीठ मुख चाड;
फिर न टरी परि ये रही, परी चिबुकके गाड. ६
दुरति न कुच बिच कंचुकी, चुपरी सारी सेत,
कवि अच्छरके अरथलों, प्रगट दिखाइ देत. ७
चलत घेर घर घर तऊ, धरी न घर ठहराति;
समुझि उही घरकों चले, भूलि उही घर जाति. ८
सदन सदनके फिरनकी, सद न छुटे हरिराय;
रुचे तितें बिहरत फिरो, कत बिरहत उर आय. ९

(प्रस्ताविक, अन्योक्ति इत्यादि.)

तंत्री नाद कवित्तरस, सरस राग रतिरग;
अनबूडे बूडे तरे, जे बूडे सब अंग. १
भजन कह्यो तातें भज्यो, भज्यो न एकौ बार;
दूर भजन जातें कह्यो, सो तें भज्यो गँवार. २
लोपे कोपे इंद्रलों, रोपे प्रलय अकाल;
गिरिधारी राखे सबै, गो-गोपी-गोपाल. ३

जम करि मुंह तरहरि पर्यो, घर घर हरि चित लाव,
विषय तृषा परिहरि अजौं, नरहरिके गुन गाव ४
कोऊ कोटिक संग्रहो, कोऊ लाख हजार,
मो सपति यदुपति सदा, बिपति बिदारनहार ५
जप माला छापा तिलक, सरै न एको काम,
मन काचे नाचे वृथा, साँचे राचे राम ६
जगत जनायो जिहिं सकल, सो हरि जान्यो नाहिं,
ज्यौं आँखिन सब देखिये, आखि न देखी जाहि ७
तौ लगि या मन सदनमें, हरि आवैं केहि बाट,
निपट विकट जबलौं जुटे, खुले न कपट कपाट ८
कैसे छोटे नरनसौं, सरत बडनके काम,
मढयो दमामा जात क्यों, सौ चूहेके चाम ९
बडे न हुजे गुनत बिन, बिरद बडोई पाय,
कहत धतूरेसों कनक, गहनों गढयो न जाय १०
सगति सुमति न पावही, परे कुमतिके धंध,
राखो मेलि कपूरमें, हींग न होय सुगंध ११
समै सम सुदर सबै, रूप कुरूप न कोइ,
मनकी रुचि जेती जितै, तितै तिती रुचि होइ १२,
बसै बुराई जासु तनु, ताहीको सनमान,
भलो भलो कहि छाँडिये, खोटे ग्रह जप दान १३
कहै इहै श्रुति सुमृति सो, यहै सयाने लोग,
तीन दबावत निसकही, राजा पातक रोग १४
नहिं पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास यहि काल,
अली कलीहीतें बंध्यो, आगे कोन हवाल १५

(जयशाह औ ग्रंथप्रशंसा)

चलत पाय निगुनी गुनी, धन मनि मोती माल,
भेट भये जयशाहसौं, भाग चाहियत भाल १
घर घर हिंदुनी तुरकिनी, देत असीस सराह,
पतिनु राखि चादर चुरी, पति राखी जयशाह २
यों दल काढे बल्खतें*, ते जयशाह जुवाल,
उदर अघासुरके परे, ज्यों हरि गाय गुवाल ३

* काबूल.

हुकुम पाय जयशाहको, हरि राधिका प्रसाद;
करी विहारी सतसई, भरी अनेक सवाद. ४

सतसैयाके दोहरा, ज्यों नावकको तीर;
देखतके छोटे लगे, घाव करे गंभीर. ५

\+ ८ १ ७ १
संवत ग्रह-शशि-जलधि-छिति, छठ तिथि वासर चंद;
चैत्र मास पछ कृष्णमें, पूरन आनँदकंद. ६

विहारी (दुसरा.)

(संगदोष असर.)

वेठिये न जहां तहां कीजे न कुसंग संग,
कायरके संग शूर भाग हेपें भाग हें;
काजलकी कोटडीमें केसोही जतन करे,
काजलकी एक रेख लाग हेपें लाग हे,
देखो एक वागनमें फूलनकी वासनमें,
कामिनीके संग काम जाग हेप जाग हें;
कहेते विहारीलाल कठिन विराग पथ,
सोवतको प्रेमफंद लाग हेपें लाग हे. १

प्रेमके वजारमें विचार कर वैठो मन,
कामकी दुकानहमें, सान सव हार्यो हें;
लोभको गुमास्ता तँह मिले अति आदर दे,
दयाके दिवान जाने मायापास डार्यो हें;
क्रोध कोटवाल तामें, प्यादेने पकर पायो,
मोखन वजीर जाने, वसवो वडार्यो हे,
अव वन वेपार कैसें करहो विहारीलाल,
कंचन सो शहेर उन पंचुनें विगार्यो हें. २

मान हेमवास तामें घुंघट सुकोट होट,
अधर कपाट आड अंजन वनाई हे;
भ्रकुटी धनुष खेंची मारत कटाच्छ वान,
नासिका कमान एहि गढपें चढाई हे;

\+ विक्रम संवत् १७९१

फाहेकू रूढत अति जीति न शकेगी आली,
येतो महाराज जाकी जगमें दुहाई हे,
मेरी सौंह मिल तोको मिलिये बिहारीलाल,
नातर अनत फोज तोपर चढाई हे   ३
मृगसी चपल आखे चपला रुजानी मानु,
भौंहें धन हरे चाप धनमें छिपानो है,
नासिका बिलोकी बन डोलत रहत कीर,
श्वेत दात देखो जेसो दारिमको दानो हे,
सपुट कवल कुच श्रीफलसें शोभा देत,
रिझेरी बिहारीलाल तो बिन दुखानो हे,
चित्ता जेसी रुक झीनी झुकत पवन लागे,
आली गजराज तेरी चालमें बिकानो हे   ४

बीरबल-(ब्रह्म.)

(माधवमहिमा)

जो तुम छत्रकि छाह चलावत, तो न कछु कछु में रिधि पाइ,
जो तु धराधर भीख मगावत, तो न कछु कछु आप ठयाई,
ब्रह्म भने बिनती इतनी अब, छोरुं नहिं हरि तो शरणाई,
दीनदयाल कृपा करि माधव, मोहि कहा सब तोहि बडाई   १

(अकबरको नीतिशिक्षा)

पूत कपूत कुलच्छन नारि, छराक परोसि लजावन सारो,
बंधु कुबुद्धि पुरोहित लपट, चाकर चोर अतीव धुतारो,
साहेब सूम अराक तुरग, किसान कठोर दिवान नकारो,
ब्रह्म भने सुन शाह अकब्बर, बारह बांधि समुद्रमें डारो   १
दूत दयामनो मूरख ब्राह्मन, नारि निरंकुश कायथ भोरो,
स्वार कुवीर कुलच्छन पोरियो, आकरो बानियो चाकर खोरो,
वैद्य असिद्ध अनाथ सभासद, कूर कलावत काटनो घोरो,
ब्रह्म भने सुन शाह अकब्बर, बारहु बाधि समुद्रमें बोरो   २

(नम्रता)

नमे तुरी बहु तेज, नमे दाता धन देतो,
नमे अंब बहु फल्यो, नमे जलधर बरसतो,

नमे सुकविजन शुद्ध, नमे कुलवंती नारी,
नमे सिह गय हनत, नमे गजवेल सम्हारी;
कुंदन इमि कासियो नमे, वचन ब्रह्म सच्चा चवे,
पुनि सूखा काष्ट अजान नर, भाज पडे पर नहि नमे. १

(शृंगार, समस्या.)

एक समे नवला तियसें निशि, केलि करी जब श्याम सिधारे,
आलसवंत उठ्यो नहि जात, परेहि परे कर केश संवारे;
आननतें तरवन्न गिर्यो इक, ब्रह्म भने उपमा उन भारे,
मार्योहि राहु धको रथ चंदको, टूटि पर्यो रथचक्र सुनारे. १

कुच ऊपर मोतिन माल फवे, गिरिराज सुता सम रूप ढरे,
भनि ब्रह्म मिली अवली जमुना, सम संगम कोटिन पाप हरे;
तियके सु नख क्षतकी उपमा, हियमांझ चुभी द्रगतें न टरे,
जनु कालिमा मेटनकों रजनीपति, मज्जन्न तीरथराज करे. २

सखी भोर उठी बिन कंचुकि कामिनि, कान्हरतें करि केलि घनी,
कवि ब्रह्म भने छवि देखतही, कहि जात नहीं मुखतें बरनी;
कुच अग्र नखक्षत कंत दियो, सिरनाइ निहारति हे सजनी,
शशि शेखरके शिरसे सुमनो, निहुरे विधु लेत कला अपनी. ३

एक समै हरि धेनु चरावत, बेन वजावत ऐन रसालहि,
दीठि भरी मनमोहनकी, वृषभानसुता उर मोतिन मालहि;
सो छवि ब्रह्म लपेटि हिये, करसों कर ले करकंज सनालहि,
ईशके शीश कुसुंभकी माल, मनो पहिरावत व्यालनि व्यालहि. ४

काम कलाधिक राधिका आधिक, रतलों कामकी बात बनाई,
कामसों कान्हर दे कुचपें कर, सोइ रहे रति काम कि नाई,
ब्रह्म जराइकी मुद्रिका दे सु, सखी लखि कोटिक भांतिन भाई,
देखनकों पियको तियके, हियकी अखियां मनो बाहिर आई. ५

सबकी सुनिए सबसों कहिए, सब देखि सबे कछु कीजत हे,
जिन रूसत रूसत हो जियसें, तिनके बिछुरे अब जीजत हे;
कबि ब्रह्म भने बिनु प्रानपिआ, इन प्राननिकों न पतीजत हे,
छतियां न फटी इतने दुखतें, अलि पाहन हूतो पसीजत हे. ६

बेनी.

(अस्तोदय-कवित्त)

पृथु नल जनक ययाति मानधाता ऐसे,
येते भूप भये यश छितिपर छाइगे,
कालचक्र परे शक्र लक्र न होत जात,
कहाल्यों गिनावों बिधि बासर बिताइगे,
बेनी साज सपति समाज साज सेना कहा,
पापन पसारि हाथ खोले मुख जाइगे,
क्षुद्र क्षितिपालनकी गिनती गिनावे कौन,
रावनसे बलीते बबूलेसे बिलाइगे ॥ १

(तुलसी महिमा)

वेदमत शोधि शोधि देखिकें पुरान सबै,
संतन असंतनको भेद को बतावतो,
कपटी कपूत कूर कलिके कुचाली लोग,
कौन रामनामहूकी चरचा चलावतो,
बेनी कवि कहै मानो मानो रे प्रमाण येही,
पाहनसे हिये कौन प्रेम उमगावतो,
कलिके कुचाली लोग कैसे भवपार होते,
जो न रामायण यह तुलसी बनावतो ॥ १

(कर्तव्य-अकर्तव्य)

साधे द्वारि चाकरी चतुर चित्त चाकरीको,
उमिरि वृथा करी न रामकी कथा करी,
पापको पिनाकरी न जानै नाक नाकरीसो,
हारिलकी लाकरी निरंतरही नाकरी,
ऐसी समता करी न कोउ समता करी सो,
बेनी कविता करी प्रकाशता सता करी,
न देव अरचा करी न ज्ञान चरचा करी,
न दीनपें दया करी न बापकी गया करी ॥ १

(श्रीराधाकृष्ण शृंगार, १)

बदन सुधाकरे उघारत सुधाकरे,
प्रकाश बुधा करे सुधा करे मुधा करे,

चरन धरा धरे मृनाल ऊधरा धरे सु,
एसे अधरा धरे ये बिंव अधरा धरे;
सु वेनी द्रग हा करे निहारत कहा करे,
सु वेनी कविता करे त्रिवेनी समता करे;
सुरतमें सिकरे सु मोहनें वसी करे,
विरंचिहू यसी करे सु सौतिन मसी करे. १

वियत विलोकतही मुनिमन डोलि उठे,
वोली उठे वरही विनोद भरे वन वन;
आकुल विकल व्हे विकाने रे पथिक जन,
ऊर्ध्वमुख चातक अधोमुख मराल गन,
वेनी कवि कहत महीके महा भाग भये,
सुखद सयोगिन वियोगिनके ताप तन,
कंज पुंज गंजन कृपीदलके रजनसो,
आये मान भंजन ये अंजन वरन घन. २

(सवैया.)

रतिरंग जगी चख मिजत ज्यों, त्यों त्यों मोहन चोपतसो,
कवि वेनि हहा करि हासि कियो, सो जगावे न जागत कोपतसो;
कर मडित मोतिनके गजरा, द्रग मीडत आनन वो पतसो,
अरविंदनको पकरे मनोतारे, कलानिधि भूपतिसो पतसो. १

छहरे सिरपें छवि मोरपखा, उनके नथके मुक्ता लहरें,
फहरे पियरों पट वेनि इते, उनकी चुनरीके झवा झहरें;
रसरंग भिरे अभिरे हें तमाल, दोऊ रस ख्याल चहे लहरें,
नित एसें सनेहसों राधिका श्याम, हमारे हियेमें सदा ठहरें. २

(कवित्त.)

तरनि तनूजा तीर फूले हे निकुंज पुंज,
तेसी ये सुभग सांझ सांवरी सुहाइ हे;
तेसो दूजी ओर तें मयंक जगिमगि उयो,
ऊजरे प्रकाशमें विलास पियराइ हे;
किरने चमकि चहूं ओरन बिहरि गई,
जलमें झलक परें ओरे छवि छाइ हे;
वेनी मनि मानिक प्रसून पत्र पंछी पछ,
यहे जूथि कानन झिलमिलात झाइ हे. १

वैताल.

(राय विक्रमको उपदेश)

प्रथम लगन जब लगी, तबहिं कछु और न सूझे,
सुध बुध गई हेराय, तबहि संमुख है जूझे,
विरह तेग तलवार, सेउ अति खन्जर भारी,
तपत रहै दिन रैनि, घाव अतस तन कारी,
नित मरना नित जीवना, सो रैनि पलट यो दीजिये,
वैताल कहे विक्रम सुनो, जो मित्र कहे सो कीजिये १

अरुण तेज अति रूप, बरन उनको है न्यारो,
तिमिर नाश परकाश, जगतको सिरजनहारो,
देव आदि नर भूप, ध्यान उनहींको धारे,
प्रलय पवन जल नाश, भये इनहींते सारे,
वैताल कहे विक्रम सुनो, सकल लोक जिनतें तरत,
भानु प्रतापि नित जान कर, नमस्कार सबहिं करत २

वचन छल्यो बलिराज, वचन कौरव मत खंडो,
वचन करन लगे कोश, वचन कौरव वन मंडो,
वचन लाग हरिचंद्र, नीच घर नीर समर्प्या,
वचन लाग जगदेव, शीश ककालिहि अर्प्या,
वाचा पलट वैताल भनत, तो कर गहि जिह्वा काटिये,
उर जाय लक्ष विक्रम सुनो, सौ कोटि वचन नव पलटिये ३

शशि विनु सूनी रेन, ज्ञान विन हिरदय सूनो,
कुल सूनो विन पुत्र, पत्र विन तरुवर सूनो,
गज सूनो विन दंत, सलिल विन सायर सूनो,
विप्र सूनो विन वेद, बास विन पुहुप विहूनो,
सूनो राव सामंत विन, अरु घटा सून विन दामिनी,
वैताल कहे विक्रम सुनो, पति विन सूनी कामिनी ४

दया चढ हो गई, धर्म धसि गयो धरनिमें,
पुन्य गयो पाताल, पाप भो वरन वरनमें,
राजा करे न न्याय, प्रजाकी होत खुवारी,
घर घरमें वे पीर, दुखित भे सब नर नारी,-

अब उलटि दान गजपति मंगे, शील संतोष किते गयो,
बैताल कहे बिक्रम सुनो, यह कलियुग प्रकट भयो. ५

नही इंद्र नहि चंद्र, नही तारे तारागण,
नहि ब्रह्मा नहि विष्णु, नही नारद नारायण,
नही राज्य नहि पाट, नही धरणींधर चावर,
नहीं अंब नहि खंब, नही भरथरी दिगंबर;

नहि रावण नहि राम था, (तौ) नहि इतना विस्तार था,
बैताल कहे विक्रम सुनो, (एक) अंधाधुंध गुब्बार था. ६

दिये नौ सौ हाथी, नौ तुरंग पच्चास गयंदन,
दिये सो सुंदर पद्मिनी, कि दिये भाट निरंजन;
दिये केसर कस्तूरि, कि दिये मलयागिरि चंदन,
(दिये) चंवर चीर नग हीर, लाल माणिक जड खंभन,

सकल सभाके राव तुम, सो मन बिचार चितै धरौ,
बैताल कहै विक्रम सुनो, छप्पनकि डोर कागद चढो. ७

डबकर पढे कवित्त, पास मोची तुक जोरे,
मुल्लां पढे कवित्त, नाव गहिरेमें बोरे;
भुजवा पढे कवित्त, जीव दश बीस जरावै,
धोवी पढे कवित्त, छान कर कल्प चढावे.

कुछ कुछ कवित्त नाऊ पढै, सो बाल मुंडि आगे धरै,
बैताल कहे बिक्रम सुनो, अब कवित्त सब नर पढै. ८

हाथी चंचल होय, झपट मेदान देखावे,
राजा चंचल होय, मुल्कको सर कर लावे;
पंडित चंचल होय, सभा उत्तर दे आवे,
घोडा चंचल होय, सवारे युद्ध जितावे;

ये चारों तो चंचल भले, (सो) राजा-पंडित-गज-तुरी,
बैताल कहे बिक्रम सुनो, (एक) नारी चंचल बहु बुरी. ९

पहिर झींग ले पटा, पाग शिर टेढी बांधे,
घरमें तेल न लोन, प्रीति चेरीसों साधे;
बातनमें गढ लेय, युद्ध आंखिन नहि देखे,
अवघट घटमें जाय, त्रियासो मांगै लेखे;

जानत है सो जानत सबै, दुःख सुख साथी कर्मके,
वैताल कहे विक्रम सुनो, ये लच्छन नामर्दके १०
मर्द शीशपर नवै, मर्द बोली पहिचाने,
मर्द खेलाये खाय, मर्द चिंता नहि माने,
मर्द मेय औ लेय, मर्दको मर्द बचावे,
गाढ सकरे काम, मर्दके मर्द आवे,
पुनि मर्द उनहीको जानिये, जो दुःख सुख साथी धर्मके,
वैताल कहे विक्रम सुनो, ये सब लच्छन मर्दके ११
चोर चूप कर रहे, जाइ परघर धन दुकै,
जोरू चुप कर रहे, पिया बोल न सके,
चेरी चुप कर रहे, शील साहेबको माने,
गूंगा चुप कर रहे, बात एको नहि जाने,
वृक्ष और जल जीव सम, पवन साथ उडते रहे,
वैताल कहे विक्रम सुनो, कवि होइ सो कुछ कुछ कहे १२
चुप कर रहे कोइ चोर, रेन अधियारी पाये,
सत चूप वै रहे, मढीमें ध्यान लगावे,
बधिक चूप वै रहे, फांसि पक्षी ले आवे,
छैल चूप वै रहे, सेज परनारी पावै,
घर पीपर पात हस्ती श्रवण, कवि होइ सो कुछ कुछ कहै,
वैताल कहे बिक्रम सुनो, चातुर चूप कैसे रहे १३
बुध बिन करे वेपार, दृष्टि बिन नाव चलावे,
सुर बिन गावे गीत, अर्थ बिन नाच नचावे,
गुन बिन जाय बिदेश, अकल बिन चतुर कहावे,
बल बिन बांधे युद्ध, हाम बिन हेत जनावे,
अन इच्छा इच्छा करे, अन दीठी बाता कहे,
वैताल कहे बिक्रम सुनो, ए मूरखकी जात है १४
पाल बिन कटे न पथ, बाहु बिन हटे न दुरिजन,
तप बिन मिले न राज, भाग्य बिन मिले न सज्जन,
गुरु बिन मिले न ज्ञान, द्रव्य बिन मिले न आदर,
बिना पुरुष सिनगार, मेघ बिन कैसे दादुर,

वैताल कहे बिक्रम सुनो, बोल बोल बोली हटे,
धिक धिक ए पुरुषको, मन मिलाइ अंतर कटे. १५

रणमें झंझे शूर, टकापर जान गंवावे,
दाता दे जिन ज्ञान, आप भिक्षुक है जावे;
लोभी अति मतिवान, बैठ अपने घर खावे,
कादर रहे गुनवान, सदा वे प्रान बचावे;

लोभी औ कादर हे भले, जिन युद्ध पुन्य दोऊ चले,
वैताल कहे विक्रम सुनो, दाता शूर विरला मिले. १६

मरो अवेलन बेल, मरो विरंगी टट्ट,
मरो वेरानी नार, मरो खसम निखट्ट;
वेह बामन मर जाव, जूठ बेरानी खावे,
पुत्र सो मर जाव, कूलमें दाग लगावे;

वचनहीन राजा मरे, तबे निद भरि सोहिये,
वैताल कहे विक्रम सुनो, गुन संभार का रोइये १७

जीभि योग अरु भोग, जीभि सब रोग बढावै,
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै;
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नरक दिखावै,
जीमि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै;

जीभि ओंठ एकत्र करि, बांट सहारे तौलिये,
वैताल कहै विक्रम सुनौ, जीभि सम्हारे बोलिये. १८

टका करै कूलहूल, टका मिरदंग बजावै,
टका चढै सुखपाल, टका शिरछत्र धरावै,
टका माइ अरु बाप, टका भाइनको भैया.
टका सासु अरु स्वशुर, टका शिर लाड लडैया.
एक टके बिन टुक टुका, होत रात अरु रात दिन.
बैताल कहै विक्रम सुनौ, धिक जीवन एक टके बिन. १९

(समस्या पूर्त्ति)

अवध छाड रघुनाथ, जाय बन खंड पहोंचे,
त्रिया हरी दशकंध, वहां संग्राम व गुच्छे,

ज्या एकसु एक, लपण शक्ति जो पछार्यो,
पवनपूत हनुमंत, जाय द्रोनागिरि ल्यार्यो,
चाधी समुद्रकी हद बल, नीर लहर ऊपंभरी,
बैताल कहै विक्रम सुनौ, तादिन मच्छ गिरिवर चरी १
बिन मुख करै अहार, कठ विन राग सुनावे,
विन अंग चोला पहर, हस्त विन तार बजावे,
पाचो पडा जोर, शीश विन पुरुष कहावे,
बिन इन्द्री ओलाद, त्रियाके निकट न जावे,
अचरज सुजान बूझो गुणी, (जाके) हाड मांस नहि और कर,
बैताल कहे विक्रम सुनो, (तो) कलियुग अंदर कोन नर २
एक अग भुज चार, शीश सोऽह जो कहिये,
चार चरणसों चलै, नेत्र चौंसठ युग लहिये,
द्वै मुख हैं परत्यक्ष, चौदह भवनमें धाये,
नीति लोकम फिरे, देव सब पूजन आये,
सात दीप नव खडमें, आदि अंत जाको सुयश,
बैताल कहे विक्रम सुनो, योग शृंगार के वीररस ३
सबल पुरुषको भजि, भजि करि तिरिया कीनी,
त्रिया गई जलमाहि, चोह वाकी हरि लीनी,
त्रियासें त्रिया भई, जबे घट पुरुष सवारे,
जब वह कुह्रकी जाय, तीर धरधीके मारे,
ताहि खवाये रस ऊपजे, (सो) और खवाये होत यश,
बैताल कहे विक्रम सुनो, (कहुं) योग शृंगार के वीररस ४
पग तुरग नहि तुरी, पूछ ऊंची नहि कूकर,
श्याम बरण नहि रीछ, जमी खोदत नहि शूकर,
मुख वाको नहि बौल, नहि केहरि नहि चीता,
विद्या चढे आकाश, नही केहर नहि चीता,
जो तो तो बोझ कछू नहि, (जाके) हाड मास नहि और कस,
बैताल कहे विक्रम सुनो, (कहु) योग शृंगार के बीररस ५

बोधा-बुद्धसेन.

(प्रेमपंथ विरलता.)

अति छीन मृनालके तारहुते, तेहि ऊपर पाव दै आवनो है;
सुइ बेहतें द्वार सु कीन तहां, परतीतिको टांडो ल्दावनो है;
कवि बोधा अनी घनि नेजहुते, चढि तापै न चित्त डरावनो है;
यह प्रेमको पंथ कराल महा, तरवारकी धारपै धावनो है. १

घरमै नरमै सरमै तरुमै, गजराजमै बाजमै जानि परै;
सुक सारो मयूर कपोतनमै, मृग केहरि और जो चित्त अरै,
कवि बोधा बजाइकै प्रीति करै, यह आतमज्ञान हियेमे धरै,
हम राम-दोहाइ न झूठि कहै, यह प्रीतिसों मौत तर पै तरै. २

बरही कर प्रीति पयोधरसों, परलै ब्रजराजके माथ मढै;
पुनि रागसों प्रीति कुरंग करी, वह राग कुरंगके श्रिंग कढै,
कवि बोधा न कौल अनोखी करी, यह प्रीतिकी रीति बिरंचि पढै;
जब आसकी तेरी सईकी करै, तब काहे न संभुके सीस चढै. ३

वह प्रीतिकी रीतिको जानत हे, तबहीं तो बच्यौ गिरि ढाहनते,
गजराज चिकारिकै प्रान तज्यौ, न जर्यो संग होलिका दाहनतें;
कवि बोधा कछू न अनोखी यह, का बनै नही प्रीति निबाहनतें;
प्रह्लाद जो ऐसी प्रतीति करै, तब क्यों न कढै प्रभु पाहनतें. ४

यह प्रेमको पन्थ हलाहल है, सु तौ बेद पुरानऊ गावत है,
पुनि आंखिन देखो सरोजन लै, नर संभुके सीस चढावत है;
बरही पर माथे चढै हरिके फल, जोगते एते न पावत है,
तुम्है नीकी लगै ना लगै तौ भले, हम जान अजान जनावत है. ५

शत यज्ञ करे ते सुरेस भये, करे जोग ते जीव जिआवत है;
दिये दानके दौलति होति घनी, तपके किये राजको पावत है;
कवि बोधा सु तौ हम चाहत ना, परतीतिकै प्रेम बढावत है,
तुम्है नीकी लगै न लगै तौ भले, हौ अजान न जान जनावत है. ६

लोककी लाज औ सोच परलोकको, वारिये प्रीतिके ऊपर दोऊ;
गांवको गेहको देहको नातो, सनेहमें हांतो करै पुनि सोऊ;
बोधा सुनीति निबाह करै, धर ऊपर जाके नही सिर होऊ;
लोककी भीति डेरात जो मित तौ, प्रीतिके पैडे परै जनि कोऊ. ७

घाटन बाटन हाटनमें, मृगतृष्णा तरंगिनि सों तरिये है,
पै यह चाउ नहीं बिसरे, भरमै भ्रमकी भवरी भरिये है,
बोधा कहै दिग कौनके या दु ख, की गरुवी डलिया धरिये है,
जो न मिले दिए माहि एक, अनेक मिले तो कहा करिये है ८
कूर मिले मगरूर मिले, रनसूर मिले धरे सूर प्रभाको,
मानी मिले औ गुमानी मिले, सनमानी मिले छबिदार पताको,
राजा मिले अरु रंक मिले, कवि बोधा मिले निरसंग महा को,
और अनेक मिले तौ कहा नर, सो न मिल्यो मन चाहत जाको ९
एक सुभानके आननपै, कुरवान जहा लगि रूप जहाको,
कैयो सतक्रतुकी पदवी, लुटिये तकिकै मुसकाहट ताको,
सोक जरा गुजरा न जहां, कवि बोधा जहा उजरान तहांको,
जान मिलै तौ जहान मिलै, नहि जान मिलै तौ जहान कहां को १०
लखि नीर बहै औ दवागि दहै, जमराज गहै कबहू निबहै,
पुनि सेर लखेरे बिलुके उसे, बहुतेरे मिथा पुनि और सहै,
कवि बोधा अनोखी कि साया लखौ, दुइ टूक ह फेरि न धीर गहै,
तिरछौ तरवारि लौ हैं तिरछे, दृग लागे जिन्हैं ते लगे न रहै ११
सुख मूल गये दुख मूल लये, पुनि पाप रु पुण्य छुडाइ दई,
कबौं काम न क्रोध औ लोभ गहे, समुझे सपनेकी बदीकी दई,
कवि बोधा गही छवि सावरेको, उरमै यह प्रेमकी यारी बई,
तुम होउ सबै महारानी अबै, हम तौ अब राम दिवानी भई १२
दुख औ सुख पाप औ पुन्य दुओ, रसरासुको रोवत गावत है,
गुन औगुन नेकी बदी हितू बैरि, सुधा बिप एक सु भावत है,
कवि बोधा अनादर आदर ऊपर, तैं जिय तौ सुख पावत है,
दिलदारपै जौलौं न भेट भई, तबलौं तरिबो का कहावत है १३
बहिये बिरहानल दाहनसों, निज पापन तापनको सहिये,
चहिये सुख तौलौं रहै दुखकै, दृग मारिये बोधनकै चहिये,
कवि बोधा इतें पै हितू न मिलै, मनकी मनहीमे पचै रहिये,
गहिये सुख मौन भई सो भई, अपनी करि काहूसों का कहिये १४
गहि पाइ ते भीलनी हाथ करौं, तू तहां न गुसा उर आनतु है,
बनिये घर बोधा बिके गुरको, तिनपै रिस काहे न ठानतु है,

हिय फाटी तूं मेरी जो बात सुने, उनते घटिकामे बखानतु है;
हंसिकै तब ज्वाब दियो मुकुता वै, अजानतै जौहरी जानतु है. १५

(प्रस्ताविक.)

चामके दाम गुनीनके आम, यों विस्वाकी प्रीति पलीतको मेवा,
सेनापती सपनेमे सती अरु, भानुमती करै पांख परेंवा;
बोधा जुबान जथा सठकी, लखो फागुको बापु देवारीको देवा;
आखिर चूमिकै कौन गयो, करि धूमकी धाम लौ सूमकी सेवा. १

(नीति-कवित्त.)

हिलिमिलि जानै तासों हिलिमिलि लीजे आप,
हिलिमिलि जानै ऐसो हितू ना बिसाहिये;
होय मगरूर तासों दूनी मगरूरी कीजे,
लघुता ह्वै चलै तासों लघुता निबाहिये;
बोधा कवि नीतिको निबेरो एहि भांति करो,
आपको सराहै ताहि आपहू सराहिये;
दाता कहा सूर कहा सुंदर प्रवीन कहा,
आपको न चाहै ताहि आपहू न चाहिये. १

(इश्क-दोहा.)

उपजै इस्क जु अंगतै, रहत अंगके बीच;
हाड मांस गलिबो करै, इस्क न जानत नीच. १
लगनि वहे थल एक लगि, दूजे ठोर बढै न;
कीच बीच जैसे गुरा, खुचकै फिरि उचटैन. २
नेहा सब कोऊ करे, कहा करै मै जात,
करिबो और निबाहिनो, बडी कठिन यह बात. ३

वंशगोपाल.

(सूम-लच्छन.)

खायके पान बिदारत होठ, है बेठि सभामें बने अलबेला;
धोति किनारिकी सारिसी ओढत, पेट बढाय किये जस थेला;
वंशगोपाल बखानि कहें सुनो, भूप कहाय बने फिर छेला;
सान करे बडि साहिबकी, और दानमें देत ना एक अधेला. १

ब्रह्मानंद.

(हिंडोर वर्णन)

फूलन हिंडोरे झूले फूले पिय प्यारी दो,
फूलन सिंगार किये फूलन बिछायेरी,
फूलन बनायो छत्र फूलनकी चौकी नीकी,
फूलन मेराब जाली फुलन बनायेरी,
पिया फूल सजे पाग प्यारि सजे फूल माग,
फूलनके हार पेरे दोनों हुलसायेरी,
ब्रह्मानंद फूले मन झूले शामा-स्याम लखी,
फूले ब्रज गोपी ग्वाल बाल हरखाएरी १

नवल बनाई पाग नवल फूलन तोरे,
नवल हिंडोरे झूले नवल बिहारीरी,
नवल प्रवाल खंभ नवल रतन डांडी,
नवल भनाय टीनी फूलनकी जारीरी,
नवल अबेकी डाल नवल झुलावे ग्वाल,
नवल बनी हे मम्नमानुकी दुलारीरी,
ब्रह्मानंद नवल प्रीतम घनस्यामहुकी,
मुरती नवल मोय लागत हे प्यारीरी २

(दुर्गुणी भेखधारी-त्रिभंगी)

भट वेद पढदा, सध्या बदा, कर्म न कढ्ढा ऊजंदा,
ओंकार जपंदा, सुन्य रहंदा, अंतर मदा, मुडंदा,
पुनि कथा कहंदा, लोक ठगदा, विकल फिरदा, बतंदा,
सद्गुरुका बंदा, ब्रह्मानंदा, साच कहंदा, सब हदा (टेक) १
सन्यास सहूता, खिन न थरूता, फिरत बगूला, जगखूता,
माय्याके पूता, नगन रहूता, धरत बिभूता, धनचूता,
भैरव अरु भूता, जपत संजूता, रडी रूता, न तरंदा-सद्० २
जग का'वत जोगी, सब विधि भोगी, अतर रोगी, अघ ओघी,
मदमास भखोगी, भूत जपोगी, लज्जा खोगी, कामोगी,
तन कान फटोगी, बेसुध होगी, फरत हे पुंगी, फूकंदा,-सद्० ३
अरु जंगम कहावे, लिंग लटकावे, घंट बजावे, शिव गावे,

पुनि भीख मगावे, पैसा पावे, त्रपत न आवे, तन तावे;
फिर स्वान भसावे, लोक हसावे, भेख लजावे,भरमंदा;–सद्० ४
अरु फकिरा फरता, कल्मा भरता, अंतर जरता, नहि ठरता;
जीवनकको मरता, शंक न धरता, जोंहर करता, नहि डरता;
बोल्त बर बरता, कंठहु करता, पच्छिम धरता, घूमंदा;–सद्० ५
आखत अरिहंता, जंता जंता, कर्म कथंता, भरमंता;
विषये वरतंता, कंचन कांता, अंतर शांता, नहि अंता;
अरु कर्म करता, नहि डरपंता, नहि भगवता, उचरंदा;–सद्० ६
कहावत वैरागी, लुब्धा लागी, अंतर आगी, त्रियरागी;
ज्वाला विष जागी, माया पागी, अकल वेकागी, निर्भागी;
बांधत घर बागी, लज्जा त्यागी, धन अरु ढांगी, धारंदा;–सद्० ७
भक्तिके भगला, बातन बगला, अंतर दगला, विष ढगला;
देखत टग टगला, डोल्त नगला, थिर थव पगला, जग ठगला;
बाहर मति बगला, अंतर कगला, याका संगला, छांडंदा–सद्० ८
गळ धारत माला, अंतर काला, विषे विहाला, चित चाला;
मजबूत मसाला, त्रपत रसाला, ठाकुर थाला, पँड पाला;
मन क्रोध कराला, जरत जंजाला, अंतर ठाला, मुझंदा–सद्० ९
वैरागां झंडी, देखत भंडी, जातम खंडी, क्रम कंडी;
उर जडता उंडी, ममता मंडी, टीला टुंडी, पाखंडी;
राखत घर रंडी, सब विधि छंडी, पथ्थर पिंडी, पूजंदा,–सद्० १०
नावत जल नीका, धारत टीका, गल कंठीका, तुलसीका;
अरु मीठा जियका, कपटी हियका, नाहन ठीका, मुरधीका;
बाना हरजीका,विकल विलीका,किंकर त्रियका,विषकंदा;–सद्० ११
भेखनके धारी, सबमें ख्वारी, अंतर भारी, अहंकारी;
बोल्त मुख गारी, राखत नारी, माया यारी, व्यापारी;
जब मंगलकारी, गुरु मिल्यारी, भ्रमना टारी, जगफंदा;–सद्० १२

(उपदेश–सवैया–झूलणा.)

पायि जींदगी बंदगी नांहि करी, नित ख्याल किया ठगबाजियोंका;
मद मोहमें तें मगरूर फिर्या, तन ताकता नारियां ताजियोंका;
सद्गुरु साहेबका रंग चडया नहि, संग किया नर पाजियोंका;
ब्रह्मानंद कहे कैसें बेत माने ते तों, ग्राहक जूतिया जाझियोंका. १

ताकु देख फपे परिवार सारा, डारा देत हे हाथमें धोंकडिंयुं,
कबु सिखकी बात न फान धरे, डाला होय हलावत डोकडियुं,
खरे मोक्षके पंथसे खूट बेठा, हियाफुट छोडे नहि होकडियु,
ब्रह्मानद फहे चल चढ़ गफू, मर बूड देखात क्या मोकडियु २
रामनामकी कोर तो सोई रहा, काम क्रोध रु लोभमें जागता हे;
भरपूर रहे बात भुंडियामें, दुचा छटियामें मन लागता हे,
रहे दास भया भगतानियाका, हरिभक्तके सगसें भागता हे,
ब्रह्मानद फहे नख सीख सुधां, तेरा मुखतें जुतिया मागता हे ३
पनघट बेठे पन खोवता हे, मुख जोवता हे पनियारियाका,
दिन रेन माया बिच भूल गया,खुशी-ख्याल किया नित ख्वारियाका,
चित फाट गया मरफेल चले, चार टेरता हे घरवारियाका,
ब्रह्मानद फहे तोकु दु ख लगे, पण मुल्ख तो नाक पेजारियाका ४
धिकताइ सतनिके साजहुमे, धन देखहिके डुलि जायकेजी,
धिक सूर हटया सगरामहुसे, कहा जीवता हे घर आयकेजी
सत भेख धर्या चहे लोकहुके, मुख देहसें चित्त लगायकेजी,
ब्रह्मानद कहे तिनु ख्वार भये, जग माहि घटे जस पायकेजी। ५
बहु होय प्रवीन ज्युं बोलता हे, चित ढोलता हे दाम चामकि वे,
अति बाहिर भेख बनावत सुंदर, भितर चाल हरामकि वे,
मद मोह दर्या नहि मनहूसें, कहो चातुरता कोन कामकि वे,
ब्रह्मानंद कहे सब बात जुठी, जोलु मुख नही सिया रामकि वे ६
कडा बेढ विंटी मोती पेर काने, महा जोरसें मूछ मरोडता हे,
चले देखता आपनि छांयडिकु, टेडि पाग बांधी तन तोडता हे,
तन अत्तर तेल फूलेल लगावत, नेह त्रियासंग जोडता हे,
ब्रह्मानंद कहे खबरदार बंदे, देख काल किसें नहि छोडता हे ७
तेरा कोन गजा केते जिवनपें, एते जोर जुल्म जनावता हे,
कबु धमकी बातमें पाव धरे नहि, पाप सदा मन भावता हे,
पिंड पालनेकुं राक पीडता हे, ताकि त्रास नहि उर लावता हे,
ब्रह्मानद कहे दिन दोइ पिछे, देख काल अचानक आवता हे ८

(नरतन फिटकार-कुंडलिया)

पहेला बखतर पे'रके, चलत चलत मुकलाय,
हक बाजे पीछा हटे, धिक जीवत तेहि माय

धिक जीवत तेहि माय, असत पग भर घर जावे,
बूड मरे जल मांह्य, कहा शठ वदन देखावे;
दाखत ब्रह्मानंद, हिमत अरु किमत हरेला,
लडत चले मुख लाय, पे'रके वखतर पहेला. १

विष त्यागी संग्रह करे, उलटा अंगकुं खात;
नर जोनीसें नीकल्या, भया स्वानकी जात.
भया स्वानकी जात, वात कोउ वाकी माने,
लंपट होत ल्वार, रात दिन हे हेराने;
दाखत ब्रह्मानंद, राम अंतर नहि राखिया,
उलटा अंगकुं खात, त्याग कर संग्रह विषया. २

सती पतीके कारणे, चली वलन ले साज;
वन्हि देखि पाछी फिरी, कहो कहां रही लाज;
कहो कहां रही लाज, काज सब भ्रष्ट कियाका,
रजपूतनके रंग, संग तजि दिया पियाका;
दाखत ब्रह्मानंद, रही नहि मोल रतीके,
कुडा कहे सब कोय, करुण फिरि ताहि सतीके. ३

सती शूर अरु संतका, तीनूका इक तार;
जरे मरे सुख परहरे, तब रीझे किरतार.
तब रीझे किरतार, सबे संसार सरावे,
नहितो होत खुवार, हार जित सबही जावै;
दाखत ब्रह्मानंद, महा फल अचल मतीका,
तीनूंका इक तार, शूर अरु संत सतीका. ४

(संत लच्छन.)

राज भयो कहा काज सर्यो, महाराज भयो कहा लाज बढाई;
शाह भयो कहा वात बडी, पतशाह भयो कहा आन फिराई;
देव भयो तो कहा तुं भयो, अहमेव बढो तृष्णा अधिकाई;
ब्रह्ममुनि सतसंग विना, सब और भयो तो कहा भयो भाई. १

गौरव रौरव तुल्य गने, प्रभुताइसो पाप समान गहे हे,
काल समा सउकारकुं जानत, कंचन गार समान रहे हे;
नारिसो नागिनी कारि समान हे, यारिसो तो जम धारि वहे हे;
कोमल अंतर ब्रह्ममुनि कहे, सो सत्शास्त्रमें संत कहे हे. २

क्रोध न काम न लोभ नहीं मद, द्रोह नहीं मद मोह हटाये,
शीतल शुद्ध विचार सुलक्षन, जाहि मिले भवरोग मिटावे,
सार ग्रहे धन दारसें दूर हे, जगत विकार असार विहावे,
ब्रह्ममुनि सुविचार कहंत हे, संत सोई भगवंतकु भावे ३

(कवित्त)

पारस पथ्थरमही लोहकुं सुधार लेवे,
पारस भये ते छिनमाहि हेम होइ हे,
आक ढाक वृक्षनकू चदन सुधार लेत,
आपके समान कीन शीत खुशबोइ हे,
जेसे भृग कीटकुं सुधारके फिरात भग,
भृग सग भृग होय कीट जाति खोइ हे,
कहत हे ब्रह्मानद राय मन वाणि करी,
ततकाल सिषकुं सुधारे गुरु सोइ हे १

(अडजन-सवैया)

रेतिहुतें कोइ तेल न पावत, पानि मथे घृत कोन लयो हे,
शृगक भ्रूटत कैसे मिले कन, शून्य मुठी मारि काह भयो हे,
प्रौढ वसा पथरा नहि भींजत, ज्वार बोई अन कोन जयो हे,
औषध वोध न ब्रह्ममुनि कहे, जाहिकु रोग असाध्य भयो हे १
देखनमें नर सो खर डोलत, नारि खर्ग सुख लात समी हे,
ग्राम कथासें विराम न पावत, काम रु क्रोधमें बुद्धि भ्रमी हे,
'हु हु' कियेइ रहे निश वासर, व्याकुलता उरमें न समी हे,
ब्रह्ममुनि कहे और सबे गुन, पूछ नहीं तन एक कमी हे २

(साधुअंग-छप्पय)

लेस न अंतर लोभ, क्षोभ कचहु नहि पावे,
हानि वृद्धिके जोग, हरख अरु शोक न आवे,
जहं कारण जग मह, लोभकी होवत पीरा,
सो जानत हे सग, अस्त छन भग शरीरा,
सब भोग साज सुर राजसुख, काकविष्ट सम जानके,
कहे ब्रह्ममुनी जग फिरत हे, ब्रह्मरूप निज मानके १
ग्राम्य गीत नहि सुनत, कहे नहि ग्राम्य कथाकु,
अहोनिश हरिकी याद, वदत नहि वाद वृथाकु,

सज चंदन त्रिय सेज, ताहि स्पर्शनकूं त्यागे,
मायिक मिथ्या जान, एक हरिसें अनुरागे,
लहलीन मग्न नंदलालमें, जगत स्वप्नवत् जाहिके,
कहे ब्रह्ममुनी माहंत सो, दर्शन दुर्लभ ताहिके. २

अंतर तेल फुलेल, धरन प्रिय वस्तु न चाहे,
यथा लाभ संतोष, ताहिते तनु निर्वाहे;
विषय अधिक रमणीक, पंच इंद्रिनकूं प्यारा,
ताकूं इच्छत नाहि, रहत याते डरि न्यारा;
आकर्ष करत इंद्रिनको, कुपथ जान देवत नहीं,
कहे ब्रह्ममुनी सब जग सुखद, सो जगमें साधु सही. ३

होत न विषयासक्त, रहत अनुरक्त भजनमें,
दुर्मति दुवधा दूर, सूर सुखि साजत जनमें,
जीतन इंद्रिय जतन, रहत ततपर दिन राती,
काम क्रोध मद लोभ, आत नहि निकट अराती.
वैराग्य धर्म भक्ति विमल, गुन विन समजत ज्ञानकूं,
नित ब्रह्ममुनी निशदिन नमत, ऐसे संत सुजानकूं. ४

मधुकर वृत्ति महत, गहत दृढ जनको ज्ञानी,
अल्प अल्प अन्न लेत, जाचि ग्रहियनसें जानी;
रसनाके वश होय, एक ग्रहिकूं न सतावे,
निज कर पाक वनाय, प्रभूको भोग लगावे;
निर्स्वादि निरंतर वर्त निज, अंतर अति आनंदमें,
कहे ब्रह्ममुनी नर हीत कर, गर्क रहत गोविंदमें. ५

मिलहि भूमिको राज, साज सुखसंपति नाना,
मिलहि स्वर्ग सुरलोक, प्रवल अमृतको पाना;
मिलत इंद्र अधिकार, मिलत क्रम करि पद विधिको,
अष्ट सिद्ध पुनि मिलत, मिलत संग्रह नवनिधिको,
सुत भ्रात तात वनिता मिले, खूब खजाना नंग हे,
कहे ब्रह्ममुनी सबही मिले, पन इक दुर्लभ सत्संग हे. ६

(असाधु-सवैया-झूलना.)

कंठि धार टीका किया भेखनका, बने ठीक ठीकां चले रावनेमें,
सबे पाय लागे धरे भेट आगे, बहु चातुरी लोक बोलावनेमें,

सास्वि यात शिखि करे यात तिखी, धर्मा रीत ठाने गुन गावनेमें,
ब्रह्मानंद कहे योत ग्यान जाने, तेरा तान तो राड रिझावनेमें १
पेटि माड येठा काज पेटहुके, मांहि माल भर्या ठग फांसियाका,
विपे आप सेवे ठगी द्रव्य लेवे, एसा योध देवे रोटि खासियाका,
हरिजनकू देखके द्वेप धरे, भरे दोड होका गाम मासियाका,
ब्रह्मानंदके रामका दास नहीं, तें तो दास हे दुनिया दासियाका २
गले धार माला विपेमें विहाला, करे चित्त चाला पट्ट पामरीमें,
घसे भांग घोटा खरा भाव खोटा, लिये रोज आंटा सबे गामडीमें,
चढे योत मेला मडे द्वार मेला, करे धन भेला धरे तामडीमें,
ब्रह्मानंद के राममें प्रीत नही, तेरा चित्त तो चामडी चामडीमें ३
लड्डु म्याडहुका चेये लालजीकु, गुड योत गरम जनावता हे,
घोड मीसरीका थाल भोग चढे, दूध भेंसहुका घणा भावता हे,
चेये भाग गांजा मेरे लालजीकु, भाजी ताजिया भोग लगावता हे,
ब्रह्मानंद कहे ठगी लेत पेसा, एसा लोकुकुं ज्ञान बतावता हे ४
कहे याइयाईं तन धन हुसें, सहु चाकरी सतकी कीजीओजी,
कोइ आइ किये राम आन मिले, एमी यातकु नाहि पतीनियोजी,
अचे भोग धरो मेरे लालजीकु, घोड साथिरागमकु पीजियोजी,
ब्रह्मानंद कहे खबरदार रेना, देना होय सो हमकुं दीजियोजी ५
करे एक चेली रखे आप भेली, ताकी बंदगी योत बखानता हे,
सदग्रंथकी रीत न कान धरे, करे मान मोटा मत तानता हे,
करे कुड कपट रु ओरहुका, धन आपने मंदिर आनता हे,
ब्रह्मानंद के रामकी यात नहीं, मन माइकी जातमें मानता हे ६
सबे ढोर ठाडे मेरे रामजीके, भेंस रामजीकी दुध पायनेकु,
सबे खेतवाडी मेरे रामजीके, भाजी शाकची भोग धरावनेकु,
दोय छोकरा छोकरी रामजीके, एक टेलची थान उठावनेकुं,
ब्रह्मानंद के रामका नाम लेसे, सबे आपने काम लगावनेकु ७

(सत अंग)

धन भाग बडे जगमाहि जाके, एसे सतहुस ओलखान हेजी,
इंद्रियाकुं लगाय स्वरूपहुम किये केदहुमें मन प्रान हेजी,
हरि साथ रहे लय लीन सदा, करी प्रीति प्रगट प्रमान हेजी,
ब्रह्मानंद कहे दास रामहुके, एसे जगमें संत सुजान हेजी १

एसे संत मिले कभि काहु रही, साची शीखवे रामकी रीतकुंजी,
परापार सोई परब्रह्म जामे. ठहरात हे जीवके चितकूंजी,
दृढ आसन साधकें ध्यान धरे, करे ज्ञान हरिजीके गीतकूंजी:
ब्रह्मानंद कहे एसें संत मिले, प्रभु साथ वढावत प्रीतकूंजी. २

(कवि परिचय)

ज्ञाति चारण ओडक आसिउंकी. आवु छाय भयो खाणगाममेंजी;
ताके नाम शंभुदान तातहूको. मात लालुबाई धर्यो ठाममेंजी;
लाडु मेटके श्रीरंग नाम धर्यो. दोउ लीन ब्रह्मानद नाममेंजी,
चित धार सेजानंद शाम छवि, जग जीत गयो निज धाममेंजी. १
आदि त्रीसमें मायिक जीव हूकी, लखि रीत देखावन त्रास हेजी.
पीछे भेख लजावन भुंडुवाके. लखे द्वादश वाक्य विलास हेजी.
पीछे आठमें संतकी रीत लखी, सोई सत्य प्रभुजीके दास हेजी.
ब्रह्मानंद विचारके तोलनाजी. यह झूलनां नंग पचास हेजी. २

भगवंत. (पहिला.)

(शरम-वेशरम.)

शरम मत नहि चले, शरम सरवे पहिचाने.
शरम समझि पग धरे, शरम कुलकाति सु माने;
शरम दिये नित दान, शरमकों लज्जा आवे.
शरम कपट नहि करे, शरम रनमें चढि धावे,
भनंत भगवत सवमें शरम, वेद वदत गुण नरमके,
सुनि हो राय अरु सुजन नर, ये लच्छन सव शरमके. १
पहिर चीकनो झगा, पाग टेढी कर वंधे,
पनघट पर जइ वेठ, युवति पर नैनहि संधे,
वातनसें गढ लेत, युद्ध आंखे नहि देखो,
घरमें लौन न तेल, तियापें वडवर लेख्यो,
भगवंत भनत चित ना शरम, वेद वदत गुण नरमके,
सुनि हो राय अरु सुजन नर, ये लच्छन वेशरमके. २

भगवत (दुसरा).

(राम प्रताप)

पानपूत आगको लगाय भगवंत कवि,
लगत न घाव काहू तूपकके तीरको,
रातो भयो आसमान तातो भयो भासमान,
कारो पीरो नीर भयो नीरधिके तीरको,
लंक लागी मरन जरन रनिवास लाग्यो,
व्याकुल व्है असुर धरै नर न धीरको,
सूरनको जाप कैधों सीताको सराप हैकि,
रावनको पाप के प्रताप रघुवीरको १

भगवत (तिसरा).

(सोळशृंगार-कुंडलिया)

शुचिता शील सनेह गति, चितवनि बोलनि हास,
कच गूथनि सीमन्त शुभ, भाल तिलक मुखरास,
भाल तिलक मुखरास, दगन अंजन अति सोहै,
बीरी वदन सुदेश, चिबुक मासिकन मन मोहै,
जावक मिहँदी रंग राग, भनत भगवत नित उचिता,
ये सोरह शृंगार, मुख्य तामें घर शुचिता १
नूपुर बिछिया किंकीणी, नीवी बधन सोइ,
कर मुँदरि कंकण वलय, बाजूबंद भुज दोइ,
बाजुबंद भुज दोइ, कंठ श्री दुलरी राजै,
नासा बेसरि सुभग, श्रवण ता टक बिराजै,
भगवत बेंदा भाल, मांग मोती गो उप्पर,
द्वादश भूषण अंग, नित्य प्यारी पग नूपुर २

भगवतसिंह.

(युक्तिनिरूपण-कवित्त)

बदरा न होंहि दल आये मैन भूपतिको,
बुंदिया न होंहि परे बान सर लाइ है,

दादुर न होंहि ये नकिब चहूं और बोले,
मोर ये न होंहि हाक शूरन सुनाइ है;
बगुला न होहि शेत धजा भगवंतसिंह,
चपला न होंहि समशेर चमकाइ है,
बाल्म बिदेश तेंहि बिरहनि मारिबेको,
जुगनु न होंहि काम जामगी जगाइ है. १

भरमि.

(पाखंडवर्णन-कवित्त.)

काम रस मातो परमारथकी बातै करै,
जराते जराते नाहि छोरे और धज्जको;
वेद औ पुरानके बखान करे आठो जाम,
साधक समाज जाइ पूजे पांय रज्जको;
हाथ लिये माला जपमाला मुख बोलनकी,
धर्मके ठगैया खल खात है अखज्जको;
भरमि सुकवि कहे सुना है उखाना यह,
सो सो चुव्हा खायके बिलैया चली हज्जको. १

आदि आप आय मीठी बातन बनावे फेर,
हा हा करे सौहे खाय सांचो आवे मनको:
याहि भांति दाम लेत बीच जगदीश देत,
हमे तुझे राम ना जनावे काहु जनको;
भरमि सुकवि जब औधि आवे मागे जाइ,
झगरो मचावे औ लजावे साधुजनको;
गुन पाछे औगुन है जगतमें सु देखत हौ,
मेरतें जिवाय धाय बैरी होत तनको. २

काशी अरु मक्के जावे संध्या औ निमाज पढे,
वेदही कुरान जाप जपे आठौ जामको;
तीरथमें न्हायके अनेक मन माला जपे,
निंद भूख त्यागी रहे तन धन धामको;

भरमि सुकवि कहै कोटिक उपाय करे,
राननमें ध्यान धरे एक हरि नामको,
वनफल खावे चहुं और आप धावे तोहु,
नाहि भलो होत एक निमकहरामको ३

(सुंदरी तन वर्णन)

अरुण कमल पग पाखुरीकी पाति लसै,
सरस सघन शोभा मनके हरनकी,
दीरघ न लघुताई पातुरी सुहावनी है,
देखे धुति होत जात विद्रुम वरनकी,
नखकी निकाइ नीकी आरसीसी सोहति है,
जामें देखी अति शोभा सौतिके शरनकी,
भरमि सुकवि कहि आवति न मेरी मति,
पागुरी भई है लखि आगुरी चरनकी ४

रूप रस आसनके कामके सिंहासन है,
केलि कला कौतुककी जीत मन आनिये,
सौतिनको गरव गयो है देखि देखि जिन्हे,
कदलीके खम दोउ उलटे प्रमानिये,
भरमि सुकवि गज शुंड सकुचन लागे,
सौगुनी करभहूतें शोभा सरसानिये,
सुघर सुठार ये सवारे है विरचि कधों,
जघ अलबेलीके अनूप युग जानिये ५

कोमल विमल कामभूपकी सुरग भुमि,
पान कैसो दल चल दल कैसो पात है,
मोहनके मनके मनोरथकी मोहनीके,
सौतिके सतायबेकी शोभा सरसात है,
नाभि सर कूपकी सुघाट मिलि सीरी डारी,
टरत न डीठ नीठ नीठ दरसात है,
भरमि सुकवि रोमराजीकी बिराजी छवि,
उदर अनुप ऐतो सुभग सुहात है ६

सुंदर सुरग गोल सोभा कर पल्लवकी,
किधों इंद्र गोप आन बैठे ब्रिज बालके,

किधों लोल कुंदनके अधिक अमोल तामें,
स्वाती कैसी बूंद थिरानी हैं रसालके;
किधों नग पांतिनकी काति द्युति फैल रही,
मदनको मालहुन दलखनके चालके;
भरमि सुकावि छवी वरनी न जात मोपें,
कामिनीकें नखके नगीना नंग लालके. ७

(दोहा.)

पीठ परी जव दीठ मैं, न थिर रह्या तन सास;
मन इच्छा कर मरजियो, फिर देखनकी आस. १
कर पल्लव पखुरी अरुन, सुरँग हथेली बाल;
रूप सरोवरमें मिले, भुज अंबुज सम नाल. २

(मुच्छ पुच्छ-छप्पय.)

जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू जग सुयस न लीनों,
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू परकाज न कीनों;
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू पर पीर न जानी,
जिहि मुच्छन धरि हाथ, दीन लखि दया न आनी;
अब मुच्छ नाहिं वे पुच्छ सम, कवि भरमी उर आनिये,
चित दया दान सनमान नहि, मुच्छ न तेही जानिये. १

भाण.

(पुत्र लच्छन.)

गया पिंड जो देइ, पितर अपनेको तारे,
करज वाय कर देइ, लटे परिवार सँभारे;
हरी भुमि गहि लेइ, दुवन शिर खङ्ग बजावे,
पर उपकारज करे, पुरुषमें शोभा पावे;
सोइ भाणज वंश सराहिये, तव वैरी सव हलमले,
इतनो काम जो ना करे, तो पुरुष खेह कन्या भले. १

(तलवार जाति-कवित.)

लीलम हरिदार वंदरी हलव्वी पटा,
मानसाही खांडा धोप ऊना तेग तरनौ;

मिसरी नेवाजखानी गुपती जु नम्वीखानी,
इल्मानी खुरासानी फची तेग करनौ,
सैफ गुजराती अंगरेजी दुवभी रूसी,
मक्की दुधारो नाम डाँत नाम धरनौ,
गुग्दा मगरबी सिरोही औ पिरोजखानी,
भान कवि एती तरवारि जाति बरनौ २

भारत.

(वृथा यत्नपन)

उपल मणीमें मजु उदधि तिहारे माझ,
हरिसें हमेश जल जतु इववासी है,
तनया रमासी वर रीति मुगतासी त्योंहि,
सुभग सेवाल श्याम विद्रुम व्रतासी है,
अमृत अगार देवतरुहि अपार तीर,
नाम रत्नाकर ये ख्यात जग खासी है,
भारत यह दुरनंत करन हुलासी पर,
आये पास तेरे पास शातिकी न आशी है १

भावनादास.

(कामिनी निंदा-सवैया)

कवि ते विपरीत विशेषनके, जिन तो विनता अबला बरनी,
अपने बलतें जगमाहि चराचर, जतुनके मनकी हरनी,
जेहि चंचल नेन प्रहारनतें, सुरनायक आदि परे धरनी,
हमतो जिय जानत हे सबला, अबलाकि कहा इतनी करनी १
त्रिवलीसि तरंग चले तिनमें, चकई चक उच्च उरोज महारे,
मुख पकजहूसी प्रभा विलसे, सफरी जुग लोचन हे अनियारे,
भये भौंर समान सुनाभि भनु, मदनालय सीप नितबु करारे,
भव वारिधि पार तया जो चहै, तज कामिनी रूप तरंगनि प्यारे २

भावनाप्रसाद.

(उपदेशात्मक कवित्त.)

अस्त भयो बालपन सूरज समान देखो,
अंग दुति पश्चिमासी आइ है कछुक लाल;
सिंजित सुहाइ धुनि झिंगुरकी भाइ सुनि,
चंद ज्यो चाहत है रावरेके भाग भाल;
प्रीति रजनीसी सजनीके व्हें है भावन जू,
जैहे तम अगुताई वैहे प्रेम तारा जाल;
नागर तुं नायक है ध्यान सुखदायक है,
भोगके न लायक है वैस संधि संध्याकाल. १

(शृंगार-सवैया.)

कोटि कला करि काम कलोलनि, सारि निशा सो निशा करि जीकी,
सोइ रही रचिके विपरीति सु, प्रौढ तिया छतिया पर पीकी;
श्याम लला अबला लखिके, कवि भावनजू उपमा जिय ठीकी,
काम सोनार सराफ विचच्छन, कुंदन लीक कसोटिहि लीकी. १

साकलिके सिगार सुस्वादिनि, ज्वालित कै विरहानल ज्वाला,
कामके मंत्र भने सु मने मन, रोम खरे परिचारक चाला;
आंसुनिको अभिषेक छिने छिन, जीव पर्यो बलिको प्रतिपाला,
लाल तुम्हे मिलवेके मनोरथ, होम करे प्रतिवासर बाला. २

कानन काहु कहाति सुनी, कबहुं कहुं आनि कही मिस कोने,
भान भावनि जूके भयो, तन वीस विसे अनुराग न पोते,
ता दिनतें इनतें व्है विदा, सुख साजन जानि कहा कहुं गोने,
चाहत चारिकु ओर चके, जल रूप थके दग वे मृगछोने. ३

भिखारी.

(सूमसेवा-सवैया.)

पाय विहीनके पाय पलोट्यो, अकेले है जाइ घने बन रोयो,
आरसी अंधके आगे धर्यो, बहिरेसों मतो करि उत्तर जोयो,
ऊसरमें वर्ष्यो बहु वारि, पषानके ऊपर पंकज बोयो,
दास वृथा जिन साहब सूमकी, सेवनिमें अपनो दिन खोयो. १

(विक्रमयश-कवित्त)

कैसी कामधेनु कामनाकी देन ऐन जैसी,
चिन्तामणि चारु चित्त चैनको सु फर है,
कैसी चारु चिन्तामणि चैनकी सुकर जैसी,
कामतरु शाखा कामनाकी विधि वर है,
कैसी कामशाखा कामनाकी विधि घर जैसी,
दामपै हमेशकी हमेश दान झर है,
कैसी है हमेशकी हमेश दान झर जैसी,
वैसी वीर विक्रम नरेशकी नजर है १

भिखारीदास.

(सापेक्षिक न्यूनता-रोला)

जग कहा विन युवति, युवति सु कहा विन यौवन,
कह यौवन विन धनहि, कहा धन विन अरोग तन,
तन सु कहा विन गुणहि, कहा गुण ज्ञानहीन क्षन,
ज्ञानहि विद्याहीन, कहा विद्या सुकाव्य विन १

(शृंगाररस-छप्पय)

भाल नयन मुख अधर, चिवुक तिय तुव विलोक अति,
निर्मल चपल प्रसन्न, रक्त शुभ द्युति थकी मति,
उपमा कह शशि खज, कज बिंबिय गुलाब वर,
खंड थान थिति प्रात, पक्व प्रफुल्लित सु शौभ घर,
शारद किसोर शुभ गध मृदु, नवल दास आवत न चित्त,
जु कलंक रहित युग सरल हित, डार गहल षटपद सहित १

(सखि उक्ति-सवैया)

सखि तो कह याचन आई हौ मैं, उपकार कै मोहि जिया वहि तूं,
तोहि तातकी सौं निज भ्रातकी सौं, यह बात न काहु जनावहि तु,
तुव चेरी हौं होउगी दास सदा, ठकुरायन तोरि कहावति हूं,
करि फद कछू मोहिं या रजनी, सजनी व्रजचद मिलावहि तू १

भूधर.

(संगीतध्वनि उपदेश.)

धनकारन पापनि प्रीति करें, नहि तोरत नेह जथा तिनकों,
लव चाखत नीचनके मुंहकी, शुचिता सब जाय छियें जिनकों;
मद मांस बजारनि खाय सदा, अंधले विसनी न करें घिनकों,
गनिका संग जे शठ लीन भये, धिक हे धिक हे धिक हे तिनकों. १

दिवि दीपक लोय बनी बनिता, जड जीव पतंग जहां परते,
दुख पावत प्रान गवावत हे, वरजे न रहे हठसों जरते;
इहि भांति विच्छन अच्छनके वश, होय अनीति नहि करते,
परति लखिजे धरती सिरखे, धनि हे धनि हे धनि हे नर ते. २

(वैराग्य-विवेक-विचार.)

तेज तुरंग सुरग भले रथ, मत्त मतंग उतंग खरेही,
दास खवास अवास अटा, धन जोर करोरन कोश भरेही;
एसे बढे तो कहा भयो हे नर, छोरि चले उठि अंत छरेही,
धाम खरे रहे काम परे रहे, दाम डरे रहे ठाम धरेही. १

जे परनारि निहारि निलज्ज, हंसे विगसे बुधिहीन बडेरे,
जूठनकी जिमि पातर पेखि, खुशी उर कूकर होत घनेरे;
हे जिनकी यह टेव वहे, तिनको इस भौ अपकीरति हे रे,
हे परलोक विषे दृढ दंड, करे शत खंड सुखाचल केरे. २

छेम निवास छिमा धुवनी बिन, क्रोध पिशाच उरे न टरेगो,
कोमल भाव उपाव बिना, यह मान महामद कोन हरेगो;
आर्जव सार कुठार बिना, छल बेल निकंदन कोन करेगो,
तोष शिरोमनि मंत्र पढे बिन, लोभ फणी विष क्यों उतरेगो. ४

काहेको बोलत बोल बुरे नर, नाहक क्यों जश धर्म गमावे,
कोमल वेन चले किन एन, लगे कछु हें न सवे मन भावे;
तालु छिदे रसना न भिदे, न घटे कछु अंक दरिद्र न आवे,
जीभ कहे जिय हानि नहिं, तुझ जी सब जीवनको सुख पावे. ४

जो धन लाभ लिलाट लिख्यों, लघु दीरघ सुकृतके अनुसारे,
सो लहिहें कछु फेर नहिं, मरुदेशके ढेर सुमेर सिधारे;
घाट न बाढ कहीं वह होय, कहा कर आवत सोय विचारे,
कूप किधों भर सागरमें नर, गागर मान मिले जल सारे. ५

तुं नित चाहत भोग नये नर, पूरव पुन्य विना किम पैहैं,
कर्म सयोग मिले कहिं जोग, गहे तब रोग न भोग सकै हैं,
जो दिन चारको ब्योंत बन्यो कहुं, तो परि दुर्गतिमें पछितै हैं,
यों हित यार सलाह यही कि, गई कर जाहु निबाहन व्है हैं ६
बाय लगी कि बलाय लगी, महमत्त भयो नर भूलत सोंही,
वृद्ध भये न भजे भगवान, विषै विष खात अघात न क्योंही,
शीश भयो बगुला सम श्वेत, रह्यो उर अंतर श्याम अजोंही,
मानुष भौ मुक्ताफल हार, गवार सवा हित तोरत योंही ७

(कवि कन्गच्छ)

राग उदे जग अंध भयो, सहजें सब लोगन लाज गमाई,
शील बिना नर शील रहे, व्यसनादिक सेवनकी सुघराई,
तापर और रचे रस-काव्य, कहा कहिये तिनकी निठुराई,
अध अशुभनकी अखियानमें, झोंकत है रज राम दुहाई १
कचन कुंभनकी उपमा, कह देत उरोजनको कवि बारे,
ऊपर श्याम विलोकत कै, मनि नीलमकी ढकनी ढँकि छारे,
यों सत बैन कहे न कुपंडित, ये जुग आमिष पिंड उघारे,
साधन झार दई मुंह छार, भये इहि हेत किधों कुच कारे २

(विधि-भाग्य)

सज्जन जो रचे तो सुधारससों कौन काज,
दुष्ट जीव किये कालकूटसों कहा रही,
दाता निरमापे फिर थापे क्यों कलपवृच्छ,
जाचक बिचारे लघु तृणहुतें हैं सही,
इष्टके सजोगतें न सीरो घनसार कछू,
जगत को ख्याल इंद्रजाल सम हैं यही,
ऐसी दोय होय बात दीखें विधि एकहीसी,
काहेको बनाई मेरे धोखो मन ये यही १
कैसे कैसे बली भूप भूपर विख्यात भये,
वैरी कुल कांपे नेकु भौंहोंके विकारसों,
लंघे गिरि सायर दिव-यसें दिये जिनों,
कायर किये हैं भट कोटिन हुंकारसों,
ऐसे महामानी मोत आयेहू न हार मानी,
क्योंही उतरे न कभी मानके पहारसों,

देवसों न हारे पुनि दानेसों न हारे ओर,
काहूसों न हारे हारे एक होनहारसें; २

(असार संसार-देहकी क्षणिकता.)

काहू घर पुत्र जायो काहूके वियोग आयो,
काहू राग रंग काहू रोआ रोई करी हे;
जहां भान ऊगत उछाह गीत गान देखे,
सांझ समे ताही थान हाय हाय परी हे;
एसी जग रीत क्यों न देखि भयभीत होय,
हा हा मूढ तेरी मति गति कोनें हरी हे;
मानुष जनम पाय सोवत विहाय जाय,
खोवत करोरनकी एक एक घरी हे. १

सो वरष आयु ताका लेखा करि देखा सव,
आधी तो अकारथही सोवत विहाय हे;
आधीमें अनेक रोग वाल-वृद्ध दशा भोग,
ओरहु संयोग केते एसे वीते जाय हे;
वाकी अव कहा रही ताहि तुं विचार सही,
कारजकी वात यही नीके मन लाय हे;
खातिरमें आवे तो खलासी कर इतनेमें,
भावे फांसि फंद विच दीनों समुझाय हे. २

जोई दिन कटे सोई आवमें अवश्य घटे,
वुंद वुंद विते जेसें अंजुलीको जल हे;
देह नित छीन होत नेन तेजहीन होत,
जोवन मलीन होत छीन होत वल हे;
आवे जरा नेरी तके अंतक अहेरी आवे,
पर भौ नजीक जात नर भौ निफल हे;
मिलके मिलापी जन पूछत कुशल मेरी,
एसी दशा मांहि मित्र काहेकी कुशल हे. ३

देखो भर जोवनमें पुत्रको वियोग आयो,
तैसेंही निहारी निज नारी काल मगमें;
जे जे पुन्यवान जीव दीसत हे यानहींपें,
रंक भये फिरे तेऊ पनहीं न पगमें;

एतपै अभाग धन जी तपसों धरे राग,
होय न विराग जाने रहुगो अलगमें,
आंखिन विलोकि अध सूसेकी अंधेरी करे,
एसे राज रोगमें इलाज कहा जगमें ४

(जैन यैन प्रशंसा)

कैसे करि केतकी कनेर एक कहि जाय,
आक दूध गाय दूध अंतर घनेर है,
पीरी होत हीरीपै न रीस करे कचनकी,
कहां काग वानी कहा कोयलकी टेर है,
कहां भान भारो कहा आगिया विचारो कहा,
पूनोको उजारो कहां आवस अंधेर है,
पच्छ छोरि पारखी निहारो नेक नीके करि,
जैन यैन और यैन इतनोंही फेर है १

(मनमतंग-छप्पय)

ज्ञान महावत डारि, सुमति सकल गहि खडे,
गुरु अंकुश नहि गिने, ब्रह्मवत विरख विहंडे,
करि सिघत सर न्होन, केलि अघरजसौं ठानें,
करन चपलता धरे, कुमति करनी रति माने,
डोलत सु छद मदमत्त अति, गुण पथिक न आवत उरें,
वैराग्य खभते वाधनर, मनमत्तग विचरत बुरे १

(धूत-आमिष-अभक्ष निषेध)

सकल पाप संकेत, आपदा हेत कुलच्छन,
कलह खेत दारिद्र, देत दीसत निज अच्छन,
गुन समेत जश सेश, केत रवि रोकत जेसें,
औगुन निकर निकेत, लेत लखि बुधजन एसें,
जुआ समान इह लोकमें, आन अनीति न पेखिये,
इस व्यसन रायके खेलकों, कौतुकहू न देखिये १

जगम जियको नाश, होय तब मांस कहावे,
सपरस आकृति नाम, गध उरघिन उपजावे,
नरक जोग निरदयी, खाहिं नर नीच अधर्मी,
नाम लेत तज देत, असन उत्तम कुल कर्मी,

यह निपट निंद्य अपवित्र अति, कृमिकुल रास निवास नित;
आमिष अभच्छ याको सदा, वरजो दोष दयाल चित्त. १

भूषण (भूखण.)

(औरंगजेब अपयश.)

किबलेकी ठौर बाप बादशाह शाहजहां,
ताको कैद कियो मानो मक्के आग लाइ है;
बडे भाई दारा वाको पकरिके कैद कियो,
रंचक रहम आप उरमें न आई है;
खाइके कसमतें मुरादकों मनाइ लिये,
फेर उन साथ अति कीन्हीतें ठगाई है;
भूषण भनंत साच सुन हों औरंगजेब,
एसेही अनीति करी पातशाही पाइ है. १

तसवी ले हाथ उठि प्रात करे बंदगी सो,
मनके कपट सबें संभारत जपके;
आगरेमें लाय दारा चौकमें चुनाय लीनो,
छत्रही छिनाइ लीनो बूढे मार बपके,
सूजा बिचलाय कैद करिके मुराद मारे,
एसेही अनेक हने गोत्र निज चपके;
भूखन भनंत अब शाह भये साचे जैसें,
सौ सौ चूहा खाइके बिलाइ बैठे तपके. २

(रीमा औ सोलंकी नरेश प्रशंसा.)

जा दिन चढत दल साजि अवधूतसिंह,
ता दिन दिगंतलौ दुवन दाटियतु है;
प्रलै कैसे धाराधर धमकै नगारा धूरि,
धारातें समुद्रनकी धारा पाटियतु है;
भूखन भनंत भुव गोलको कहर तहां,
हहरत तगा जिमि गज काटियतु हैं;
कांचसें कचरि जात शेषके अशेष फन,
कमठकी पीठिपै पिठीसी बांटियत है. १

बाजि बम्ब चढ्यो साजि बाजि जब कलाभूप,
गाजी महाराज राजा भूखन बखानतें,
चंडिकी सहाय महि मंडी तेज ताई ऐंड,
छंडी राय राजा जिन दंडी औनि आनतें,
मदी भूत रविरज मदी भूत हठ घर,
नदी भूतपति मो अनदी अनुमानतें,
रकी भूत दुवन फरकी भूत दिग्गदंती,
पकी भूत समुद्र मुलुककेि पयानतें २

(पन्नानरेश छत्रसाल प्रशसा)

भुज भुजगेशकी वै संगिनी भुजंगिनीसी,
खोदि खोदि खाती दीह दारुन दलनके,
बखतर पाखरनि बीच धसि जाति मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलनके,
रैयाराय चंपतिको छत्रसाल महाराज,
भूखन सकत को बखानि यों बलनके,
पच्छी पर छीने ऐसें परे परछीने बीर,
तेरी बरछीने बर छीने है खलनके १

चाक चक चमूके अचाक चक चहु ओर,
चाकसी फिरत धाक चंपतिके लालकी,
भूखन भनंत पातशाही मारी जेर करी,
काहु उबराय ना करेरी करवालकी,
सुनि सुनि रीति बिर देतके बड्प्पनकी,
थप्पन उथप्पनकी बानि छत्रसालकी,
जग जीति लेवा ते वै ह्वैके दाम देवा भूप,
सेवा लागे करन महेवा महिपालकी. २

रैयाराय चंपतिको चढयो छत्रसालसिंह,
भूखन भनंत समसेर जोम जमके,
भादौकी घटासी उठी गरदें गगन घिरे,
सेलें समसेर फेरें दामिनीसी दमके,
खान उमरावनके आन राजा रावनके,
सुनि सुनि उर लागे घन कैसी घमके,

वैहर वगारनकी अरिके अगारनकी,
नांघती पगारन नगारनकी धमके. ३

हेवर हरद्द साजि गैवर गरद सम,
पैदरके ठट फोज जुरी तुरकानेकी;
भूखन भनत राय चंपतिको छत्रसाल,
कोप्यो रन ख्याल व्हेके ढाल हिंदुवानेकी;
कैयक हजार एकवार वैरी मारि डोर,
रंजक दगनि मानो अगिनि रिसानेकी;
सैद अफगन सेन सगर सुतन लागी,
कापिल सरायलो तराय तोपखानेकी. ४

अस्त्र गहि छत्रसाल खिज्यो खेतवेतवेके,
उततें पठाननहू किन्ही झुकी झपटे;
हिम्मति वडीके गवडीके खिलवारनलौ,
दैतसें हजारन हजार वार चपटे;
भूखन भनंत काली हुलसी असीसनकों,
सीसनको ईशकी जमाति जोर जपटे;
समदसौ समदकी सेना त्यौं वुदेलनकी,
सेलै समशेरें भई वाडवकी लपटे. ५

(छप्पय.)

तहवरखान हराय, एड अनवरकी जंग हरि;
सुतरुदीन वहलाल, गये अवदुल समद मुरि;
महसुदको मद मेटि, शेर अफगनहि जेर किय,
अति प्रचंड भुजदंड, वलन कहिन दंड दिय;
भखन वुदेल छत्रसाल डर, रंग तज्यो अवरंग लजि:
जुके निशान सके समरसों, मके तक तुरक भजि. १

(वुन्दी और पन्ना नरेश शत्रुसाल विषयक दोहा)

इक हाडा वुन्दी धनी, मरद मोहवा वाल;
सालत नौरंगजेवकों, ये दोनो छतसाल. १
वे देखो छत्ता पता, ये देखो छतसाल;
वे दिल्लीकी ढाल ये, दिल्ली ढाहन वाल. २

(कुमाउनरेश उद्योतचंदसिंहके गजवर्नन)
(कवित्त)
उल्दत मद अनुमद ज्यों जलधि जल,
बल्हद भीमकद काहूके न आहके,
प्रबल प्रचंड गंड मंडित मधुप वृंद,
विंध्यसें बुलन्द सिंधु सातहूके थाहके,
भूखन भनंत झूल झपति झपान झुकि,
झुमत झुल्त झहरात रथ डाहके,
मेघसे घमडित मज्जदार तेज पुंज,
गुजरत कुजर कुमाउ नरनाहके १

(जयपूरपति रामसिंह जयसिंह प्रशंसा)
अकबर पायो भगवतके तनेसों मान,
बहुरि जगतसिंह महा मरदानेसों,
भूखन यों पायो जहांगीर महा सिंहजूसों,
शाहजहा पायो जयसिंह जग जानेसों,
अब अवरंगजेब पायो रामसिंहजूसों,
औरो दिन दिन पहे कूरमके मानेसों,
केते राव राजा मान पावे पातशाहनसों,
पावे पातशाह मान मानके घरानेसों १

भले भाइ भासमान भासमान भान जाको,
भानव भिखारीनके भुरि भय जाल हैं,
भोगनको भोगी भोगीराज कैसी भांति भुजा,
भारि भुमिभारके उभारनको ख्याल है,
भावतो समानि भूमि भूमिनीको भरतार,
भूखन भरतखड भरत भुवाल है,
भिमौको भंडार औ भलाइको भवन भास,
भाग भरे भाल जयसिंह भुवपाल है २

(राजपुत्र शाहु प्रशंसा)
शाहूजीकी साहिबी दिखात कछु होनहार,
जाके रजपूत भरे जोम झमकत है,

भारे भारे नग्रवारे भागे घर तारे दे दे,
बाजे ज्यों नगारे घनघोर घमकत है;
व्याकुल पठानी मुगलानी अकुलानी फिरै,
भूखन भनंत मांग मोती दमकत है;
दच्छिनके अमिल भो समिलहि चहूं ओर,
चंबलके आरपार नेजा चमकत है. १

शाहूजीकी साहिबी बखाने उमराव कौन,
ऐसें रजपूत जैसें शेर भभकत है; .
भारे भारे नगर भजत गढ तारे दे दे,
कारे घनघोर ज्यों नगारे घमकत है;
जाके भय ठानी मुगलानी बिललानी फिरै,
टूटि टूटि मांगनके मोती दमकत है;
दिल्ली दल दाहिबेको दच्छिनके केहरीके;
चंबिलके आरपार नेजे फरकत है. २

बलख बुखारे मुलतान पेलि पारे अरु,
काबुल पुकारे कोउ गहत न सार है;
रूम रूंद डारे खुरासान खुद भारे खग,
खंधारलौ झारे ऐसी शाहुकी बहार है;
सख्खरलों भख्खरलों मक्करलौ चले जाओ,
टक्कर लिवैया कोऊ वार है न पार है;
भूखण सिरोइलों परावने परत अब,
दिल्ली पर परत परदनकी छार है. ३

(शिवाजी महाराज शौर्य-बल महिमा.)

इंद्र जिमि जंभ पर वाडवसु अंभ पर,
रावनसु दंभ पर रघुकुलराज है;
पौन वारि वाह पर शंभु रतिनाह पर,
त्यों सहस्र बाह पर राम द्विजराज है;
दावा द्रुम दंड पर चिता मृग झुंड पर,
भूषन द्वितुंड पर जैसें मृगराज है;
तेज तम अंश पर कान्ह जिमि कंसपर,
त्यों मलेच्छ बंश पर शेर शिवराज है. १

गरुडका दावा जैसें नागके समूह पर,
दावा नाग जुथ्य पर सिंह शिरताजका,
दावा पुरहूतका पहारनके कुल पर,
दावा सब पंछिनके गन पर बाजका,
भूपन भनंत सात द्विप नव खंडमाहि,
तम पर दावा रवि किरन समाजका,
उत्तर दख्खिन दिशि पूरब पछांह माहि,
जहा पातशाही तहां दावा शिवराजका २

(सुनत होत सबकी)

आदिकी न जानो देवी देवता न मानो साच,
कहू सो पिछानो बात कहत हौं अबकी,
अकब्बर बब्बर हुमायु हद बाधि गये,
हिंदु औ तुरककी कुरान वेद जबकी,
याहि पातशाहिनमें हिंदुनकी चाह थी सो,
जहागीर शाहजहां शाख पूरे तबकी,
काशीजूकी कला गई मथुरा मसीद भई,
शिवाजी न होता तो सुनत होत सबकी ३

देवल गिरावते फिरावते निशान नये,
ऐसे समै राव राने सब गये लबकी,
गौरी गनपति आप औरँगको देख ताप,
आपके मुकाम पर मार गये डुबकी,
पेगम्बर पीर सबे दिगम्बर देख लिये,
सिद्धकी सिद्धाइ गई रहेते पूर कबकी,
काशीजूकी कला गई मथुरा मसीद भई,
शिवाजी न होता तो सुनत होत सबकी ४

कुंभकर्ण औरंगको औनि अवतार लेके,
मथुरा जराइके दुहाइ फेरी रबकी,
खोदि डारे देवी देव देवल अनेक सोइ,
पेखी निज पाननतें छूटी माल सबकी,
भूपन भनत भाजे काशीपति विश्वनाथ,
और क्या गिनाउं नाम गिनतीमें अबकी,

दिलमें डरन लागे चारौ वर्ण वाहि समै,
शिवाजी न होता तो सुनत होत सबकी. ५
रानी रजवारनकी दुकानां लगाइ बैठी,
तहां आइ बादशाह राह देखे सबकी,
बैठिनको यार और यार है लुगाइनको,
राहनके मार दावादार गये धबकी;
ऐसी कीनी बात तोड कोड ये न कीनी घात,
भइ है नादानी वंश छत्तीशमें कबकी;
दक्षिनके नाथ ऐसी देखी धरे मूर्च्छे हाथ,
शिवाजी न होता तो सुनत होत सबकी. ६

(शिवाजी पराक्रम.)

औरंग अठाना शाह शूरकी न मानें आनि,
जब्बर जोराना भयो जालम जमानाको;
देवल डिगाना राव राना मुरझाना अरु,
धरम ढहाना पन मेट्यो हे पुरानाको;
कीनो बमशाना मुगलानाको मसाना भरे,
जपत जहांना जस विरद बखानाको;
शाहिके सपूत शिवराना किरवाना गही,
राख्यो है खुमाना वर बाना हिंदुवानाको. ७
कूरम कबंध हाडा तुंवर बाघेला वीर,
प्रबल बुंदेलाहूते जेते दल मनीसों;
देवल गिरन लागे मूरति ले विप्र भागे,
नेकहू न जागे सोइ रहे रजधनीसों;
सबने पुकार करी सुरन मनायबेकों,
सुरने पुकार भारी कीनी विश्वधनीसों;
धरम रसातलकों डूबत उबार्यो शिवा,
मारी तुरकान घोर बल्लमकी अनीसों. ८
वेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,
रामनाम राखे अति रसना सुघरमें;
हिंदुनकी चोटी रोटी राखि है सिपाहनकी,
कांधमें जनेउ राखी माला राखी गरमें;

मीढि राखे मुगळ मरोढि राखे पातशाह,
बैरी पीसि राखे बरदान राखे करमें,
राजनकी हद राखी तेग बल शिवराज,
देव राखे देवळ स्वधर्म राख्यो घरमें ९

प्रेतनी पिशाच और निशाचर आपुसमें,
मिलिकें मुदित घनी बाटत बधाइ है,
भैरव औ भूत प्रेत भ्रमत भयकरसें,
जुथ्थ जुथ्थ जोगिनी जमात जोरि आइ है,
किलकि किलकि काली करत कुल्याहलसों,
हौंरु लें दिगम्बर डिम डिम बजाइ है,
शिवा बूझे शिवसों समाज आज कहा चले,
काहूपें शिवा नरेंद भ्रकुटी चढाइ है १०

साजी चतुरग सेन अंगमें ऊमग धरि,
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत है,
भूखन भनत मुनि निनद नकीबनके,
नैन निरमद दिशा गजके गलत है,
एन्ड फैल खेलभेल खलकमें गैलगैल,
गजनकी ठेलपेल शैल उछलत है,
तारासों तरनि धूरि धारामें लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार ज्यों हलत है ११

सिंहलके सिंह सम रन सर जाकी हाक,
सुनि चौंकि चलत बधाइ पाटसादीके,
भूखन भनत भुवपाल दूरे द्राविडके,
पेलफैल गैलगैल भूले उनमादीके,
उछलि उछलि उंचे सिंह गिरे लंकमांहि,
मूड गये महल विभिषनके दादाके,
महि हाले मेरु हलि अटका कुबेर हाले,
जा दिन नगारे बाजे शिव शाहजादाके १२

कोट गढ ढाहियत एके पातशाहनके,
एके पातशाहनके देश दाहियत है,

भूखन भनंत महाराज शिवराज एक,
शाहनके सैनपर खग्ग वाहियत है;
क्यों न होहि वैरिनकी वाल वौरी कान सुनि,
दौरनि तिहारी कहो क्यों निवाहियत है;
रावरे नगारे सुनि वैर वारे नगरन,
नैन वारे नदन निवारे चाहियत है. १३

फिरगाने फिकर है हद्द हवसाने सुनि,
भूखन भनंत कोऊ सोवत न घरी है;
बिजापूर विपति विडरि सुनि भाजे सव,
दिल्ही दरगाह बीच परी खरभरी है;
राजनके राजा सव शाहनके शिरताज,
आज शिवराज पातशाहि चित्त धरी है;
बलख बुखारा काशमीरलों पुकार परी,
धामधाम धूमधाम रूपशाम परी है. १४

मालवा उजेन लगि भुखन भनंत साच,
शहर सिरोइलों परावने परत है;
गोडवान फिरगान करनाट तिलमान,
हबसान खुरेसान हिय हहरत है;
शाहिके सपूत शिवराज वीर तेरी धाक,
गाढे गढपति कोउ धीर ना धरत है;
गोलकुंडा बिजापूर आगरा दिल्लीके कोट,
बाजे बाजे दिन दरवाजे उघरत है; १५

बद्दल न होय दल दच्छन उमंडि आये,
घटा येन होय इम शिवाजी हकारेके;
दामिनी दमक नांहि खुले खग वीरनके,
इंद्रधनु नांहि ये निशान है सवारेके;
देखि देखि मुंगलकी कामिनी बिगर त्यागे,
उझकि उझकि घर छांडत बिडारेके;
दिल्हीपति भुहीमति गाजत न घोर घन,
बाजत नगारे ये सितारे गढवारेके. १६

चपला न तेग धरो फिरत फिरंगी मद,
इन्द्रको न चाप रूप बैरख समाजको,
धाये धुरवा न छाये धूरिके पटल व्योम,
गाजबो न साजमो है दुदभि अवाजको,
भौशिलाके डरन डरानी रिपु रानी कह,
पियु भजो देखि उदे पावसके साजकों,
घनकी घटा न गज घटनि सनाह साजि,
भूखन भनत आयो सैन शिवराजको १७

दाराकी न दौर यह सुजुवेकी रारि नाहि,
चांधवा न होय ये मुरादशाह बालको,
मट्ठ विश्वनाथको न बास ग्राम गोयुलको,
देविको न देहरा न मंदिर गुपालको,
गाढे गढ लीन्हे फित बैरी कतलान कीन्हे,
जानत न भयो यह शाहकुल सालको,
ड्यत है दिल्ली सो सम्हारे क्यों न दिल्लीपति,
आन लग्यो धक्को शिवराज महाकालको १८

बध कीने वल्ख सो बैर कीनो खुराशान,
कीनी हबशान पर पातशाही पल्ही,
बेदर कल्यान घमशायकें छिनाय लीने,
जाहिर जहान उपखान येहि चल्ही,
जग करि ओरसों निजामशाहि जेर कीनी,
रनमें नमाय है बुंदेल छत्रचल्ही,
ताके सब देश छूटी शाहजीके शिवराज,
कूटी फौज सजो मुंगल्न हाथ मल्ही १९

चूर करी चंदराव जावली जपत करी,
घेरे है सिंगारपुर भूपनकों जायकें,
भूखन भनत दल दच्छिन उमडि आये,
मारे पातशाहि दल सबल मचामके,
हुरमें डरानी अकुलानी कहे मार मार,
सोवे कहा कंत अब सिंहकों जगायकें,

आये शिवराज आज धौंसाकी धुकार देत,
बाजी करनालें परनालें पर आयकें. २०

दुर्ग पर दुर्ग जीते सरजा शिवाजी गाजी,
उग्र नीचे डगपर रुंडमाल फरके;
भूखन भनंत भारे जीतके नगोरे बाजे,
सारे करनाटी भूप सिंहलको सरके;
मारे सुनि सुभट पनोरे वारे उदभट,
तारे लागे फिरन सितोरे गढधरके;
विजापुर वीरनके गोलकुंडा धीरनके,
दिल्ही उर मीरनके दाडिमसें दरके. २१

तेरे त्रास बैरि बधू पीवत न पानी कोउ,
पीवत अघाय धाय उठे अकुलाइ है;
कोउ रही बाल कोउ कामिनी रसाल सो तो,
भई बेहवाल फिरे भागे बनराइ है;
शाहिके सपुत खूद आलम खुमान सुनो,
भूखन भनंत तेरी कीरति बनाइ है;
दिल्हीके तखत तजि निंद दिन रात भारी,
शिवा शिवा बकत है सारी पातशाइ है. २२

साजी गज बाजि शिवराज सैन साजतहि,
दिल्ही दल गही दिशा दीरघ दुखनकी;
तनिया न तिलक सुथनिया न रही अंग,
घामें घबरानी छोडी सेजियां सुखनकी;
भूखन भनंत पति बांह बहियां न तउ,
छहियां छबिली ताक रहिया रुखनकी;
बालियां बिथुरी जिमि आलियां नलीन पर,
लालियां मलीन मुगलांनियां मुखनकी. २३

कत्ताकी कराकनि चकताको कटक काटि,
कीनी शिवराज तुम अकथ कहानियां,
भूखन भनंत और मुलक तिहारी धाक,
दिल्ही औ विलायत सकल बिललानियां;

आगरे अगारनकी नांघती पगारनि,
सम्हारती न वारन बदन कुम्हिलानियां,
कीबी अब क्या कहि गरीबी गहि भागि जात,
बीची विन सुथनही नीवी विन रानियां २४

सोधेको अधार किसमिस जिनको अहार,
चार अंक एंक मुख चंदके समानी है,
ऐसी अरि नारि शिवराज वीर तेरे त्रास,
पायनमें छाले परे काय कुम्हलानी है,
ग्रीषमकी तपतीकी विपति न कान सुनि,
कचकी कटीसी विन पानी मुरझानी है,
तोरिके छराको अप्सरासी यों निचोरि कहै,
तुम्हने कहेथे फल मुकतामें पानी है २५

(विरोधाभास)

अत्तर गुलाव चोवा चंदन सुगध सम,
सहज शरीरकी सुवास विकसाती है,
पल्भर पलंगतें भूमि न धरति पाय,
सोइ खानपान छोडि बन बिल्लाती है,
भूखन भनत शिवराज वीर तेरे त्रास,
हार भार तोरि निज सुधी विसराती है,
परम नरम व्है हरम बादशाहनकी,
नाशपाती खाती सो विनाश पाती खाती है २६

अदरते निकसी न मंदिरको देख्यो द्वार,
विन रथ पथ वे उघारे पाय जाती है,
हवाहू न लागी सोइ हवातें वेहाल भई,
लाखनकी भीरमें सम्हारती न छाती है,
भूखन भनत शिवराज तेरी हाक सुनि,
हार डारि चीर फारि मन झुमलाती है,
ऐसी बनि नरम हुरम बादशाहनकी,
नाशपाती खाती सो विनाश पाती खाती है २७

उतरी पलंगतें न दियो है धरापें पग,
सोइ निशि घोस चली सगवग जाती है,

अति अकुलाती मुरझाती न छिपाती गति,
बात ना सुहाती बोले अति अनखाती है,
भषनके भार दबी मखनके भार दबी,
बिजन डुलाती सोइ बिजन डुलाती है,
भूखन भनंत शिवराज नारि वैरिनकी,
नगन जडाती सोइ नगन जडाती है. २८

प्रबल पठान फोज काटिकें कराल महा,
अपनी मनाइ आनि जाहिर जहानकों;
दौरी करनाटकमें तौरी गढ कोट लीन्हे,
मोदीसों पकरि लोदी शेरखां अचानकों;
भूखन भनंत सब मारिके बिहाल करी,
शाहिके सुवन राचे अकथ कहानको;
बारगीर बाज शिवराज तो शिकार खेले,
शाह सैन शकुनमें ग्राही किरवानकों. २९

(रूपकालंकार.)

कूरम कमल कमधुज हे कदम्ब फूल,
गौड हे गुलाब राना केतकी बिराज है;
पाटल पवार जूही सोहत हैं चंद्रावत,
बकुल बुदेल अरु हाडा हंसराज है,
भूखन भनंत मुचकुंद बड गूजर है,
बघेले बसंत आदि सुमन समाज है;
सबहीको रस लेकें बैठि न शकत आई,
आलि अवरंगजेब चंपा शिवराज है. ३०

केतकी भो राना और बेला सब राजा भये,
ठौर ठौर लेत रस नित्य यह काज है,
सिगरे अमीर भये कुंद मकरंद भरे,
भृंगसें भ्रमत लखि फूलके समाज ह;
भखन भनंत शिवराज देशदेशनकी,
राखि है बटोरि एक दच्छनमें लाज है,
तजत मलिन जैसे तैसें ताजि दुर भाज्यो,
अलि अवरंगजेब चंपा शिवराज है. ३१

सतयुग द्वापर औ त्रेता कलियुग मधि,
आदि भयो नांहि भूप तिनहूतें आघरी,
अकबर बब्बर हुमायु शाह शासनसों,
स्नेहूतें सुधारी हेम हीरनतें सगरी,
भूखन भनत ऐसी मुगलानी चूथ दीन्ही,
दौरी दौरी पौरि पौरि लूट ली चहू फरी,
धूरि तन लाहि बैठि सूरत है रैन दिन,
सूरतकों मोरि बदसूरत शिवा करी ३२
पक्खर प्रबल दल भक्खर सौं दोर करी,
आय शाहजीको नद पांधी तेग चाकरी,
शहर मिलायो मारी गिरद मिलायो गढ़,
अजहू न आगें पाछें भूप किन ना करी,
हीरा मनि मानिककी लाख पोठि लादि गयो,
मंदिर ढहायो जोप काढी मूल कांकरी,
आलम पुकार कर आलम पनाहजूपें,
होरीसी जराय शिवा सूरत फना करी ३३
उतै पातशाहजूके गजनके ठट्ठ छूटे,
उमडी घुमडी मतवार घन भारे है,
इते शिवराजजूके छूटे सिंह राजसो,
बिदारे कुम्भ करिनके चिक्करत कारे है,
फोजें शेख सैयद मुगल औ पठाननकी,
मिलि अफसर काहू मीर न सम्हारे है,
हद हिंदुवानकी बिहद तरवारि राखी,
कैयो वार दिल्हीके गुमान झारि डारे है ३४
शाहिके सपूत शिवराज वीर तेरे डर,
अडग अपार महा दिग्गज सो डोलिया,
चंदर बिलायत सो उर अकुलाने अरु,
सफित सदाय रहे बेश महलोलिया,
भूखन भनत कोल करत कुतुबशाह,
चारे चहु और इच्छा येदिलशा मोलिया,

दाहि दाहि दिल कीने दुखदही दाग तातें,
आहि आहि करत औरंगशाह ओलिया. ३५

तेरी धाकहीतें नित हवसी फीरंगी औ,
विलायती विलंदे करे वारधि विहरनो;
भूखन भनंत विजापुर भागानेर दिल्ही,
तेर वैर भयो उमराओनको मरनो;
वीच वीच उहां केते जोरसें मुलक लूटे,
कहा लगी साहस शिवाजी तेरे वरनो;
आठ दिगपाल त्रास आठ दिशि जीतिवेंको,
आठ पातशाहनसों आठौ याम लरनो. ३६

भूप शिवराज कोप करी रनमडलमें,
खग्ग गहि कुद्यो चकताके दरवारेमें;
काटे भट्ट विकट रु गजनके सुंड काटे,
पाटे डर भूमि काटे दुवन सितारेमें;
भूखन भनंत चैन उपजे शिवाके चित्त,
चौसठ नचाइ जुवे रेवाके किनारेमें;
आतनकी तात वोली खालकी मृदंग वाजी,
खोपरीकी ताल—पशुपालके अखारेमें. ३७

आये चतुरंग सैन सिंह शिवराजजूके,
देखि पातशाहनकी सेना धरकत है;
जुरत सजोर जंग जोम भरे शूरनके,
श्याह श्याह नागिनमें खग्ग खरकत है,
भूखन भनंत भूत प्रेतनके कंधनपै,
टांगी मृत वीरनकी लोथें लरकत है;
कालमुख भेटे भुमि रुधिर लपेटे पर,
फटे पठनेटे मुंगलेटे फरकत है. ३८

जीत्यो शिवराज सलहेरको समर सुनि,
नर काहू शूरनके सीना धरकत है;
देवलोकहीमें अजो मुंगल पठाननके,
सरजाके शूरनके खग्ग खरकत है;

भुखन भनत भारी भूतनके भुवनमें,
टागी चंद्राउतनकी लोथ लरकत है,
कोउ ना लपेट अध फारे रन लेटे अजो,
रुधिर लपेटे पठनेटे फरकत है ३९

कोप करी चढयो महाराज शिवराज वीर,
धौंसाकी धुकारतें पहार दरकत है,
गिरे कुंभि मत्तवारे श्रोणित फुहारे छूटे,
कडाकड छिति नाल लाखो करकत है,
मारे रन जोमक जुवान खुरासानि केते,
काटि काटि दाटि दाढ़ें छाती थरकत है,
रनभूमि लेटे ये चपेटे पठनेटे परे,
रुधिर लपेटे मुंगलेटे फरकत है ४०

दिल्ली दल दलै सल्हेरेके समर शिवा,
भूखन तमासे आय देव दमकत है,
किलकत कालिका कलेजेकी कलल कर,
करिके अलल भूत भैरों तमकत है,
कहु रूढ मूड कहु कुंड भरे श्रोनितके,
कहु मखतर करी झुंड झमकत है,
खुले खग कध धरी ताल्गति बंध परी,
धाय धान धरनि कबंध धमकत है ४१

कत्ताके कसैया महा वीर शिवराज तेरी,
रूमके चकत्तालों शका सरसात है,
काश्मीर काबुल कलिंग कलकत्ता अरु,
कुल करनाटककी हिम्मत हरात है,
बिकट बिराट मग व्याकुल बलख बीर,
बार हो बिलायत सकल बिल्लात है,
तेरी धाक धुधरि धरामें अरु धाम धाम,
अधाधुध आधीसी हमेश हहरात है ४२

बारही हजार असवार जोरि दल्दार,
एसे अफजुल्खान जोर जुल्मात है,

ऊंट हय पैदल सवारनके झुंड काटी,
हाथिनके मुंड तरबूचलों तरासती. ५०
जिन फन फुतकार उडत पहार भारे,
भुतल हलत पीठ कमठ वदालिगो,
जिन विषज्वाल ज्वालमुखीसी पसारि सवे,
उनतें चिक्करि मद दिग्गज उगलिगो;
किन्हे पायमाल सब मालिक जहानजूके,
भूखन भनंत सिधु जलथल हलिगो;
खग्ग खगराज महाराज शिवराज तेरो,
ऐसेही मुंगल दल नागको निगलिगो. ५१
मार कर वादशाही खाकशाही कर दीन्ही,
छीन लीनी छिति हद सब सरदारेकी;
खिस गई शेखी फिस गई शूरताइ सबे,
हिस गई हिम्मतही हियतें हजोरकी;
भूखन भनंत भारे धोंसाकी धुकार वाजे,
गरजत मेघ ज्यों वरात चढे भारेकी;
दच्छनी दमाकदार दुल्हो शिवराज भयो,
दिल्ही दुल्हनि भई शहर सतारेकी. ५२
चकित चकता चित चौक उठे वेर वेर,
दिल्ही दहसाति चित चाहे सरकति है;
बलख विलात विलखात विजापूरपति,
फिरत फिरंगिनकी नारि फरकति है;
थरथर कापत कुतुबशाह गोलकुंडा,
हहरि हवश भूप भाम भरकति है;
सिंह शिवराज तेरे धोंसाकी धुकार सुनि,
केते पातशाहनकी छाती दरकति है. ५३

(सुरतकी लूट; विजापुर-सिंहगढ विजय.)

दौरी चढि ऊंट फरियाद चहूं खूंट किये,
सुरतकों कूट शिवा लूंट धन ले गयो,
कहि ऐसें आय आमखास मधि शाहनकों,
कौन ठौर जाये दाग छाती बिच दे गयो;

सुनि सोइ शाह कहे यारो उमराओ जाओ,
सो गुनाह राव एती भेरेंम करी गयो,
भूखन भनंत मुगलानी सबे चूंथ दीन्ही,
हिन्दमें हुकुम शाहिनदजूको व्हे गयो　　५४
जोर कर जैहें अब अवर नरेशपर,
लडिये ल्हाइ ताके सुभट समाजपें,
भूखन भनंत रूम बल्ख बुखारे जैहं,
जैहें शाम चीन तरी जलधि जहाजपें,
सब उमराव मिलि एकमत ठानि कहे,
आइके समीप अवरंग शिरताजपें,
भिख मागि खैहें बिन मनसब रैहें पें न,
जैहें हजरत महा बलि शिवराजपें　　५५
तेगा भरदार स्याह पंखा भरदार स्याह,
निखिल नकीब स्याह बोल्त बिराहको,
पान पिकदानी स्याह सेनापति मुख स्याह,
जहा तहा ठाढे गिने भूखन सिपाहको,
स्याह भये सारी पातसाहिके अमीर खान,
काहूको न रह्यो जोम समर उमाहको,
सिंह शिवराज दल मुंगल बिनाश करि,
घांस ज्यों प्रजायों आमखास पातशाहको　　५६
दिल्हीको हरीछ भारी सुभट अडोल गोल,
चालीश हजार ले पठान धायो तुरकी,
भूखन भनंत जाकी बेरिहीको शोर मच्यो,
बेदिलकी सीम पर फोज आन दरकी,
भयो है उचाट करनाट नरनाहनको,
डौल उठि धाती गोल्कुंडाहीके घरकी,
शाहिके सपूत शिवराज बीर तेने तब,
बाहुबल राखी पातशाही बिजापुरकी　　५७
अफजुल्खान जूकों मारे मयदान जाने,
बिजापुर गोल्कुंडा हराये दराज है,

भूखन भनंत ऐसे अनंत उपाव करी,
हबसी फिरंगी मारे उल्टाइ जहाज है;
देखतमें रुस्तमकों छिनमें खराब कियो,
सल्हेरके संगरके आवत अवाज है;
चौंकि चौंकी चकता कहत चहुंधातें यारो,
लेत रहो खबरि कहा लौ शिवराज है. ५८

छूटत कमान वान बंदुक रु कोकवान,
मुसकिल होत मुरचानहूकी ओटमें;
ताहि समे शिवराज हुकम दे हल्ला कियो,
दावा बांध द्वेषीपर वीरन ले जोटमें,
भूखन भनंत तेरी हिम्मत कहालौ गिनो,
किम्मत इहां लग है जाके भट जोटमें;
ताव दे दे मूच्छन कँगुरनपे पाव दे दे,
घाव दे दे अरिमुख कूद परे कोटमें. ५९

कैयक हजार किये गुर्ज वरदार ठाढे,
करिकें हुस्यार नीति शिखई समाजकी;
राजा जसवंतकों बुलायकें निकट राखे,
जिनकों सदाय रही लाज स्वामि काजकी;
भूखन भनंत ठाढो पीठ है गुसल्खान,
सिंहसी झपट मन मानी महाराजकी;
हठतें हथ्यार फेंट बाधी उमराव राखे,
लीनी तव नौरंगने भेट शिवराजकी. ६०

सबनके उपर खडे रहन योग्य ताके,
आन ठाढों कियो छ हजारिनके नियरे;
जानी गैर मिसल गुसिले गुस्सा धारि मन,
कीन्ही ना सलाम न वचन कहे सियरे;
भूखन भनंत महावीर बलकन लाग्यो,
सारी पातशाहिनके उड गये जियरे;
तमकिके लाल मुख शिवाको निरखि भयो,
शाहमुख नौरंग सिपाह मुख पियरे. ६१

सारी पातशाहीके अमीर जुरि ठाढे तहा,
लायकें मिठाय कोइ सुमनके नियरे,
देखिकें रसीले नैन गरब गसीले भये,
करी न सलाम न बचन कहे सीयरे,
भूखन भनत जब धर्या कर मूठ पर,
देखी तुरकनके निकसि गये जियरे,
देखी तेग चमक शिवाको मुख लाल भयो,
स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पीयरे ६२
घिरे रहे घाट और बाट सब घिरे रहे,
बरश दिनाकी गैल छिनमें छ्वै गयो,
ठौर ठौर चौंकी ठढी रही सब स्वारनकी,
मीर उमरावनके बीच व्है चलै गयो,
देखेमें न आयो एसे कौन जाने कैसें गयो,
दिल्ही कर मीडे कर भारत चिते गयो,
सारी पातशाहीके सिपाह सेवा सेवा करे,
पर्या रह्यो पलग परेवा सेवा व्हे गयो ६३
मोरँग कुमाउ आदि बाधव पलाउ संचे,
कहाँलौं गिनाउं जेते भुपतिके गोत है,
भूखन भनत बडे पर्वत निवासी लोग,
बावनी बबजा नव कोटि धंध होत है,
काबुल कधार खुराशान जेर कीन्हे जिन,
मुगल पठान शेख सैयतसें रोत है,
अब लग जानत है बडे होत बादशाह,
शिवराज प्रगटे तें राजा बडे होत है ६४
उदधिके अगस्त औ बांस बन दावानल,
तिमिरपे तरनिकी फिरन समाज हो,
कंशके कन्हैया और चूहाके बिडाल पुनि,
कैटभकी कालिका बिहगमके बाज हो,
भूखन भनत सब आसुरके इंद्र पुनि,
पन्नगके कुलके प्रबल पंछीराज हो,

रावनके राम सहस्रबाहूके पर्शुराम,
दिल्लीपति दिग्गजके सिंह शिवराज हो. ६४

जोर रुशियानको है तेग खुरासानहूकी,
नीति इंगलांड चीन हुन्नर महादरी;
हिम्मत अमान मरदान हिंदुवानहूकी,
रूम अभिमान हबसान हद कादरी;
नेकी अरबान शान अदब इरान त्योंही,
क्रोध है तुरान ज्यों फरांस फंद आदरी;
भूखन भनंत इमि देखियें महीतलपें,
वीर शिरताज शिवराजकी बहादरी. ६६

आपसकी फूटहीतें सारे हिंदवान टूटे,
टूटयो कुल रावन अनीति अति करते;
पैठिगो पताल बलि वज्रधर ईरपातें,
टूट्यो हिरनाक्ष अभिमान चित धरते;
टूट्यो शिशुपाल वासुदेवजूसों वैर करि,
टूट्यो है महीश दैत्य अधर्म विचरते;
राम कर छुवनतें टूटयो ज्यों महेश चाप,
टूटी पातशाही शिवराज संग लरते. ६७

(**शिवाजीकी राजनीति-कीर्ति.**)

चोरी रही मनमें ठगोरी रही रूपहीमें,
नांही तो रहि है एक मानिनीके मानमें;
केशमें कुटिलताई नैनमें चपलताई,
मोहमें बँकाइ हीनताइ कटियानमें;
भूखन भनंत पातशाह पातशाहनमें,
तेरे शिवराज राज अदल जहानमें;
कुचमे कठोरताइ रतिमें निलजताई,
छांडी सब ठौर रही आइ अबलानमें. ६८

दरबर दौरि करी नगर उजारि डारे,
कटकको कूटि मारे दुर्जन दरबकी;
जाहिर जहान जंग जालम है जोरावर,
चलै न कछुक जोर जब्बर जरबकी;

गिरत गर्भ कोटीन, गहत चिंजी चिंता डर,
चालकुंड दलकूंड, गोलकुंडा शंका उर;
भूषन प्रताप शिवराज तुव, इमि दक्षिनदिशि संचरहि,
मधुरा धरेश धक धक धकत, द्रविड निविड अविरल डरहि. १

सैयद मुँगल पठान, शेख चंद्रावत भच्छन,
सोम सूर द्वै वंश, राव राणा रन रच्छन;
इमि भूखण अवरंग, अरू एदिल दल जंगी,
कुल करनाटक कोट, भोट कुल हबस फिरगी,
चहुऔर बैर महि मेरु लगि, शाहितनै साहस झलक,
फिर एक और शिवराज नृप, एक और सारी खलक. २

(कवित्त.)

मदजल धरन द्विरद बल राजतही,
बहु जल धरन जलद छबि साजे है,
भूमिके धरन फनपति अति लसतही,
तेज ताप धरन ग्रीषम रवि छाजे है;
खग्गके धरन सोहे भर भारे रनहींमें,
भूषण लसत गुन धरन समाजे है;
दिल्लीके दलन देश दच्छनके थंभनहि,
एडके धरन शिव सरजा विराजे है. १

(सवैया.)

चक्रवती चकता चतुरंगिनि, चारि यों चाप लई दिशि चक्का,
भूप दरीन दुरे भनि भूषन, एक अनेकना वारि धि नक्का;
औरंगशाहसों साहिकों नंद, लड्यो शिवशाह बजायके डंका,
सिंहको सिह चपेट सहे, गजराज करे गजराजसों धक्का. १

भैया.

(तत्व महत्व.)

शुद्धितें मीन पीए पय बालक, रासभ अंग विभूति लगाये,
राम कहे शुक ध्यान गहे बक, भेड तिरे पुनि मुड मुंडावे;
वस्त्र विना पशु व्योम चले खग, व्याल तिरे नित पौनके खाये,
ए तो सबी जड रीत विचच्छन, मोच्छ नहि बिन तत्वक पाये. १

जो पर धीन रहे निशि वासर, सो अपनी निधि क्यों न गुमावे,
जो जगमाहि लखे न भध्यातम, सो जिय क्यों निहचें पद पावे,
जो अपने गुन भेद न जानत, सो भवसागरमें फिर आवे,
जो विष खाय सो प्राण तजे, गुड खाय जो काहे न कान विंधावे २

(कर्मफल)

ग्रीषममें धूप परे तामें भूमि भारी जरे,
फूलत हे आक पुनि अतिही उमगिकें,
वर्षाऋतु मेघ झरे तामें वृक्ष केइ फले,
जरत जवासा अघ आपहीतें डहिके,
ऋतुको न दोष कोउ पुण्य पाप फले दोऊ,
जैसें जैसें किये पूर्व तैसें रह सहिकें,
केई जीव सुखी होंहि केई जीव दुःखी होंहि,
देखहु तमाशो भैया न्यारे नेकु रहिकें १

भोजराज.

(सापेक्षिक न्यूनता १)

शशिके प्रकाश पास माणिककी केती ज्योत,
रविके प्रकाश तारा तेज ना धरत हे,
शूरवीर आगे कचू कायर न ठेरत हे,
भुजगकी दृष्टि आगे दीप न जरत हे,
कस्तुरीकी वास आगे केवडो कपूत लागे,
त्यों करम आगे रूप पाणीहि भरत हे,
कहत हे भोजराज सुने क्यु न कान देत,
चतुरकी चारो वरण चाकरी करत हे १
भोज भनै एते होत हल्के हरामजादे,
होस हीन हीजनिसों हिरगिज हितैये ना,
कल्ही कलकी क्रूर कृपिण कुनामी काक,
कपटी कुकर्मी क्रोधी किंचित हितैये ना,
चूसिया चवाई चोर चचल चलांक चित्त,
चोप चोप चख तिन तरफ चितैये ना,
बदी बदराही बदनामी बदफेल बद,
२

चाहके है चाकर गुलाम गोरे गातनके;
सेवक है सांचे सुघराई सुखदानके;
खाने जादखांसे खूबसूरतिके भोज भनै,
जोरावरदार तेरे कदम कलानके;
छोरा छांह छबिके पछौरा पाय पोंछनके,
भौरा खुशबोइ मुख मधुर बतानके;
मोहके मुसाहब मुसद्दी दृग फेरनके,
हेरनके हुकुमी हजूरी हॅसी जानके. ३

भौन.

(विरह व्याकूलता.)

आवनि सरद कैसी आवनि पियाकि पाइ,
व्है गयो तियाको मन अंब रु अमल हे;
वदन कलाधरकी और छबि छाइ रही,
भाइ रही सारी सेत चादनी विमल हे;
भौन कवि कहे हास कासको प्रकाश तैसे,
कैसेके निकट आइ विहरत भल हे;
नागरिके नेन जुग नाहको निरखि नेह,
नीरमें विकसि रहे नील ज्यों कमल हे. १
चंदन उसीर नीर शीतल समीर धीर,
लागत समीर पीर दूनी सरसति हे;
भौन कवि कहे जोग जीवको न जानि परे,
एसी या विभावरी विषम दरसति हे;
चेत चारु चांदनी अचेत करि डारे मन,
कहांलों संभारे अंग अंग झरसति हे,
वार वार तोहि में पुकारों हित लागि सखी,
आउ भाजि भौन आजु आगि वरसति हे. २

(सवैया)

हो अनुराग प्रवीन प्रिया औ, मनोहर हौ प्रभु हौ छबि किन्हे,
भूपित हो नवयोवनसों, सिगरी अमला मत आनँद चिन्हे,
मौन कहे कहिके अस मैन, चिते पिय ओर रही द्रग दिन्हे,
ओर कछू न मने कहतें, अंसुवा भरि बाल द्रगाचल लिन्हे १
वारिद वारिसों मजनके, धन कानन मध्यमें वास ठयो हे,
शीतल चदन बिंदुनके, पुनि देव मनोजहिं पूजि लयो हे,
मौन कहे कियो राति जगा अरु, आज हुती सों तो दान दयो हे,
कौन में पूरनरी तपस्या, अँसियानको आतिथि जो न भयो हे २
रक महा मधु मासरको, जिमि पावे घनो भय भूमि कही हे,
मौन कहे बिलसे अतिहिंपे, तऊ घन आनँद वारिज ही हे,
या तनके बिछुरे अबलों बिरहानल ज्वालकी आच दही हे,
लालको रूप लखे असियां, अनिमेप भई अलसात नहीं हे ३

मतिराम

(भक्ति-शृंगार)

मेरी मतिमें राम हे, कवि मेरे मतिराम,
चित मेरो आराम हे, वित मेरे आ राम १
मो मन तम तो महि हरो, राधाको मुखचद,
चढे जाहि लखि सिंधु लों, नंद नद आनद २
मुज गुंजको हार उर, मुकुट मोरपर पुज,
कुजबिहारी बिहरिये, मेरई मनकुज ३
सखिन करत उपचार अति, परति बिपति उत रोज,
झुरसत ओज मनोजके, परस उरोज सरोज ४
जागत ओज मनोजके, परसि पियाके गात,
पापर होत पुरै निके, चंदन पकित गात ५
बिरह तजे तिय कूचनि लों, असुआ सकत न आय,
गिरि उडगन ज्यों गगनतें, बीचहि जात बिलाय ६
भली लगे उर भावतें, करी भावती आप,
काम निसेनी सी बनी, यह बेनीकी छाप ७

अटा ओर नंदलाल उत, निरखो नेक निशक;
चपला चपलाइ तजी, चंदा तज्यो कलंक. ८

(प्रियामूर्ति शृंगार-कवित्त.)

सांझही सिगार सजी प्राणप्यारे पास जाति,
वनिता वनक वनी वेलिसी अनंदकी;
कवि मतिराम कल किंकिनीकी धुनि वाजे,
मंद मंद चाल ज्यों विराजत गयंदकी;
रगे केसरी दुकूल हांसीमें झरत फूल,
केसनमें छाइ छवि फूलनके वृंदकी;
पाछे पाछे आवत अॅंध्यारीसी भंवर भीर,
आगे फेल रही उजियारी मुखचदकी. १

वारने सकल एक रोरिहीकी आड पर,
हा हा पहिरिन आभरन ओर अंगमें,
कवि मतिराम जेसे तिच्छन कटाच्छ तेरे,
ऐसे कहां सर हे अनंगके निषंगमें;
सहज स्वरूप सुघराइ रीझि मन मेरो,
लोभि रह्यो देखि रूप अमल तरगमें;
सेत सारीहीसों सब सोतें रंगों श्याम रग,
सेत सारीहीमें श्याम रगे लाल रगमें. २

सहज जलद जिमि झलकत मयजल,
छिति तल हलत चलत मंद गतिमें;
कहे मतिराम वल विक्रम विहदसी न,
गरजनि परें दिग वारन विपतिमें;
सत्ताके सपूत भाऊ तेरे दिये हलकानि,
वरनी उंचाइ कविराज निकी मतिमें;
मधुकर कूल कर टीनिके कपोलनितें,
उडि उडि पियत अमिय उडूपतिमें. ३

मेरे हसे हसत हे मेरे वोले वोलत हे,
मोहिंको जानत तन मन धन प्रानरी;
कवि मतिराम मोंहे टेढी किये हासी हूमें,
छोडि देत भूषन वसन खानपानरी;

मोते प्राणप्यारी प्राणप्यारेके न ओर कोऊ,
तासों रीस कीजे यह कहाकी सयानरी,
मै न कामनीको मैन काहूके न रूप रीझे,
मैन काहूके सिखाये किनो मन मानुरी ४

केसरी कनक कहा चंपक बरन कहा,
दामिनी यों दुरि जात देहकी दमकतें,
कवि मतिराम छीने लोचन लपट लाज,
अरुण कपोल काम तेजकी तमकतें,
पगके धरत कल किंकिनी नेवर बजें,
बिछिया झमक उठें एकही चमकतें,
नाह मुख चाहि चिते औचक हंसति चौंकि,
परे चन्द्रमुखी निच चौकाकी चमकतें ५

सेत सारी सोहत उज्यारी मुख चंदकीसी,
महल निमद मुसक्यानकी महामही,
अगियाके ऊपर है उल्ही उरोज ओप,
उर मतिराम माल माल्ती डहाडही,
माजे मंजु मुकुरसें मंजुल कपोल गोल,
गोरीकी गोराइ गोरे गातन गहागही,
फूलनकी सेज बैठी दीपती फैलाय रही,
लायके फुलेल फुल बेलिसी लहाल्ही ६

(सवैया)

साचि बिराचि निकाइ मनोहर, लाजकि मूरतिवत बनाई,
तापर तो बडभाग बडे, मतिराम लखें पति प्रीति सुहाई,
तेरे सुशील स्वभाव भट्ट, कूलनारिनको कूलकानि शिखाई,
तोहि मनो पति देखतके, गुन गौरि सबै गुनगौरि पठाई १

कुन्दनको रंग फिको लगे, झलके अति अगन चारु गोराई,
आखिनमें अलसानि चितौनिमें, मजु बिलासनकी सरसाई,
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहे मुसकानि मिठाई,
ज्योंज्यों निहारिये नेरे व्है नैननि, त्योंत्यों खरी निकरेसि निकाई २

जाके लगे गृहकाज तज्यो, न शिखी सखियानकी शीख शिखाई,
बेर कियो सिगरे ब्रजगांउमें, जाके लिये कूलकानि गवाई,

जाके लिये घर वाहरहुं, मतिराम रहे हँसि लोग चवाई,
ता हरिसों हित एकहि बार, गंवारिमें तोरत बार न लाई. २
बीति गई जुग जाम निशा, मतिराम मिटी तमकी सरसाई,
जानति हों कहुं ओर तियासों, रम्यो रसमें हंसिके रसिकाई;
सोचति सेज परी यों नवेलि, सहेलिसों जात न वात सुनाई,
चंद चढ्यो उदयाचलपें, मुखचंदपें आनि चढी पियराई. ४

मधुसुदन.

(चित्तशुद्धि.)

जिनके मनमें चुगली उचरी, सु तो पापको वीज वयो न वयो,
जिनके मनमें इक लोभ वस्यो, तिन औगुन और लयो न लयो,
जिहकी अपकीरति छाय रही, जन सो जमलोक गयो न गयो,
मधुसूदनमें चित लीन भयो, तिन तीरथ नीर पयो न पयो. १

मनि (चिंतामणि.)

(वनिता विनोद.)

अवलोकनिमें पलकें न लगे, पलको अवलोकि विना ललके,
पतिके परिपूरन प्रेम पगी, मन और सुभाउ लगे न लके;
तियके विहसोंहि विलोकनिमें, मन आनंद आंखिन यों झलके,
रसवंत कवित्तनको रस ज्यों, अखरानके ऊपर व्है झलके. १
कोटि विलास कटाछ कलोल, वढावे हुलासन प्रीतमही तर,
यों मनि यामें अनूपम रूप, जो मेनका मेन वधू कहि ईतर;
सुंदरि सारि सुपेतमें सोहत, यों छवि ऊंचे उरोजनकी तर,
जीवन मत्तगयंदके कुंभ, लसे जनु गंग तरंगनि भीतर. २
यों मनि मेन महीप प्रताप, तिया तन वैर सुभाव गिले हे,
आनन पूर निशाकरके ढिग, वार घने तम आइ हिले हे,
वै सुखमाके समूह कछू, अगुरी पगुरी न प्रकाश खिले हे,
छोडि सदाको विरोध कहा कर, कंजनसों नखचंद मिले हे. ३
आंखिनकुं दिवेके मिस आनि, अचानक पीठ उरोज लगावे,
केहुं कहुं मुसकाइ चिते, अंगराइ अनूपम अंग दिखावे,

नाह छुई छल्सों छतियां, हसि भौंह चढाइ अनद बढावे,
जोबनके मदमत्त तिया, हितसों पतिको नित चित्त चुरावे ४

मनियार. (यार.)

(हनुमंत पराक्रम)

फट फटाय है क्रुद्ध, फिल्कि कूदो कराल कपि,
दपट दिग्ग दहलात, दिवाकर मद दीने तपि,
चले धराधर रूप, धरनि धारो धर धस्सत,
घुघि धवल ध्रुव धाम, धूम करि फेरि धीर मत,
क्रिय घातमि घात अघात कह, यार मेरु डोल्लत डरनि,
कसमत कोल कह हरत कमठ, असकत फनि धसकत धरनि १
धसि पताल तन वाल, व्याल पुरमाहि कालरुख,
देत ताल वेताल, नचति जोगिनि कराल मुख,
रव त्रिकाल विकराल, हाल काली किलकारत,
भ्रमत भूत करि भीर, पिशाचिनी यु पुकारत,
कह यार चल्लत हनुमंत जब, नचति मीच अरिके पुरहिं,
शृक वृद घटी धुमकेत फिरहि, स्यार सुंड डुडहिजु रहि २

(कवित्त)

छहराति छितिपें छुपाचरके छतनकी,
छाप उठी छपकि छतज धारा छल्के,
डाकिनी डकरि ऊठे वीर परि परि ऊठे,
फारि खल जुथ्थन गरजि गिद्ध गल्के,
यार कहे नोबत निसान बाजे स्वर्ग जब,
पवनके नदनके सर्ग रग झल्के,
बोलें बिरदावली बिल्दी भूत बंदी फिरें,
कालिका अनदी शिवनंदी श्रोन हल्के १
चक्तर यो सरन रोस भरे धावे जब,
कूदि मारें किल्की चपेटन शरीरकी,
टोप खल खोपरी खपर लेय शीश निकी,
भीसत्रति काली धरि करि न जंजीरकी,

रनभूमि झूमि परे रुंड मुंड खल नीके,
यार जब सोहैं खाय राम रणधीरकी;
भैरव मसाण किल्कारे समसान वासी,
श्वान चढे देखे घमसान कपीवीरकी. २

लपकि लपेटि पूंछ प्रविशे नगरवर,
वीर जव धरती धरत पग चढि चढि;
दुंदुभी बजति नभ्भ सभ्भय सुनागलोक,
अभ्भ अति रानिनके गभ्भ परे कढि कढि;
यार कहे सुंदर सगुन नाचें भर्थजूके,
सिय वाम अंग नाचें आनंदतें मढि मढि;
सिद्धि नाचें अवधि सरग नाचें देववधू,
काल नाचें शत्रुनके सीसनपें चढि चढि. ३

स्यार वृक वन नाचें गिद्ध नाचें लोथनिकों,
जोगिनि जहकि नाचें घोर घमसानपें;
प्रवल पिसाच प्रेत पंगति पुकार नाचें,
भूतनकी भीर नाचें रुधिर अघानपें;
यार कहे हनुमंत कटकमें कपि नाचें,
कोसला करम नाचें विपति विहानपें;
रन नाचें कालिका अशुभ लंक चढि नाचें,
जमकी जमाति नाचें रावन भुजानपें. ४

(महिम्न-शिवस्तुति.)

तीनौ वेदके विभेद सांख्य सत्य तत्वज्ञान,
ध्यान योग शिव विष्णु सेवन सुहात हे;
सवे भिन्न भिन्न सवे सुंदर अधीन सवे,
ग्राहक गरिष्ट यार दृष्टि दरसात हे,
नरनकी रुचिकी विचित्रता अनेक शिव,
सूधे टेढे पथनि हे तुममें समात हे;
जैसे जल वृंद थल थलनिमें छिटिकेंसि,
मिटिके सकल जल जलधिमें जात हे. १

मन वृत्ति चित्त अवराधिके सविधि विधि,
साधिके पवनको गवन युं व्यापको;

ठढे तन रोम घाढे मढे उद्गारनसो,
नेन जल धारनसो धोवें पूर्व पापकों,
मनियार पावे जो अनद उर सींमें मनो,
सुधा सर सींमें मज्ज तजे त्रय तापकों,
जोगी जन जल करिरल करि जाने सदा,
सदाशिव सत्य करि तत्व करि आपको २
तुही भासकरको प्रकाश करता कुमुद,
विकास कर अनिल अनल उजेरी हे,
तुहि जलराशिहूके अवनि अकाशहूके,
आतमा प्रकाश हैके सृष्टि सब घेरी हे,
यार कहे तुं यों असपष्ट अष्ट मूरति हे,
देव दीन कष्ट नष्ट करत न वेरी हे,
सबमें समस्त है प्रगट पूरि रहे शिव,
एसों कोन तत्व जामें शक्ति नहि तेरी हे ३
नमो अणुहूर्त अति सूक्ष्म सुरूप नमो,
महा मेरुहूर्त वपु प्रभुता पसारीजू,
यार कोटि कल्पवारे सिद्ध शुद्ध नमो तोहि,
तनके तरुण उदे कोटिनत मारीजू,
नमो धर्मकर्त्ता नमो व्यापक विभर्ता नमो,
संकट संहर्ता सर्वकर्त्ता त्रिपुरारीजू ४
नमो भव रजोगुनमढल उमंडिके,
अखंड प्रखंड कीर्ति मंडित अशेषजू, ५
नमो मृड सत्य पुनि जीव सुखदाता, भय-
त्राता होत जन पितुमाताओं विशेषजू,
यार कहे नमो हर हरन समस्त विश्व,
तरल तमो गुन गरल कंठमेशजू,
नमो शिव ब्रह्म चैतन्य ध्रुवधाम धन्य,
रहित त्रिगुन पुन्य मूरति महेशजू ६

(कविपरिचय)

सप्तके अंक रंध्र वेद वसु चंद्र पूरो,
चद्रमा सरदको वरद धर्म धनको,

चाकर अखंडित श्रीरामचंद्र पंडितको,
मुख्य शिष्य कवि कृष्णलालके चरनको;
मनियार नाम श्यामसिंहको तनय भो,
उदय क्षत्रिवंश काशीपुरीनि वसनको;
पारवतीकंत जश जगमें दिगंत कियो,
भाषा अर्थवंत पुष्पदंत महीमनको. १

मनोहर.

(जीव औ यमयातना)

सोचत सोचत साझ करे सठ, साझते सोचत होत विहाना,
जो घट खंडकि संपति आवत, तो न कहुं कछु आज अघाना;
लोभ लग्यो पुन वृच्छ उपाडण, भाग विना न लहे इक दाना,
चेत अचेत सुधारस पीयके, जीव चिडी जमराज सिचाना. १
मातपिता सुत आदि कुटुंब सो, दीसत है सब लोक विराना,
तुं नित एक सदा त्रिहु कालमें, कर्म बली तिन हाथ विकाना,
काहिको पाप करे धर्म छोरके, क्यों न मनोहर होत सयाना,
चेत अचेत सुधारस पीयके, जीव चिडी जमराज सिचाना. २
एह कुटुंब जैसे पंग वृच्छके, रात वसे परभात उडाना,
इंद्रिय पंच तने वश होयके, तुं विषया ठग पास ठगाना,
मोह महा मद पीयके मूरख, आतमज्ञान सदा विसराना,
चेत अचेत सुधारस पीयके, जीव चिडी जमराज सिचाना. ३

मयाराम.

(गांव नांव.)

आग्रेकी सों प्यारे सुरत तिहारी देखी,
बिन देखे चंदेरी रंग बिजापुर जात हे;
पट्टन रहत कछु डुंगरपुर बांसवारे,
कबहू न गोर कीनी सामरे सुपात्र हे;
भई हे अबेर तोहुं कीजिये निजानाबाद,
देखी मुलतान अजमेरसी बिलात हे;

जोद्धापुर जातहुते लीजिये श्रीकृष्णघड,
एते रूप आली उदेपुरमें वसात हे १
नावको समाज कैसो थसवो सराव कैसो,
तीरथके मेलेमें फब ल्या रहायगे,
आतशकी बाजी तन साचो हे सपन जैसो,
मूतनको फटक देखी तामें भरमायगे,
पानीके वुदबुदें ज्यु पानिमें विलाय जात,
ऐसें पंचभूत काया मायामें मिलायगे,
देखत हमारे मिल्यो जात हे जगत जैसे,
जगत देखत कबु आपहि चल जायगे २

महेशदत्त.

(वर्षा विरह)

एरी ऋतु पावसमें मोर घोर शोर करैं,
ठौर ठौर मडुक कठोर सोर है रह्यो,
देखिकै चकालीरी कपाली अरि जाली हाली,
आली वनमाली विन काली मोहि कै रह्यो,
दामिनी दमक बीच यामिनी विलोकी नित,
कामिनी शकात बात मुखपै न धै रह्यो,
झिल्ली झनकारै मेघवारी धार झौरैं पिक,
कोकिल पुकारैं यों महेशदत्त है रह्यो १

(सवैया)

कीच भरी फल क्यारनमें, शुक सारिकातें न कछू भय मानो,
कंटक वेलि विसालनसों, तरु जाल वितान तहा अरझानो,
सग न कोउ सहेली गुलाव, स्वहातनतें चुनिने मनि आनो,
हेत महेशके पात पसूनकों, आजु भटु मोहि वाग लोभानो १

महमद

(सर्वव्यापी ईश्वर)

आपहि कागद आप मसि, आपहि लिखनेहार,
आपहि लिखनी आखर, पंडित आप अपार १

(चोपाइ चाल.)

आपुहि आप जो देखइ चहा, आपन प्रभुता आपसें कहा;
सबइ जगत दर्पन करि लेखा, आपहि दर्पन आपहि देखा. १
आपहि बन औ आप पखेरु, आपहि सउजा आप अहेरु;
आपहि पुहुप फूल गति फूले, आपहि भंवर वासरस भूले. २
आपहि फल आपहि रखवारा, आपहि सो रस चाखनहारा;
आपहि घर घट महमद चाहै, आपहि आपन रूप सराहै. ३

मार्कंड.

(चितकी चंचलता)

कवहू रंग भोग संयोग करे, कवहू धरि योग कसे तनकों,
कबहू ग्रह गान बसाय रहे, कवहू मृग होय चले बनकों;
कबहू सब तेज फरक्क चले, कवहू वतरे सुसटी अनकों,
कहि मारकुंडे फिटकार पऱ्यो, अब क्या कहिये कपटी मनकों. १

(राधाउक्ति-कवित्त.)

वृषभानु सप्तमकी सुखमां कहांलो कहों,
अष्टमसी चढै सोति हिये नखियनपै;
तीनभे प्रथम होवे दसकेतु जूके जोर,
कुचन एकादस लजावै लखियनपै,
कहै मारकुंडे कटि पंचम दुरैहै देखि,
खायके चतुर्थ वर आपने जियनपै,
भोंहपै न नौम कवौ आज लौ भये है सत,
द्वादस दिवाने छबि रास अंखियनपै. १

मान (खुमान.)

(हनुमंत वीरश्री.)

हनुमंतकी लपेट दै लंगुरकी झपेट,
दल दुष्टको दपेट चरपेट चाखलानः

बजे नख चराचड़ दत होव खटाखड़,
गिरे सैन घटागड़ फटि फटि पार जान,
कपि कूह किल्कार खेलै जूह झिल्कार,
परि पेड पिल्कार कटे राकस निदान,
तहँ तेजको कुमार करी कोप बेशुमार,
वीर लषन झुम्बर झुकि झारी किरवान १
प्यारो सीतारामको उज्यारो रघुवंशहूको,
अनियारो जन पैज महा कूरो रनको,
रघुकुल मडल प्रचड परिघड भुज,
दडन उमडनसो खडन खलकको,
मान कवि रघुके अपक्ष पक्ष लक्षमन,
अक्षमन लक्षमन रक्ष दीन जनको,
सिहनको सर्म गर्भवंतनको गर्व गंजि,
अर्भ अवधेशको सगर्व शत्रुहनको २
भूप दशरथको नवेलो अलबेलो रन,
रेलो रूप झेलो दल राकस निकरको,
मान कवि कीरती उमंडी खलखडी चंडी,
पतिसों घमडी कुलकडी दिनकरको,
इंद्र गज मजनको मजन प्रभजनतै,
ताको मनरंजन निरंजन मरनको,
राम गुणज्ञाता मनवांछितको दाता,
हरिदासनको त्राता धन्य भ्राता रघुवरको ३
हरिहय है घरसो हस सोह माननसो,
हरिनी हरा सोहि रक्ष हस हरसो,
हिमसों हराचलसों हरसों हरिभरसो,
हृषीकेश हर्म्यसो हरोसो होम घरसो,
मानकवि हसकुल हससो सुयश हरि-
दासनके हियसो हलीसो हिमकरसो,
हरिकसो हारसो हनुमनकी हिम्मतसो,
हरासो हेरवसो हिमाचलसो हरसो ४
मित्रकुल मडन महीप रामजुकी महा,
कीरति महीमें मढी मानस मृणालसी,

मानकवि मंजुल मनीसी मल्लिकासी माल,
मन महीपतिसी मीन केतुपालसी;
मालती लतासी मोतीयासी यही माधवीसी,
माधव महादधिसी मुदित मयंकसी,
मघवा मतंग येसी महिपा महिधरसी,
महादेव मंदिरसी मोतीनकी मालसी. ८

(कूट समझ्या-छप्पय.)

ऊख पुच्छको नाम, नाम बिन पत्र वृक्षको,
जहं गनती नहि मिले, भक्षको करत मक्षको,
का विनती को कहत, वृद्धको नाम कहावे,
द्रग शृंगार तहं राखि, नाम उज्वल यश गावे;
भानु मित्रको गनत को, मध्य अंक अभिलापही,
कवि खुमान यहि छप्पका, अर्थ शुद्ध नर भापही. १

मानसिंहजी.

(वैराग, राग, नीति-धर्म.)

याही जग बीच नीच कीचहूमें आन फस्यो,
आप कृत्य आपहीसों बुड्यो हे वेहालसों,
भ्रातृ मित्र प्रेम गयो भृत्य स्वार्थ भग्न भयो,
तोलकों अतोल अयो हीन लज्जा हालसों,
पुत्र चित्त भेद जग्यो कुटुंबीको स्नेह भग्यो,
अनादरके बोलसों खून बह्यो खालसों,
एरे मन मूढ तुन्हे कौन हेतु हित जान्यो,
जासुं दृढ गांठ बांधी जूठेही जंजालसों. १

नीतिसें रच्यो हे ब्रह्म नीतिसें है आदि क्रम,
तीन लोक ठाठ सबें नीतिसुं रहात हे,
मान मही मंडलमें नीति हे अडग दुर्ग,
जप तप जोगहुंते नीति अग्र आत हे,
नेन नग्रपुर यामें अनीति अनोप पेखी,
अपराधि हें औरें शासन औरें पात हे,

गुनेहगार नैनों जो लगनी लगावे आवि,
स्नेह पाशहूको यथ जियाको यधात हे २
काहु प्रेमपथमें जा आजधों अजान रह्यों,
काहु मिंत प्रीतसों ना दिलकों ठगायो हे,
याहि मन नेह गेह आन फस्यो गाढे यन,
यामें विन राग दाग रागमें लगायो हे,
दिनहूमें चेन नाहीं रेन नेन निंद नाहीं,
विरह व्यथाको बीज जियामें लगायो हे,
मान यों मनोज बात बानीमें न कही जात,
जीगरकी ज्वाल सो तो जीगर जगायो हे ३
नीति धर्म जोडवेको दुष्ट मुख मोडवेको,
स्वर्गद्वार तोडवेको धर्म न उपायो हे,
शत्रुन जड टार्या ना याचक अर्थ सार्यो ना,
शूर नहिं दाता हो हु कीरत कहायो हे,
स्तन युग्म तरुनीके आलिंगन अभाव युं,
अधरपान आदि ह्वै स्वपहु न पायो हें,
माताहुको युवावन काटन कुहाड पाय,
वृथा गर्भ आय वृथा उमर गुमायो हे ४
कही वेद वायककी पंडितो लराइ लरे,
कही क्षमी दंभ मही फेरें त्यारी जान हे,
कहीं सुज्ञ सप व्हैके विद्या प्रेम पाठ पढें,
कहीं मस्त मदिराके उडत उफान हे,
कहीं शोक सागरकी निशा अधियारी परी,
कहीं बधाइ मगल हर्ष उठे भान हे,
कहा जानों करताने सरज्यो ससार सार,
अमृतको पान हैं के विषिया समान हे ५

(सरिताम्योक्ति.)

सरिता समान तेरे और कोन उज्वल हे,
परसे ते पावे जन आनंद उछाहको,
प्रकृति सहज स्वच्छ अपूर्व हे अवनीपें,
शीतल स्वभाव सदा हरे देह दाहको,

लीलासें लहेर जोड, वीरत पहाड तोड,
पृथ्वी मध्य कोन पावे तेरे बल बांहसो;
गुन हे अनेक याको फनीहूं न पार लहें,
औगुन अगाध एक गामी नीचे राहको. १

(हास्यरस.)

विख हे विनासी याकों अमृत जों मान लीनो,
श्लाघा कर जूठ मूठ मिष्टता वखानी हे;
मूरख अवुध मूढ अक्कलहुंके अंधेने,
जानहुं गमायवेकी जियाखुं न जानी हे;
खुदहुंको मोत होत यामें तो संदेह नांही,
वंसको विनाश और कुल कुलहानी हे;
दूधपाकहुंके गुन कहालों वखान करुं,
कुंभीपाक वसवेकी प्रगट निशानी हे. १

जोगी भोग आश कीनो कुलही सिंगार लीनो,
वरात वनाइ चले अलेक जगाइके;
नख वीन कटे केते नाक कन फटे केते,
साथहुं लंगोट केते चले उधकाइके;
जमाइको झांख नंगा आंगन भयो हे दंगा,
सासहुंको शुद्ध भंगा देखत डकाइके;
कन्याका विचित्र ताला वला ये कहांसें आई,
कच्चा खाय जावेगें के मांसहू पकाइके. २

मीरन.

(प्रियाविरह.)

मीरन विछुरनही पिया, उलट गयो संसार;
चंदन चंदा चांदनी, भये जरावनहार. १

(कवित्त.)

सुमनमें बास जैसे सुमनमें आवे कैसे,
नाहिनै कहत नाही हां कह्यौ चहत है;
सरस्वती सुरसरी सूर तनियामें जैसें,
वेदके वचन वांचे सांचे निवहत है;

इंदुकला जैसे रहे अम्बरमें परि वाको,
पर वाको लच्छन प्रतच्छ ना लखत है,
जैसे अनुमानतें प्रमान पाइ ब्रह्म जीको,
तैसे कामिनीकी कटि मीरन कहत है १

(सवैया)

पौढि हुती पलिका परमें निशि, ज्ञान रु ध्यास पिया मन लाये,
लागि गइ पलकैं पलसों पल, लागतही पलमें पिय आये,
ज्योंहि उठी उनके मिलिवे हौं, सु जागि परी पिय पास न आये,
मीरन और तौ सोईकैं खोवत, हौं सखि प्रीतम जागि गवाये १

नैन रगे सब रैन जगेतें, लखेतें लखे मनको ललचावन,
भेरि यों रीस किधौ पिय प्यारेको, रूप खरो लगे रीझ रीझावन,
मीरन आजकी आऊन ऊपर, पावन ह्वै करिये करि पावन,
आये कहु अनतें रतिके मन,—भावन लागे तऊ मन भावन २

मीराबाई.

(दोहा)

रसन कटै आनहि रटै, फूटै आन लखि नैन,
श्रवण फटैं ते सुने बिन, श्रीराधा यश बैन १

(कवित्त)

कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ,
कोऊ कहौ अकिनी कलंकिनी कुनारी हौं,
कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब,
कीनमें अलोक लोक लोकनतें न्यारी हौं,
तन जाहु मन जाहु देव गुरुजन जाहु,
जीम क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं,
वृन्दावनवारी गिरिधारीके मुकुट पर,
पीत पटवारेकी मैं मूरतिपै वारी हौं १

कैसी कुलवहू कुल कैसो कुलवहू कौन,
तुं है यह कौन पूछ काहू कुलटाहिरी,
कहा भयो तोहि कहा काहि तोहि तोहि मोहि,
कीधौं ओर का ह्वै ओर कहानतो काहिरी,

जातिहीं ते जाति कैसी जाहिकौ है जाति चेरी,
तोसों हौ रिसाती मेरी मोसों न रिसाहिरी;
लाज गहु लाज गहु लाजि गहि वका रही,
पच हसि हैरी हों तौ पचनिते वाहिरी. २

मुवारक.

(प्रियावाणी.)

हमको तुम एक अनेक तुम्है, उनहींके विवेक वनाय वहो,
इत आश तिहारि विहारि उतै, सरसायके नेह सदा निवहो;
करनी है मुवारक सोइ करो, अनुराग लता जिन वोय ढहो,
घनश्याम सुखी रहो आनँद सों, तुम नीके रहो उनहींके रहो. १

(कवित्त.)

पानीपके पुज सुघराइके सदन सुख,
शोभाके समुद्र सावधान मन मोजके;
लाजनके वोहित परोहित प्रमोदनके,
नेहके नकीव चक्रवती चित्त चोजके,
दयाके दिवान पतिव्रतके प्रधान युग,
नेन ये मुवारक विधान नव रोजके;
मीननके शिरताज मृगनके महाराज,
साहिव सरोजके मुसाहिव मनोजके. १

(प्रियास्वरूप)

कनक वरन वाल नगन लसत भाल,
मोतिनके माल उर सोहें भलि भांती है;
चंदन चढाइ चारु चंदमुखी मोहिनीसी,
प्रातही अन्हाइ पग धारे मुसकाती है;
चूनरी विचित्र श्याम सजीके मुवारक जु,
ढाकी नख शिखतें निपट सकुचाती है,
चंदमें लपेटिके समेटिके नखत मानो,
दिनको प्रनाम किये राति चली जाती है. १

(दोहा)

मृगनैनीके नैनपर, अलक छूटि छवि देत,
मनहु प्रकाशी पंच सर, फासी खजन हेत १

लट लटके तिय वदनपर, को हटकै कै वार,
मन मयूर ससारकों, ए हरि हार अहार २

तिय ससिसें मुख पर कढी, तेले बढो सुहाग,
डसत फिरत वह सल्कर्को, अलक बटपरा नाग ३

अलकपरी वनिता वदन, लगि मुक्ता मनि लाल,
चढत सुधाकर मर मनो, कवि मगल महि लाल ४

मन योगी आसन कियो, चिवुक गुफामें जाय,
रह्यो समाधि लगायके, तिल सिल द्वारे लाय ५

बेनी तिरवेनी बनी, तह मन माघ नहाय,
इक तिलके आहारतं, सब दिन रैन बिहाय ६

चिवुक सरूप समुद्रमें, मन जान्यो तिल नाव,
तरन गयो बूड्यो तहां, रूप कहर दरियाव ७

ज्यों निसि दिन शिवके सदा, शिवा रहत अरधंग,
त्योंही मुखपर तिल लसे, ससिके सदा निसंक ८

तेरो तिल वो तिलोत्तमा, तौल तुले सम जाय,
वह उठिके स्वर्गहि गई, ये भुमि रही धिराय ९

मुक्तानद.

(भक्तिमहिमा)

वासुदेवके भजन विन, वृथा न भरनां स्वास,
मुक्त कहे हरिभजनसें, उरमें होत प्रकाश १

भरतखंड नर तन दिये, वासुदेव जगवंद,
मुक्त कहे भज ताहिकुं, हरन विकट भवफंद २

वासुदेवकूं त्यागकें, पूजत भैरव भूत,
मुक्त कहे सो मूढ नर, माके पेट कपूत ३

(सवैया-इंदव)

कर्णसें दानि धनाढ कुबेरसें, सूजत चोज विधि सम जाना,
वेद पुरान रु नीति नरेशकी, ताहिमें देव गुरुसें प्रवीना,

तेज प्रतापि दिवाकरसें, जगमें दृढ दीग विजे करि लेना,
एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, श्री व्रजचंदसें नेह न कीना. १
चंदसें शीतल रूप अनंगसें, देव गजाननसें जग माने,
सिद्ध शिरोमणी गोरखसें, कविराजहु काव्यरसे खुब साने;
शूर जरासंघ रावनसें, रिपु जीतिके देश सबे घर आने,
एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, कारणरूपि श्रीकृष्ण न जाने. २
अमृतसें सबकुं सुखदायक, शांत धरासें सदा उपकारी,
नीर नदी तरुसें परमारथ, करत सदा निज काज विसारी;
पंडित भोगि पुरंदरसें, भृगुसें महा सिद्धनसें नर नारी,
एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, जो न भजे हरि कुंजविहारी. ३
शांत रहे मुनि जाजलिसें, उरमें अवलोकि तजी सब खोरी,
काम रु क्रोध लोभादिकके झट, त्यागके जोर दे मूछ मरोरी;
कीसे करे किरती अरु वंश, वढावनहारसें समथ भारी,
एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, जो न भजे नंदलाल विहारी. ४
कंचन मोल सची सम कामिनी, वांछित भोग सदा रहे खाते,
ताते तुरग बडे गिरिसें, गज चार पलाय रहे मदमाते,
प्रौढ प्रतापि प्रजापतिसें रहे, गंधर्व वास सदा गुण गाते,
एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, श्रीव्रजचंद्रके रंग न राते. ५
ज्ञानि बडे गुनि गौतमसें, पद वंदत आयके देव धराके,
जाहिको तेज प्रताप विलोकित, वादिविवादि, सबै जन थाके;
जानि बडे जगदीशनमें, जग भूपतिहु सब सेवक नाके,
एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, श्रीनंदलालसें नेह न जाके. ६

मुरारिदान.

(श्रीकृष्ण विनोद-वर्षाविरह.)

गोकुलमें जन्म लीनो जल जमुनाको पीनो,
सुबल सुमित कीनो जाको जग जाप है;
भनंत मुरारि जाकी जननी जसोदा जैसी,
उद्धव निहार नंद जैसो तेहि बाप है;

काम मानतें अनूप तजी मज चंद्रमुखी,
रीझ्यो सग कूबरी कुरूपसों अगाप है,
नेह वीर नयको न पंच तीर मयको न,
मयको न पूतनाके पयको प्रताप है १
धोय दिने अचल भिजोय दीने भूमितल,
मंाय दीने फूल फल अंकुर झरामरी,
छाय दीने तरु त्यों नचाय दीने मोरनकों,
दादुर जिवाय दीने कितनी कृपा करी,
भर दीने सिंधु सर कर दीने सर्व सुखी,
हर दीने विरह मुरार नर नागरी,
एक आस रावरी बिताये मास चातकनें,
ऐहो घन कौन दोष याकी प्यास ना टरी २
काढे क्यों अनदसो न चद रोज जिंदगी है,
काल फद डार्या ना अचिंत कध कानके,
भूलै मत हरिकों विभैकों देख फूलै मत,
कुल्मत झूठै मत त्याग कहे आनके,
छोर रंकपनको मुरार तु निशक रहे,
घटै बटै नांहि अक परमेश पानके,
तूटि है न आव पूठ फेरै जिनि आवहमें,
खूटि है न घन छट जस या जिहानके ३

(मुरारिको सहायता-सवैया)

नांहि यहे नभमंडल मंडित, सोहत अंबुनिधि अति कायक,
नाहि यहे उडु वृद विराजत, फेनन बिंदु फबे सुखदायक,
नाहि यहे शशि बिंब लसै मुनि, कुंडलाकार फनीनको नायक,
नांहि कलंककों अंक यहे सुख, सोवैं मुरार मुरार सहायक १

(राधिका शृंगार)

उठ प्रभात नीवी कसत, नाभि निहारी नेन,
सरसिज उदर सहोदरा, उरतें छिन उतरें न १
मरु मारग इव अधर तुव, विद्रुम छाया नार,
अतिहि पिपासा आकुलित, फिंद नहि करत मुरार २

सुधा श्रोत सम मधुर जव, सुनियतु हे तुव वान;
कलरवहू लागत कटू, विगरी वीन समान. ३
राधे मुखतें छुट अलक, लगी पयोधर आय;
शशिमंडलतें मेरु शिर, लटकी भोगिनि भाय. ४
कृश कटि अकृश कुच युगल, विपुल नितव रु नेन;
अधर अरुणिमा चित चपल, गति सुमंद सुख देन. ५
सकुचित होत सरोज सखि, हरषित होत चकोर;
तरलित होत तोयनिधि, समुझ शशी मुख तोर. ६

(साहित्य, स्तुति,-इत्यादि.)

काव्यरूप संसारको, है कविही करतार;
पलट देत विधि सृष्टिको, ह्या निज रुचि अनुसार. १
करत बुद्धिकों तीव्र अति, विमल जु करत विचार;
याहित सवही शास्त्रको, है साहित हितकार. २
अनिमिष अचल जु बकवकी, नलिनीपत्र निहार;
मर्कत भाजनमें धरे, शंख शीप अनुहार. ३
गुण दोषहिं बुधजन गहत, इंदु गरल इव ईश;
सिरसें श्लाघन कंठही, रोकत विसवा वीश. ४
एक दोष गुण पुंजमें, होत निमग्न मुरार;
जैसें चंद मयूखमें, अंक कलंक निहार. ५
अनिवारित रवि रस्मिसों, रत्नदीप असंहार;
दृष्टि रोध कर नरनकों, जोबन जनित अंधार. ६
विकसत चख मुख फरक भुज, उर बढ हरख अतंत,
तोरनपें तेसो लख्यो, तो रनपें जशवंत.
भय कंपित भुवि कन्यका, हठहिं हरी दश शीश;
वात विधु नित मालती, करसत जैसें कीस. ८
की रच्छा प्रहलादकी, धर नरसिंग स्वरूप;
त्यों तुम गोपी गोपकों, ज्याये व्है जदुरूप. ९
व्हे न होय तो थिर नहिं, थिर हू तौ फलहान;
खल पुरुषनकी मित्रता, सज्जन कोप समान. १०

मेरामण.

(प्रेमयाण-कवित्त)

कटि फेंट छोरनमें, भ्रकुटी मरोरनमें,
सीस पेच तोरनमें, अति उरझायके,
मद मंद हासनमें, बरुनी बिलासनमें,
आनन उजासनमें, चक चोंध छायके,
मोती मनि मालनमें, सोमनी दुसालनमें,
त्रिकुटीके तालनमें, चेटक लगायके,
प्रेमबान दें गयो, न जानिये किते गयो,
सु पंथी मन ले गयो, झरोंखे दग लायके (टेक) १

सुगध समीर जैसे, हस बार छीर जैसे,
भूजल मिहीर जैसे, मयूपी चढायके,
पारद कुमारी जैसे, हरी स्वांत धार जैसे,
अभ्र एन सार जैसे, धूम उरझायके,
उक्ति एक दंत जैसे, शुद्ध बोध सत जैसे,
मिंत बात मिंत जैसे, सेनन जनायके, प्रेमबान० २

अहि खगराज जैसे, चिरिया सु बाज जैसे,
केद्दरी सु गाज जैसे, प्रान निकसायकें,
जलचर मलाह जैसे, मीन मीन हाह जैसे,
कीर पख ग्राह जैसे, फद उरझायके,
भागीरथ गंग जैसे, पंटिक कुरंग जैस,
कूहिया कूल्या जैसे, भूतल भमायके, प्रेमबान० ३

(प्रवीणसागर प्रेम-सवैया)

प्रेमसें दारा भयो दरवेसहि, पैक सिकंदर प्रेम लपट्टा,
प्रेमसें फूल फकीर भये, पुनि प्रेमसें साहपने परिहट्टा,
किंकर प्रेम भयो गज नन्दिय, प्रेम चिते महराम उलट्टा,
प्रेम प्रवीन नवीन कथा, यह प्रेम करी मजनू शिर जट्टा १

मोरकि ध्यान लगी घनघोरसें, ढोरसें ध्यान लगी नटकी,
दीपकि ध्यान पतंग लगी, पनिहारिकि ध्यान लगी घटकी,

चंद्रकि ध्यान चकोर लगी, चकवानकि ध्यान दिनेस टकी;
मीन मनो जल ध्यान सु सागर, पंथ प्रवीन रहें अटकी. २

श्रोन कछू न सुने वतियां, जवतें वतियां रस प्रेम पिवायो;
या रसना कछु ओर न जापत, नाम प्रवीन प्रवीन पढायो;
या मन और न चाहत हें, जवतें मन आपहिकेसें मिलायो;
नैन कछू न निहारत हें, जवतें मुख चंद जेसो दरसायो. ३

अंबरतें अति उंचि वहे, अरु ऊंडि रसातलहूंते अपारी;
तूहिनके गिरतें अति शीतल, पावकतें अति जारनहारी;
मारहूतें कटु मीठि सुधाहुतें, झीनि अनुतें सुमेरतें भारी;
जानत जान अजान न जानत, सागर बात सनेहकि न्यारी. ४

भ्रंग पतंग कुरंग भुजंगम, कंज शिखा सुर पुंगिन लेहें;
मोर पपीह चकोर सुपंकज, घोर वृषा शशि सूर चहें हें;
हारल मीन मराल जुराफहि, काष्ट जले सर जोरि जुरे हें,
देहकुं छेह दहें इतनें परि, नेहकुं छेह प्रवीन न देहें. ५

पानिके जंतु कहा पहिचानत, ग्रीपमके तपते गरदीकी;
केसरकी करही कहा किंमत, है न परीख जहां हरदीकी,
कायरकुं कल नांहि परे, कछु शूरनकों सुद्धि है मरदीकी;
वेदरदी न प्रवीन लहे कछु, जानत हे दरदी दरदीकी. ६

बिप्र जो बेद पढे तो कहा, जव जानि परी नहि वेदकि वानी;
गानक गान कियो तो कहा, उन राग कला सुर तान न आनी;
जोगि विभूति चढाइ कहा, जब जोग कला न हिये अनुमानी;
सागर प्रीत करी तो कहा, जबलों जिय प्रीतकि रीत न जानी. ७

ध्यान प्रबीनहुको उर धारत, गान प्रबीनहुके गुन गावे;
कान प्रबीन बिना न सुने कछु, तान प्रबीनहुसें जु मिलावे;
खान प्रबीन बिना नहि खावत, पान प्रबीन बिना नहि पावे;
स्थान प्रबीनहुको सुमिरे उर, भान प्रबीन बिना भुल जावे. ८

खान रु पान बिधान निधान, निमग्न सदा सुखकी तरनीमें;
जोबन जोर भयो तरु कंत, मिल्यो नहि चूक परी करनीमें;
रूपकि राशि प्रकाशित देह, नहीं तिय ता सम निर्जरनीमें;
तौ पुनि धीरज धर्म तजी नहि, धन्य प्रबीन सती धरनीमें. ९

स्नान रु पान विमानसें यान, सुजान महान श्रिमान कुमारी,
जोबनमें धनमें छनमें, तनमें मनमें अति मैन प्रजारी,
अंत प्रयंत न कंत मिल्यो, पर कतहुंपे नहि दृष्टि पसारी,
एसि पतिव्रत अन्य नहीं बहु, धन्य प्रवीन पतिव्रत धारी १०
ध्यान धरे चित नैन झरे जळ, गान रही गुन पाग रही,
बान करे नित मेन फरे दळ, बाग रही बिन फागरही,
मान जरे गत रेन परे फळ, ताग रही दिन आग रही,
कान हरे हितसें न टरे पळ, सागरही धुनि लाग रही ११
बनमें रितुराज प्रभा विकसी, विकसी रतिराज प्रभा तनमें,
तनमें बिरहा प्रगटी दरसे, दरसे रस आवलि आंखनमें,
खनमें मन मिंत बिना तरसे, तरसे सुख बास निवासनमें,
सनमें सखि सागर ज्यूं न मिले, न मिले घन बूंतनि है बनमें १२
जाय कहो चित चाहि चकोरिकु, काहिकु चंदपें चित्त लगावे,
और कहो सब कजनकों तुम, गजन बीन क्युहिं घुमलावे,
नीरजकूं तुहि धीरज देहु, क्युं नीर बिना नहि धीर धरावे,
देहु सिखामन सो सबकु, सखि तेरी सिखामन मोकु न भावे १३
राज तज्यो सुख साज तज्यो, गज बाज तज्यो गति पाठसें कीनी,
मात रु तात तज्यो कुळ जात, श्रिपात भये तजि भ्रात भगीनी,
देह रु गेहसें नेह तज्योकें, विदेह दशा दिलमें धरि दीनी,
मेर लिये सुख सागरकुं तजि, सागर सब बिदागिरि लीनी १४
सागर मिंत पुकार सुनो, अब में पुनि आपकि सगहि आऊ,
जो तुम अग भभूत लगाइ तो, में पुनि अग भभूत लगाऊ,
जो तुम भीखको भोजन पाइ हो, में पुनि भीखको भोजन पाऊ,
जो तुम नाथ अलेक जगाइ हो, मे तुम साथ अलेक जगाऊ. १५
भस्म लगाइ बनाइ जटा छबि, सागर छीनि हे शभु प्रभाकी,
जोगि बनी फरि मोकुं बिजोगिनी, भोगिनि भइ रहि भोग बिनाकी,
शभु चिताकि बिभूति धरे, इतनी कमि काहिकुं राखि कथाकी,
परी सखी उन टेरि कहे, धरि जाय बिभूति सु मेरी चिताकी १६
आईहों बूझन मत्र तुम्है, बिन स्वासनसों सिगरी मति गोई,
देह तजों कि तजों कुळकानि, अजौं न लजौं लजि हे सब कोई,

हाथ रहै परमारथ स्वारथ, चित्त विचारि कहो पुनि सोई;
जामै रहै प्रभुकी प्रभुता, अरु मेरो पतिव्रत भंग न होई. १७

(छप्पय.)

प्रेम सु हद्द वे हद्द, किया लेलां अरु वानां,
सुचिह प्रेम सरसाय, सोच परि हद्दनि जानां;
भोरी जोरी प्रीत, मीत सावेनां वहरां,
जुगल रीतकी नीत, चित्त पाई गुल जहरां;
यह देह नेह एसे सुने, छेह भये जुग जाय छन,
परबीन दीन सब प्रेम वस, महत पुरुष उदार मन. १

संत प्रेम परिब्रह्म, ताप सितहुं तन तावे,
स्वामि धर्मके सूर, प्रेम परि अंग कटावे;
सती श्यामके प्रेम, अंग अगनीमै जारै,
यहें रीतसें प्रीत, सोय भावीक विचारै;
साधन बिशेष सो सो सरे, चित अनुमान दृढाइयै,
सिद्धा बदंत सागर सुनो, प्रेम नेम यों पाइयै. २

(कवित्त.)

प्रेमहीमें परतीत, रस रीत प्रेमहीमें,
प्रेमहीमें राजनीत, हार जीत जंग है;
प्रेमहीमें हाव भाव, सहित समूह प्रेम,
प्रेमहीमें राग रंग, उमंग अनंग है;
प्रेमहीमें ध्याता ध्येय, ग्याता ग्येय प्रेमहीमें,
प्रेमहीमें जोग भोग, पंचभूत अंग है;
प्रेमको प्रकाश सो तो करताकी करामत,
जहां देखो तहां एक प्रेमको प्रसंग है. १

केते नद नदी नारे भरे हे समुद्र खारे,
हंसनको हेत एक मानसरोवरसें;
वन उपवन केते गिनती न आवे एते,
कामनाको काज एक कल्प तरोवरसें;
वर्षाऋतु सरद काल, भरे नदी नीर ज्वाल,
चातुरक न्याल एक स्वात बुंद जलसें,

अर्जकी तो गर्ज कोउ जानेहे वजीर लोक,
गरीबकी अरजी एक गरीबपरवरसें २
सुरत संजोगि जागे, जोगी जोग ध्यान लागे,
निशिचर जोर भागे, भ्रंग पागे बागमें,
चिरियान सोर भयो, चकवा आनद भयो,
चकोरा उदास थयो, चुप रहे जागमें,
शंख आदि नाद धुनि, विप्र वेद पढे मुनि,
गावत संगीत गुनी, रामकली रागमें,
विरह वियोग लीन, दरदी अधीन दीन,
चाहत प्रवीन कछु, सागर समागमें ३

(विधि खेल-सवैया)

सीत हरी दिन एक निशाचर, एक लई दिन एसोहि आयो,
एक दिना दमयंति तजी नल, एक दिनां फिरही सुख पायो,
एक दिना बन पांडव गे अरु, एक दिना छिति छत्र धरायो,
शोच प्रवीन कछु न करो, करतार यहे विधि खेल बनायो १
बादरसें न छूपे रघु विभाकर, धौनि छुपे न सल्वर धाये,
अजन अजित नेन छुपे नहि, मेन छुपे नहि मौन रहाये,
निंदकसें न छुपे पर कीरति, साच छुपे नहि झूठ बताये,
धूमहिसें ज्युहि आग छुपे नहि, भाग्य छुपे न भमूत लगाये २

(व्यभिचार निषेध)

इंद्र चंद्र चन्द्रधर नारद द्रुहिन जेसे,
हार पाये मारहूतें मुनि उर आनिये,
ग्यानीको गुमायो ग्यान ध्यानीको छोरायो ध्यान,
मान तज्यो मार आगे महा अभिमानिये,
एक पत्निव्रत और पतिव्रताव्रत धरे,
एसें नर नारीनकु विश्वमें वखानिये,
देह धरी वेह अत परीव्रत जीते मार,
जगमें सो जन जगदीस जेसे जानिये १
जेही पुरुषको पर प्रमदासें प्रेम लग्यो,
पर पुरुषसें नेह लग्यो जेही नारीको,

नरक निवास त्रासदायक तेहिको होत,
जगतमें जश न रहत जारी कारीको;
धिक अवतार ताको होत धरनी तलमें,
जिनही लजायो कुल तात महतारीको;
प्रवीन नही सो पुनि नहीं रस सागर सो,
चुल्हिमें चतुरपनो पर्यो व्यभिचारीको. २

(दोहा.)

तंत्री तुंब रु सारिका, सप्त सुरनसों लीन;
देव सभा सी देखिए, राय प्रवीन प्रवीन. १

सत्या राय प्रवीन जुत, सुरतरु सुर तरु गेह,
इन्द्रजीत तासों बंध्यो, केशव सदा सनेह. २

राय प्रवीन प्रवीन सों, परवीननको सुख;
अपरवीनके सब कहा, परवीनन मन दुःख. ३

रतनाकर लालित सदा, परमानंदहि लीन,
अमल कमल कमनीय कर, रमकी राय प्रवीन. ४

राय प्रवीनकि सारदा, सुचि रुचि राजत अंग;
विणा पुस्तक धारिनी, राजहंस सुत संग. ५

वृषभ वाहिनी अंग उर, वासुकि लसत नवीन,
सिव संग सोहत सर्वदा, सिवाकि राय प्रवीन. ६

युवन चलत तिय देहतें, चटक चलत किहि हेतु,
मनमथ वारि मसालको, सैंति सिहारो लेतु. ७

ऊंचे व्है सुर बस किए, सम व्हैं नर बस कीन,
अब पताल बस करनको, ढरकि पयानो कीन. ८

बिनती राय प्रवीनकी, सुनिए साह सुजान;
झूठी पातर भखत है, बारी बायस स्वान. ९

मोतीराम.

(विरह-शृंगार.)

मूल मलयजको समूल जरि जैयो हाइ,
गुन गरि जैयो या सुगंध सरसाइको,

मिटि जैयो भूतल्तें केतकी कमठ कुल,
हुजियो कतल अली कुल दुखदाइको,
मोतीराम सुकवि मनोज माल्तीके हुजो,
पूजो मति आश विरही जन हसाइको,
राजहस पशनको वश निरवश हुजो,
यश मिटी जैयो या कलानिधि कसाइको १

बुडकी छे उझकी पडो है केश आननपें,
मानों शशि ऊपरमें स्याम घटा फिरगी,
करण सवारि कै उघारि दीन्हो मोतीराम,
छोचन छोनाइ वैसी पाइ है न मिरगी,
विप्रके मोछाये मुसुकाइ अधराननमें,
देनें छगी दक्षिणा तनिक चीर चिरिगी,
गातकी गोराइ देखि भूली सुधि पुरोहितकी,
छगी टककटकी टका गोमतीमें गिरगी २

मौडजी.

(अमली पति)

कबहू ना नैननसों नैनको छगाइ करि,
सैनकी सजावटमें काम ना जगायो हे,
कबहू ना रतियांमें रतिया विनोद करि,
छतिया छगाइ नाहि अग छपटायो हे,
कबहू ना मर्दनके श्रमतें श्रमित बनि,
आनदकी निंदभर दिन ना उगायो है,
हाय मिन्यो पोशनी पतिसों अपशोपती हौं,
मानो तन पाय वृथा जनम गुमायो है १

होती जो मैं विधवा तो सांख्यके सिद्धांतहीतें,
ध्यान धरि ईश्वरमें मनकों छगावती,
होती जो मैं सधवा तो रसके उदीपनतें,
प्रेम छपटाइ अति नाथकों रिझावती,
होती जो कुमारिका तो पेखती न अन्य नर,
योगतें अनूप महा मोक्षकों मिळावती,

हाय नांहि विधवा न सधवा कुमारिका न,
अमली पतिसें नांहि एको गति पावती. २

व्योम सुरचाप जों विगारत गरज घन,
कुद्रत इलाहिकी विगारत है रमली,
निंद गफलत राह चलते अकल पथ,
आइ पग तलकों विगारत है वमली,
खूब महबूब नूर हूर परि पेकरसी,
नाजनी नवीनको विगारत है गमली;
फुंकत है धूंकत है थूंकत है झुंकत है,
खास आमखासकों विगारत है अमली. ३

मंडन.

(शृंगार—सवैया)

खेलनको रस छांडि दियो, दिन द्वैकते रात कहां वसती हों,
मंडन अंग समारनको, नित चदन केसरे ले घसती हों;
छाति विहारि निहारि कछू, अपनी अंगियाकि तनी कसती हों,
तो तनको अचरा उघरो, कहो मोतन ताकि कहा हसती हों. १
अलि हों तो गई जमुनाजलको, सु कहा कहों बीर विपत्ति परी,
घहरायके कारि घटा उनई, इतनेहिमं गागर सीस परी;
रपटयो पग घाट चढयो न गयो, कवि मंडन व्है के विहाल गरी,
चिरजीवहु नंदको वारो अरि, गहि वांह गरीबने ठाढि करी. २

रघुराज.

(प्रभुसहाय याचना)

आपतो हैं नाथ मैं अनाथ सब भांतिनसों,
आपतो हैं सत्य दीनके दयालु दानमें;
स्वामी आप सांचे मैं तो सेवक हों सर्वदाको,
आप दिव्य गुणनके सिंधु गुणि गानमें;
भाखे रघुराज यदुराज करुणाके सिंधु,
कीजे करुणाको क्रूर कठिन मलीन में;

मैं तो अघमेश आप अघम उघारन हैं,
पावन प्रवीन आप पतित प्रबीनमें १

दिव्य गुण दिव्य रूप दिव्य लीला दिव्य धाम,
दिव्य पारपद वृंद दिव्य अस्त्र भ्राजे है,
दिव्य शिर मोर दिव्य कुंडल कपोलनमें,
दिव्य वनमाल दिव्य कौस्तुभ विराजे है,
दिव्य पट पीत दिव्य नूपुर चरण चारु,
दिव्य बाहु अंगद कटक कर छाजे है,
दिव्य कृपा कोर जगदीशजूकी दीननपे,
भक्तके भरोस जासु दीन रघुराजे है २

कौरव सभाके मध्य पाइके सुयोधनको,
शासन दुशासन न धर्म कछु हेरी है,
द्रुपदसुताको गहि केश ल्यायो बरवश,
न बार्यो द्रोण भीष्म पाडुपुत्र धर्मवेरी है,
करत विगत पट भ्राता दूजो दीस्यो नाहिं,
हा! गोविंद द्रौपदी उठाई कर टेरी है,
राख्यो रघुराज मरजाद धाम द्वारकातें,
सोई जगनाथ हाथ आज लाज मेरी है ३

धर्म अवतार बैठ्यो भूपति युधिष्ठिर,
सहस्र दशनाग जोर भीम गदाधारी हैं,
भुवन विजेता विजे यमहू अतुल बल,
देवव्रत द्रोण कृप धर्मको विचारी है,
जात मरजाद आगसे नीकी न बार्यो कोऊ,
कहे रघुराज मुख टेरत विहारी है,
रुक्मिणी विहाय भयो अंबर अनूप रूप,
सोई जगदीश लाज राखेगो हमारी है ४

(सवैया)

कोन विराग विज्ञान कियो तप, कोन सुयोग समाधि लगाई,
आपने हाथनसों फल तोरि, धर्यो मुख चीखि परोसि मिठाई,
आपहितें चलिके जगदीश, दयानिधि विश्व विख्यात बनाई,
श्री रघुराज सराहि लियो, शबरी फलको सब रीझिके खाई १

देखि परे नहि दूजो दयानिधि, कौनको दास हों जाई कहाउं,
माया विमोहित देव सबै, रघुराज कहो भ्रम कासों छुडाऊं,
कोन गरीबनेवाज गोविंद सो, जाहि गरीबि गोहारि सुनाऊं,
कोनके द्वारपें दौरि अडों, अस दीनको बधु द्वितीनहि पाऊं. २

रघुनंदन.

(मूर्ख मित्र-वात चातुरी.)

सिहनके वनमें वसिये, जलमें घुसिये करमें बिछु लीजे,
कानखजूरेकुं कानमें डारके, सापनके मुख आंगुरि दीजे;
भत पिशाचनमें वसियै अरु, झेरकु घोल हलाहल पीजे,
जा जग चाहे जियो रघुनंदन, मूरख मित्र कबू नहि कीजे. १

(कवित्त.)

नख विन कटा देखे, शीश भारि जटा देखे,
जोगी कन फटा देखे, छार लाए तनमें,
मौनी अबोला देखे, केते सद्गुनी देखे,
माया भरपूर देखे, फूल रहे धनमें;
आद अंत सुखी देखे, जनमके दुःखी देखे,
करत किलोल देखे, बनखंडी बनमें;
शूर और बीर देखे, अमित अमीर देखे,
ऐसे नहि देखे जिहे कामना न मनमें. १
बातनसें देवी अरु देवता प्रसन्न होत,
बातनसें सिद्ध और साधुपति आत है;
बातनसें खान सुल्तान ओ नरेश माने,
बातनसें मूढ लोक लाखन कमात हे,
बातनसें भूत ओर दूत सब ताबे होत,
बातनसें पुन्य ओर पाप होय जात हे;
बातनसें कीर्ति अपकीर्ति सब बातनसें,
मानवके आननमैं वात करामात हे. २

वातके कहनहार चित्तके व्हनहार,
अतरमें कारे बने उपरते गोरे है,
जानियो वें नर थोरे विनके रहनहार,
देकर कुमति सामी सकटमें बोरे है,
हमतो कविराज अनित ना सहनहार,
जस नीत कहनहार रघुराय भोरे है,
राजाके चित्तके खुश करनहार घन,
राजाके हितकी बात कहनहार थोर है ३
'मरा-मरा' कहेसें मुनीश वाल्मीक भये,
'सीता-राम' कहेसें न जानि कोन पद हे,
राम नाम कह्यो जीने रामजीको धाम पायो,
प्रबल प्रताप सब पोथीओमें गद हे,
काशीजीमें मरते महेश उपदेश देत,
सूझ न परत मोहे माया-मोह-मद हे,
इतनां समझ सीता-राम नाम नहि भजे,
कहे रघुनाथदास तासें फिर हद हें ४
उपरके वेख अति सुदर बनावत हे,
भीतर तो सीस ज्यो शृगार रस भरे हे,
जप तप ध्यान पूजा करत दिखायवेको,
चाहत बडाइ ऐसे अवगुन ना टरे हे,
आपकुं न बोध सब जगत प्रबोधत हे,
भाखे परमारथको स्वारथेमें परे हे,
इनसें जो मिछे सो तो गये सनमारगमें,
दूरसें प्रनाम कवि रघुराय करे हे ५

रसखान.

(प्रेम महिमा)

शास्त्रन पढ पंडित भये, कै मोल्वी कुरान,
जुपै प्रेम जान्यो नहिं, कहा कियो रसखान १

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोय;
जोपै जानहि प्रेमतो, जग क्यों मरता रोय. २

(भक्तिरस महिमा-सवैया.)

बेन वही उनको गुन गाइ औ, कान वही उन वैनसो सानी,
हाथ वही उन गात सरे, अरु पाय वही जु वही अनुजानी;
जान वही उन प्रानके संग औ, मान वही जु करें मनमानी,
त्यों रसखानि वही रसखानि, जु है रसखानि सो है रसखानी. १

मानस हों तो वही रसखानि, वसों व्रज गोकुल गांवके ग्वारन,
जो पशु हों तो कहा वस मेरो, चरों नित नंदकि धेनु मंझारन;
पाहन हों तो वही गिरिको, जों धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन,
जो खग हों तो वसेरो करों, मिलि कालिंदि कूल कदंबकी डारन. २

ब्रह्ममें ढुंढयो पुरानन गानन, वेद रिचा सुनि चोगुने चायन,
देख्यो सुन्यो कबहुं न कितुं, वह कैसे सरूप औ केसे सुभायन;
टेरत हेरत हारि पर्यो, रसखानि वतायो न लोग लुगायन,
देखो दुर्यो वह कुंज कुटीरमें, वैठो पलोटत राधिका पायन. ३

शेश गनेश महेश दिनेश, सुरेशहु जाहि निरंतर गावे,
जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुवेद वतावे;
नारदसे सुक व्यास रटे, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावे,
ताहि अहीरकी छोहरियां, छछियां भरि छाछपें नाच नचावे. ४

द्रौपदि औ गनिका गज गीध, अजामिलसों कियो सो न निहारो,
गौतम गेहिनी कैसि तरी, प्रहलादको कैसे हर्यो दुःख भारो;
कोहेकों सोच करै रसखानि, कहा करि है रविनंद विचारो;
कौनकि संक परी है जु माखन, चाखनहारो सो राखनहारो. ५

व्रहकी जब आंच लगी तनमै, तब जाय परी जमुना जलमें,
विरहा झलतै जल सूक गयो, मछली वेह छांड गई तरमें;
जब रेत फटी रु पताल गई, जब सेस जर्यो धरती तरमें,
रसखान कहे एहि आंच मिटे, जब आयके श्याम लगे गरमें. ६

रसनिधि.

(प्रेमपंथ विरलता)

रूपनगर बस मदन नृप, दग जासूस लगाइ,
नेहिनि मनको भेद उन, लीने तुरत मंगाइ १
लाल भालमें लसत है, सुंदर बिंदी लाल,
कियो तिलक अनुराग ज्यों, ललके रूप रसाल २
रसानिधि याको कहत है, याहीतें करतार,
रहत निरंतर जगतको, वाहीके कर वार ३
साधक इक छूटत सहस, लगत अमित दग गात,
अर्जुन सम बाणावली, तेरे दग करि जात ४
अरी निंद आवे चहें, जिहि दग बसत सुजान,
देखी सुनी धरी कहु, दो असि एक मियान ५
एक दिनामें एक पल, सके न पल भर देख,
विरह पार को पावतो, कैसे होय विशेष ६
अंधियारी निश बिच नदी, तामें भवर अपार,
पार जवैया दरद कब, लहै रहै या वार ७

रसरास.

(सुबोध-रासरस)

पंच तत्व सचित मचित मायाके पट,
क्वचित क्वचित याद याको न किया करो,
संचित सुचित करि सचित रचित गति,
करिकें निरिक्षित सनेहसों दिया करो,
रसरास परम प्रकाश पाय प्रान प्यारे,
कंबसे कपोलनको अमृत पिया करो,
अवर कहो में कहा कहत बने नां कछु,
कातिल करेजेके तू कतरे किया करो १
देखे देव ताली जहा नुपूर उताली मजे,
सखी मतवाली जाय धाय लाल परसे,

साली रंगवाली तन धाली हे मनोज पाली,
कंज मुखवाली पग लाली मही दरसे;
रंग रंग बाली लति काली खटपट पाली,
चंद कर पाली आय भूमिपर लरसे;
तरसे हमारो जीय पीय परसन हेत,
रसरास रासमें सरस रस बरसे. २

रससिंधु.

(चाहना-लाल लीला ई० कवित्त.)

नैन ज्यों सलिल चाहे सलिल विमल चाहे,
विमल कमल चाहे सीता जैसे रामको;
पावस पपैया चाहे बहेन ज्युं भैया चाहे,
राधा ज्युं कनैया चाहे प्रवासी ज्यों धामको;
घन जैसे मोर चाहे चंद्र ज्युं चकोर चाहे,
चकवी ज्युं भोर चाहे कामिनी ज्युं कामको;
सुख जैसे तन चाहे शूर जैसे रन चाहे,
वैसा मेरा मन चाहै प्यारे तेरे नामको. १

लाल बनमाल लाल बेंदी भाल लाल लाल,
यौवनकी ज्यौति औ कपोल लाल लाल है;
अंग लाल रंग लाल संगकी सहेली लाल,
लाल पान बीरी मुख अधरहि लाल है;
लाल चंद चांदनी प्रकाश लाल लाल लसै,
लाल संग ग्वाल बाल लाल लाल लाल है;
वृंदावन रास रच्यो लालही गोपाललाल,
कुंज लाल लाल सब गोपी ग्वाल लाल है. २

माथेपें मुकुट देखि चंद्रिका चटक देखि,
छबीकी लटक देखि रूप रस पीजिये;
लोचन बिशाल देखि गले गुंजमाल देखि,
अधरको लाल देखि चित्त चोप कीजिये;

कुंडल हलन देखि अलकें सिलन देखि,
पलकें चलन देखि रसवस कीजिये,
पीतांवर छोर देखि मुरलीकी घोर देखि,
सांवरेकी ओर देखि देखि वोही कीजिये ३

लावत अफीम कोई घोय बेठ भांग छाने,
गाल्या चुवाने कोई पीए जल चंबु है,
कहे रससिंधु कोई सुरती औ चूना मले,
को जो घतुरा बीज बांधे वहां तंबु है,
कोई पीवे मादक बीडी कोई चर्स गांजा ताजा,
कोई खडो पीवे हुका ताडी पेढ लंबु है,
कोई वछनाग खाय कोई खाय सोमलको,
पीवत शराब कोई चहु ओरं बुंबु है ४

(झूलणा-कवित्त)

अश्व विन दौर नहि, हुकम बिन तौर नहि,
ब्याह बिन मोर नहि वहि जेब पाई,
दया बिन दान नहि, द्रव्य बिन सान नहि,
ताल बिन तान नहि, जात गाई,
योग बिन युक्ति नहि, गुरु बिन भक्ति नहि,
राम बिन मुक्ति नहि, वेद गाई,
डोर बिन चंग नहि, तंग बिन जग नहि,
अंग बिन रंग नहि होत भाई १

(कर्कशा दर्शन-समस्या)

लक तो भैसकि छुट लई गति, तो गदहीकि गुमानको गारे,
आनि झुके कटिलों कुच झल्कि, नेक घरी अचरा न संवारे,
थंभसि जंघ नितंब नगारेसे, पाव चुडेल ज्युं टेडेहि डारे,
(मूतसि मौनमें ठाढि रहे परमेश्वर पेसिसा पानी न पारे) १

भातको माड करे नहि रांड, रु सौगुनि सांमर सागमें डारे,
मूल्के खांड ले डारत दालमें, हींग फुलायके खीर वघारे,
चाकते रोटिहु मौटि करे अरु, काचिहि राखे के आरहि डारे,
(मूतसि मौनमें ठाढि रहे, परमेश्वर पेसिसों पानो न पारे) २

रसलीन.

(राधाअंग शृंगार.)

नवला अमला कमल सी, चपला सी चल चारु;
चंद्रकला सी सीतकर, कमला सी सुकुमारु. १
हाव भाव प्रति अंग लखि, छविकी छलकन संग;
भूलत ज्ञान तरंग सब, ज्यों कुरलाल कुरंग. २
अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार;
जियत मरत झुकि झुकि परत, जिहि चितवत इक बार.३
जडित आरसी कीर्तिका, सोहत अंगुठा साथ;
छले नखन जे अवरतें, छले बने हे हाथ. ४
देह दीप्ति छवि गेहकी, किहिं विधि वरनी जाय;
जा लखि चपला गगनतें छिति पटकत निज आय. ५
अदभुतमय सब जगत यह, अदभुत जुगत निहार;
हार बाल गर परतहीं, पर्यो लाल गर हार. ६
दंत कथा वा दसनकी, अवर कही नहि जात;
फूल झरीसी छुटत जब, हसि हसि बोलति बात. ७
राधापद बाधा हरन, साधा करि रसलीन;
अंग अगाधा लखनकी, कीनी मुकुर नवीन. ८
तन सुवरनके कसत यों, लसत पूतरी श्याम;
मनो नगीना फटिकमें, जरी कसोटी काम. ९
कोयन सर जिनके करे, सोयन राखे ठोर;
कोइन लोयन ना हनो, कोयन लोयन जोर. १० .

(व्रजभाषा प्रशंसा.)

व्रजवानी शीखन रची, यह रसलीन रसाल;
गुन सुबरन नग अरथ लहि, हिय धरियों ज्यों माल. १
नाम सप्त सुर सिंधुकी, वचन मुक्तिकी सीप;
कै रसना सब रसनकी, पोथी गिरा समीप. २

ऋषिकेश.

(महज्जन लच्छन)

जू कहि बोले जथोचित सो अरु, तु कहि बोले न बोल कढो,
आसन देत बिठारत पास औं, आवत जातहि होवें खडो,
योग्य जितो जिहिं आदर होत, तितो तिहि देत सदा उमहो,
औरकी राखे बडाइ भली विधि, सो जगमें रसिकेश बडो १

(कुसंग त्याग)

ग्राम नसे धन धाम नसे, सुत धाम नसे सब काम कुढंगू,
राज नसे सुख साज नसे, जग लाज नसे औ नसे वर अंगू,
मान नसे तन प्राण नसे, गुण ज्ञान नसे दुख होय अभंगू,
यातें सु दूरि रहो रसिकेश जू, भूलि कभों करियों न कुसंगू २

ऋषिनाथ.

(गंगधार-कवित्त)

छाया छत्र व्है करि करत महिपालनको,
पालनको पूरो फैलो रजत अपार हे,
मुकुट उदार व्है लगत सुख श्रोननमें,
जगत जगत हंस हांसी हीर हार हे,
ऋषिनाथ सदानंद सुजश बिलंद तम,
वृंदको हरैया चंद चंद्रिका सुढार हे
हीतल हो शीतल करत घनसार व्है,
महीतलको पावन करत गंगधार हे १

(श्रीराधाकृष्ण-दोहा)

श्रीनंदलाल तमाल सो, स्यामल तन दर्शाय,
वा तन सुवरन बेलिसी, राधा रही समाय १

रणछोडजी.

(शिवकथा महिमा-कवित्त)

अही बिन मनी जैसें, मही बिन धनी जैसे,
कही बिन सुनी जैसे, मोती बिन पानी है,

राज विन गाम जैसे, लाज विन वाम जैसे,
दीप विन धाम जैसे, सुखमाकी हानी है;
बच्छ विन छीर जैसे, वृच्छ विन नीर जैसे,
लच्छ विन तीर जैसे, सत्य विन वानी है;
राय रनछोर कथा सर्वथा सुनी शंभुकी,
और कथा वृथा जथा, वालकी कहानी है. १

(नाममहिमा सवैया.)

राम रहे न रहे घनश्याम न, कामकि लोक कहानि कहेरी;
सुंभ निसुंभ गये जगसों, वलिराजको राज न कोऊ लहेरी;
रावन लंक तजी सत भावन, गावनको अव गाथ गहेरी;
दाम रहे नहि धाम रहे नहि, नाम सदा रनछोर रहेरी. १

(श्रीसदाशिवस्तुति-भुजंगी)

नमो देव देवेश गौरीश जोगी, नमो चन्द्रचूडं अलंकार भोगी;
नमो जग्ग आदी अनादी अनंतं, विलासी नमो मानसी धाम संतं. १
नमो भूतपालं धरैया कपालं, कलानाथ भालं गलै रुंडमालं;
नमो गंगप्यारी नमो ब्रह्मचारी, नमो मारहारी नमो भस्मधारी. २
प्रभो अंसुमाली नमो रूपसाली, नमो नैनज्वाली घृताहार काली;
नमो स्वप्रकाशी नमो तेजरासी, नमो गोविलासी त्रिगुनतें उदासी. ३
नमो चंद्रहासं करी चर्मवासं, वपू चंद्रभासं धरे नागपासं;
नमो मुक्तिदाता नमो देवत्राता, नमो पित्रिधाता अमनं इजाता. ४
नमो शूलपानी नमो ईशवानी, नमो अप्रमानी प्रमानी पुरानी;
नमस्ते शिशूली नमस्ते अकूली, नमो चंद्रमौली वपूसिक्त धूली. ५

(प्रस्ताविक-दोहा.)

जहां दाता तहा मंगना, जहां कुसुम त्हां भृंग;
जहां भूप त्हां सेन हे, जहां सेन त्हां जंग. १
नदी पूर आयुष्य दिन, डस्यो जाहिको काल;
एतो फिर आवे नहीं, गयो जु नृप घरमाल. २
रहे न दिनकर ढिग तिमिर, दारिद निकट उदार;
पाप रहे नहि पुन्य ढिग, पतिव्रता ढिग जार. ३
कायर रनतें भाजते, बनिया काढ दिवार;
कुलटा जुवती जार संग, लजको रखे न भार. ४

रणमल्लसिंहजी.

(गोपीका विरह)

गाउनमें गाठन मल्लारकी उमंग दर,
साउन घटान मेग सफल समीरको,
दादुरन बुंद बुद परत प्रमोद हार,
हार हरियाइ चारु करत अधीर को,
रुचि रनमल्ल मोर बोल्त पपीहननि,
पीय पीय रटन छटन सर तीरको,
बिन मनभावन मनोज सरसाउन यों,
सावन न आयोरि नसावन शरीरको १
कीनो रणमल्लजुसों रति रणमल्ल न सों,
गल्लीनमें छोहरीन गल्लित थिरती हैं,
गइ कहा बसन बिसार का प्रसन्न भई,
बसन सतावे आन कसन बिरती हैं,
बार बार अगते गिरत बार बार देखि,
अमित अपार चार धरसी धिरती हैं,
साथ गोपीनाथ गोपी चंदनसी लगा बात,
गोपी ऐसो गोपी कहाँ कोपी क्यों फिरती हैं २

(प्रभुप्रार्थना-दोहा)

मैं किनो प्रभु आपको, गुन्हो बारनिधि नीर,
भिन्न भिन्न केती कहु, म्होत करी तकसीर १
पाप कियो तो पा पकर, करी अरज म्हाराज,
पाप कियो गनवो नहिं, पा पकरनाकि लाज २

(छप्पय)

संवत पट दश दोय, बरस रसदस त्रिसोई,
असविन शुद बुधवार, विजयदशमी तयि होई,
ता दिन रणमल्लसंघ, व्हली पाती सुन लीजे,
मरन भेद बिस्तार, बांचि उद्धार सुकीजे,

समजे हें मोअ एतनि हरि, रहुं खाय अरु सोयके;
तुमहींपें आन खडो प्रभू, हाथ पांवकुं धोयके. १

रविराज.

(केसरीराज प्रशंसा-कवित्त.)

कोऊ कहै पारसमनी है भूप केसरीपै,
कोऊ कहै किमिया कमाल कर ताके है;
कोऊ कहै जानत महान लक्ष्मीको मंत्र,
कोऊ कहै जंत्र इंद्रजाल वस वाके है;
कहै रविराज कोऊ कहत उरध रेख,
ताहीतें अशेष मोज साहिबी मजाके है;
वडे प्रभुताके गुन कर्नसे उदारताके,
गुनी लेत थाके पै न दान देत थाके है. १

दुडकी दुगामा और लंगडी लंगुरिनमें,
छात्र कंधमाल तेज तेर पर वारे है;
चंचल चलंगी एक वाइ जोर जंत्री त्यों रु,
चाली चलै चंगी नव रंगी नोक धारे ह;
कहे रविराज नीके केसरी नृपाल ऐसे,
कै यो फिर फिरत निरतमें निहारे है;
सुरंग विमान कैसै दुरग प्रमान ऊंचे,
उरग अरीसे वेगी तुरग तिहारे है. २

सुरग सवेती लखी सोंतक समन सोहे,
सबजे सुरख ओप मुशकी बनेलेमें;
जरेरे रु मानी मोवे गरेरे संजाबी और,
संदली सुनेरी सामकर्न सुसकेलेमें,
कहे रविराज भूप केसरी बिराजे रूप,
राजे रंग रंगके चलत गत गेलेमें;
विधिने रचेले खास गोरखके चेले जेने,
देखे अलबेले तुरी रावेर तबेलेमें. ३

(चारणज्ञाति विचार)

आदि जुग चारनमें पूज्य वर्ण चारनमें,
तैसे विद्या चारनमें मानत महान हे,
कीरती ससारनमें पर उपचारनमें,
उत्तम अचारनमें विमल बखान हे,
कहे रविराज श्रेष्ठ काव्यके प्रचारनमें,
शुचि अभिचारनमें बुद्ध ज्ञानवान हे,
अच्छर उचारनमें विद्याके विचारनमें,
चारनमें नाम सोई चारन प्रमान हे १

(दोहा)

पर्वतको कहि पव्व पुनि, ब्रह्मांडको ब्रह्मंड,
शब्द विगारे शब्द इमि, चारनिया तु चंड १

रविराम (आदितराम)

(नादब्रह्म-भक्तिनीति)

पर पद प्रणव पुराण पुरुषोत्तमको,
परम प्रमान पूर पढत सुछंद है,
ताहितें सुरेस सब देश सब देशनमें,
भाषा भेद भावी भुव भनत कविंद है,
आदित कहत अति आदित उद्योत होत,
आदि तत्व जगत प्रकाशित सुखद है,
सुच्छम सुछंद मन मंदिर अनंदमय,
नाद नद नंद हे अमद जग नद है १
कर पद मुख बिना बोले चले गहे ऐसे,
अविनासी एक ये अनूप जग स्वंच्छ हे,
रविराम अंतर ओ बाहिर रहत सदा,
सकल कलाको फंद कारन अबाध हे,
सेसहि सुरेस ओ महेस जाहि जपत है,
जगको जनेता नेता चेता आदि ब्रह्म है,

आनंदको कंद नाम अनाहत अनहद,
चित्तमें चतुर चाहि चारु नाद ब्रह्म है. २

नाम तो तिहारो हरि पावन पतित जोपें,
मोसों पतीत कोऊ नांहिन अवधारिये;
कहत अदितराम तारन तिहारो नाम,
जोतो निज दास हों तो त्राता व्है तारिये;
यातो जग फंद बंध कंधते उतारि डारी,
तीन लोकतेंहि मुंहि बाहिर उतारिये;
पापिनकी पंगतमें पातकी प्रबल पूरो,
ताहि पानि पकर प्रानपति पत पारिये. ३

गान तान मान जुत नाचे नट बेस धरे,
कामिनी बसीकरन देख्यो महा फंदमें;
करत विलास रास हास सुख संपतिसों,
जमुनाके तीर धीर न धरे अनंदमें;
कहत अदीतराम सूझत नां कछू काम,
धाम धनि धरा धन माने दुख दंदमें,
श्रीमदनमोहनकी माधुरी सुमूरतपें,
मोह्यो मन मेरो ज्यों मिलिंद मकरंदमें. ४

आसाकी इमारतपें एक टेक राखी बेठ्यो,
कियो नां कमाइको सुकाम कछु आजलों;
कहत अदितराम भजे नां ब्रजेश चर्न,
तारन तरन जग गाजत सुझाझलों,
दिन दिन दोरि दोरि दुनीके दुवारे जाय,
दीन दीन होय दुःख दाग कहे दाजलो;
पाखंड प्रपंच परिपूरन प्रकाश करि,
धूति धूति धनिनके धरे धन अकाजलो. ५

करि करि दुकृत सुकृतके न पास गयो,
भयो ना भलाइको ये काम मन आसतें;
मेरे धन मेरे माल मेरे ये दुपट्टा लाल,
साल ओ दुसाल मनि मालकी खवासतें;

तरुनी तनय और तन तजवीजनमें,
वीजनमें गयो नाहि निकस अवासतें,
कहत आदितराम भजे नां मनेशजूको,
दया करि देहिनकों दियो नां निकासतें ६

राम राम रट रे तु रसना रसाल राजा,
पर हित काज राज तनु जग जाये है;
दशरथजूके नंद भक्तके आनंदकंद,
जग यंद सीता मन चंद दरसाये है,
मुनिजन मनि मध माधुरी सुमूरत छे,
महा मन मोद भरे पद पर सोये है,
आदित उदित ऐसें अवध उद्धार कियो,
दियो पद आपुनो अनंत लीला छाये है ७

नाहि न है सासुरमें देखनको धाम कहू,
नाहि गिरिकंदर जा मंदर सुहायगो,
नाहि न कदम अब जवु जूथ जोरे जहां,
तहा दई कोन बिध मोसों निहायगो,
रविराम आजलों निभायो जोपैं नेम प्रेम,
सोइ अब म्हाही रह्यो म्हांही नां बसायगो,
पारवतिकेही पति पत राखि मेरी रहे,
आयो पति छेवेकोपें मेरो पत जायगो ८

किते कर्म करे ताके कोंगरा कठोर चढे,
करताकी कौतुक करतूतीको किल्ला है,
जोरु औ जमीन जर जोग जंग जुरे जामें,
जोर जग्यो जात जीव जीवनको जिल्ला है,
आदित उदित एक राम रति शीते एक,
रीते हाय हाय कहे हारनके हिल्ला है,
दुनि दुनि दामिनि ज्यों दमाके दिखात तेसें,
फूल्यो फल्यो फेल्यो फल्यो होत फना फिल्ला है ९

होसतें न हरिहीकी सेवा करि मंदिरमें,
तेसें गिरिकंदर ना तप्यो तप जाईतें,

रजोगुनि राजनकी आसनें न त्याग सुनी,
सुमतिके सागरों ना सुमति सराहैं;
रविगन आनंदके कंद [illegible],
अमर कथाको नाहि समागमि गाइनें;
कियो नहि स्वारथ नां कियो परमारथ यों,
अकारथ जनम [illegible] गमाइनें. १०

कथा कथा होत कोउ निश्चय न करै नाउ,
हरि नाम बिना कछु काज नां सरतु है,
कहत अदीनराम बासनासों कियो काम,
कियो कियो होत हित सेवा ना करतु है;
मन अभिमान आन गुरुपद परसे तो,
परसे परसे होत प्रेम नां भरतु है;
लियो लियो होत नहि जाने परमारथको,
दियो दियो होत दान देहके करनु है. ११

यह जग जालमांहि मगन भयो तो नाहीं,
दके सतसग भक्तजन साथ कीजिये;
मनकी ये बासना बिलास नां कराओ कछु,
होउ यह सुमति कुमति मन छीजिये,
कहत अदीनराम सुनो यह मेरी आस,
छोरी जमपास खास दासपद दीजिये;
म्हो ब्रजनाथ मोये कीजिये सनाथ भव-
पाथ साथतेंही नाथ हाथ गहि लीजिये. १२

आप पाप कापवे सुजान समरथ जानि,
धाय आय पाय पर्यो प्रेमपथ पारिये;
आदित उदित अब शरनकी लाज तोहि,
मोहि नहि काज कछु नेहसों निहारिये;
स्वास कास सरितासों पूर परयों है पानि,
देखत अथाह थाह कहा बिध धारिये;
व्याधिहीके बारिदमें बूड्यो बह्यो जात ताहि,
बांके ब्रजनाथ वेगि बांहि गहि तारिये. १३

घन हित धाय धाय धाम धाम धंध कियो,
दियो नहि दान दु ख दागतें दहानो हे,
फल्मकी कातो फरि फटि फेते फेते फाध,
आध भज्यो चेत भव वारिध वहानो हे,
खरच्यो नां खायो नां खेर खुशी पायो ना,
गोविंद गुण गायो ना चल्त चहानो हे,
आदित कहत आयो मूठि मजबूत बांधि,
पाछे पछतायके पसार पुनि जानो हे १४

तन तरुनाइ आई जा दिनतें तक्यो भाई,
तरुनी तमासे ताई ओर तुक तानमें,
कछू नां बिचार करे नेकहू न धीर धरे,
भरे भव भोगि भांति भांति न भमानमें,
रविराम रसनातें राम रटे कस ना तें,
कपट कुटिल्तातें काहूकी न कानमें,
घेरे मन भेर महा मोह मांहि मत मांच्यो,
ममता मनाय मदमातो मेरे मानमें १५

उत्तम जनम धरी करी नां कमाई कछु,
उम्मर गमाई एती कोऊ काम नायगे,
बाई ओर माई भाई कोउ नां सहाई सब,
स्वारथके सगे ल्गे भगे सब जायगे,
रविराम पूरे म्हेल पूल करो पर्मारथ,
काल विकरालतेही सबे पछतायगे,
करिकें सु धूमधाम धधक धुसेगो तब,
धरा धन धाम सब धरे रह जायगे १६

हरिहीकी प्रीतसोंही ध्रुव राज पाये ध्रुव,
तेसें प्रहलादकों उबार्यो सोई जान ले,
गजकोंही तार्यो त्यों अजामिल उबार्यो तेसें,
शंकरको सकट निवार्यो भक्त पान ले,
कहत अदीतराम तारबेको नाव हरि,
काम पूरबेको एक कल्पतरु ठान ले,

सुखके करनहार दुखके दरनहार,
अघके हरनहार हरिकों तु मान ले. १७

विद्या गुन कूप जल गायनको दूध ओर,
बाग ओ बगीचा फूल फलेई रहत हे,
नित नित लेत ताकों देत दूनो दूनो करि,
जोऊ दुखात तोऊ सिरपें सहत हे;
संचयतें रंचयसो बढे ना बिनास होत,
तातें यह सांचि रविरामजू कहत है,
एरे धनवान सुनो खरचेंतें खैर खुशी,
खूबही खजाने खाने खासेई ल्हत है. १८

जहां सुर सती तहां सोतिनका दावा होत,
दाता देन दान देखि छयसों छिपे छहो,
आदित उदित सुरसीस कटे घटे शंका,
तापें तूं तरलता ले लाभ लखि व्हां ल्हो;
नांहि खेहों नां खिवेहों नांहि देहों नां दिवेहों,
सुतन खियेहों छांडि जेहों नां कहुं अहो;
संपति शयानी तेने सूमसों सगाइ सजि,
साचे सनमान सनी सुखसों सदा रहो. १९

सूमके सभावकों सराहि कहुं कोन आगे,
काहुके दियेको दान दिलमें दहेको हे,
भूमिमें रहे तो रहो एकतें अनेक साल,
राजतें गहे तो गहो नाहिन बसेको हे;
आदित उदित चोर चोरि कर जायो भले,
दैवीगत जान दुःख सिरपें सहेको हे,
दूने दुःख दिलकों दे दिये सुत तोही ताम,
स्वारथ विनाही कहुं देवे कोन एको है. २०

सज्जन सुजान जानि सुनो सबें सांची कहा,
नारी ओर नाली एक श्यानी बनी बाली हे;
देखतकी श्यानी पर मोतकी निशानी फेर,
करे धूरधानी जम जातनाकी ज्वाली हे,

आवतकी आछी फेर फूटतकी पाछी परे,
रविराम माही तम ऊपर उजाली हे,
एक नाली लगे गिरि गाढेसे गिरत जात,
फोन गत होत जाको लगत धनाली हे २१

अयस तपित माज पयस पर्यपें पानि,
नाम नां लखात तेसे बुद्धि बिसराइये,
सोई जल नलिनीके पातनपे पसर्यो सो,
मानो मोती माल मिलि मन दरसाइये,
रविराम सोई वारी सागर सुसीप मघ,
स्वातितें झरेतें जातें मुक्ताफल लाइये,
याहि बिघ दान देत पर उपकार काज,
पात्र ओ कुपात्र तेंहि तेसो फल पाइये २२

निज घर बाहिर जो पायकी धरनि मनु,
धरें फनी सीसप ज्यों परत ससक हे
कृपनके धन सोइ दुर्लभ वचन ताको,
तेसी ये मयकमुखी सुलप सुलंक हे,
निज पति प्रेम पागी लाजकी जजीर लगी,
सीलरूप जेसी तेसी मोहनकी यक हे,
आदित कहत जाहि आन पुर्य ऐसो लगे,
भादो सुद चोथ चद जा लखि कलंक हे २३

(सवैया)

स्वाधिन है घरकी घरनी, घरनी रविराम सुरूप सराहे,
तोऊ कुजात कुनारिको सग, करे सोइ नीचमें नीच सरा हे,
ज्यों सर पूर भरे जलकों, तजि काक पिये पय कुभ भरा हे,
झारिहि खात झपाटहि जात, पुनी फिर आत न लाज जरा हे १

रविदत्त.

(अनन्य भक्ति.)

नगर नरेश रुठे खान सुल्तान रुठे,
मीर उमराव रुठे सकल सहाइये,

भाइबंद भृत्य रुठे काकाही कुटुंब रुठे,
मातुल ससूर रुठे मनमें न लाइये;
जननी जनक रुठे पुत्र पिता वाम रुठे,
औरही परोसी रुठे नांहि परवाहिये;
भक्त भवतार नहिं जगत उद्धार नहिं,
सब जग रुठे पर तूं न रुठो चाहिये. १
रुठे क्यों न राजा वातें कछु नांहि काजा एक,
तुंही महाराजा और कौनकों सराहिये;
रुठे क्यों न भाइ वातें कछु न वसाय एक,
तुम है सहाइ और कौन पास जाइये;
रुठे क्यों न शत्रु मित्र आठौ जाम व्हे इकत्र,
रावरे चरनहीके नेहकों निभाइये;
सब जग रुठे पर तूंहे अनरुठे तब,
चूंगे सो अंगूठे एक तूं न रुठो चाहिये. २
रुठै क्यों न जन जाके मनमें विकार वसै,
रुठे जाति पांति और रुठे दुखदाइयें;
रुठे राव राना सबे जाना वाही ठौरहीमें,
रुठे जो परौसी ताहि मनमें न ल्याइये;
रुठे परिवार यार सारा संसार औ,
कविंद रुठे पडित रविदत्त ना संकाइये;
एते सब रुठे आइ चूमेगे अंगूठा मेरो,
एहो रघुनाथ एक तुं न रुठो चाहिये. ३
माता जो रिसाय तऊ मुस्तकपें मानि लीजे,
पिता जो रिसाय तऊ विघन न पाइये;
जन जो रिसाय तऊ दूर कीजें ताहि छिन,
सुत जो रिसाय तऊ मारिकें मनाइये;
तिय जो रिसाय तऊ कीजे वस्य प्रेमहीतें,
सब दुख देइ वाको एसेही मनाइये;
रुठे रहे सर्व पर झूठे नहि होत कछु,
सब जग रुठे नाथ तुं न रुठो चाहिये. ४

रहीम (खानखाना.)

(चेतावनी कवित्त)

एक सास साखी मत खोयले खलक बीच,
कीच रु कलक अक धोयले तो धोयले,
उर अँधियार पाप पूरसों भर्या है तामें,
ज्ञानकी चिराग चित्त बोयले तो बोयले,
मनुषा जनम वार बार ना मिलेगो मूढ,
पूरण प्रभुसें प्यारो होयले तो होयले,
देह क्षण भग यामें जनम सुधारिबोसो,
बीजके झबूके मोती पोयले तो पोयले १

(राजरिद्धि)

मागत पपीहा मुह मेली है उरोजनके,
करिहाइ दूबरो दुखी न कोऊ जानिये,
दड है यतीनके कुरगहीके बनवास,
मोरनकी अखिया सु नीके करि मानिये,
नाहीं एक नवल तियान मुख देखियत,
हाहा एक सुरत समेहि अनुमानिये,
पूछि देखी जाहि ताहि प्रेम पुज चाहि चाहि,
ये ते खानखाना जूको राज पहिचानिये २

(चमत्कारिक दोहा)

"सुरत्रिय नरत्रिय नागत्रिय, कष्ट सहे सब कोय,"
गर्भ लिये हुल्सी फिरे, सुत तुल्सीसें होय * १
साधु सराहे साधुता, जती जोपिता जान,
रहिमन साचे शूरको, बेरी कर बखान २
रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून,
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुप चून ३

* यह दोहाके प्रथम दो चरण महात्मा तुलसीदासजीने रहीम को भेजा, जिसकी पूर्ति रहीमने करी, इससे महात्माकी माताका नांव हुलसीबाइ प्रतीत होता है

फरजी मीर न व्है शके, गति टेढी तासीर;
रहिमन सूधी चालसों, प्यादा होत वजीर. ४
जो रहीम छोटे वढे, वढत करत उत्पात,
प्यादासें फरजी पर्यो, तिरछो तिरछो जात. ५
सो वड सूधे मग चले, कुटिल गति मतिमद;
लखी लेहु सेत्रंजमें, सूथर और गयंद. ६
जव रहीम घरघर फिरें, मांग मधुकरी खांय,
यारो यारी छोड दो, अव रहीम वे नांय.+ ७
रहिमन रहिवो वो भलो, जोलों शील समूच;
शील ढील जव देखिये, तुरत कीजिये कूच. ८
जो पुरुषारथतें कहुं, संपति मिलति रहीम,
पेट लागि वैराटघर, तपत रसोइ भीम. ९
नाद रीझि तन देत मृग, नरधन हेत समेत;
ते रहीम पशुतें अधिक, रीझेहु कछू न देत. १०
रहिमन मनहि लगायके, देखि लेहु किन कोय;
नरको वश करिवो कहा, नारायण वश होय. ११
साज रु छत्रपती सुपति, ढिल्लीपति जु प्रवीन;
चकता आलमशाहसुत, कुतवुद्दिन पद लीन. १२
रहिमन निज मनकी विथा, मनहीं राखो गोय,.
सुनि अठि लैहें लोग सव, वाटि न लैहें कोय. १३
धूर धरत निज शीशपर, कहि रहीम किहि काज;
जिहि रज मुनि-पत्नी तरी, सो ढुंढत गजराज. १४
विगरी वात वने नहिं, लाख करो किन कोय;
रहिमन विगडे दूधको, मथे न माखन होय. १५
खैर-खून-खांसी-खुशी, वैर-प्रीत-मधुपान;
रहिमन दावे नां दवे, जानत सकल जहान. १६
छोटनसों सोही वडे, कहि रहीम यह रेख;
सहसनको हय वांधियत, लै दमरीकी मेख. १७
टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सो वार;
रहिमन फिर फिर प्रोइये, टूटे मुक्ताहार. १८

+ आपकी गरीवीमें रहीम कविका कथन.

यह रहीम निश्चसंग छे, अमत जगत न कोय,
वैर-प्रीत-अभ्यास-यश, होत होतेही होय १९

रहिमन वे नर मरि चुके, जे कहु मागन जाय,
उनसे पहिले वे मुवे, जिन मुख निकसे नाय २०

ये रहीम फीरे दुखौ, जानि महा सताप,
ज्यों तिय कुच आपन गहे, आप मडाई आप २१

रहिमन तीन प्रकारतें, हित अनहित पहिचान,
परवश परे परोसवश, परे मामिला जान २२

रूप-कथा-पद-चारु-पट, कचन-दोहा-लाल,
ज्यों ज्यों निरखत सूक्ष्म गति, मोल रहीम बिशाल २३

ताको मन सवदा जगत, कवि अब्दुल रहिमान,
कवि ईश्वर ईश्वर कियो, कियो ग्रथ अभिराम २४

अघटितको सुघटित करे, सुघटितको अटकाय,
अटपटि गति भगवन्तकी, जो मन नाहि समाय २५

शीखे कहा नवावजू, ऐसी देनी देन,
ज्यों ज्यों कर ऊंचे करो, त्यों त्यों नीचे नेन २६

देनहार कछु ओर हे, जो देते दिन रेन,
लोक भरम हमपें करे, यातें नीचे नेन २७

राज.

(विश्वपतिको विचित्रता)

शिवको अरधंग शरीर कियो, सकलक सरूप सुधाकरको,
अवतार धरे हरजु दसही, जल खारो कियो जु जलागरको,
रतिनाथ अनग कियो जिनही, पुन पंगु भमे पति वासरको,
कवि राज कहे बलवत महा, परताप करम्म बहादरको १

(कवित्त)

कमहु उत्तग अंग होत हे मतग चग,
कबहुं पतंग भृग कीटक अकार जू,
कबहुक धनी निरधनी सुखी दुखी जावे,
कबहुक बेद विप्र कमहु चंडार जू,

जैसे घट एक भेष घटन अनेक घाट,
तैसे एक जीवके अनेक अवतार जू;
धन धन शालिभद्र थूलभद्र जंबुवज्र,
त्यागी जे संसारके अभयकुमार जू. १

(नागरी स्वरूप.)

हंसगति गामिनी जु देह दुति दामिनि जु,
कामिनीसी कामिनी जु निरूपम नागरी;
नमिराजजुके प्यारी ऐसी धो हजार नारी,
रूपके संवारि एक एकहुंते ऑगरी;
निवार्यो निदाध जोर चंदनकी कीनी खोर,
कंचनको सुन्यो सोर ऊपज्यो विरागरी;
मिथिलाके राज छोरि मोहकेजु बंध तोरि,
नमें इंद्र कर जोरि ऐसे धर्म लागरी. १

रामकिंकर.

(व्रजबाला बिरह.)

अहो घनश्याम धाम छांड दियो सखियनको,
होंइगे बिहाल कंज गलियन गोहरावेंगे,
छाडेगे तात मात भ्राता परिवार सखा,
लाजको जहाज त्यागि खाख को रमोंवेगे;
किंकर करजोरके पुकारि कहै वार वार,
वइहै है वैरागिन में, प्रीत को दिखावैंगे;
छोडै दैगे साला ओ दुसाला सजे सारी सबै,
एते वृजबाला मृगछाला कहां पवैगे. १

(राग मालिका-सवैया.)

सारंग मेघ बिहाग धनाश्रि, बिभास झिंझौटि पिलु सुरीना;
टोडि केदारा सुदीपक देश, तिल्लान रु ध्रूपद रामकलीना;
ईमन कान्हर पर्ज अमेज, खमाइच भैरव मारु सोहीना;
रंगीले काढत राग भले, सखि आवत श्याम बजावत बीना. १

सोरठ मालव कोस विलावल, काफि सिंधु सहना रु सुरीना,
गौरि असावरि देव गँधार रु, माधवि कौड कन्यान कहीना,
किंकर खेमटा ठूमरी टप्प, जिते अहै राग तितेंजु दै कीना,
ठीक सुरै सबके मिल गावत, आवत श्याम बजावत बीना २

रामचंद्र.

(अंयिकास्तुति-काव्यलच्छन)

सुवरन अरथमैं मनोहर अलंकार,
सबद मधुर ताकी धुनि मनभाई है,
सहज सुभाव नीकी पदवी धरनि जाकी,
सरल सुगतिहीतें सरस सोहाई है,
मानत निगम जे बखानत विबुध सब,
तेरे पद बंदनकी विदित निकाइ है,
जैसि छबि चढै चित्त चरनारबिंदनकी,
तैसि ये कविंदनकी बढै कविताई है १
जावक प्रमुख तेरे पदके सिंगार ध्याये,
सरस सिंगारमाई बानी उमडति है,
भावना कियेतें सुचरन अलकारनकी,
नीकी अलकारनकी उपमा कढति है,
लाली तरवारनकी उजाली नख ईंदुनकी,
अंब जो कविंदनके चित्तमें चढति है,
जागत प्रताप बरननको प्रताप जग,
कीरति बरनिबेकी कीरति बढति है २
शात नख रुचिमें सिंगार है सिंगारनमें,
घुघुरू मुखन मृदु हास रस बरसै,
करुना भरें हैं प्रभु अद्भुत एक जिनै,
बैरी बीर निरखि भयानकसें तरसै,
जामें जानि परत विभत्सको अभाव जाको,
रुद्र चख रसिक सुभावनितें परसैं,

अंब तेरे चरनारबिंदन कबिंदनको,
शुद्ध नवो रसके उदाहरन दरसै. ३

गावैं चारि मुखतें चतुरमुख चाहि जाहि,
पावत बिचारि सुर चारि फलदान है;
जाकी स्मृति सकल धरम सनमान धरि,
मानत प्रमान करि आगम पुरान है;
जाके पद क्रमकी निकाई अनुपम अंब,
को कवि बरनिवेको सामरथवान है,
लीन रहे शंकर अधीन रहे तेरे पद,
मेरे जान तेरे पद निगम समान है. ४

हाला सीलताई तरवानमें सहज जाकी.
चारू चिकनाइ है समान घृतनिधिके;
छीरसे धवल नख नीरसी विमल छबि,
कोमल प्रपदकी गुराइ समदधिके;
ईछु रसहूते है सरस चरनामृत औ–
लवण समुद्र है लोनाई निरवधिके;
लागे दिन रात तेरे पद जलजातमें ए,
वैभव दिखात मात सात उदधिके. ५

चौदह रतन बरनत कवि वामें यामें,
नित अगनित रतनावलि जगति है;
चंचल तरंगनकी शोभा लइ उहां इहां,
निश्चल तरंगनकी शोभा उमगति है;
वाकी सिरी चंद लखि उमगै निराखि याहि,
चंद्रमौलि मुख चंद्र सिरी उमगति है;
एरी त्रिपुरारि रानी तेरे वर चरनतें,
कहां रतनाकरकी उपमा लगति है. ६

धन धनहीननके जीवन गरीबनके,
अधिक अधीननके मीननके रस हैं;
दीननके माय बाप जनके सहाय औ,
उपाय हैं ये तिनके जे परे परवस हैं;

आसरय एक्है निरासर लोगनके,
संकट परेमें बधु जनतें सरस हें,
निरअवलंबनके एक्र अवलंब अग्र,
तेरे पदको कन दे मेरे सरवस हैं ७
लोभ झकझोरनतें मदन हलोरनतें,
भारी भ्रम भोरनतें कैसे थिर रहती,
दुख द्रुम दारनतें पातक पहारनतें,
कुमति फरारनतें कैसेकै निवहती,
जरा जंतु ओक निके चिंता जल ठोक निके,
रोग सोक ढोक निके झोक कैसे सहती,
होतो जो न अब तेरे चरन करनधार,
भैया यह नैया मेरी कैसे पार लहती ८
ग्यानतेंन गेय उपमेय उपमानतेंन,
ध्यानतेंन धेय अप्रेमय अनुमाने हैं,
ज्ञाता को कहावे को प्रमाता ताहि पावे कौन,
ध्याता ताहि ध्यावे जे विधाता उन जाने हैं,
अव्यय अखंड कोटि कोटि ब्रह्मड जामें,
मंडल मयूखके पियूष सरसाने हैं,
ब्रह्मानदमयतें अनामय अभय अब,
तेरे पद मेरे अवलंब ठहराने हैं ९
सम दम जप जोग साधन अनुक्रमतें,
तन मन जतन अनेक जिन ठाने हैं,
तंत्रनते आनि आनि जत्रनमें जानि जानि,
मत्रनेंमे मानिकें स्वतत्र तिन जाने हैं,
भासे जे परोक्ष अपरोक्षम प्रकासें मोक्ष,
कहि जे उपासें वेद पुरुष पुराने हें,
ब्रह्मानदमयते अनामय अभय अब,
तेरे पद मेरे अवलंब ठहराने हे १०
जाकी ओर ठरें अब रावरी सुदृष्टि कोर,
चारयों दिशाके ताके जश उमगे रहें,

छीजि छीजि वैरीनिके गोत निरबीज होत,
हितके उदोत नित जाहिर जगे रहें;
मतिके उमंग तेरे कीरतिके अंग लीए,
कविता तरंगनके रगन रंगे रहे;
मंगल विनोद मोद महिमा मची रहे औ,
सची मनूभावनसे दावन लगे रहे. ११

जापें ढरे अंब तेरे करुना नयन तापे,
छपे ना प्रभाव जग दीसे परगटके;
चल चतुरंग तुंग तुंगन तुरंगनकी,
टापें सुनि कांपे देश पारावर तटके;
कुस्ती गीर वीरनके पट्टेकी दमव देखि,
खट्टे परिजात दात वैरी भूप भटके,
दुष्ट दुरजन चोर चुगुल चवाइ खल,
खलभल रहें जाकी डरके दपटके. १२

रामनाथ.

(रामनाम तीर्थ-कवित्त)

दुइ बेर द्वारिका त्रिवेणी जाय तीन बेर,
चार बेर काशी गंग अंगहू नहायेते;
पांच बेर गया जाय छौ बेर नीमषार,
सात बेर पुष्करमें मज्जन करायेते;
रामनाथ जगन्नाथ बदरी केदारनाथ,
द्रोणाचल दश बेर जाय पग धायेते,
जेते फल होत कोटि तीरथके स्नान किये,
तेते फल होत एक रामनाम गायेते. १

राजाराम.

(कामजागृति-कवित्त.)

सोरहो सिंगार साजि चली बाल लाल गृह,
देख चाल मय गर मरालहू लजायो है,

अगकी सुगध पाय झुकी भीर भौंरनकी,
चन्द्रमुखी देखके चकोर वृद धायो है,
केलभवन राजाराम सोयें सुख सेज प्यारे,
प्यारी दिग जाय पाय पायल बजायो है,
चौंक चितै कहै कान्ह आय क्यों जगायो मोहि,
मैं नहीं जगायो तुम्हे मैनहि जमायो है १

(बालाराव प्रशसा)

जनक जो ज्ञानीनमें जामवंत स्वापदमें,
ध्रुव जिमि ध्यानीनमें सुदर बिराजा है,
पर्शुराम वीरनमें राम रणधीरनमें,
गंगाजल नीरनमें सिद्ध करत काजा है
राजाराम कहे सदा वेद ज्यों विधाननमें,
कुबेर धन माननमें दूसरो न ताजा है,
उदित उदार महाराज बीर बालाराव,
राजनमें राजा दुजराजनमें राजा है २

रूपनारायण

(कविशिक्षा, होरीवर्णन इ)

आनन स्वकीयाको निहार्यो सपनेहू नाहिं,
पारि परकीयामें कमायो हे अजस क्यों,
गनिकाके भेदमें अपार खेद पायो सदा,
जानत सिंगार रचनाको सरवस क्यों,
हावभाव सूझो नहि तब तो अजान अब,
कठिन समस्या हेरि होत हे अलस क्यों,
देशकी भलाई भला आई न जो तोहि मन,
नाहक बिताई कविताइमें वयस क्यों १

कचुकी कसी सी कसी उरज उतगनपें,
चुनर सुरगकी बहार अंग गोरेमें,
मेहदी ललाइकी ललित छबि छाइ सब,
तनकी निकाइ ना कहत बने भोरेमें,

सावन सुहावनमें पाय मनभावनको,
हँसी हँसी हेरि हेरि नेहके निहोरेमें;
मेन मदमाती मन मोहनी मुदित मन,
झुकि झुकि झुमि झुमि झूलत हिंडोरेमं. २

गारी दे अगारी आज न्यारी निज मडलते,
नाही सुरनारीसी विहारीको छलै गई;
धुंधरीमें धाय धसी धरी लिनो फेरि फिरि,
अंगनमें रंगकी तरंग भिजै गई;
वीर बलवीरपें अवीर वीर पारि इत,
अंजन ले आंगुरीन अंखियान दै गई;
होरीमें ठगोरी डारी गोरी चित चोरी करी,
झोरी लै गुलालकी सुलालै लालके गई. ३

लछीराम.

(सुबोधक झूलणा.)

कपटकी झपटमें फरे नर उतावला, मृगकी लार ज्यु फरत सीता,
आपदा व्होत हे धापता हे नहिं, अंतके तंत ज्युं चलहि रीता,
बिसर गइ वानगी ल्हत हेरानगी, अमर गुदरान करे सीर वीता,
साहबकी जिकर बिन फिकर भागे नहिं, अमीरस छोडके झहर पीता. १
कूच दर कूच तुं रहन पावे नहि, साथ बी नहि कोइ संग मीता,
सांकडी राह ज्हं भूख भारे लगे, खरच नहि ज्यांह खाली खलीता;
जमरानके जोरमें चोरसा हो रह्या, पकड सो पिंजरा तोड लीता,
कहे लछीराम मेरे धनीकुं शरम हे, समझ ले समझ ले राम सीता. २

लाल (पहिला.)

(छत्रसाल हाडा प्रशंसा.)

निकसत म्यानतें मयूखै प्रलै भानु कैसी,
फारे तम तोमसें गयंदनके जालकों;

लागत लपटि कठ बैरिनके नागिनिसी,
रुद्रहि रिझावे दै दै मुडनकी मालकों,
लाल छितिपाल छत्रसाल महा बाहुबली,
कहालो बखान करौं तेरी करवालकों,
प्रति भट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिकासी किलकि कलेऊ देति कालको १

दारा और औरग लरे है दोउ दिल्ली बाल,
एक भाजि गये एक मारे गये चालमें,
बाजी करी दगाबाजी जीवन न राखत है,
जीवन बचाये ऐसें महा प्रले कालमें,
हाथितें उतरि हाडा लड्यो हथियार लेकें,
कहे लाल बीरता बिराजे छत्रसालमें,
तन तरवारिनमें मन परमेश्वरमें,
पन स्वामि कारजमें माथो हरमालमें २

लाल (दुसरा)

(नीतिबोध)

मत्र मैथुन औ औषधी, दान मान अपमान,
गृह सपति अरु छिद्रता, प्रगट न लाल बखान १

नृत्य गीत अरु पढतमें, सभा युद्ध ससुरारि,
लाल अहार व्यवहारम, लज्जा आठ निवारि २

षोडश वर्ष विवाह करि, द्वादश गृह विश्राम,
बर्ष चतुर्दश बास बन, राज्य करत पुनि राम ३

बावन युगकी बात है, लाल अवध बिस्तार,
तेरह त्रेता है गये, भये राम अवतार ४

बुधि जाके बल ताहिके, निर्बुधिके बल कौन,
शशक हन्यो निज बुद्धितें, सिंह महाबल जौन ५

जो उपजायतें होत है, बलतें क्यों कहि जात,
कनक सूत्रतें सापको, कमई कियो निपात ६

बसै बुराई जासु उर, ताहीको सनमान;
भलो भलो कहि त्यागिये, खोटे ग्रह जप दान. ७

(चंद्रोक्तिका.)

ऐरे मति मंद चंद धिक हे अनंद तेरो,
जापै विरहन मरी जात तेरे तापतै;
तूंतो है दुपाकर ओ धर्यो है कलंक सीस,
तापर अनंग सखा नंग सिर छापतै;
कहे कवि लाल हाल हाजर जहान वीच,
वारुणीको वासी त्रासी राहुके प्रतापतै;
वांध्यो गयो मथ्यो गयो पीयो गयो खारो भयो,
वापुरो समुद्र ऐसे पूतहीके पापतै. १

(मार्तंड तापोक्ति.)

अतल वितल आद सुतल रु तलातल,
भुलेक ओ भूरलोक सातों दपीयतु है,
होलिकाकी झाल सी कराल लुक पौन गौन,
ताकी तिग्मताइहूते अग्नी छपीयतु है;
कोविद कवियनके भ्रमायेतें एरी जग,
जेष्ट रितु ग्रीपमसो वृथा जपियतु है;
मृदुल मयंकमुखी तेरी सोंह तेरी चाह,
मारतंड पूरन पंचाग्नि तपीयतु है. १

लाल (खड्गमल्ल.)

(अवधेश स्वारी.)

सीता संग सुंदरी सुएक ओर हर्षित है,
हिलिमिलि मंगलादि गीत उचरति है;
एक ओर मांग मुकुतानते सँवारे कोउ,
काहू पद नाइ न महावर भरती है;
एक ओर लाल बहु बसन रसीले धारि,
नारि पुरवासी युथ युथ निसरति है,

कौशल्यादि कैकयी सुमित्रा मिलि एक ओर,
मणिगण रामपै निछावरि करति है १
माचो देवलोकमें अनन्त खलबल लाल,
ब्रह्मा वेद भूले छूटे तारीहू महेशकी,
डोले लागी पुहुमी समुद्र भहरान लागे,
झिलमिल होन लागी कीरन दिनेशकी,
दरकन लागी पीठ कोल अरू कूरमकी,
करकन लागी त्यों सहस फन शेश की,
सहित समाज आज अवधपुरीमें जब,
निकरी सवारी महाराज अवधेशकी २

लोचन

(बंधु औ सुवर्ण)

रावणके कर बंधु विरोध, लखो निज संपति मान गवाई,
वालिने व्यर्थ सुकंठको कष्ट दे, खोइ सजीवन राज बडाई,
भूलसें भी न कभी करिये, निज भाइयोसें इस हेतु लडाई,
काम हे आते विपत्तिके कालमें, गांठका कंचन पीठका भाई १

विश्वनाथ.

(विरंचि प्रति कटाक्ष-१)

कमलानिवासी वाकूं मूढ मति गति दीनी,
प्रतापी उदार वाकू कोडी नहि दीनी हे,
कामिनी कनक जैसी मूरखके पाले परी,
शखिनी अगोचर सो चतुरकूं दीनी हे,
समुद्र अगाध नीर खारो कर दीनो तेने,
खग मगर्से बनायो कहा गति कीनी हे,
कहे विश्वनाथ जगदीशके परू हु पाय,
विरंचीने कहा कछु बिजियाको पीनी हे १

दुष्ट रु अदुष्टको बिचार छाड वसूमति,
जैसे सब जीवनको हियपें धरत है;
कोकिला रु कागको बिबेक सहकार बाधि,
जैसे निज अंतरमें कबहू करत है;
पावन अपावन जु ठोरको बिचार सोई,
बिनही बिचारे मेघ बुंद ज्यों परत है;
तैसेही जगत्मांही प्रभुके चरण लीन,
भगत बिचार भेदबुद्धिमें न रत है. २

मानुष जनम करतार तोहि दीन्हो क्रूर,
ताकी रे कृतघ्नि शरण तुं न पर्‍यो रहै;
चौरासी भ्रम्यो है कहूं नेक न भ्रम्यो है भाजा,
भाजयो श्रम्यो है अघ ओघने भर्‍यो रहै;
पाँचनसों मिलि खपरामें मगरूर बैठि,
जो न करै काम जासों कारज सर्‍यो रहै;
नामसों न भेटयो विश्वनाथ योंही बूडि गयो,
सुलेहे मध्य पींजरामें पारस धर्‍यो रहै. ३

वैजनाथ.

(रघुराज गुणगान-कवित्त.)

चारि फल जगके सफलके करनहार,
जनम सफलके अफल अघ बनके;
हर मन अमलमें अमल कमल दल,
दलन समल तम तोम सत जनके;
साखि रहे वेद गाथ भाखि रहे वैजनाथ,
अखिर हे हारि साथ आखिरके पनके;
जानि कैस मन डर आनकी न मन आश,
जानकी अमन पद जानकी रमनके. १

नख मुनि जासी तल बानी यमुनासी आपु,
महिमाकी राशी थल तीरथके नाथकी;

भक्ति मुक्तिखानि दास पूरण सुक्षेत्र साथ,
सुखद विलास कैदि गीशनकी माथकी,
शोक सरितारि भूरि आनद सुपूरी भूरि,
धूरि जाकी जीवनकी मूरि बैजनाथकी,
दृष्टिकी निवास ब्रह्म सृष्टिकी अरंभ भूमि,
धृष्टि मन काम पद पुष्टि रघुनाथकी २

कटि बेद अक्षरके रक्षिब प्रत्यक्ष चक्र,
चक्री काम चक्र है कि रूप है दु चंदके,
कक्ष पक्षमाके छोर छाजत छबिली छटा,
घटा पट वोट भानु भासत अमन्दके,
जगत अधार सम पृष्ट पुष्ट बैजनाथ,
जगमग ज्योति जाल आनद सुकंदके,
मोदकारि अंघ मोह तमके हरनहार,
करन सितमकी नितम्ब रामचंदके ३

सज्जन कुशीलता सुशीलता कुसज्जनमें,
कंजन कठोर बैजनाथ धूरि पाथकी,
सुमनको थान जैसे सुगुधतियान मान-
विषयीके ज्ञान वस्तु बाजीगर हाथकी,
कजनाल पंकही सशकभंगी औ निवास,
समिता कलंक मानि माग्यो मृगनाथकी,
धारि कैसो अंक शक है कि भीरताके चित्त,
वित्त है सुरक कीधौं लंक रघुनाथकी ४

केवडा करावमें न केतकी सुतावमें न,
सुमन गुलायमें न आचहू अमंदमें,
पारिजात अगमें न माधवी लवगमें न,
मृगमद सगमें न बैजनाथ चदमें,
जूहीमें न एलनमें चपन चंबेलनमें,
सवती न बेलनमें मल्याहू मदमें,
अंतर सबंदमें न नील अरविंदमें न,
जैसी है सुगंध रामचंद मुख चंदमें ५

सुखमा विलास श्रीट भानुको निवास चारु,
रसराज वासकर अजिर विशाल है;
यौवन अगाररूप माधुरीको द्वार भक्ति-
मुक्तिको भंडार भवभीतनको ढाल है;
नाथनको नाथके अनाथनको नाथ जीव,
करन सनाथ वैजनाथ प्रतिपाल है;
कीरतीको शाल यश तरु आज वाल कैधों,
सोह रामलालको विशाल गोल भाल है. ६

साधु यश नीति धर्म लाज भाग कीर्ति ज्ञान,
आदिकी अकार वरजोर छोर लीनी है;
सोई मद काम क्रोध लोभ मान मोह द्रोह,
वैर दोष दूषणके पूर्व युक्त कीनी है;
हरि विधि लोक सुरलोकनके वैजनाथ,
खोलिके किंवार लै तिर्यके द्वार दीनी है;
वीरवान मान गुरु दान दीन जननको,
रामचंद्र राज्यमें अपूर्व रीति कीनी है. ७

धर्म धुरधार आपु वैठे भद्र आसनपै,
दासन सुखद धर्मवद्ध भो अथाहिये;
पाप ताप तिमिर अधर्म कर्म नाश पाय,
हरु सागरांवरा अनंत मुदिताहिये,
नाग मुनि नाह दिग नाह लोक नाह नर,
चाह सुरतावके पनाह वाह छाहिये;
राज शिरताज रघुराज महाराज तव,
समाज साज राज श्री सदैव राज चाहिये. ८

व्रजराज.

(श्याम उपमा-हास्य.)

कविन सिंगारको सरूप करि मान्यो तुम्हें,
सांवरे विचारि ताकी उपमा दियेके हों;

भादोंकी अंध्यारीमें जनमि अध राति आये,
नदके अजिर यातें चोरिहू कियेके हों,
सावरेके साथी सदा जाहिर जगत अरु,
विषधर सावरेकी गोदमें लियेके हों,
सांवरी करत औरे ऊपरके सांवरे हों,
सांवरे सुजान तुम सावरे हियेके हों १
जौ न वर चौ चँद चखायो कोविदन है,
चवायनको तासों ना अरथ निसरत हे,
ए हो ब्रजराज पद चौ चँदको भाव उते,
नैनन निहारो चलि नीके निवरत हे,
आरसी महलमें टहल रही चद्रमुखी,
मुख प्रतिबिंब चहुदिसिमें परत हे,
मानो आए दाहिने पिछोहे सोंहे चारो चंद,
चारुता न पावें तातें चौ चंद करत हे २

वृन्द.

(दृष्टांतिक-प्रस्ताविक दोहा)

नीकी पै फीकी लगे, बिन औसरकी बात,
जैसे बर्णन जुद्धमें, रस सिंगार न सुहात १
परघर कबहु न जाइये, गये घटत है जोति,
रविमंडलमें जात शशि, छीन कला छबि होति २
ब्रह्म बनाये बन रहे, ते फिर और बनै न,
कान कहत नहि बैन ज्यों, जीभ सुनत नहि बैन ३
निकट अबुध समुझै कहा, बुधजन बचन बिलास,
कबहू भेक न जानही, अमल कमलकी बास ४
दोषहिकों उमहे गहै, गुण न गहै खल लोक,
पिये रुधिर पय ना पिये, लगी पयोधर जोक ५
क्यों कीजे ऐसो जतन, जातें काज न होय,
पर्वतमें खोदे कुआ, कैसे निकसें तोय ६

टरे न काहु दुष्टसों, जाहि प्रेमकी बान;
भौंर न छाडे केतकी, तीखे कंटक जान. ७

धन बाढे मन बढ गयो, नाहिन मन घट होय;
ज्यों जलसंग बाढे जलज, जल घट घटे न सोय. ८

अधिक चतुरकी चातुरी, होत चतुरके संग;
नग निर्मलकी डांकतें, बढत जोति छवि अंग. ९

सुधरी बिगरे बेगिही, बिगरी फिर सुधरे न;
दूध फटे कांजी परे, सो फिर दूध बने न. १०

वीर पराक्रम ना करे, तासों डरत न कोय;
बालकहूके चित्रको, बाघ खिलौना होय. ११

भली करत लागे बिलंब, बिलंब न बुरे बिचार;
भवन बनावत दिन लगे, ढाहत लगै न बार. १२

सुख सज्जनके मिलनको, दुर्जन मिले जनाय;
जाने ऊख मिठास कौ, जब मुख निंब चबाय. १३

जाहि मिले सुख होत है, तिहि बिछुरै दुख होय;
सूर उदै फूले कमल, ता बिन सकुचै सोय. १४

पंडित अरु बनिता लता, शोभित आश्रम पाय;
है मानिक बहु मोलको, हेम जटित छवि छाय. १५

कछु कहि नीच न छेडिये, भलै न वाको संग;
पथ्थर डारे कीचमें, उछरि बिगारे अंग. १६

सजन बचावत कष्टतें, रहे निरंतर साथ;
नैन सहाई ज्यों पलक, देह सहाई हाथ. १७

बुद्धिवान गंभीरकों, संगत लागे नाहि;
ज्यों चंदन ढिग अहि रहत, विष न होय तिहिमांहि. १८

बिरले नर पंडित गुनी, बिरले बूझनहार;
दुखखंडन बिरले पुरुष, बिरले बुद्धि उदार. १९

बचन पारखी होहु तूं, पहले आप न भाख;
अन पूछे नहि भाखिये, यही सीख जिय राख; २०

नैन श्रवण मुख नासिका, सबहीके इक ठौर;
कहबौ सुनबौ देखबो, चतुरनको कछु और. २१

मारे इक रच्छा करे, एकहि फलको होय,
ज्यों कृपान अरु कवचपें, एक लोहसों होय २२

एक एक अच्छर पढे, जाने ग्रंथ विचार,
पेंड पेंडहू चलत जों, पहुचे कोश हजार २३

इक कामिनि अरु कविवचन, दोऊ रसकी ठोर,
वेधकको मन वेधई, वे कामिनि कवि ओर २४

अति अनीति लहियै न धन, जो प्यारो मन होय,
पाये सोनेकी छुरी, पेट न मारे कोय २५

जैसो गुण दीनो दई, तैसो रूप निबंध,
ये दोऊ कहा पाइये, सोनो और सुगंध २६

एक मेरुके आसरे, जाति वरण छिप जात,
ज्यों हाथीके पावमें, सवको पाव समात २७

श्रमहीसों सब मिलत है, बिन श्रम मिलै न काहि,
सीधी अंगुरि घी जम्यो, क्योंहू निकरे नाहि २८

नरकी अरु नल नीरकी, एकै गति करि जोइ,
जेतौ नीचो है चलै, तेतौ उंचौ होइ २९

बिन दश आदर पायकै, कर ले आप बखान,
ज्यों लगि काग सराध पख, तौंही लौ सनमान ३०

सौति लरी पियपें गई, वहै रह्यो रिस पाग,
घरकी दाधी बन गई, बनमें ऊठी आग ३१

(द्विअर्थी-कवित्त)

कवित्त जोरें तव मन मय आने अरु,
सरजत आने आछे सुवर्णहीको बरने,
समद विचारे लघु दीरघ निहारे छंद,
और धारे मद मद पद पद धरने,
पावें गूढ अरथलों आवें आछे अलंकार,
दोप देखवेकों सावधान बुद्धि करने,
वृंद कवि लोकनके बचन विलास देखो,
चोर शत कवि दोउ एकहीसे बरने १

कौरव सभा समुद्र गह्वर विरोधवारी,
कोप वडवानलकी ओप अगमर्ग है,

योधा दुर्योधन कुमंत्रादि जल्पत,
वृन्द कहे छोभकी ल्हारि अगमगी है.
कुबुद्धि बयारिते दुशासन तुफान उठ्यो.
चाग्यो वादवान चीर भीत रगमगी है;
प्रीति पतवार लैके हुजिये करनधार,
अजु हरिलाजकी जहाज डगमगी है. २

शालिग्राम.

(समस्यापूर्तय.-सवैया.)

रावन नासन रामकि सासन, पाय हुताशनमें सिय झूली,
देहकि दूनि लगी द्युति दीपन, शालिग देखि सबै मति भूली,
ताहि समै नभमंडलमें थित, देव विरंचि शची पति शूली,
दैन लगे उपमा इम मंजुल, [पावक पुंजपें कंजसि फूली.] १

वासव एक समैं सुर सयुत. व्योम विमान ह्वये रस रासमें,
भारति देववधून समेत, सुगानकि तानके मान विलासमैं;
वीन छुटी करहूते अचानक, देखि हसे त्रिदिवेश जु तासमें,
[कच्छपि पच्छ विहीन प्रतच्छ, अहो यह अच्छ उडाति अकासमें.] २

अंग भभूत अनंग अरी, सिर गंग तरंग भुजगम कारे,
भालमें बाल मयक लसे, गल मुंडन माल विशाल सँवारे;
शालिग देखत इंदु गनेश, कभी अलका मध शंभु पधारे,
[बांझकों पूत बजारके बीच, अमावस रैनकों चंद निहारे.] ३

अर्ध निशाके समै मृग दीन, मृगाङ्ककों टेरत नैन मिलायक,
हौ तुम गोत्रपती हमरे, तेहितै हम तोहि पुकारत धायके,
व्याध हती मम प्राणप्रिया, तेहि देहु जिवाय सुधा बरपायके,
[रोवत काहु कुरंगके श्रृंगतै, अश्रु परै धरनीपर आयके.] ४

कौशिकके कुलकों दुखदा, द्विजराजहुकी द्युति दूर करै,
पाडव जे पुंडरीक खिलै, अरु कैरव ताहिकों देख जरै;
चंड घृणी चलि जावत क्यों न, अजों असताचलहूके परै,
शालिग यों सुखके हित जो, [येहि कारण हंस चकोर लरै.] ५

शीस गिरिशहुकै जु वसै पय, पावन शुभ्र सुधा सम चारी,
चालत पथ सु शब्द करै, रजहूकों उडावत है तेहि वारी,

है भजकी तनया जु उभै नहि, भासत भेद न ताहि छिगारी,
शालिग सत्य कहै कविताहितैं [गग अनासम ता विधि सारी] ६
रूपवती जु सरस्वतिकों, विरची विधियातैं भई दुहिता,
मोहित है मकरध्वजतैं, पुनि चाहि तिनै अपनी वनिता,
शालिग यों सब लोक पुरानमें, वात अतीव यहै प्रथिता,
तातैं पितामह भारतिको नित, [कथको कथ पिताको पिता] ७
जे कुटटी कपटी कलही, खल है अति अज्ञ अटाम उचगे,
शालिग या कलिकालमै ऐसे, चहु दिस चावत माल्कों चगे,
सज्जनके गनते अनहीन रु, वस्त्रविहीन फिरै तन नगे,
को अपराधतैं विप्र किये हमै, [क्यों न किये प्रभु लुंबे लफगे] ८

(कलिधर्म)

निवल विचारेकी न चल्न चलै न नेक,
छल बल वारेकी है यार जो अचारकी,
सकल वियेकिनकी नकल करैहैं खल,
अकल सराहै कलिकाल्में लवारकी,
तात मातकी जो पुत्र पातकी न सेव करे,
शालिग विख्यात बनी वात अविचारकी,
कवि कविताकी कोउ कदर करै ना कहू,
कदर करैं हैं नर कुल कल्दारकी १
पूरे बेवकूफ कूरे विषयी बुरे हैं तौउ,
पैसा जोपै पास तो परेसता खुदाके है,
पैसे विन विप्र ही विख्यात वेशहूर जैसे,
शालिग सवारभी न बैसे पास आके हैं,
पतनी पतीकी नाहि पती नाहि पतनीके,
पिता नाहि पूतनके पूत न पिताके हैं,
सकम सकाके फिरै धरमात्म फाके परै,
पैसा नहि जाके ऐसे काके फिर काके है २

(तमाखू दोष)

आखूपै विडाल तैसे ताकत तमाखू पर,
चाखत नां चोखे माल विषमै विलमके,
सूखि जात साफी जब माफी माग जाचै जल,
आगहित धाँगे जाय पाय वे इल्मके,

ठठा ठोल रैलमै अंगार गिरि जात जबै,
जातै जरि जात गद्दी गदरा गिलमके,
चारि वर्णहूको थूक चाटनकों चेता चूक,
ह्वै गये उल्लूक केते चाकर चिलमके. १

नासका नही है घर नासका निसान यही,
कहै इम ताकों गाली बोलत बटाक दे,
करै मनवार कोउ और प्रति डब्बी खोल,
पोल देखि आप विचै झापत झटाक दे,
नाक ह्वै निकाम जाकों देखत उलाक होत,
नाकसुख खोय गिरै नरक गटाक दे,
चिमटी चटाक भरि सूंघत सटाक देर,
बेर बेर ढेर मुख छींकत छटाक दे. २

शिवकुमार.

(वसुधा सुधा-पादपूर्ति.)

भ्रमरी मुसकान धुनि ससकान, शशी मुख जोबन जाये सुधा,
फल फूल कपोल सुधा उलहे, छद नेन लताकपतापे सुधा,
सखि गात सुधा सरसों सरसे, वरसे रसना रस तापें सुधा,
मुगधा पिय माधव धापे सुधा, पिय हे कि नहिं वसुधापें सुधा. १

वसुधामें सुधामई विष्णुपदी, जसुधा सुतपाद सरोज सुधा,
सुधि जानत साधु सुजान तजे, मद मान भजे पद पान सुधा,
भरिगे निज भाजनमें जनमें, न मरे न सनातनमें ये सुधा,
मनके तनके तनके तमतें, भ्रम हे कि नहि वसुधापें सुधा. २

शिवसिंह.

(पानीकी प्रबलता,-इत्यादि)

पानीसों मुकता बिकात रजधानी मोल,
पानीसों सिपाई जीत करे संगरामकी,
पानीसों तरवार तरवारे परे जात,
पानीसों चपल तुरी शोभा लै तमामकी,

पानीसों जीवजत जीवत गरीब सब,
पानीसों बनाई भाई भली भीत धामकी,
अरे नर ज्ञानी तु तो पानीको जतन कर,
पानीके गयेतें जींदगानी कोन कामकी १

ध्रुवजीको पानी प्रह्लादहूको पानी रहो,
अजनीको पानी गजपानी पेज नामकी
कौरव सभामें द्रौपदिको जो पानी रहो,
अमर अटवर लगि देखो गत स्यामकी,
नाथ ओर प्यारे बिभीखनको पानी रहो,
दीनी रघुराय रजधानी एक ठामकी,
जाको रहो पानी ताकी कीरत बखानी जात,
पानीके गयेतें जींदगानी कोन कामकी २

पानी बिन जवेरीहू मुक्ता खरीद नाहिं,
पानी बिन सुघड शिरोई कोन कामकी,
पानी बिन हयकू खुदाइमें खरीद नाहिं,
पानी बिन दमकेसो दामिनी न कामकी,
पानी बिन पुरुषको नामदी रहत नाहिं,
पानी बिन किंमत न हीरेकी छदामकी,
अरे नर ज्ञानी तु तो पानीको जतन कर,
पानीके गयेतें जींदगानी कोन कामकी ३

(मन औ आफु)

पियो जब सुधा तब पीनेको कहा है और,
लियो शिवनाम तब लेइबो कहा रह्यो,
जान्यो निज रूप तब जानेको कहा है और,
त्यागी मन आशा तब त्यागिवो कहा रह्यो,
भनै शिवसिंह तुम मनमें विचारि देखो,
पायो ज्ञान धन तब पाईबो कहा रह्यो,
भयो शिवभक्त तब व्हैको कहा है और,
आयो मन हाथ तब आइबो कहा रह्यो ४

मजारी जो पीवे तो तो स्वानहूको प्रान लेवे,
बकरी जो पीवे तो तो मारे बनराजको,

मूरख जो पीवे तो तो अनहूकी चोट मारे,
गद्धा कबु पीवे तो तो मारे गजराजको;
चातुर जो पीवे तो तो सुंदरीकी सेज रमे,
सुंदरी जो पीवे तो तो चाहे कुछ राजको;
कवि शिवसिंह कहे आफुहुको रंग एसो,
चिडिया जो पीवे तो तो मारे उड बाजको. ५

शिवनाथ.

(भावि प्रबलता.)

मेधा होत फूहर कल्पतरु थूहर,
परम हंस चूहरकी होत परिपाटीको;
भूपति मगैया होत ठाढ काम गैया होत,
गैवर चूवत मद चेरो होत चाटीको;
कहे शिवनाथ कवि पुन्य किये पाप होत,
वैरी निज बाप होत साप होत सांठीको;
श्यार सुत शेर होत निर्धन कुबेर होत,
दिननको फेर होत सुमेरु होत माटीको. १

चंदकी मरीचि कान तोरि बिथराय दिन्हो,
कैधों हीरा फोरीके कनूका धरि धरि गये,
कैधों काम मंदिरकी झंझरी बनाई विधि,
कैधों सोनजुहीके पुहुप झरि झरि गये;
कामनि मनोरथ आल बाल शिवनाथ,
मैनके मतंग माते बेलि चरि चारि गये,
अमल कपोलनपै दाग नहि शीतलाके,
डीठि गडि गडि गई गाड परि परि गये. २

शिवदासराय.

(विविध-दोहा)

हरि हिरदै ढूंढत फिरै, जल थल प्रतिमा बाम,
ज्यों कंधे लरिका लिये, देति ढंढेरा ग्राम. १

धर्म कर्म कारक कछु, जरा जरत तन दाह,
आग लगाती झोंपरी, जो निकसै सो लाह २
वृद्ध तिया रक्षा तजे, रहे काम नहि देहि,
ज्यों कुमार सोवै सुखी, चोर न मटिया लेहि ३
श्रवन सुन्यौ नैननि लख्यौ, यामैं संसै नाहिं,
कूप जो खोदै आनही, परै आपु तेहिमाहिं ४
श्रम करि मागहि पाइये, सुख सपति धन धाम,
ल्यायो कोउ न ज मते, निज सग ध्वजा निसान ५

शिवप्रसन्न

(महाकाव्य लच्छन)

साहित विवाह शैल सुर सिंधु चद्र ग्राम,
सुजल विहार मधुपान त्यौं पयानको,
खट रितु बन उपवन वाटिका समेत,
सुरति वियोग पुत्र उतपत्ति गानको,
कहे शिव कवि मत्री मत्र उत्साह दूत,
गायक समेत बर्न होत जहा दानको,
आठ दश महाकाव्य लच्छन बखाने हम,
विधानाथ मतिनें सुपायके प्रमानको १

शिवप्रसाद.

(कालवश्यता)

केते भये यादव सगर सुत केते भये,
जातहू न जाने ज्यों तरैया परमातकी,
बलि वेणु अंबरीष मानधाता प्रह्लाद,
कहालौं कहिये कथा रावण ययातकी,
वेहु न बचन पाये काल कौतुकीके हाथ,
भाति भाति सेना रची घने दुख घातकी,

चार चार दिनाको चवाव सब कोउ करौ,
अंत छूटि जैहै जैसे पूतरी बरातकी. १

(दोहा.)

इत गुलाम इत इल्तमिस, इतहि महम्मदशाह;
इतहि सिकंदर सारिखे, बहुतेरे नर नाह. १
जे न समाये बाहु बल, अटक कटकके बीच,
तीनि हाथ धरनी तरे, मीचुकिये अब नीच. २

शीतल

(पाचन हास्यरस.)

उडद पचायवेकूं हींग और सुंठ सोहे,
केलाके पचायवेकूं घृत निर्धार हे,
गोरस पचायवेकूं सुहागा प्रभाव पुनि,
आमके पचायवेकूं निंबको अचार हे,
कहत शीतल कवि परधन पचायवेकूं,
कानन छुवाये कर कहिबो नकार हे,
इकते अधिक ऐसे ओपत उपाय देखो,
रीझके पचायवेकूं वाहवा डकार हे. १

(अटल कुटेव.)

प्याज कपूरहूके रस भीतर, बार पचासक धोइ मगाई,
केसरकी पुट दे कवि शीतल, चंदन वृक्षकि छांह सुकाई,
मोगरेमांहि लपेट धरी, पर ताहिकी बास कुबासहि आई,
ऐसेहि नीचकुं नीचकी संगत, कोटि उपाय कुटेव न जाई. १

शेखशादी.

(भांगवर्णन-भुजंगप्रयात)

सदा रग राती जैसे पील हाती, बिना तेल बाती दीवासे जरे है;
पीवे ज्ञान ज्ञानी धरे ध्यान ध्यानी, जिन्हेने सजानी सो देखे डरेहै. १

पीवे शुरमा जो करे सेत लोहा, कपटसें सिरोही चो सन्मुख खरे हैं,
कहे शेखशादी ल्यो भांग प्यारी (जो) पीवे अनारी तो ख्वारी करे हैं २

(सुबोधक सवैया)

कहना उसपें जो करे कहना, न करे कहना तो कहा कहना,
रहना उसपे जो लखे गुनकों, गुनकों न लखे तो कहा रहना,
बहना उसपे हित होत जहा, हित होत नहि तो कहा बहना,
लहना अपना कँहि जात नहीं, जो लिलाट लिखे सो वही लहना १
महियारि चली महि बेचनकु, पयमाहि मिलाइ भई सफराणी,
लोभके लच्छन पाप करे जिव, जानत हे यक आतमज्ञानी,
जाइ बजारमें बेंच दिया, तब दोनो भई मनमें हरपानी,
वानर न्याय कियो अति सुंदर, दूधका दूध रु पानिको पानी २

शेहेरियार

(होनहार-कवित्त)

चादसें चकोर टले, मेघसें भी मोर टले,
चोरीसें चोर टले, दिलसें दिलदार जो,
रोगीहूतें रोग टले, भोगीहूतें भोग टले,
जोगीहूतें जोग टले, कामीहूतें नार जो,
पर्वतसें मेरु टले, धनसें कुबेर टले,
दिनका भी फेर टले, हो बुरा हजार जो,
लेकिन ये शेरियार, मानो यह इतबार,
टले नहीं होनहार होवे होनहार जो १

शेप.

(शृंगाररस-कवित्त)

प्यारी परयंकपें निशंक पर सोवतही,
कंचुकी दरकि नेक ऊपरकों सरकी,

अतर गुलाब औ सुगंधकी महक पाय,
देखो उठि आवनि कहांके मधुकरकी;
बैठो कुच बीच नीच उठिन सकत केहू,
रही अवरेख शेख दुति न पकरकी,
मानहु समरमें सुगारि धैर शंकरको,
मारि शंबरारि फांक रहि गई सरकी. १

कैधों जा हिमालयमें गातही गलायो इन,
कैधों दीन दान बलि विकलनों अर्यो है;
कैधों जाइ द्वारकामें कान्हकी सेवा करि,
कैधों जाइ रामकाज रावनसों लर्यो है;
कैधों कवि शेष भने अगनित यज्ञ कीनो,
तातें यह वगनि निकट आइ पर्यो है;
धुनत याहीतें शीश विहीन जर्यो है याहि,
वेसरिको मोती मानो कौन पुन्य कर्यो है. २

निरखो निवाह ते वे भोरी हैं किरी हम,
चोरीहीमें चाह पत जगी कैसें पात है;
शेख कहे एक बेर कान्हकी चोरि आये,
ठौर रहे मानस कठोर अति गात हैं,
मोहनीसें बोलकार तारनिकी टोल मिलि,
टोल बोल दोउ बट परे कैसे घात है;
नैना देखि श्याम केते बैना कैसे सुने आइ,
बैन सुने कैसें तिन्हे नैन देखे जात हैं. ३

मन सुधि आयें तन सुधि विनु होइ जाइ,
तन सुधि आये मन होत पात पात है;
शेख कहे सरद सहेली लवे गूढ़ गुन,
मुरलीकी धुनिन रसाल गात गात है;
तुम कहो मानो उपदेश हम कही नाही,
जेसी करी नाही तेसी नाहीसे कसात है;
प्रेमसो विरुधो जिनि हा हा हियो रुंधो जिनि,
ऊधो लाख बातनकी सूधी एक बात है. ४

जासों मिले मन सुपनेहू मिलि जेहे बलि,
हिये माझ हितू हे तो एती कहा हातेकी,
शेख कहे प्रथम लगनि उरझनि मानो,
तावरि भावरि जेसें आवे मद मातेकी,
जेसे तुम धीधे कान्ह तेसी ग्वारिनि न धीधे,
कान्ह होतो राखि कहों नाहि ठकुर सुहातेकी,
सेननेको मतो एँ जु बेननिमें पायो जात,
कछुक मिताइ देखो नेन निके नातेकी ५

श्यामदास

(आत्मज्ञान)

आतम सत सुखरूप है, जग मिथ्या दुखरूप,
एसें सम्यक जानवो, सोइ विवेक स्वरूप १
उभय लोकमें भोग जे, स्रक वनिता सुरथान,
ताहि जिहासा चितविषे, सो वैराग्य पिछान २
विषय दुराशा त्यागके, जब होवे मन शांति,
सम लछन सो जानिये, वेद कहत अस भांति ३
विषय वृत्तिके वेगतें, इंद्रिय गन प्रतिहार,
दम ताही गुनि कहत हें, पंडित परम उदार ४
वेद गुरुके वाक्यमें, अवधारन विश्वास,
सो श्रद्धा उर आनिये, जातें ज्ञानप्रकाश ५
सदा सर्वदा बुद्धिको, धारन इष्ट जु माहि,
समाधान मुनि कहत तिहि, चितको लालन नाहि ६
भोग कर्मयुत त्यागनो, सो कहियत उपराम,
द्वंद्व धर्मकी सहनता, ताहि तितिक्षा नाम ७
अहंकारादिक बंध जे, हान होनकी चाह,
लछन एह मुमुक्षुता, भाखत गुनि मुनि नाह ८
ग्रथी तीन प्रकारकी, चिद जड संशय कर्म,
नसे सु आतम बोधतें, श्रुति कहत अस मर्म ९

अहं आलंबन सिद्ध जो, काकों होय परोक्ष;
तदपि विचार विहीन नर, करि न शके अपरोक्ष. १०
श्रुतिवाक्य सब एक पर, आतम सदा सुभास;
तौ बिनु गुरुप्रसाद बिन, नहि अपरोक्षहि तास. ११
श्रोतिय अरु ब्रह्मनिष्ट जो, ताहि कहत गुरु वेद;
शरनागत निज शिष्यके, संशय करत विछेद. १२
मानव तनू मुमुक्षुता, महा पुरुषको संग;
दुर्लभ यह त्रय पाइये, देवकृपाते अंग. १३

श्यामसुंदर.

(दर्शन-ज्ञानदीप.)

आद अचल पद निरख, निरख भूधर भयभंजन,
परत्रिय मुख मत निरख, निरख रघुपति अरिगंजन;
नर परधन मत निरख, निरख मति आप गर्व्वधर,
नर सपनो संसार, तास विधि निरख सत्य कर,
भनत श्यामसुंदर वदन, जिन लेत नाम पातकहरन,
नर करन मोच्छतारन तरन, निरख चतुरभुजके चरन. १
चंद्र कलामय ज्योति, काति वहु भांति न वरसत,
जार्यो अनंग पतंग, अंग विनु भयो जु परसत;
महामोह अज्ञान, हृदयको तिमिर नसावन,
अपनो आतमरूप, प्रकट करि ताहि दिखावन,
द्युति दिपति अखंडित एकरस, अदभुत अतुलित अधिक वर,
जगमगत संत चित सदनमें, ज्ञानदीप जय जगतिकर. २

श्यामलाल.

(विषय राजन.)

राजा राव राने बादशाह जे जहान जाने,
हुकुम न माने हुकुमत तर आने हे;

शूरवीर सगनमें सुघर प्रसगनमें,
रीति रस रगनमें अतिही बखाने हे,
स्यामलाल सुकवि जहानमें न तोसें भूप,
खोज हारे पात पात आजके जमाने हे,
हम मरदाने जानि बिरद बखाने पर,
द्वारे चोपदार कहे साहेब जनाने हे १

सकल.

(जन परीक्षा)

दातातें दुनीमें सूम काजे जानियत,
कायरको जानिये समरमाहि शूरतें,
पापीतें प्रगट पुण्य जानिये दुखित सुखी,
निधनीकों जानिये सु धनी धन कूरतें,
भाखत सकल जाने भूपतें भिखारी चोर,
शाहतें पिछाने औ चतुर चित्त भूरतें,
रातदिन सूरतें यों कचन कचूर नर,
जान्यो जात या विधि शहूर बेशहूरतें १

ऐसी मोज कीनी यदुनाथ नाथने अनाथ,
लखि लीने हाथ चामर पठाये द्विजी भामाके,
भासत सकल कांप्यो सेवग सुमेर औेर,
सुमेरके कुबेर गात कम्पै अभिरामाके,
जरी नग लाल और लरी मुकुता प्रवाल,
भरी चर चामी चर चामीकर भामाके,
अम्बरलों बरपै मतंग मदधार देखौ,
अम्बरलों लागे मेघडम्बर सुदामाके २

सन्नम.

(प्रेमप्रसंग-दोहा)

तन मन जोबन जारिकैं, भस्म करी सब देह,
सन्नम ऐसा कीरहा, अजु टंटोरत स्नेह १

अनभावन नियरे बसै, मनभावन परदेश;
इन देखै उन दरस बिन, द्वै दुख बढत हमेश. २
जड काटे फल नीपजे, फल काटे जड जाय;
सन्नम ओ फल कोनसा, जल सींचे कुमलाय. ३
कच्चे फल सोहामणा, गदरे बोत मिठास;
सन्नम ओ फल कोनसा, पक्केमें कडवास. ४

सीखी.

(श्रीकृष्ण प्रेम-कवित्त.)

सिंहपै खवावो चाहो जलमें डुबावो चाहो,
शूरीपै चढावो, घोरी गरल पीयाइबी,
बिच्छुसों डसावो, चाहो सांपपै लिटावो,
हाथी आगे डरवावो येती भीति उपजाइबी;
आगिमें जरावो चाहो भूमिमें गडावो तीखी,
अनीबे घवावो मोहिं दुख नहिं पाइबी;
ब्रजजन प्यारे कान्ह कान्ह यह बात कहौ,
तुमसों विमुख ताको मुख न दिखाइबी. १

सीताराम.

(सर्व देव प्रार्थना.)

विधिको विवेकसों बनाउब बिधान करि,
केशव कलेश नाश कर रणधीर है,
रुद्ररूप संसृति सहार सुरेश आदि,
तपन तपत सीत शीत कर वीर है;
विघ्नको विदारण विनायकके वाट परो,
सीताराम शरण सदाशिव समीर है;
धारिबो धराको जैसे धीर है धरीश जीको,
तारिबो तरंगिनी तुम्हारी तदबीर ह. १

सूरदास.*

(विविध कविवर प्रशंसा)

(दोहा)

सुंदर पद कवि गगके, उपमाको बल्बीर,
केशव अर्थ गभीरको, सूरति निर्गुण तीर १
विधिना यह जिय जानिके, शेपन दिन्हे रान,
धरा मेरु सब डोल्ते, तानसेनको तान २
तन समुद्र भव शूरको, सीप मये चख लाल,
हरि मुक्ता हल परतहीं, मुदि गयो ततकाल ३

सेन.

(वियोग-कवित्त)

जबते गुपाल मधुबनको सिधारे आली,
मधुवन भयो मधुदावन विषमसों,
सेन कहै शारिका शिखडी खजरीट शुक,
मिलिके कलेश कीनो कालिन्दी कदमसों,
यामिनी बरण यह यामिनीमें याम याम,
बधिकको युगति जनावै टेरि तमसों,
देह करै करज करेजो लियो चाहति है,
काग भई कोयल कगायो करै हमसों १

* सूरदासादि कवियोंके विषयमें कहते हैं कि—

(दोहा)

जनक भये हैं नानका ऊधो सूर शरीर
कवि वाल्मिक तुलसी भये, शुकदेव भये कबीर १
सूरदास सुगुण कथे, निर्गुण कथे कबीर,
रामरत्न तुलसी कथे, जय जय श्री रघुवीर २

सेनापति.

(अविरल भक्ति)

धातु सिल्दारु प्रतिमाको निरधारु सार,
सो न करतार है विचार विचगे हरे;
राखि दीठि अंतर जहां न कछु अंतर है,
जीभको निरंतर जपावत हरे हरे;
अंजन विमल सेनापति मन रंजन दै,
जपिके निरंजन परमपद लेह रे;
करी न संदेह रे वही है मन देहरे,
कहा है बीच देहरे कहा है वीच दे हरे. १

कुपथ चलाओ सुधि आपनी भुलावो मोहि,
मोहमें मिलावो तो न कोउ रखवारो है;
जनम सुधारो भवसिंधुते उतारो आप,
उर पाउं धारो तो न वरजनवारो है;
सेनापति मोमें मेरो कछु न कृपानिधान,
जात प्रान तन मन रामजु तिहारो है,
हों तो हों विचारो जिय आपही विचारो तुम,
देह देहु चारो कहों मेरो कहा चारो है. २

आंधितें सरस वीति गई है वरस अब,
दुज्जन दरस बीच रस न बढाइये;
केतो करो कोई पैये करम लिखोइ तातें,
दूसरी न होइ फिर सोइ ठहराइये,
चिंता अनुचित धरुं धीरज उचित सेना-
पति है सुचित रघुपति गुन गाइये;
चारि वरदान तजी पाइ कमलेच्छनके,
पाइक मलेच्छनके काहेको कहाईये. ३

तुम करतार जग रच्छाके करनहार,
पूजवनहार मनोरथ चित चाहेके,

यह जिय जानी सेनापति है शरन आयो,
हूजिये शरन महा पाप ताप दाहेकें,
जो कहु कहोकि तेरे कर्मनते एसे हम,
गाहक है सुकृत भगति रस लाहेके,
अपने करम करी हौं हो निबहौंगो अब,
हौंहि कर तार करतार तुम काहेके ४

ताही भांति धाउ सेनापति जैसे पाउ तन,
कथा पहिराउ करौं साधन जतीनके,
भसम चढाउ सीस जटा में बढाउं,
नाम वाहिको पढाउं दु खहरन दुखीनके,
सबे विसराउ उर तासौं उरझाउं कुंज
बन बन धाउ तीर भूधर नदीनके,
मन बहिराउं मन मनहीं रिझाउं बीन
लैके कर गाउं गुन वाही परबीनके ५

देखी चरनारबिंद बदन कर्यो बनाइ,
उरको बिलोकि बिधि कीनी आर्लिगनकी,
चेनके परम एन राखे करी नेन नेक,
निरखी निकाइ इदु सुदर बदनकी,
मानो एक पति नीके व्रतकी पतिव्रतकी,
सेनापति सीमा तन मन अरपनकी,
सीय रघुराइजुकी माळ पहिराइ लोन-
राई करि वारी सुदराइ त्रिभुवनकी ६

(सूम-कुगुरु स्वरूप)

सब अग भेरे भेरे बहुधा रतन जोरे,
राखे मुख ऊपर हूजे न इतबार हे,
नान्हे बोल बोले सबे देखत न पट खोले,
राजवन राखिबेको पाये अवतार हे,
जमते काहू जे भरमते मागे जाते,
सतहीन सदा आगे राखत नकार हे,

कामहि न आवे सेनापतिको न भावे दोऊ,
खोजा अरु सूम सम किन्हे करतार हे. १

गीतही सुनावे तिलकन झलकावे भुज-
मूलनि छुपावे द्वार काहुके पयान हे;
वेश नव वेश भगतनकी कमाई खात,
साहिबे न सेवे हरि साचुक निदान हे;
देखिके लिबास नीच लोगनिकी बारी होति,
मोहिके विकच करे तन मन ध्यान हे,
सेनापति वचनकी रचना विचारी देखो,
कालिके गुसांइ अरु मागता समान हे. २

(विरह-प्रेम-शृंगार.)

बिरह हुताशन बरत उर ताके रहे,
बालमही पर परी भूषन गहति हे,
सेवती कुसुमहूते कोमल सकल अंग,
सूने सेज रति काम केलिको करति हे;
प्राणपति हेत गेह अंगन सुधारे जाके,
धरी हे वासरि तन मन सरसति हे;
देखो चतुराई सेनापति कविताईकी जू,
भोगिनीकी सरिकी वियोगिनी लहती हे. १

फूलनिसों बालकी बनाइ गुही बेनी लाल,
भाल दीनी बेंदी मृगमदकी असित हे;
अंग अंग भूषन बनाई ब्रजभूषनजू,
वीरी निज करसों खवाई करि हित हे;
व्हैके रसबस जब दीबेको महा वरके,
सेनापति श्याम गह्यो चरन ललित हे;
चूमि हाथ नाथके लगाइ रही आंखिनसों,
कही प्राणपति होति अति अनुचित हे. २

(कविता-कान्ता समानता.)

तुकन सहित भले फलको धरत सूधे,
दूरिके चलत जे हे धीर जिय ज्यारिके;

लगत विविध पक्ष सोहत हे गन मग,
श्रवन मिलत मृठ कीरति उच्चारिके,
सोइ शीश धुने जाके उरमें चुभत नीके,
वेगि विद जात मन मोहे नरनारिके,
सेनापति कविके कवित्त विलसति अति,
मेरे जान बान हे अचूक चापधारिके १
राखती न दोपे पोपे पिंगलके लछनको,
बुध कविके जो उपकण्ठही बसति हे,
जोपे पद मनको हरप उपजावती हे,
तजे कोक नर मे जो छद सरसति हे,
अच्छर हे विसद करत ऊपे आप सम,
जाते जगतीकी जडताऊ विनसती हे,
मानो छवी ताकी उदवत सविताकि सेना-
पति कविताकी कविताई विलसती हे २

सोहन

(काया माया कर्मगति)

अकब्बर जेसे भये जब्बर धरामें धींग,
पाछे अरि रिंग सुनि डींग जस नामकी,
विक्रमसें चक्का जाका बाजत सुजश डका,
लकापतिहूकी माया भई बिन स्वामकी,
के ते राव राना खानखाना मरदाना पह,
धरामे धराना भई खाक दाम चामकी,
सोहन कहत यातें अतमें विचार यार,
काया और माया भई काहुके न कामकी १
महावीर देवको दिये हे कष्ट सगमने,
बनमें बिनास पाये कृष्ण बिन वारी हे,
राजा हरिचद गेह भगीके भर्या हे नीर,
आदिनाथ वर्ष एक भूखही निकारी हे,

चोथे चक्रवर्तके शरीरमें भये हे रोग,
सहे है वियोग रामचंद्र विन नारी हे;
सोहन कहत एसे एसेही लहेहे दुःख,
ताते नर मूढ तेरी कोनसी चिकारी हे. २

सीताको हरन भयो लंकाको जरन भयो,
रावन मरन भयो सतीके सरापतें;
पांडव वरन भयो द्रुपद सुताको सत्य,
भामाको डरन भयो नारद मिलापतें;
राम वनवास भयो सीता अविसास भयो,
द्वारिका विनास भयो योगिके दुरापतें,
बडे बडे राना केते संकट सहाना नेक,
सोहन वखाना एक कर्मके प्रतापतें. ३

ओपत सुरूप इंद्रपुरीसो अनूप तामें,
सत्य शील कूप अति शीतल स्वभाव हे;
प्रेमवती पति साथ औरकी न करे वात,
विनय विवेकहूमें राखे चित चाव हे;
ऊठके प्रभात नित्यनेम घर काज साज,
पतिको जिमात नित्य करी हावभाव हे;
एसी पुण्यवती सती मिले जग वीच जाकुं,
सोहन कहत ताके पुण्यको प्रभाव हे. ४

(काम प्रभाव.)

ईश गिरिजाका वश विकल विशेष भये,
सीता वश रावन गयो हे परलोकमें,
कृष्ण राधिकाके वश नाच भांति भांति नचे,
ब्रह्मा निज पुत्रीतें भये हे रस कोकमें,
द्रुपदसुताके काज कीचक नरक गयो,
भयो रहनेम राजमतीवश जोखमें;
सोहन कहत नामी नामी वदनाम भये,
एसो कामदेवको अफंड तीन लोकमें. १

(ॐकार सार)

ओंकार सार है उदार अविकार मंत्र,
सतत स्वतंत्र तंत्र यंत्रतें महाबली,
राग दोष तिमिरके विनाशबे प्रचंड भान,
जाहिर जिहान जाकी गुंजत गुणावली,
दाता अपवर्ग स्वर्ग सुखको विशिष्ट इष्ट,
ग्येष्ट भवसागरकी मेटत चलाचली,
सोहन अनंत गुणवंत उपशंत मंत,
सकल सिधांत जाकी कहे बिरदावली १

सुंदर (पहिला.)

(शाहजहां वंशवर्णन)

प्रथम मीर तैमूर, लियो साहिब किरान पद,
ताको मीरासाहि, बहुरि सुल्तान महंमद,
अबु सैद पुनि उमर, शेख बाबर जु हुमाऊ,
साहि अकब्बर साहि, जहांगिरही जु गिनाऊ,
तीहि वंश अंश कविराय भनि, शाहजहा विक्रम बखत,
धरि छत्र सुवेख्यो अटल भुवि, पातशाहि दिल्ली तखत १

(स्वकिया लच्छन)

(दोहा)

पतिकी अति सेवा करै, सील सुधाई लाज,
ये लच्छन स्वकिया निके, बर्नत है कविराज १

(सवैया)

देखत नैनके कोननिलौं अधरानहीमें मुसुक्यानको थानी,
बोलति बोल सुकंठहिमें, चलतें पगपें न कछु अहटानी,
सुंदर कोप नहिं सुपने, अरु जो भयो तो मनहिमें बिलानी,
में बसुधा बसुधाइ सबें, पर याकि सुधाइ सुधाइ है जानी १

(नवोढा सुरतांत लच्छन)

गौनेकि रातके भोरहि कोनमें, बेठि रही दुल्ही अनवोले,
हाथसों छाति छिपायके सुंदर, नारि नवाइ दुराइ कपोले,

देखनिको जुरि आइ सबें तिय, नंद जिठानि करे युं कलोले,
एक हसे इक बांह गहे, इक अंचर खेंचके घुंघट खोले. १

(कवित्त)

कंचनसी कायाही सु कुंदनसी व्है गइपें,
सुंदर सिथिल अंग सम्हारे न द्रगतें,
आलस बचन चल विचल हे आभूषन,
सकुचती मनमें न सुरतको तिगतें;
मेरे चित्त छाइ रही छबिलीकी यही छबी,
छिन भर छूटती न अजहूंलो द्रगतें;
रगमगी अंखियनी सब लगी अलकनी,
डगमगी डगनि डिगरी चली ढिगतें. १

(प्रिया वचन माधुर्य)

मुक्तासें झरे मुखतें मुसक्यात, जहां कछु अच्छर ऊचरिये,
कहि सुंदर एसो सवाद सुनेतें, सुधा मनों श्रोननिमें भरिये;
जितने जु कछू कहिये सुकवित्त, कहा कहिकें उपमा धरिये,
फुनि बात कहें सुख लागत यों, कहिबोइ करें सुनिबो करिये. १

(विभ्रम हाव लच्छन.)

छिनकमें भूषण मगाइ फिरि धरवाय,
छिनकमें पहिरी उतारिकें धरति है;
छिनकमें उठिके बहार्त जाइ उहां बेठि,
छिनकमें रस छिनों रोसमें भरति है,
कोउ आली आपतें जो बोलें तो बरजी राखे,
ओरहिसों बोलि बर बातिनी ठरति है.
देखिरी नवेली वह सुंदर सहेलीनिमें,
जोबन गहेली जैसें तमासे करति है. १

(ललित हाव लच्छन.)

सुंदर हे बेनमेंहि कामकी कमान एन,
खंजनसें नेन लघु अंजननि दिये हे;
बेसरिकी लर जानि मोतिनकी थहरानि,
मुरि मुसक्यानि कान्हजुको बस किये हे;

सोनेकीसी डार अति बनी ठनी सुकुमार,
बढे बडे बार हार मनिनीके हिये है,
विधाता सुधारे सुध सुधाहीसों भेरे जानि,
राधिकाके सबे अग माधुरीही लिये है ९

(चतुर्विध नारी लच्छन)

कमलके फूलकोसो बास अंग सुकुमार,
कमलसी जोनि जहा जलपें न लहिये,
चदसो बदन तन चंपकसो कुदनसो,
बनी ठनी सबें ठोर जेसी जहा चहिये,
भावे देवपूजा श्वेत बसनसों रुचि हिये,
लियें लाज मानों गति हंसकीसी गहिये,
थोगे खाय पीक बेनी विचिच्छन मृगनेनी,
जामें गुन सुंदर ए पद्मिनी सु कहिये. १
छीन कटी पीन कुच मीनसें चपल नेन,
गजगौनी कारे बार मोरकीसी बानी है,
मधुकोसो गध जाके सुरतके जलको है,
लाबी है न ठिंगनी न पातरी न स्यानी हे,
सुदर सलोम सुकुमार जोनी जिहि बीचि,
सेतुफूल बटुरासे तहा भर्या पानी है,
रतिसों न रति उपभोगहिंसो रति चित्र,
सगीतसों भावरी यों चित्रिनी बखानी है २
मोटी लांबी नसों देह छीन ऊची मोटी कटी,
टेढी चितवनी कुच छोटे खोटो मन है,
जोनीमें बिगध काम जल धनो घनें बार,
उत्ताइली चालें बोलें गाजतो ज्यों घन है,
रातो पट्ट भावें नख सुरतमें लावे चारु,
तातो गात दयाहीन रोषहीसों पन है,
दीरघ हे दात पाइ थोरो न बहुत खाइ,
एसे जाके चिह्न सोइ सखिनीको तन है ३

मोटी देह मोटे होठ भुरे वार गौरी आप,
थोरी लाज पेट भारे खाति हे अधाइके,
टेडे पाइ पाइनकी अंगुरी हे टेडी सब,
ठींगनीसी कूरी फुनि बोलें घहराइ हे,
कामजल्ही हे गंध मदके गयंदकीसी,
सुरत न कियो जाइ जासों सुख पाइके,
चले मंद गति गहें कांधे जाके नेन रहे,
हस्तिनिके लच्छन ए दिये हें दिखाइ के. ४

(सात्विकभाव उदाहरन.)

लोचन सजल चल विचल वचन मुख,
चरन जुगल नेकु टरत न टोरे हे;
पीरि परि आई कहि सुंदर कपोलनिमें.
कापत अधर जानों सुधासों सुधारे हे,
पसिनासों भींज्यो तन फुले रोम हरपन,
लीन व्हैके रह्यो मन ए गुन तुम्हारे हे,
छिनुहीमें व्हे गइ हों आन हाथ आन पाइ,
जानति हों कहुं कान्ह कुंवर निहारे हे. १

(दोहा)

स्वेद कंप सुरभंग ए, स्तंभ विवर्ण वनाव,
रोम हर्ष आसु प्रलय, आठों सात्विक भाव. १

(अष्टाभिधान नायिका)

प्रोषितपतिका खंडिता, कलहातरिता नाम,
विप्रलब्ध उत्कंठिता, वासकसज्जा वाम. १
स्वाधिनपतिका नायिका, अभिसारिका गिनाय,
आठ प्रकार जु भेद यें, वरने हे कविराय. २

(चंद्राभिसारिका-कवित्त.)

फूलनिसों गुंथी मंग, चंदन चढाए अंग,
उमगि हे मनो गंग, सरदके नीरकी;
सोहत हे सब तन, मोतिनके आभूषन,
मोतिनकी ज्योतिसां मिली हे ज्योति चीरकी,

मुसिक्यातिं आछी अति, दातनिकी दीपें दुति,
तेसीई गुराइ कहि सुदर शरीरकी,
चादनिसी वाल मिली, चादनीमें एसी चली,
जेसें छीर सिंधुमें चले तरंग छीरकी १

(उत्तम लच्छन-दोहा)

पिय तियसें अनाहित करे, तिय न तजे पिय प्रीति,
यह सो उत्तम नायिका, हें जानो यह रीति १

(सवैया)

पकरे करसा कर और तिया-कों, लिये फिर जो घन दामिनिकों,
इहि भातिनि सुदर कान्ह लिखें, फुनि कोप नहिं कछु कामिनिको,
युग लोचन लाल हे लालनके, चहु जामिनि जाग्यो हे यामिनिकों,
अपराध भर्या अति आवतु या गति, भावे तउ पति भामिनिको १

(सयोग शृंगार)

एक समे मंदिरमें रमनीसें श्याम रमे,
देखतमें मेंनहूके मन सरसत है,
एकनीकों भेटी एक लेत हे लपेट पुनि,
एकनी चपेट कुच ओठ परसत है,
छिटके गुलावसों गुपालजु गुपालकानि,
सुदर सुवह रूप एसें दरसत है,
मेरे जान फुली फली लविता लतानि पर,
मद मंद बुंदनिसों मेह बरसत है १

(संध्या सुरसात वर्णन)

दपति करत रति सुदर सरस अति,
वारों रतिपति रतिके यों सह हसकों,
लालकी भुजानि परि ललनाकि लसत,
जानु गाढे ग्रही ग्रीव पीवे अधर रसकों,
ता समे पियाके पाय पियकी कटिपें आइ,
रहि हे उचाइ एसें अंगुरीन दशकों,
मेरे जाने पच बान पंच पंच बाननिसों,
बाधि चढयो कुछू और कुछू तरकससों १

(सवैया)

बाल उठी रति केलि किये, कवि सुंदर सोहत अंग रसों हे,
आरसिमें मुख देखि सकोचति, सोचति लोचन होत लजो हे;
लाल हसें इह बीच रही, ललना पियकों तकिकें तिरछोहे,
पौछि कपोलि अंगोछति ओठ, अभैठनि आंखिनी एठति भोंहे. १

(प्रौढा लच्छन.)

कान्ह आलिंगन आसन चुंबन, किन्ह अनेक सु कौन गिनावे,
यों रति मानि तियाकों तऊं पति, की छतियां छिनुं छोरि न भावे;
भोर भयो पिय जाने न जैसे, इतें पर ए चतुराइ चलावे,
अंचरसों ढकि मोतिकि मालकि, सुंदर सीतलताइ दुरावे. १

सुंदर (दुसरा.)

(पातिव्रत-ज्ञान-विवेक.)

पतिहीसुं प्रेम होइ पतिहीसुं नेम होइ,
पतिहीसुं क्षेम होइ पतिहीसुं रत है;
पतिहीसुं यज्ञयोग पतिही है रसभोग,
पतिहीसुं मिटै सोग पतिहीको यत है;
पतिही है ज्ञानध्यान पतिही है पुन्यदान,
पतिही है तीर्थस्नान पतिहीको मत है;
पति विनु पत नांही पति विनु गत नांहि,
सुंदर सकल विधि एक पतिव्रत है. १

जलको सनेही मीन विछुरत तजै प्रान,
मनि विनु अहि जैसे जीवत न लहिये;
स्वांत बिंदुको सनेही प्रगट जगतमाहि,
एक सीप दूसरा सु चातकहु कहिये,
रविको सनेही पुनि कमल सरोवरमें,
शशीको सनेहीहु चकोर जैसे रहिये,
तैसेही सुंदर एक प्रभुसूं सनेह जोर,
और कछु देखि काहु वोर नहि वहिये. २

यौवनको गयो राज ओर सब भयो काज,
आपनी दुहाइ फेरी दमामो बजायो रे;

लकुटी हथ्यार लिये नेन फर डाल दिये,
श्वेत बार भये ताके तवुको तनायो रे,
दशन गये सु मानो दरवान दूर किये,
जो घरी घरी सो आनि बिछोना बिछायो हे,
शीश फर कंपत सु सुदर निकार्यो रिपु,
देखतहीं देखत बुढापो दोरि आयो हे ३

काक अरु रासभ उलूक सम बोलत हे,
तिनके तो बचन सुहात कहो कौनकु,
कोकिल रु सारी पुनि सुवा जब बोलत हे,
सब कोउ कान दे सुनत रव रौनकु,
ताहिते सुवचन विवेक करि बोलियेजु,
युहि आकबाक बकि तोरिये न पौनकु,
सुदर समुझि एसे वचन उचार करो,
नहितो समुझि करि बेठो गहि मौनकु ४

(सद्‌बोध-सवैया)

देखनके नर दीसत हे, परि लछन तो पशुके सवही हे,
बोलत चालत पीवत खात सु, वे घर वे घर जात सही हे,
प्रात गये रजनी फिर आवत, सुदर यों निज भार वही हे,
ओर तो लछन आइ मिले सब, एक कमी शिर शृंग नहि हे १

तें दिन चार विराम कियो शठ, तोर कहे कछु व्हे गइ तेरी,
जेसेहि बाप ददा गये छाडि सु, तेसेहि तु तजि हे पल फेरी,
मारहि काल चपेट अचानक, होइ घरीकमें राखकि ढेरी,
सुदर ले न चले कछु ये सग, भूलि कहे नर मेरोहि मेरी २

तु कछु ओर बिचारत हे नर, तोर विचार धर्योहि रहेगो,
कोटि उपाय करे धनके हित, भाग लिख्यो तितनोहि लहेगो,
भोरकि साझ घरी पल माझ, सु काल अचानक आइ गहेगो,
राम भज्यो न कियो कछु सुकृत, सुदर यों पछिताइ रहेगो ३

वे श्रवना रसना मुख वेसहि, वेसहि नासिका वेसहि आँखी,
वे कर वे पग वे सब द्वार सो, वे नख शीशहि रोम असखी,
वेसहि देह परी पुनि दीसत, एक बिना सब लागत खखी,
सुदर कोउ न जानि शके यह, बोलत हो सु कहाँ गयो पंखी ४

बोलत चालत पीवत खावत, सिचत हे द्रुमकुं जस माली,
लेतहु देतहु देखत रीझत, तोरत तान वजावत ताली;
जा महीं कर्म विकर्म किये सब, हे यह देह परी अब टाली,
सुंदर सो कितहू नहि दीसत, खेल गया इक खेल खुल्याली. ५

श्वान कहुं कि सियार कहुं, कि बिलाड कहु मनकी मति तेसी,
ढेढ कहुं किधों डोम कहुं, किधों भांड कहुं किधों भंडइ जेसी;
चोर कहुं बटपार कहुं ठग, जार कहुं उपमा कहुं केसी,
सुंदर ओर कहा कहिये अब, या मनकी गति दीसत एसी. ६

कोउक जात प्रयाग बनारस, कोउ गया जगनाथहि धावे,
कोउ मथुरा बदरी हरिद्वार सु, कोउ गंगा कुरुक्षेत्र नहावे;
कोउक पुष्कर व्है पंच तीरथ, दोरिहि दोरि जु द्वारिका आवे,
सुंदर वित्त गड्यो घरमाहिं सु, बाहर ढूंढत क्यों करि पावे. ७

आपहि चेतन ब्रह्म अखंडित, सो भ्रमते कुछ अन्य परेखे,
ढूढत ताहि फिरे जितही तित, साधन योग बनावत भेखे;
औरत कष्ट करे अतिशय करि, प्रत्यक आतम तत्व न पेखे,
सुंदर भूलि गयो निज रूपहि, हे कर कंकण दर्पण देखे. ८

(पेट-प्रपंच.)

पाजी पेट काज कोटवालके अधीन होइ,
कोटवाल सो तो शिकदार आगे दीन हे;
शिकदार दिवानके पीछे लग्यो डोलै पुनि,
दिवानहु जाय बादशाह आगे लीन है;
बादशाह कहै या खोदाय मुझें और देइ,
पेटही पसारे वही पेट वश कीन है,
सुंदर कहत प्रभु क्युही नहि भरै पेट,
एक पेट काज एक एकके अधीन है. १

पेट सो न बली जाके आगे सब हारि चले,
राव अरु रंक एक पेट जीति लिये है;
कोउ बाघ मारत बिदारत है कुंजरकुं,
ऐसे शूरवीर पेटकाज प्रान दिये है;
यत्र मंत्र साधत आराधत मसान जाइ,
पेट आगे डरत निडर ऐसे हिये है;

देवता असुर भूत प्रेत तिनु लोक पुनि,
सुंदर कहत प्रभु पेट जेर किये है २
प्रातही उठत जब पेटहीकी चिंता तब,
सब कोउ जात आपु आपुके अहारकू,
कोउ अन्न खात पुनि आमिष भखत कोउ,
कोउ घास चरत चरत कोउ दारकूं,
कोउ मोती फल कोउ वासरस पय पान,
कोउ पौन पीवत भरत पेट भारकू,
सुंदर कहत प्रभु पेटही भ्रमाये सब,
पेट तुम दियो है जगत होन ख्वारकू ३
पेटहीके वश रक पेटहीके वश राव,
पेटहीके वश और खान सुल्तान है,
पेटहीके वश जोगी जगम सन्यासी सेख,
पेटहीके वश वनवासी खात पान है,
पेटहीके वश ऋषि मुनि तपधारी सब,
पेटहीके वश सिद्ध साधक सुजान है,
सुंदर कहत नहि काहूको गुमान रहै,
पेटहीके वश प्रभु सकल जहान है ४

सग

(चातुरी-कवित्त)

जगनमें मंगनमें सुसरेके अगनमें,
रेन त्रिया रंगनमें रस बरसाहिये,
गावन बजावनमें रीझही रिझावनमें,
पढन पढावनमें घन दरसाहिये,
दान मान देवेमें सत्य बात केवेमें,
समयके साधवेमें ततवर कहाहिये,
अहारमें विहारमें विचार कवि संग कहे,
एते ठोर चातुरकु लज्जाहू न चाहिये १

संगमदास.

(स्त्रीचरित्र.)

समेको न जाने शीख, काहूकि न माने रारि,
कठिनको ठाने सो अजाने भई जाति हे,
पीछे पछिते है घात एसी नहि पैहे टेक,
तेरी रहि जैहे कहा ठेढी भई जाति हे;
संगम मनावे तोहि हितकी शिखावे शीख,
जा विन न भावे भौन ताहिसों रिसाती हे;
मोसों अठिलाति बिन कामको हठाति प्यारी,
तुं तो इतराति इत राति बीति जाती हे. १

संतदास.

(भूषण अंग.)

नरपति मंडन नीति, पुरुष मंडन मन धीरज,
पंडित मंडन विनय, ताल रसमंडन नीरज;
कुल तिय मंडन लाज, वचन मडन प्रसन्न मुख,
मति मंडन कवि कर्म, साधु मंडन समाधि सुख;
पुनि भुव वल मंडन हे क्षमा, गृहपति मंडन विपुल धन,
मन मंडन शुचिता संत कहि, काया मंडन वल्न घन. १

(दाम महिमा)

पैसेहीके मात तात पैसेके वहीन भ्रात,
पैसेहीके हितु जात पैसेकी लुगैयां है;
पैसेतें आदर सनमान होत पचनमें,
पैसेतें चलात पय राशिनमें नैयां है;
पैसेहीतें जंगलमें मंदिर तयार होत,
पैसे बिन मूल काहू बात ना पुछैयां है,
संत कहे साधू तुम मनमें बिचार देखो,
दैयाने बनाये ऐसें जगमें रुपैया है. १

(भक्ति-दोहा.)

भरम रोग तबहीं मिटा, रटया निरंजन राय;
तब जमका कागज फट्या, कट्या करम तब जाय. १

स्वरूपदास.

(पतिता निषेध-सवैया)*

सब घोस रहै गृहमायके सो, सखियांको बोलायके फैल सिखावै,
सासरै जायकै पीहर आनकै, भैरव देविको दोष दिखावे,
पति सासको निंदत फन्द अनेकहु, छद अनेक अनद बढावै,
दुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतीत क्या ढोल बजावै १
कनहू कुच कचुकीमैं कसिकैं, चसिकैं सखियान जो हाथ लगावै,
मसकै फिर हाथ हितैं ससकै, हसकै सखिके गर बाहि बनावै,
ढिगतैं कोउ जात तो गेल भगे, त्रिय देखिकै छैल यै फैल बतावै,
दुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतीत क्या ढोल बजावै २
घर देहरीपै नित बैठक है, चख घाटके छैलनकों बहकावै,
कछु काम बिना उठि धाम लखै, नर बामसों बामके भेदकों पावै,
सब काम हरामकी बात सुनै, अजकी त्रियकों तनही जक आवै,
दुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतीत क्या ढोल बजावै ३
पगभूषनके दिखरायवेको, लहँगो अति घेरको उंचो बनावै,
मगमैं बहती पगकों ठटुकै, अरु पेट उघारिकै नाभि बतावै,
सखिया तजिकैं सजकैं नखरो, फिरि पिछी बा यारकों सैन चितावै,
दुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतीत क्या ढोल बजावै ४
बिन काजही दांत दिखावत है, जब सोन कहा सब अग दिखावै,
अब लाज जहाजकों कामके सिंधु, डबोइ दई फिरि खोज न पावै,
विषयी कहा पामर जीव बचै, जिनके ढिग साधुहुकी पति जावै,
दुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतीत क्या ढोल बजावै ५
उझकै झझकै लखि जाहु जु आपनी, पापनी सैननमें लखि पावै,
अतिहि अलबेली चलै अजकी, पगहीके अगुठि अनौट बनावै,

---

* इस तरांहको गुजर भाषाके "छिनाल पचीसी" नामक एक ग्रंथ जैन साधु लालचदने बनाया है-

पग पछाडे पानी मोडे, कुचा काठे अबोडो छोडे
छेडो काढी मा उराडे, छिनाल से हु ढोल बगाडे १
आगे हीडे पीछे देखे, अमने हाथका कगन पसारे
हाथ पसारके पीठ देखाडे, छिनाल से हु ढोल बगाडे २

छिन ढांकत है छतियां छिन खोलत,–के रसिया बिन मोल विकावै;
टुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतीत क्या ढोल वजावे. ६
नित फैलके गोले गुडायो करै, अति पाडोसीके चित सोच लगावे;
जल वीच सतावत आगि जलायके, डुंगर आखिके कोने छिपावै;
कछु सिहको मारत जेज करे, नहि उंदरते नितही उझकावे;
टुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतित क्या ढोल वजावे. ७
ढिक खाटपे आपके यार लग्यो, शिर खावंदके धरि नाच नचावै;
दुध पायके आपके ताप नहिं, सुतकों पतिकों झट मारि नसावै;
वह गायको सिह रु गाडरको, गज जेवरीको करि साप वतावै;
टुकदास सरूप विचारिकै देखिये, आर पतीत क्या ढोल वजावे.८

शिरताज.

(हिंदुत्व भक्ति-कवित्त.)

सुनो दिलजानी मेरे दिलकी कहानी,
तुम हस्तही विकानी वदनामी भी सहोंगी में;
देवपूजा ठानी में निमाजहू भुलानी,
तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहोंगी में;
श्यामला सलोना शिरताज शिर कुले दिये,
तेरे नेह दागमें निदाग हो दहोंगी में;
नंदके कुमार कुरवान तोरी सूरतपें,
तोड नाल प्यारे हिंदुवानी हो रहोंगी में. १

शिवसिंह.

(श्रीकृष्णमूर्ति-धनाक्षरी.)

रसिक शिरोमणि पीत पटवारे श्याम,
नैननके तारे हे दुलारे मम प्यारे लाल;
सुन्दर सलोने मन मोहन कुंवर कान्ह,
आनन्दके कन्द व्रजमोहन मुकुन्दलाल;
मोर मुकुटवारे शिव गले माल धारे,
यशुदाके प्राणप्यारे सांवरे गोपाललाल;

मेरे वनमाली निकुंजनमें कदवतर,
बासुरी बजाओ नटनागर गोविन्दलाल १
राजत अनेक रंग सुन्दर देखाई देत,
नन्दलाल सैनन मरोरि मटकत है,
आली वनमालीको अनोखी मुसकान देखु,
बार बार नाचत महान नटखट हैं,
वारत अनेक काम सुन्दर विशाल रूप,
बीर आज मोहन अपार थिरकत है,
डारत हियेमें शूल शिवजू निहारि यह,
मंद मंद पेखत मुरारि नटवर है २
शिलातट बैठिके बिहाग गावत वो आली,
नन्दको लाल मम चित्तको चुराय लेय,
वहा चलु देखु बीर कुंजनमें धूम मची,
मीठी मीठी ताननसों मनको लुभाय लेय,
चचल चपल मन्द अहीरवालो छोहरा,
रस बर्षाय देय तपन बुझाय देय,
दृगन झसाये देय शिवजू रिझाय देय,
मनको हिराय देय आनन्द मचाय देय ३

श्रीपति.

(विविध विषय-कवित्त)

जहां अवुजासन खगासन वृषासन औ,
सासन न लांघिजा सिंहासन तरे रहे,
तापर अनत रूप सेज ब्रह्मरूप नीके,
चंद है वितानी छाह सीसपै करे रहे,
श्रीपति कहत ज्याके चरन शरन ताके,
चाकरसें बारहु विभाकर खरे रहे,
मंदरमें धनाधीश द्वारमें कल्पदरसे,
वदरसे वहार पुरंदर परे रहे १
दारिद दिल्लीतें आयो ढिग जानि दुढाहार,
राजाराम वारो राज देख कक्ष्यो टरिकैं,

आयो मरुधरसो नां आन दिन्हो जसवंत,
धायो तब खारी आपगापै* दाव धरिकै,
एतो मेदपाटके महीप श्री सज्जन वारे,
चाल्त अदीठ दीठ चक्र थरहारिकै;
खांचकै लंगोटा करि काख विच घोंटा गेंद,
कूद गयो दोटा देन कोटा कोटा करिकै. २

(ऋतु वर्णन.)

फूले आसपास कास विमल अकास भयो,
रही नां निशानी कहूं महिमें गरदकी;
गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन,
छापसी दिखाई आनि विरह फरदकी;
श्रीपति रसिक लाल आली वनमाली विन,
कछू न उपाय मेरे दिलके दरदकी,
हरद समान तन जरद भयो है अब,
गरद करत मोहि चांदनी शरदकी. १

जल भरे बुमें मानों भूमै परशत आय,
दशहुं दिशान घूमै दामिनी लये लये,
धूरधार धूसरीत धूमसें धूधारे कारे,
धारे धुरवान धावै छबिसों छये छये;
श्रीपति सुजान कहै घरी घरी वहरात,
तावत अतन तन तापसों तये तये,
लाल बिन कैसे लाज चादर रहेगी अब,
कादर करत मोहि वादर नये नये. २

(प्रिया स्वरूप)

कंचन कलसपर पन्नगकुमार राजे,
आछी आरसीमें रूप मुक्ता नचतु हे,
बिंबपर कीर कीर ऊपर कमल तामें,
मनमथ धनु हावभावको सचतु हे;
द्विजराज श्रीपति परम आचरज यह,
मुनिहूको मन प्रेम वेलि विचरतु हे,

* नदी.

घनपर बिज्जु बिज्जु ऊपर सरद चद,
चदपर चाहु तापें सूरज नचतु है १
पावर रसाल्पर दामिनीको ल्याउ किधों,
चंपककी मालसी लसत बाल लालपें,
रतिके मुकुरपें भुवगिनी लसत कीधों,
कारी कारी लर लटकत गोरे गालपें,
द्विजराज श्रीपति रसिकमनि शीशफूल,
लचकि लचकिके परत आछे भालपें,
मेरी जान नम्वत समेत रवि नटवर,
थारी हाथ भरि नाची कालीके कपालपें २

हनुमान

(शृगार रस)

कचनके घट नट यटक युगुल मठ,
कमठ कठोर अरु सुभट मनोजके,
शुक प्रिय श्रीफल लगूर कोक संपूट त्यों,
उलटे नगारे ज्यों मजीरकेत चोटके,
तंबु कंबु शबु कर कुभरूप छत्रपति,
कवि हनुमान कहै शिखर सरोजके,
चीज भरे मौज भरे रोज सुखदायी श्याम,
येतो उपमा अधीन सुंदरि उरोजके १
कैधौं पिये कालकूट बैठे शभु जटाजूट,
निशिके नलिनपै अलिन वास लीन्हो है,
चामीकर कुभनपै मर्कत कठोर धरे,
रति रनधीर युग टोप शिर दीन्हो है,
प्यारी कुच श्याम ताकी डीठि गडी श्यामताकी,
कहै हनूमान इन काहूको न चीन्हो है,
तपिनके तप जीते जपिनके जप जीते,
ताते चतुरानन बदन कारो कीन्हो है २

कल्पलताके पता कोटि सुरकीसी कांति,
पूर्ण चंद्रमाकी द्युति दीपती निदान है;
दर्पणमाहि कछु दर्पण देखियतु क्षिति,
रुचिकी ज्यों छटा छबि छाजत महान है;
हनूमान प्रीतिकी सों कंज शुभ रेखायुत,
अदभुत होरे हरि शारदा समान है;
प्यारी तेरे पानकी बडाई गाई वेद चारि,
सोते परी पाई कान जोरे खडा पान है. ३

गोरी गोरी अंगुली हे अंगना तिहारी प्यारी,
लघु मध दीरघ सुच्छम थूल करकी,
नखनकी द्युति कवि जीव सो उदित शोभा,
हनूमान कैधों है मयूषे कलाधरकी,
दश चक्र चिन्ह दश दिश जित्यो वीसोवीस,
कली कशमीर कीधें फली चामीकरकी;
शक्ति पच देवनकी भारती है लेखनीकी,
पच पंचमासी है प्रपची पंच शरकी. ४

हमीर.

(सरदार कथन)

गुनी गुन गैयो देश देशको फिरैयो हो मैं,
अच्छरको लैयो स्वच्छ करता विचारी हौं;
तीरको चलैयो तरवैयो नीरहूको तीन,
वाजी फिरवैयो शूर शस्त्रनको धारी हौं;
कहव हमीर सत्य वानी परमानी उर,
ताल स्वर ख्याल ताको शरोता अपारी हौं,
कोउ सरदार धार करहिं उदार मोपै,
ताकों ततकाल मै रिझायवेंको त्यारी हौं. १

(दोहो.)

हाहुलि राय हमीर कहे, सुण पंगानी वत्त,
इकडले असि लखासों, (इसा)सों भड किम भाजत. १

हरजीवन.

(भावि प्राबल्य-कुंडलिया)

अपनी भावी भुक्तिये, राम भुक्ति बनवास,
परसुराम भुक्ति सही, कियो क्षत्रिको नास,
कियो क्षत्रिको नास, वामन बलिद्वार पधारे,
नरहरि भुक्ति खरी, जिनु हरनाकस मारे,
हरजी भुक्ति वराह, धरनिकों दाढ धरावी,
और न भुक्ते कोय, भुक्तिये अपनी भावी १
अपनी भावी भोगवी, भारथ भीष्मपिताय,
ग भावीके जोगमें, भारथ सबें बडाय,
भारथ सबें बडाय, कौन कोऊ कित माया,
जिनको निमित्त जहां, तहा तिन प्रान पद्धार्या,
हरजी कृष्ण कहा करे, कछु ना मिटै जु थावी,
भारथ भीष्मपिताय, भोगवी अपनी भावी २
अपनी भावी भोगवी, सगर कृष्ण रावन,
गांधारी गैली भई, सत सुतके कारन,
सत सुतके कारन, भुखे मरि भई दिवानी,
कहा न मान्या काहु, अवकछ खाया छानी,
एते सुत एके न, तोय कर्यो कहा आवी,
सगर कृष्ण रावन, भोगवी अपनी भावी ३

हरदास.

(मृदंग और गणिका कथन)

प्रभु पक्षमें द्रव्य जो भाति लगे, धन है धन है तिनके धनकू,
हरिनाम बिसारिके नाच नचे, जब प्रेम कथा न रुचे उनकू,
मरदंग कहे धिक है धिक है, तब ताल कहे किनकु किनकू,
जब हाथ पसारि कहे गणिका, इनकु इनकूं इनकू इनकूं १

हरदान.

(रामगुन इ०,-कवित्त.)

घनकी घटासें अति मयूर अनंद होत,
कोकिल अनंद होत अंबफल आयेतें;
मधुप अनंद होत कुंजरस मिल्येतें,
दाताको अनंद होत गुनी दरसायेतें,
शूरको अनंद होत अति रन अंगनमें,
विप्रको अनंद होत मोदक खिलायेतें;
कहे हरदान सत्य सुनियो सुजान कवि,
ज्ञानीको अनंद होत रामगुन गायेतें. १

एक नर टेक विना सदा रहे आलममें,
एक नर उद्यमी अडोल बोल अंगमें;
एक नर कायम सशंक रन अंगनमें,
एक नर झुझत अशंक रहि जंगमें,
एक नर व्यसनी त्युं एक निर्व्यसनी हे,
एक इंद्रीजीत एक रसिक अनंगमें;
देखे विन सब हे समान हरदान कहे,
सत्य पहेचान परे काजके प्रसंगमें. २

(लक्ष्मी ऊमा संवाद,-इ.)

श्री कहे उमाको तेरो कंत समश्यान बसे,
उमा कहे तेरो कंत परतीयके उरमें,
स्वामी तिहारो करे भूतनको सदा संग,
हाल तेरो कंत बसे दासीकी हजुरमें;
नगन तिहारो नाथ द्रगनमें लाल ज्वाल,
करे पटचोरी नैन कायम कसुरमें;
भोलो कंत तेरो सब जानत अकामी क्रोधी,
कपटी कृष्ण कामी यामें क्या तुं मगरुर हे. १

हरिकेश

(मोहिनी स्वरूप-कवित्त)

लटकी लटकपर, भौंहकी फरकपर,
नैनकी ढरकपर, भरि भरि डारिये,
हरिकेश अमल, कपोल बिहसनपर,
छाती उकसनपर, निसक पसारिये,
गहरौही गतिपर, गहरौही नाभिपर,
हाँ न हरकती प्यारे नैसुक निहारिये,
एक प्राणप्यारीजूकी कटी लचकीली पर,
ढीली ढीली नजर सभारे लाख वारिये १

हरिचरणदास

(श्रीराधाकृष्ण भक्ति-शृंगार)

मो हिय राधा कान्हको, निशदिन बसो बिहार,
जिहिं सुमिरत प्रत्यूहके, बिनसत जूह अपार १

श्रीराधा बाईं तरफ, तुलसि कज पदमाह,
कूल कलिंदीके लसत, कहू कदमकी छाह २

(सवैया)

तुलसीदल माल तमालसों स्याम, अनगते सुंदर रूप सोहाही,
श्रुति कुडलके मनिकी झलके, मुखमडलपै वरनी नहि जाही,
सखि देखि पियूप मयूपहुतें, सुखमा अति आननकी सरसाही,
बिहरे हरि गोपसुता सग कान्ह, निसि थितिमें बन बीथिनिमाही १

(कवित्त)

मूरतिको भेद अरु सूरतिको भेद नाहिं,
मोहनसो भेद मत बेदनिके ग्रामको,
नेह परिपूर वृषभानु-नादिनीको नूर,
देखि जात रूपको गरूर काम-बामको,
आनन अनूप वारिजातको है भूप किधौं,
भासे न समान उपमान सुधाधामको,

करुना अगाधा हरे संतनकी बाधा एसी,
कहे बिन राधा फल आधा कृष्ण नामको. १

आवति रमन साथ कुंजतें भवन प्रात,
मुखपें मयूखें फेली कंचन किनारीकी;
अरसाने गात रससानी कहे बात चाहि,
चाह भरि आखें लखि जाति नगवारीकी;
शोभातें सुधारी किधों चंदतें निकारी विधि,
जाके न समान छवि कामहूकी प्यारीकी,
राजे रूप भारी नेन निदकी खुमारी तुल,-
सची न उमारी वृषभानकी कुमारीकी. २

(उर्वशी उपमा.)

प्यो उर वसीसी औ सखी उरवसीसी छवी,
देखे उरवसीसी मन सराकि सराकि जात;
कंचुकी कसीसी वहु उपमा लसीसी रूप,
सुंदर धसीसी परयंकपे थिराकि जात,
कहे हरिचर्ण रही चमक वतीसी प्यारी,
जामें लगी मीसी हिय सौतिन दराकि जात,
भुजमें कसीसी सिंधु गग ज्यों धॅसीसी जाके,
सी सी करिबेमें सुधा सीसी सी ढराकि जात. १

(श्रीराम स्तुति.)

परम उदार दशरथको कुमार सव,
अंग सुकुमार कामरूप मदको हरें,
करुण निकेत करें दीननसों हेत सुख-
मांग्यो सुख देत जाको सेवन रमा करे;
उदधि बधाय लरि लंकहि छिनाय लीनी,
दीनी हे विभीषणको अवरज को धरे,
विधि पूजें पाय एसो चाहे रघुराय केती,
लंकन बनाय रोज रंकनको बितरे. १

हरिचंद.

(सवैया)

फार कमाल कराल करानन, साल विशालन चाल चली है,
हाल बिहालन ताल कमाल, प्रवालसे बालक लाल लली है,
गोर बिलोकन लोल अमोलक, लाल कपोलक लोल फली है,
बोलन चोल कपोलन डोल, गलोल गलोल खलोल गली है   १

हरिदत्त.

(रमा-पार्वती प्रश्नोत्तर)

भिक्षुक तिहारो कहा’ बलि मखशाला जहा,
सर्पनको संगी कहां’ है है क्षीरसागरमें,
एरी बहुरंगी चरवाहो कहा नाचत है’
जिन्हे तिरभंगी कहीं रहे है ग्वार गनमें,
चाकर चवैया कहां’ होय है सुदामा पास,
विषको अहारी कहां’ पूतनाके घरमें,
सिंधुसुता आन मिली, तर्कमों वितर्क करी,
गिरिजा मुस्कात जात हारी लिये करमें   १

(हरिनाम महिमा)

चारोंहि वेद पुराण अठारह, चौंसठ तंत्रके मंत्र विचारे,
तीन सो साठ महाव्रत संयम, मंगल यज्ञ करी पुर धारे,
योग वियोग प्रयोग उपासन, मैं हरिदत्त सभी निरधारे,
तिनोंहि लोकनमें सगरे फल, मैं हरि नामके ऊपर वारे   १

हरिदास (पहिला.)

(ज्ञान विवेक)

चंचल इंद्रपुरी सुख पायके, अंतकी बेर महादुख पाऊ,
जो सुखसें दुख चोगण होत है, सो सुखकेहु नजीक न जाऊ,
दाना चुंगायके पंख मरोडत, एसें चुगे पर मैं न रिझाऊ,
कहे हरिदास सुनो सब सज्जन, नां गुड खाउं ना कान विधाउ १

चोकति वीति इकोतरही, तब इंद्रकि आयुष होत पुरारी,
इंद्र चतुर्दश जो चलि जातहिं, ब्रह्माको वासर एक भयारी;
ए सबकूं डर कालको लागत, क्यों हरिदास तुं सोवे सुखारी,
तुच्छसी आयुष पाय चढ्यो मद, जीवनहिं डर राखे अनारी. २
जो कोउ काहुकी नीकि त्रिया तकि, लेत आलिंगन कामके मारे,
ताकों आलिंगन धर्म लेवावत, लोहके थंभ तपायके भारे,
आखिनमें कटु कांटे चुवावत, जो परनारिकुं दृष्ट निहारे,
यों हरिदास कह्यो ऋषि नारद, किजीए कर्म बिचारिके प्यारे. ३
हरि आप सबें अवतार धर्यो, जगभूमिका भार उतारनकूं,
गुरुरूप बनी सब बोधत हो, जग जीवकूं आप उधारनकूं;
यहि नाम नारायण नाव सही, भवसागर पार लगावनकूं,
हरिदास गुरु हरि म्हेर करो, निज आनंदसागर धावनकूं. ४

हरिदास (दुसरा.)

(जीवन सुधार.)

गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाज,
पायो न प्रसाद साधु मंडलीन जायके;
धायो न धमकि वृन्दा बिपिनके कुंजनमें,
रह्यो न शरण जाइ विठ्ठलेश रायके;
नाथजू न देखि छक्यो क्षणहू छबीली छबि,
सिंह पौरि पर्यो नाहि शीशहू नवायकै,
कहै हरिदास ताहि लाजहू न आवे जिय,
जनम गॅवायो न कमायो कछु आयकै. १

ठग केसे लडुवा ज्यूं चाखतहि मीठा होत,
एसेहिं संसार भोग पीछे पछतायो हे;
खाजकों खसोटि जैसे मूरखही मोद माने,
एसे नहि जाने दुःख सौ गुनो उपायो हे,
कसाइको बकरो ज्युं बकरीसुं प्रीत करे,
जानत नहि काल मुजे दृष्टिमें चढायो हे;
तातें हरिदास कहे कालको पशु हे जीव,
कहा भयो चार दिन आछो घास खायो हे. २

फलाने वरस हम फलानो नरेश देख्यो,
फलानेके ब्याह हम गयेते उतावरे,
फलानेकी नार एसी फलानेको एसो धन,
फलानेकी वस्तु हम पाई मन भावरे,
एसी एसी कथा करी जनम गमाइ देत,
बोत बात कीनी तामे ताकू कहा बावरे,
कहे हरिदास हरि नामकुं बिसारी देत,
ताहितें परेगो जमकिंकरके गावरे ३

(अस्तोदय)

को दिन जात हे पुत्र खेलावत, को दिन जात हे बात बनाये,
को दिन जात हे खावत सोवत, को दिन जात हे क्रोध चढाये,
को दिन जात हे नारिकु चिंतत, को दिन जात हे पेट उपायें,
यों हरिदास महा नर मूरख, रत्न मिलो तन देत गुमाये १

(हरिनाम हथियार)

राम नाम तल्वार, कमर किरतार कटारी,
शिव समरथको टोप, जुरे जुगदीश विहारी,
होठ हिले हर नाम, वदनपर जुल्म जुटारी,
धनुष बाधि सद्धर्म, कर्मकी फोज बिडारी,
हरि राम नामके चेत नर, कृष्ण नाम बदूक भर,
झट मार टार जम फोजकु, हर हर यह हथियार धर १

(पुष्पराशिमें परमात्मा)

केतकीमें वसे आप केशव कृपानिधान,
कुंजमें कल्यान सो तो कदममें हरि हे,
मोगरामें माधव मुकुद माल्तीके मध,
चबेलीमें चिदानंद चित् सुगध भरि हे,
गुलावमें गोपाललाल जाइमें जगतपुरुष,
परमेश परब्रह्म परम उपकारी हे,
चपेमें चतुर्भुज चारो चित्तरूपी रहे,
सेवतीमें श्यामसुदर सदा सुखकारी हे १

(वसंतागमन-सवैया.)

कोमल कंजनकी कलिका, काहे न चित्त तहां तु रमायो,
मंजरि मंजु रसालनकी, तिनकौ रस क्यों नहि तो मन भायो,
फूलति और अनेक लता, हरिदास जु आयो वसंत सुहायो,
छोडि गुलावनको वन तुं कढ, सेरुवापै किहि कारण आयो. १

(शृंगार सौन्दर्य-दोहा.)

सुधर सुहागिनि वट विटप, पूजति भरी उछाहि,
परति पावरी प्रेमसों, भरत भांवरी नाहि. १
खग मृग गण चित्रित जिते, निरखति तिते सहेत;
पै न स्वयवर चित्रपें, चित्रमुखी चित देत. २
चंचल चखनि चितौनिकी, जघ युगल द्युति देख,
कदली वदली शीश जे, कदली वदली वेप. ३
गुड मीठो सरिता गहरि, तंत उभय समतूल,
चाहत द्वै द्वै चोवटी, सो तो वने न मूल. ४

हरिसिंह.

(ज्ञानकटारी.)

लोह कटारि सवें कोउ वाधत, ज्ञान कटारि सुदुर्लभ भाई,
लोह कटारि जु खाइ मरे जन, सो अवतार धरे भव भाई;
ज्ञानकटारिकुं खावत है सँत, ब्रह्मस्वरूप अखंड हो जोई,
फेर कबू जनमे न मरे, हरिसंग संताप कछू न रहाई. १

(कवित्त.)

ज्ञानको प्रकाश सो तो हीरा मणि रत्न जेसो,
ताकों अंधकार केत पामर ठेराइके,
ऐसोहि अन्याय करें ताहिसें चोरासि फिरें,
वेर वेर कहा कहों तोहि समुजाइके;
धिक तेरो जीवन हे मिथ्या नरदेह धारि,
मरे क्यौ न मूढ तुं कटारि पेट खाइके;
हूंतो हरिसंग सुख दु:खहूतें न्यारो खाइ,
ज्ञानकी कटारि सतगुरु गम पाइके. १

हीरा मणि रत्न सो तो जडहि प्रकाश आपु,
आपकों न जाने तासु जानो एकदेशी है,
ज्ञान तो स्वयप्रकाश आपकु विजाने पुनि,
चिदघन एक रस शुद्ध सर्वदेशी है,
जान तु स्वरूप तेरो अस्ति भाति प्रिय ऐसो,
दु स्वरूप मानि रह्यो तेरी मति कैसी है,
ऐत हरिसिंह मिथ्या देहकु तू माने मूढ,
मेरो करो माने तो कटारि स्वाय जेसी है २
भक्तिमो न जाने प्रभु न्यारो करि माने तासें,
होत है हरिको द्रोहि फेर चित्त चाइके,
भक्ति अरु ज्ञान इक भिन्नहि न जानो कोउ,
एकता है भक्ति कृष्ण कहि गीता गाइके,
दोकहु रिझावे राधे कृष्णको विहार गावे,
निंदामें स्तुति का माने मनमें सराइके,
ऐत हरिसिंह मिथ्या देहमें अध्यास करी,
मरे क्यों न मूढ तु कटारि पेट खाइके ३

हरिश्चद्र.*

(काव्यज्ञानकी एकता)

पहिले ही जाय मिले गुनमें श्रवण फेर,
रूप सुधा मधि कीनो नैनहू पयान है,
हसनि नटनि चितवनि मुसुकानि सुघ-
राई रसिकाई मिलि मति पय पान है,

---

* उक्त ग्रंथमें कोइ कविने कहा है कि,-

(दोहा)

चन्द टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार,
पै दृढ श्री हरि चन्दको, टरै न सत्य विचार १
जो गुन नृप हरिचन्दमें जगहित सुनियत कान
सो सब कवि हरिचन्दमें, लखहु प्रतच्छ सुजान २

मोहि मोहि मोहन मईरी मन मेरो भयो,
हरिचंद भेद ना परत कछु जान है;
कान्ह भए प्रानमय प्रान भये कान्हमय,
हियमै न जानौ परै कान्ह है कि प्रान है. १

जियपै जु होइ अधिकार तो बिचार कीजै,
लोकलाज भलो बुरो भले निर्धारिये,
नैन श्रोन कर पग सबै परवश भये,
उतै चलि जात इन्है कैसे कै सम्हारिये,
हरिचंद भई सब भातिसों पराई हम,
इन्है ज्ञान कहि कहो कैसे कै निवारिये;
मनमै रहै जो ताहि दीजिये बिसारि मन,
आप बसै जामै ताहि कैसे कै बिसारिये. २

(चातुरी)

काहु एक ललना जवाहिर खरीदवेको,
आई हुती सुगम सुहाय हाटवारेकी;
करमें लीएतें भयो मुक्ता प्रवाल पुनि,
गुजासो देखायो डीठ परी द्रग तारेकी,
भनि हरिचंद मोतीचूरसो देखायो फेर,
हास्यके परेतें मोल लोल नंग भारेकी;
बीजक नफाकी औ खरीदकी विचारे कौन,
खबरी भुलानी योंही जौंहरी बिचारेकी. १

(लज्जित नवपरिणिता-घनाक्षरी)

आई केली मंदिरमै प्रथम नवेली बाल,
जोराजोरी पिय मन मानिक छुडाए लेति;
सौ सौ बार पूछे एक उत्तर मरूके देती,
घुंघटके ओट जोति मुखकी दुराए लेति,
चूमन न देति हरिचंदै भरी लाज अति,
सुकुचि सुकुचि गोरे अंगहि चुराए लेति;
गहतहि हाथ नैन नीचे किए आचरमै,
छविसों छबिली छोटी छातिन छिपाये लेति. १

हरिराम.

(संधि-विग्रह)

सिद्धि मिलै द्वै मित्त, मित्त सेवक जय जानहु,
मित्त उदासी मिल्त, मिल्त कछु लक्षि न मानहु,
मिलै मित्र अरु शत्रु, बहुत पीडा उपजावहिं,
दास मित्रके मिल्त, काज सिधिको नर पावहि
है सकल नाश द्वै दास जहँ, हानि दास सबके मिले,
हरिराम भनै है हारि सहि, दास रु अरि जौ कहुँ मिले १

हरिलाल.

(याचना विचार)

मागत देह दधीचि दइ, यनि आइ भली तिनहूपै विदाई,
पावन द्वार गये बलि केशव, भूमि दई अरु पीठि न पाई,
हरिलाल कथा हरिचंदहुकि, सुनि सर्वस दिन बात चलाई,
राखिवो तो कठिनाइ नहिं, रस राखि विदा करिवो कठिनाई १

हाफिज़

(गुणमहत्व वियोग, ३)

फूल विन बाग जैसे वाणी विन राग जैसे,
पानि विन सर जसे रूप विन रग है,
धन विन साज जैसे सोचे विन काज जैसे,
राजा विन राज जैसे नदी विन तरग है,
एक अंगी प्रीत जैसे वेस्या विन रीत जैसे,
प्रेम विन मीन जैसे शोभा विन रग है,
प्यारी विन रैन जैसे हाफिज़ विचारी देखो,
शील विन नैन अरु साधु विन सग है १
नर नीको शीलवान घर नीको धनवान,
कर नीको दानयुत कहत जहान है,
रूपवान नारि नीकी द्वारे चार गारि नीकी,
शीतल वयारि नीकी तेज जम भान है,

विष बुझो तीर भोंडो वैद बीना पीर भोंडो,
ताल बिन नीर और मौनी विदवान है;
रागी भोंडो तान बिन तलवार भोंडि म्यान बिन,
हाफिज अधिक भोंडो मित्रको पयान है. २

प्यारेजी वियोगमें तिहारे चित चैन गयो,
भूले खानपान सब मुरझाई छाई है;
घूमि घूमि प्रेमसों निहारिबेकी गौन समें,
तेरे हाय एक पल सुधि नहि जाई है,
पंखहू न दीने राम कैसें उडि मिलै जाय,
हाफिज चलत अब कोऊ ना उपाई है,
मिलिबो बिछुरी और मिलिकें बिछुरी जैवो,
विधनाके वश हो तासों का बिसाई है. ३

(वर्षामें विरह.)

चातक मोर करै अति शोर, उठी घनघोर है शाम घटा,
चमकै बिजुरी अति जोर भरी, अरु लागि झरी लिये ठाट ठटा;
शोक भरी पंछताय खडी, विरहागी जरी शीर खोलै लटा,
कराहिये हाय कर पछिताय वह, हाफिझ देखिके सूनी घटा. १

(प्रेम.)

हाफिझ प्रेमके रोगकी, औषधि लागत नाहि;
ससकि ससकि मरि मरि जिये, उठै कराहि कराहि. १

हिरालाल.

(पात्र कुपात्र)

चंचल लबारी चोर चुगल हरामखोर,
कुडेही कुपात्र ऐसे तेसेकूं न धारिये,
गीताही पुरान श्रुति निंदाही करत रहे,
ऐसेही अधमहूको संगहूते हारिये;
पुत्री अरु भगिनी पर दुष्ट जो कुदृष्टि करे,
दोस्तीमें दगा वचन चूके वो निवारिये,
हिरालाल कहे यारो चातुरकूं शीख देनी,
ऐसेही मनुष्य वाकुं जूता दो दो मारिये. १

आंबेको वृक्षको जो पथ्थरसें मारे तोऊ,
देता है अमृत फल अवगुन न आने है,
पृथ्वीको पेट फोडी पानीकु निकासत सो,
जगत जिवावत तो ममता न माने है,
केतो दुख सहत कपास जग सुख काज,
वस्त्र बिन कैसी लाज रैयत जहाने है,
कनक पराये काज ताडन औ जाडन सहे,
एसे उपकारी दुखहीको सुख माने है २

हेम

(दाम महिमा)

दामहीसों आठो जाम बुद्धिको प्रकाश होत,
दामहीसों सब ठोर होत बडो नाम है,
दामहीसों भैया बधु आय मन रुजु होत,
दामहीसों बनहूम हेत सब काम है,
दामहीसों सभामाहि आदरको पावत हे,
दामहीसों घरमाहि होत बिसराम है,
कहे कवि हेम यह नीके कै निचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्वा दामहीमें राम है १
दामहीसों पितापर पुत्रहुको हेत होत,
दामहीसों पुत्रपर हेत खामोख्वाम है,
दामहीसों गयो काम हाथ फिरि आयत है,
दामहीसों सुयश पसार्या धामोधाम है,
दामहीसों साहिबको सेवकहु आय मिले,
दामहीसों राग द्वेष मिटत जुखाम है,
कहे कवि हेम यह नीक कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्वा दामहीमें राम है २
दामहीसों देवता बिमान बैठे सोहत हे,
दामहीसों लोकपाल करे धर्न काम है,
दामहीसों पांडु सेतु यम और दीने दान,
दामहीसों धर्म अर्थ काम मोक्ष धाम है,

कहे कवि हेम यह नीके कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्वा दामहीमें राम है

* * * ३

दामहीसों अश्व अरु हाथीपर बैठत है,
दामहीसों हिये सोहे मोतिनके दाम है,
दामहीसों भूषण अमोल नाना भांतिनके,
निशीदिन मागिवेको चाहत सवाम है,
दामहीसों दान देत याचक औ विप्रनको,
दामहीसों वंदी यश बोले टामे ठाम है;
कहे कवि हेम यह नीके कै विचारी देख्यो.
मेरे भाये बिसो विस्वा दामहीमें राम है. ४

दामहीसों बने रंग शीश औ हवा महेल,
दामहीसों ठोर ठोर मोतिनकी झाम है,
दामहीसो नृप होय बेठत है सभा विच,
दामहीसों तेज वढयो मानों जैस काम है,
दामहीसों नटुवा नृत्य करत नाना भाति,
दामहीसों गुणिकाहु करती सलाम है,
कहे कवि हेम यह नीके कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये विसो विस्वा दामहीमें राम है. ५

दामहीसों दक्षिणमें मंदिरहु खूब बने,
किल्ला चितोड रन भौर एक ठाम है,
आगरा प्रयाग मदराज कलकत्ता कोटा,
बुंदी और जूनागढ चरनाट गाम है,
जलमे बनी है चारु संगत अमरसर,
जैपुर बडोदा जाओ ग्वालियर नाम है,
कहे कवि हेम हय नीके कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो विस्वा दामहीमें राम है. ६

जाकी दो अधेली च्यार पावली रही है पैठ,
आठक दुअन्नी आना सोलैको दिखात है,
बत्तीस अधन्नी ताकी चोसठ पवन्नी होत,
एकसो अट्ठाइस अधेलाहीकों गात है;

दोय सत छप्पन छदाम जाके देखियत,
दमडी सु पाच सत बारह दखात है,
कठिनसो भैया लगे मनको हरैया ऐसो,
रूपैको रुपैया भैया कापैं दियो जात है ७

(जन्नरसना-कवित्त)

जोर परे जोर जात, भार परे भूमि जात,
झूमि जात यौवन अनंग रग रस है,
कहै हेमनाथ सुख सपति विपति जात,
जात दुख दारिद समूह सरबस है,
गढ गिरि जात गरुआइ औ गरब जात,
जात सुख साहिबी समूह सरबस है,
बाग फटि जात कुवा ताल पटि जात,
नदी नद घटि जात पै न जात जग जश है १

एक रसनामें जाम जपत हों रामें तामें,
तेरो यश जोरि कामें कबहू बिसारि हों,
कहै हेमनाथ नरनाथनके आगे जाय,
तेरो जश जाहिर जवाहिर पसारि हों,
कौन देहै मोल मोहिं केहरी कल्यानसाहि,
नामसों नगीना कहि याके कान डारि हौं,
सापिनि सुभाह गुण गारुड निहारे पढि,
सूम उर बिवरमों नाहर कारि डारि हौं २

क्षेम.

(नीतिकी बरकति)

ऊचो कर करै ताहि ऊचो करतार करै,
ऊनी मन आनै दूनी होति हरकति है,
ज्यों ज्यों धन धरे सचे त्यों त्यों बिधि खरो खैच,
लाख भाति धरै कोटि भाति सरकति है,
दौलति दुनीमें थिर काहूकी न रही क्षेम,
पाछे नेकनामी बदनामी खटकति है,
राजा होइ राइ होइ साह उमराइ होइ,
जैसी होति नेती तैसी होती बरकति है १

(वसंत-शृंगार वर्णन)

फूले कचनार सहकार औ अपार वन,
शीतल सुगंध मंद मारुत कंपायोरी;
चंदनके गार और सुमन सुगध सार,
हार मुक्तानके वितान तन तायोरी,
क्षेम कवि चंचरीके गुंजै और कुंजै पिक,
आछे सेज असन वसन भोन भायोरी;
आयो मधुमास मोहि करै उपहास मधु,
मधुपुर माधव वसंतहू न आयोरी. १

पल्लव पील पालकी नगारे कूक कोयलकी,
सुमन सिपाही सैन्य साजीकै सिधायो है;
मधुबन नकीब बोलै बोलै वायु चोपदार,
तोपदार तरुवर तैयारी करि तायो है;
क्षेम करण चादनी चमूकी चाव देतो है,
लेतो है अंकोर नाहि हरवल शशि आयो है;
वैरीआ वसंत वरजोरी व्रजराज विन,
मदन महीप मतवारो उठि धायो है. २

सेवती निवार सेत हीरनकी हार जूही,
यूथ औ अनार मोती विद्रुम लसंत भो,
पन्ना पुखराज पत्र चंपक समाज फाल,
मानिक गुलाब नील इंदीवर गंत भो,
माधवी नमूनो गउभेद कल सूनो दूनो,
औध वाटिका बजार पूनो विलसंत भो;
यतन जलूस जोर रतन रसाल रंग,
अतन अनंद हेत जौहरी बसंत भो. ३

प्रकीर्ण पद्यसंग्रह.

(अकबरका समय *)

तान हद मिया तानसेन, हद बुद्धिवल वीर,
शाह हदा शा अकवरा, टोडरमल्ल वजीर ।

(गंग-वीरवल भेट)

आगु सुदामा कृष्ण थे, गग बीरबल फेर,
ता दिनमें तादुल हते, यह दिननमें वेर १

(संस्कृत-भाषा महत्व)

सस्कृत स्वकिया स्नेहसुख, अचल शौचकर शात,
प्राकृत परकिय प्रीति पुनि, अचर सोचकर शात १

स्वकिया सुख शशिपुर्न सम, शुक्रशि परकिय प्रीत,
अल्फ पल्कसी तनु तनक, कुसाध्य काल अनित्य २

भाषा शाखा हे सही, सस्कृत सोई मूल,
मूल रहत हे धूलमें, शाखामें फलफूल ३

का भाषा का सस्कृत, विमन चाहिये साच,
काम जो आवे कामरी, का ले करिय कमाच ४

(कवि-काव्य महत्व)

पाया हीरा लालका, आया बेचन काज,
बिना लिया छक्कड लगा, शौरि दगाहि वाज १

जो पूछो सच बात तो, सोचेमें कहा शेर,
सुनिये शाह सुल्तान तुम, आपहि मेरा चोर २

शौरीका हीरा हिरा, कविका हिरा कर्वन,
तरुनि हीरा तन अरु, पद्मिनि मन पावन ३

गौरी ग्राहक रत्नकी, गुन ग्राहक राजान,
कविता ग्राहकको रसिक, भूपति भोज समान ४

। * यह दो दोहामें अकबरका समय सूचित किया गया है
बीरबल ब्राह्मण और गोसा मसकरा बीरबल और गग एकी गुरुके उधर
पढे थे जब बीरबलको प्रधानपद मिला तब गंगने यह दोहा और
अपने मकानकी पास बेरका झाड था, उसका बेरे बीरबलकुं भेजा था.

हिरा गिराकी गंठडी, गॅवारमें मत खोल;
झौरी बिन कौरि न मिले, कौस्तुभकाभी मोल. ५
हथ्थी हीरा काव्य है, दे जाके दरबार;
मा कर मूल ममूलका, मूल न मिले बजार. ६
तन संदुक गुन रतन चुप, ताही दीजे ताल,
ग्राहक बिना न खोलिये, कुंची बचन रसाल. ७
रहत न घर सुत वाम धन, तरवर सरवर कूप,
जश शरीर जगमें अमर, भव्य काव्य भवरूप ८
कामधेनु सो काव्य हे, शब्दारथसो दूध.
सुख माखन भोगत सु घी, बचन सुधानिधि शुद्ध. ९

(प्रेम प्रशंसा)

प्रेम तत्व सत्ता सकल, फैल रही संसार,
प्रेम सधे सोइ लहे, परम ज्योतिको पार. १
पशु पच्छी सब प्रेम बस, तजत आपको प्रान;
धिक तिहि बिछुरे ना मरे, तजी देह यह जान. २
मित्र दृष्टिको परखिये, उच्च नीच सम हेत
जाहीकौ जैसी लगन, सो तैसो फल देत ३
खेल सेलके वास पर. वरत धार तलवार,
मन नटवा साची सुरत, चढे सो उतरे पार ४
प्रेम कुंड पावक भर्यो, मनों सु यह अनुमान;
पर पर कह्यो प्रवीन ज्यूं, पर पर समज्यो प्रान. ५
बेदरदी जरदी समर, ताकों लगे न तीर,
दरदी घट पट हे नहीं, कैसे बचे शरीर. ६
सीत घाम जलमें सदा तपे जपे मुख नाम,
चले जु याही रीतसें, मिले प्रेमको धाम. ७
बन बिचार मन मानसर, भर्यों प्रेम बहु बार;
सुख मुगता हंसा बिरह, निश दिन चुगत किनार. ८
दारा और सिकंदरहि, फूलपना महमद;
बहराम रु मजनू किया, प्रेम सु हद बेहद. ९
प्रेम पियाला जिन पिया, ताको शुद्ध न बुद्ध,
बानासुर तनया छकी, लखी छबी अनिरुद्ध. १०

जैसे निर्मल होत है, कनक अनलके संग,
तैसे प्रेमी विरह मल, चढे सुरसको रग ११
और रग उतरे सबे, ज्यों दिन बीतत जाय,
विरह प्रेम बूटा रचे, दिन दिन बढत सवाय १२
प्रेम रूपए ईश्वर करे, ईश्वर उपल समान,
कोऊ प्रेम प्रतीत बिन, लहु न पद निरवान १३
निश दिन दृग वरसत रहे, सरसत रहे सनेह,
तन परसत तरसत रहे, मानहु चातुक मेह १४
केसर जावक मलय धन, मजन मिटे ज्यु नाग,
मिलन बिना नाहिन मिटे, मिल बिछुरनको दाग १५
नित फमल गृह्त हरफ, यही प्रेमका मूल,
प्रेम गये सूके नहिं, वाके मुखपर धूल १६
पास न ऊभो पारधी, अग न लगो बान,
मे तुज पूछु हे सखी, किस विध गये दो प्रान १७
जल थोडो नेहा घनो, लगे प्रेमके बान,
तु पी तु पी कर रहे, इस विध गये दो प्रान १८

(पतिव्रता प्रशंसा)

पतिव्रताको पीयसों, अतरगतिको स्नेह,
प्रीतम अपने मुख थकी, अन्य नाम नहि लेह १
पतिव्रता अति दुबरी, कारी कुचिल कुरूप,
वारी डारों वापर, अमरनगरके भूप २
रूप राशि त्रिलोककी, पतिव्रताके अग,
तासों पल छाडे नहिं, रसिक सुहागी सग ३
पतिव्रताकी पात विनु, नाहिन भक्त उधार,
कान कहा किन हो सुनी, कोऊ उतरो पार ४
पतिव्रताके सगते, पावत प्रेम प्रकाश,
तन मन धन अर्पो तहा, तजी सबनकी आश ५
पतिव्रता रस लाडली, जाके वस हे पीउ,
सोउ कृपा चितमें रखे, नाही न डगमग जीउ ६

(पतिव्रता दृढता)

सज्जन मेरे एक तु, अवर न दूजो होय,
जो सज्जन दूजो करु, तो कुल ऊभल होय १

तुं सज्जन तुं मित तुं, तुं प्रीतम तुं प्राण;
हियडा भीतर तुं रमे, भावे जाण न जाण. २
मनरंजन सब जगतमें, तुम सब सूख निधान;
मेर मन तुमही वसों, साहेबजीकी आन. ३
मोरे मन इच्छा हती, निमष न छोडुं पाय;
बिछुरन अंक विधना लख्यो, सो कहा किणभि चलाय.४
बहुत कहाहिव हित लिखुं, संभारजो सदैव,
थोडा अक्षर जाणजो, तुम समीप मुज जीव. ५
तुं मत जाणे सज्जनां, परी न घडि मुज चित्त,
मरुं तोय समरत मरुं, जिवुं तो समरुं नीत. ६
जो कमल रवि वीसरे, पाणीमज थयांह;
पपियाहू घन वीसरे, तुं मुज ह्रदियामाह. ७

(परस्त्री संग निषेध.)

परनारी परतख बुरी, रखे लगावो अंग;
राणो रावण खपि गयो, परनारीके संग. १
परनारीकी प्रीतडी, साहिब मत दे संग;
वाचा चूके तन दहे, देही नावे रंग. २
जिणने शनीसर बारमो, परनारीसुं नेह;
आंख्या उंघ न जीव सुख, पल पल दाझे देह. ३
आपो धूल मिलाइओ, सयणां दीधी छार;
पग पग माथा ढांकणो, जिण जोई परदार.

(प्रस्ताविक प्रबोध.)

कूट-क्रोधि-शिशु-मुकुर-प्रिया, सजन-निशा-दुख-फाग,
होत शियाने व्हावरे, नवे ठोर चित्त लाग. १
पान पुराना घी नया, अरु कुलवंती नार;
चोथी पीठ तुरंगकी, सरग निशानी चार. २
गुण जोबन झगरत चले, राजनके दरबार;
गुणको तो आदर मिला, चला रूप झख मार. ३
जोबन था जब रूप था, जोवत थे सब लोक,
जोबन रूप गंवाइके, बात न पूछे कोय. ४
मन भागो चित ऊतर्यो, फोगट करवी आल;
जे फल तूटा तरुवरा, ते किम लग्गे डाल. ५

विद्याहुदो एक गुण, विण भारे महार,
श्रोताको मन रीझवे, आतमको आधार ६
आया आदर बेसणो, वळि झाझा जीकार,
मिल्यिा हस कर बोल्णो, ए उत्तम आचार ७
केरी मिसरी सारखी, ए जाणे इक मूख,
अति चाखी अवगुण करे, थोडी चाखे सूख ८
गन चचल मन चपल है, मन राजा मन रक,
पहिले मन जु समर्पिये, तो प्रभु मिले निशक ९
पिय दर्शन आनदसें, गयो सकल दुख दद,
नेन नेनमें सुख रहे, फूले हे मकरद १०
इश्क मशक खासी खसक, खेर खून मधुपान,
इते छुपाये ना छुपे, होते प्रगट निदान ११
काहे पर निंदा करे, बांधी बात न छेर,
तुझे पराइ क्या पडी, तु आपणी नबेर १२
निंदरा कवण न छेतर्या, जोवन किण न विगुत,
धण ओ भीळ हरीविहं, प्रीतम सुवे निर्चित १३
लिख पहिलो तन धन दुजो, विधा पंचम स्थान,
यौ उपदेशहि देत जो, जगती गतिके ज्ञान १४
अरि नारी अरु मित्रके, घर हे हारोहार,
जोतसि इसै क्या कहा, जानत सब ससार १५
मतंगिनी थोहितागसी, शखिनि शनी निशक,
चित्रिनि चितहर शुक्र सम, पद्मिनि पूर्ण मयक १६
जन तु अपने जन्मदिन, करले उच्छव आप,
मरने दिनतौं सबहि मिल, लड्डु खायगे बाप १७
आया कुछ लाया नहि, गया गया जगरोग,
एसे जनके मरन दिन, बिन कहा सुमरन जोग १८
उच्छव सबके मरन दिन, निज घरमेंही होय,
जगमें उच्छव जन्मदिन, एसा विरला कोय १९
अहो रात जागृत खडे, मम रक्षक महाराक्ष,
यों कह सुख सोवे सदा, बालक मातासक्त २०
कुलदीपक होना कठिन, देशदिपक दुर्लभ,
जगदीपक जगदीशको, अश मनुष्य अलभ्य २१

तुं सज्जन तुं मिंत तुं, तुं प्रीतम तुं प्राण;
हियडा भीतर तुं रमे, भावे जाण न जाण. २
मनरंजन सब जगतमें, तुम सब सूख निधान;
मेर मन तुमही वसों, साहेबजीकी आन. ३
मेरे मन इच्छा हती, निमष न छोडुं पाय;
बिछुरन अंक विधना लख्यो, सो कहा किणभि चलाय. ४
वहुत कहाहिव हित लिखु, संभारजो सदैव;
थोडा अक्षर जाणजो, तुम समीप मुज जीव. ५
तुं मत जाणे सज्जनां, परी न घडि मुज चित्त,
मरुं तोय समरत मरुं, जिवुं तो समरुं नीत. ६
जो कमल रवि वीसरे, पाणीमज थयांह;
पपियाहू घन वीसरे, तु मुज ह्रदियामाह. ७

(परस्त्री संग निषेध.)

परनारी परतख बुरी, रखे लगावो अंग;
राणो रावण खपि गयो, परनारीके संग. १
परनारीकी प्रीतडी, साहिव मत दे संग;
वाचा चूके तन दहे, देही नावे रग. २
जिणने शनीसर बारमो, परनारीसुं नेह;
आंख्या उंघ न जीव सुख, पल पल दाझे देह. ३
आपो धूल मिलाइओ, सयणां दीधी छार,
पग पग माथा ढांकणो, जिण जोई परदार.

(प्रस्ताविक प्रबोध.)

कूट-क्रोधि-शिशु-मुकुर-प्रिया, सजन-निशा-दुख-फाग;
होत शियाने व्हावरे, नवे ठोर चित्त लाग. १
पान पुराना घी नया, अरु कुलवंती नार;
चोथी पीठ तुरंगकी, सरग निशानी चार. २
गुण जोबन झगरत चले, राजनके दरबार;
गुणको तो आदर मिला, चला रूप झख मार. ३
जोबन था जब रूप था, जोवत थे सब लोक;
जोबन रूप गंवाइके, बात न पूछे कोय. ४
मन भागो चित ऊतर्यो, फोगट करवी आल;
जे फल तूटा तरुवरा, ते किम लगे डाल. ५

विद्याहुदो एक गुण, विण भारे भंडार,
श्रोताको मन रीझवे, आतमको आधार ६
आया आदर देखणो, वळि आज्ञा जीकार,
मिठियां हस कर बोल्णो, ए उत्तम आचार ७
केरी मिसरी सारखी, ए जाणे इक मूल,
अति चाखी अवगुण करे, थाडी चाखे सूख ८
मन चचळ मन चपल है, मन राजा मन रंक,
पहिले मन जु समर्पिये, तो प्रभु मिले निशंक ९
पिय दर्शन आनंदसें, गयो सकळ दुख द्वंद,
नेन नेनमें सुख रहे, फूलो हे मकरंद १०
इशक मशक खासी खसक, खेर खून मधुपान,
इते छुपाये ना छुपे, होते प्रगट निदान ११
काहे पर निंदा करे, बाधी वात न छेर,
तुझे पराइ क्या पडी, तु आपणी नवेर १२
निंदरा कवण न छेतर्या, जोवन किण न विगुंत,
घण ओ भील हरीविई, प्रीतम सुवे निर्चिंत १३
लिख पहिलो तन धन दुजो, विद्या पचम स्थान,
यौ उपदेशहि देत जो, जगती गतिके जान १४
अरि नारी अरु मित्रके, घर हे हारोहार,
जोतसि इसैं क्या कहा, जानत सब ससार १५
मतागिनी लोहितागसी, शंखिनि शनी निशंक,
चित्रिनि चितहर शुक्र सम, पद्मिनि पूर्ण मयंक १६
जन तुं अपने जन्मदिन, करले उच्छव आप,
मरने दिनतों सबहि मिळ, लड्डु खायगे बाप १७
आया कुछ लाया नहि, गया गया जगरोग,
एसे जनके मरन दिन, बिन कहा सुमरन जोग १८
उच्छव सबके मरन दिन, निज घरमेंही होय,
जगमें उच्छव जन्मदिन, एसा विरला कोय १९
अहो रात जागृत खडे, मम रक्षक महाशक्त,
यों कह सुख सोवे सदा, बालक मातासक्त २०
कुलदीपक होना कठिन, देशदिपक दुर्लभ,
जगदीपक जगदीशको, अंश मनुष्य अलभ्य २१

मनोरंजक मुकरियां.

(सखीकी २७ समस्याओं.)

अर्ध निशा वह आयो भोन, सुंदरता वरने कहि कोन;
निरखतही मन भयो अनंद, क्यों सखि सज्जन ना सखि **चंद.**

खुल गइ गांठ खुले नहि खोले, जहा तहा मेरे संग डोले;
हिये विराजत होय न भार, क्यों सखि सज्जन ना सखि **हार.**

दासीतें में मोल मंगायो, अंग अंग सब खोल दिखायो,
वासों मेरो भयो जु मेल, क्यों सखी सज्जन ना सखि **तेल.**

शोभा सदा बढावनहारा, आंखिनतें छिन होत न न्यारा;
आठ पहर मेरो मन रंजन, क्यों सखि सज्जन ना सखि **अंजन.**

सिगरि रेन वह मो संग जाग्यो, भोर भयो तो बिछुरन लाग्यो;
वाके बिछुरत फाटे हिया, क्यों सखि सज्जन ना सखि **दिया.**

छठे छ मासे मम घर आवे, आप हिले अरु मोहि हिलावे;
नाम लेत मोहि आवे शंका, क्यों सखि सज्जन ना सखि **पंखा.**

निशदिन मेरे उपर रहे, दोऊ कुच लै गाढे गहे,
उतरत चढत करत झकझोली, क्यों सखि सज्जन ना सखि **चोली.**

समधनकों हाथीको भावे, छोटो मोटो नांहि सुहावे,
ढुंढ ढाढके लाई पूरा, क्यों सखि सज्जन ना सखि **चूरा.**

सिगरी रेन छातिपं राखा, उसका रसकस मेंने चाखा,
भोर भयो तब दियो उतार, क्यों सखि सज्जन ना सखि **हार.**

धमक चढे सुधबुध बिसरावे, दावत जांघ बहुत सुख पावे;
अति बलवंत दीननको थोरा, क्यों सखि सज्जन ना सखि **घोरा.**

जाय छातपें पलंग बिछायो, वो निगोडा भो ढिग आयो;
मेरो वाको पड गयो फंदा, क्यों सखि सज्जन ना सखि **चंदा.**

आठ पहर मेरे ढिग रहे, मीठी प्यारी बातें कहे;
श्याम बरन अरु राते नेना, क्यों सखि सज्जन ना सखि **मेना.**

अति सुरंग हे रंग रंगीलो, हे गुणवंत बहुत चटकीलो;
रामभजन विन कभी न सोता, क्यों सखि सज्जन ना सखि **तोता.**

रात समय मेरे घर आवे, भोर भये वह उठ कर जावे,
यह अचरज है सबसे न्यारा, क्यों सखि सज्जन ना सखि तारा
जब मेरे मदिरमें आवे, सोते मुझको आन जगावे,
पढत फिरत वह विरहके अच्छर, क्यों सखि० ना सखि मच्छर.
जा बिनु नेन रहे नहि नीके, रूप रग सब सग ताहिके,
नेह चीकने अति मनरञ्जन, सखि कोइ सज्जन ना सखि अजन
कनक तनक जाके है आगें, नेह भरी बतियन निशि जागें,
शीश ढुलाइ हरे जो हियो, सखि कोइ सज्जन ना सखि दीयो
जीवन सब जग जासों कहे, वा बिनु नेकु न धीरज रहे,
हरे छिनकम हियकी पीर, सखि कोई सज्जन ना सखि नीर.
चाट चल्नम पगाजु पाया, खोटा खरा किसे न दिखाया,
अब गिरि गया करोंगी कसा, सखि कया सज्जन ना सखि पैसा
कैसी रुचिर चद्रिका सोहे, बरन सावरा मनका मोहे,
मधुर बोल्न चितको चोर, सखि कोइ सज्जन ना सखि मोर.
अति निर्मल सुदर सुखदायक, तनकी तपन बुझावन लायक,
निशिको पति आनदको कद, सखि कोइ सज्जन ना सखि चद.
बिनु आये सबही सुख भूले, आयेतें अग अग सब फूले,
सीरी भई लगावत छाती, सखि कोइ सज्जन ना सखि पाती.
निशदिन रहे जु वाको ध्यान, जो कछु आवत सुनिये कान,
हियो हुलसि अरु उमगत छाती, सखि कोई सज्जन ना सखि पाती.
सुंदर सबही विधि करि नीको, सबही भातिन प्यारो जीको,
वा बिन सब लागत है फिको, सखी कोई सज्जन ना सखि टीको.
जबतें भनक परी मो कान, तबतें भूले सुधिबुधि ज्ञान,
लाग्यो चितमें वाको ध्यान, सखि कोइ सज्जन ना सखि तान.
देखी रूप मन अतिही हरखो, शोभा ताकीही को करखो,
लखि चित बिन किनो मैं अर्पन, सखि कोई सज्जन ना सखि दर्पन
रसनाकों रस अति उपजावे, छिनमें तनके ताप बुझावे,
देखतहीं सबही सुधि बिसरी, सखि कोइ सज्जन ना सखि मिसरी.
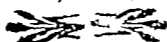
प्रश्नोत्तर-(पहेलियां.)

आधा भक्तन मुख बसे, आधा गुनियन साथ;
वाहि पसारी देत हे, पुडी बांधिके हाथ.—हर-ताल.

हाथीहाथ हथनियां काधे, चल जात हे बकुचा बाधे गज-गजी.
इक तरुवर अरु आधो नाम, अर्थ करो कि छांटो गाम.-नीम.
सोनेकी वह नारि कहावे, दाल चावलके मोल विकावे.-कंचनी.

पानीमें निशदिन रहे, जाके हाड न मास;
काम करे तल्वारको, फिर पानीमें वास.-कुंभारका डोरा.
जल्में रहे जूठ नहि भाखे, वसे सु नगर मझार;
मच्छ कच्छ दादुर नहिं, पंडित करो विचार.—घडी.

शीश जटा पोथी गहे, सेत वसन गल्माहि;
जोगी जंगम हे नहि, ब्राह्मन पडित नाहि.—लहसुन.
करे बोले करही सुने, श्रवण सुने नहि ताहि;
कहे पहेली वीरवर, सुनिये अकबरशाही.—नाडी.

फाटयो पेट दरिद्री नाम, उत्तम घरमें वाको ठाम;
श्रीको अनुज विष्णुको सारो, पडित हो तो अर्थ विचारो—शंख.

आदि कटेतें सबको पारे, मध्य कटेतें सबको मारे;
अंतर कटेत सबकों मीठा, सो खुशरो में आंखन दीठा— काजल.
देखी एक अनोखी नारी, गुन उसमें एक सबसें भारी;
पढी नहि अरु अचरज आवे, मरनां जीनां तुरत बतावे.—नाडी.
इक गुनीने यह गुन कीना, हरियल पिंजरमें दे दीना,
देखो जादुगरका हाल, डारे हरा निकाले लाल.—पान.

इक नारी औ पुरुष हे ढेर, सबसें मिले एकही बेर,
दिनां चारका अंतर होय, लपटें पुरुष छुडावे कोय.—कंधी.

(समस्या.)

कद्रुसुत छवि छाजत वेणी, माग सुधारत दधिसुत श्रेणी;
भुवन तिय सुत रेख संवारे, श्रीपतिपुरको नाम सुधारे.
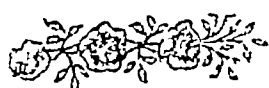
कवि-परिचय

अकबर—दिल्लीके मोगल सम्राट, इसकी सभामें गग, नरहरि, जगन्नाथ, बीरबल, टोडरमल्ल, शेख, फैजी, खानखानान, अबुलफजल इत्यादि अच्छे अच्छे कवि-पडित रहते थे ये खुदाइ कवि थे इनका जन्म ता १४-१०-१५४२ और मृत्यु ता १३-१०-१६०५

अजान—शाहबाद जील्हे डुमरॉव गावके रहेनेवाले, जातिके ब्राह्मण थे उनका नाम "नकछेदी तिवारी" था मनोजमजरी, भडौआमग्रह, कविकीर्ति-कलानिधि,—आदि ग्रथ उन्होने कियेथे सवत् १९६३ श्रावण मासमें स्वर्गस्थ हुए

अनत—सवत् १६९२ में विद्यमान थे उन्होने नायिकाभेदका "अनतानंद" नामक ग्रथ बनाया है

अनन्य—जातिके कायस्थ, बिकानेरके राजा रायसिंहजीके छोटे भ्राता पृथ्विराजके पास रहते थे उन्होने अनन्ययोग, विज्ञानबोध, सुदरीचरित्र, शक्तिपचीशी,—आदि ग्रथ बनाये है

औध-अयोध्याप्रसाद—सातनपुर जील्हे रायबरेलीके रहनेवाले सस्कृत और भाषाके अच्छे पडित थे छदानद पिगल, साहित्यसुधासागर, और रामकवितावलि आदि ग्रथ उन्होने बनाये हे अयोध्याके महत बाबा रघुनाथदासके पास और चदापुरमें राजा जगमोहनसिंहके इहा रहा करते थे स १९३४ तक विद्यमान थे

अहमद—जातिके मुसल्मान स १६७० तक विद्यमान थे

आलम—प्रथम सनाढ्य ब्राह्मण इनका जन्म सं १७१२ में हुवा था ये औरगजेब पादशाहके पुत्र मुआजमके पास रहते थे एक समय आलमने शेख नामक रंगरेजिनको अपनी पगडी रगनेको दी, मूलके एक कागजका टुकडा जिसमें आलमने आधा दोहा लिखकर फिर किसी समय पूरा करनेके लिये बाधा था, बधाही रह

गया. पगडी धोते समय शेखने उस कागजके टुकडेको खोलके पढा; समें लिखा था कि,--

कनक छुरीसी कामिनी, काहिको कटि छीन,

(शेखने नीचे लिखके बाध दिया कि,—)

कटिको कचन काटि विधि, कुचन मध्य धरि दीन.

जब आलमको वह पगडी मिली और दोहेकी पूर्ति हूइ देखी तब आप शेखके घर गये और एक हजार रुपिये इनाम दिये, और पिछे यहां तक प्रेम बढाकि आपने मुसलमानी धर्म ग्रहण कर शेखसें शादी करालिया ! "जहान" नामका उसको एक पुत्र हुवा.

इंदु—उनका पूरा नाम बालमुकुंदलालजी, मथुरामें रहते थे और सं. १७७६ में विद्यमान थे.

उद्धव-ओघड—लखतर-काठियावाडके औदिच्य ब्राह्मण, इन्होने लखतर दरबार कर्णसिहजीके नामसें "कर्णजक्तमणी" और दंभी कवियोंके खंडनार्थ "कुकवि कुठार" ग्रंथ बनाया हे.

उदयभाण—मथानिया-मारवाडके चारन. अपनी कृतिमें "भाण" नाम रखते थे.

ऊमरदान—जोधपुर-मारवाडके आसपास रहते थे. जातिके चारन. पैसेकी प्रशंसामें "कलदार अष्टक" और रामस्नेही साधुओंकी निंदामें एक ग्रंथ उन्होने बनाया हे. सं. १९६० तक विद्यमान् थे.

अंबिकादत्त—यह पंडितजीका जन्म सं. १९१५ चैत्र शुदि अष्टमीको जयपुरमें हुवा. ये सुप्रसिद्ध कवि "दत्त" (दुर्गादत्तजी) के पुत्र थे. दश वर्षकी वयमें ये कविता करने लगे थे. हिंदी, संस्कृत, इंग्लिश आदि भाषा पढे थे और "वैष्णवपत्रिका" मासिक निकालते थे. उन्हका देह त्याग काशीमें हुवा, सं. १९५७.

करनेश—असनी-फतेहपुरके रहनेवाले, नरसिंह बंशीय ब्रह्म-भट्ट. उन्होने कर्णाभरण, श्रुतिभूषण, और भूपभूषण ग्रंथ बनाये है.

कहान—(पहिला)—दीनदर्वेशके समकालिन थे.

कवीर—ये धर्मप्रवर्तक महात्मा कवि काशीनिवासी थे " कवीर कसोटी " में इनका जन्म १४५२ और मृत्यु स १५०० लिखा है

कमाल—कवीरके पुत्र पिताकी साथ रहकर साधुसेवा और भजनम समय निर्गमन करते थे

करण—जातिके ब्रह्मभट्ट इन्होने ' सूर्यप्रकाश ' ग्रंथ राजा अभयसिंह राठोडकी आज्ञानुसार बनाया है

करणसिंहजी—लखतर काठियावाडके राजा कवियोंका सत्कार अच्छा करते थे ' करणरत्नमणी ग्रंथ इन्होके नामसें प्रसिद्ध है सवत् १९८० तक विद्यमान थे

कल्याण—डाकोरके साधु कवि स १८९१ तक विद्यमान थे ' छदभास्कर " और " रमचद्र " ग्रंथ आदि उन्होने बनाये है

कविन्द्र—ये नामके बहोतस कवि हो गये हे इस ग्रथमें आइ हुइ कविता बनपुरानिवासी कालिदास कविके पुत्र उदयनाथ त्रिवेदीकी है अमेठीनरेशने इनको " कविंद्र ' पदवी दी थी " रसचद्रोदय " नामक बडा अच्छा ग्रंथ इन्होने बनाया है

कविराज—जातिके ब्रह्मभट्ट उत्तर हिंदमें रहनेवाले, इधरउधर रजवाडोमें घुमते थे

कालिदास—बनपुरा-कान्हपुरके रहीस जातिके कान्यकुब्ज ब्राह्मण इसका जन्म स १७१० म कहा जाता है वधूविनोद कालिदासका हजारा, जजिरादि ग्रथके कर्त्ता

काशीराम—कुतियाणा-काठियावाडके निवासी जातिके ब्रह्मभट्ट सं १९२८ तक विद्यमान थे कविता रचना अच्छी है, परंतु कोई ग्रंथ मालुम नहि पडता

कादर—सैयद इब्राहीम पिरानीवाले (रसखानि कवि)के शिष्य, जाति मुसल्मान परतु भाषा-काव्य बहुत शुद्ध है

किसन—लोकागच्छक जैनी साधु अपनी बहेन रतनबाईके अवसानका वैराग्य होनेसें " किसनबावनी " ग्रंथ बनाया सो सवत् १७६७ में सपूर्ण किया

किसोर—पूरा नाम " राजा युगलकिशोर. " दिल्हीपति महमदशाहके दरबारमें सं. १८०० तक विद्यमान् थे. अपना पुस्तकमें इन्होने परिचय दिया है कि,-(दोहा)

ब्रह्मभट्ट हों जातिके, निपट अधीन निदान;
राजा पद मोको दियो, महमदशाह सुजान.

कुंदन—मध्य हिंदके ब्रह्मभट्ट, समय सं. १७५२.

केवल—अहमदाबादके नागर ब्राह्मण, केशवरामके पुत्र. जुनागढ नवाबकी प्रशंसामे "बाबीविलास" ग्रथ बनाया. सं. १७५६ मे जन्मे थे और ८० वर्षकी वयमें संन्यास ले के अहमदाबादमें देह त्याग दिया.

केशवदास—सनाढय ब्राह्मण, काशीनाथके पुत्र, जन्म सं. १६१२ के समयमें हुआ था और ओडछा नरेश रामसिंहके भ्राता इंद्रजीतसिह इनका विशेष आदर करते थे. महाराजा वीरबलने इनको केवल एक छंदपर छः लाख रुपिया इनाम दियेथे ! ये संस्कृतमें समर्थ पंडित थे और भाषाके आचार्योंमें गिने जाते है. इनके रचे हुवे ग्रंथ'—रसिकप्रिया, कविप्रिया, श्रीरामचंद्रचंद्रिका, विज्ञानगीता, वीरसिंहदेवचरित्र, जहांगीरचंद्रिका, नख-शीख और रत्नबावनी. उनमेंसें प्रथमके चार सुप्रसिद्ध है.

केशवलाल—जातिके ब्रह्मभट्ट. जामनगर निवासी विद्यमान् है. उनके पिता श्यामजी जयसिह भाषाकाव्यके अच्छे कवि थे. केशवलालके "केशवकाव्य" ग्रंथ प्रसिद्ध है और रैयासतके राजकवि है.

केसरी–केसरीसिंह—ध्रोल (काठियावाड)के राजकुमार. इस ग्रथमें यह नामके दो कवि अलग बताये हे, परंतु वास्तविकमें एकही है.

कृष्ण—मथुराके बिहारी कविके पुत्र, इन्होने "बिहारी सतसइ"-की टीका कुडलिया छंदोमें बनाइ है. दुसरे कृष्णकवि असनी—फतेहपुरवाले नरहरि ब्रह्मभट्ट कविके वशज थे.

कृष्णदास—यह साधु कविने "ज्ञानप्रकाश" ग्रंथ बनाया है.

सूबचद—इडर नरेश गभीरसिंहका काव्य उन्हे रचा है

गद—संवत् १७७० सालमें राजपूतानामें हो गये

गदाधर—ये नामके चार पाच भक्त कवि हो गये है

गिरिधर (पहिला)—स १८८० तक विद्यमानथे ज्ञाति ब्रह्मभट्ट जयपुर महाराजा सवाइ जयसिंहने उन्हुको "कविराय" पद दियाथा

गिरिधर (दुसरा)—पजाबी, शिख सप्रदायके साधु

गुलाब–गुलाबसिंह—बुंदीनरेश रघुवीरसिंहजीके रा यकवि, राजपुत हितकारिणी सभाके सभासद, सस्कृत और भाषाके प्रतिभाशाली कवि और ये राज्यमान्य पुरुपका ज म स १८८७ म हुवा ज्ञाति ब्रह्मभट्ट, महाराजाने उसीको दो गाम उद्यानो और बाकयो इनामम दिये है इन्होने ३४ ग्रथकी रचना की है

गोप—ब्रह्मभट्ट, राव जगदेवके पुत्र कच्छ भुज पाठशालामें बहुत समय शिक्षक था उन्हुके बनाये ग्रथ "हमीरशतक' और 'काव्यप्रभाकर" प्रसिद्ध है

गोविंद–(३)–चोहाण रजपूत (ग्वास) सं १९८२ म गत हुवे सिहोरके रईस उन्हे "गोविद ग्रथमाला"दि ग्रथ बनाये हे

गग—इटावा जीले एकनौर गावके निवासी, जातिके ब्रह्मभ" पूरा नाम गगाधर, अकबरका राज्यकवि

गंगाराम–ब्रह्मभाट स १७४४ में "सभाविलास" और "रसिकविलास" नामक दुसरा नायका भेदका ग्रंथ बनाया हुआ सुना जाता है

गुमानकवि—गुमानमिश्र भी कहेते है इन्होने स १८०१ में "नैपधकाव्य"का भाषापद्यमें अनुवाद किया है

ग्वाल—पिताका नाम सेवकराम, ज म स १८४८ और मृत्यु १९२८ जुगदबाके उपासक ब्रह्मभट्ट थे इन्होने ६०–७० ग्रथ छोटे बडे बनाये ह, जिसमेंसे १५ प्रकाशित हो गये है

घनानद—ज्ञाति कायस्थ और निंबार्क सप्रदायके वैष्णव दिल्हीमें रहते थे और महमदशाहके मुनशी थे सगीत औ काव्यकलामें कुशल थे नागरीदास कविका परम मित्र होनेसें वृदावनमें

दोन्होका सत्संग हुआ करते थे. उन्हका जन्म सं. १७४६ के लग-भग माना जाता है और देहांत जब नादीरशाहने मथुरा लूटा तब मारे जानेसें स. १७९६ में भया.

घनःशाम—असनीके नरहरवशीय ब्रह्मभट्ट. बाधवगढके महाराजा समीप रहेते थे. स. १६३५ के आसपास विद्यमान् थे.

घासीराम—कानपुरके कानकुब्जके ब्राह्मण. कविता रचना शृंगार रसमें अच्छी करते थे. सं. १६८० तक विद्यमान् थे.

चंद—(चंद बरदाय) बडे वीर और स्वामीभक्त, पृथ्वीराज चोहाणके राजकवि, सामत और सेनापति इनका बनाया हुआ "पृथ्वीराज रायसा" ग्रंथ बृहद् और सर्वत्र प्रसिद्ध है. जन्म स. १२०० मृत्यु सं. १२४८.

चंद्रकला—बुंदीवासी कविराज रावजी गुलाबसिहकी दासीपुत्री; यह अच्छी कवियनने चार ग्रथ रचे है.

जसुराम—ज्ञाति चारण. आमोद–भरुचके रहनेवाले. उन्हे उदयसिंह सोलंकीके आश्रयमें रहकर " जसुराम राजनीति " बनाइ सो प्रसिद्ध है और "जसुरामकृत षड्ऋतु" ग्रंथ बनाये सो अप्रकाशित है. कविता रचना व्रजभाषा मिश्रित हिंदी है.

जीवन—(जीवाभक्त) भावनगरके रहनेवाले रजपूत ३५ वर्षकी वयसें परमहंस होके नर्मदाकी चारो ओर अबतक फिरते होते.

जुगलकिशोर—पजाबी राव (ब्रह्मभट्ट) काठियावाडी राजस्थानोमें आते जाते थे.

जेठ्ठलाल—विजापुर-गुजरात निवासी. सुंथ तालुकाके राणा श्री प्रतापसिहजीने तलोदरा गाम इन्हे इनाममें दियाथा.

टोडरमल्ल—लाहोरके खतरी अकबरके दिवान थे.

ठाकुर—(ठाकुरप्रसाद) असनी-फतेहपुरके नरहरिवंशी. इनके पिता ऋषिनाथभी अच्छे कवि थे. इन्हुकी कवितामें प्रेम-गुण विशेष है. सं. १७९२ सों १८५२ तक विद्यमान् थे.

तानसेन—प्रथम गोड ब्राह्मण थे और गोसाइश्री स्वामी हरिदासजीके पास गानविद्या पढे, बाद ग्वालियरनिवासी शेख महमद

गौस पास गये, वहा शेखजीने इनकी जीभसे जीभ लगादी तबसे मुसल्मान हो गये ! और अकबरके वहा रहने लगे

त्रिकम—वीरमगामके वारोट बडे धनाढय थे ध्रागधराके कवि प्रभुरामको बुलायके "त्रिकमप्रकाश' ग्रथ बनवाया मृत्यु स १९१५

तुलसीदास—सरवरिया ब्राह्मण, इनके जन्मस्थानमें मतभेद है बहुतोंका मत है कि राजापुर–प्रयागमें रहेते थे इन्होने रामायण, विनयपत्रिका, श्रीकृष्णगीतावली आदि २० ग्रंथ बडे अद्भुत बनाये है जन्म संवत् १५८८ और देहात स १६८० काशीमें हुआ

तोष—(तोषनिधि) सिंगरोर इलाहाबादके रहनेवाले, चतुर्भुज शुक्के पुत्र इन्होने "सुधानिधि" नामक नायिका भेदका ग्रथ स. १७९१ में बनाया है

दादु—स १६०१ में उन्हुका जन्म अहमदावादमें होनेका कहा जाता है उन्होंने एक पथ चलाया जो "दादुपंथ" सुप्रसिद्ध है प्रकृति वडी दयालु होनेसे लोक इन्होको " दादु दयाल " कहते है

दीनदरवेश—पहिले पालनपुरके लोहार परंतु कोइ फकीरकी सोबतसें मुसल्मान हो गये

दीनदयालगिरि—काशीके गुसांई सस्कृत औ भाषाके अच्छे पंडित थे "अन्योक्ति कल्पद्रुम" और "अनुराग बाग" ग्रथ बनाये थे स १९१२ तक विद्यमान् थे

दुर्गादत्त—गौड ब्राह्मण, पहिले जयपुरमें और पीछे काशीमें रहते थे "हरिप्रिया विलास" और राधाकृष्णके विहारका ग्रंथ उन्होने काशीमें बनाये

दूलह—कविंद्रकविके पुत्र जन्म अनुमान स १७६१ उन्होने "कवि कठाभरण" ग्रथ बनाया है

देवकीनंदन—इस नामके पाच सात कवि हो गये है

देवदत्त—इटावाके ब्राह्मण, हितहरिवंशजीके शिष्य, भाषा-काव्यके आचार्य गिने जाते है उन्होने ७२ ग्रथ बनाये है

देवीदास—सनाढय ब्राह्मण, संस्कृतके पंडित थे. मेरट तरफसें आ कर करौली राज्यके भैया रत्नपालके नामसें "प्रेमरत्नाकर" ग्रंथ बनायकर बहुत सन्मान पाया और सबइगढमें कुछ जमीन मिलनेसें वहां निवासस्थान किया.

नथुराम—वाकानेर, काठियावाड निवासी औदिच्य ब्राह्मण, सं. १९७९ तक विद्यमान् थे. हिंदी, गुजराती भाषाके अच्छे कवि और नाटककार थे.

नरहर—फतेहपुर–असनी निवासी. सं. १५६२में जन्मे और १०५ वर्ष जीवित रहे. इनका अकबरके दरबारमां सन्मान था. इनके प्रयत्नसें समग्र भारतमें गोवध बंध हुवा था.

नरसिंगदास भाणजी—कुंतियाणा–काठियावाडके कनोजीआ ब्रह्मभट्ट. जन्म सं. १९४० में हुआ. श्रीगिरिराज भूषण, निर्वाणतत्त्व, पतिव्रताप्रभाव, सूरदासचरित्र, दाणलीला, महा रास, व्रजमडल, ब्रह्मभट्टदर्पण, वंद्रावन, बिरदावली आदि ग्रंथोके कर्त्ता. गुजराती कवि विद्यमान् है.

नरोत्तमदास—सीतापुरके सत्पात्र ब्राह्मण. उन्होंने " सुदामा–चरित्र" ग्रंथ रसिक भाषामें बनाये है. सं. १६०२ तक विद्यमान् थे.

नवनीत—मथुराजीके चोबे. भाषा औ संस्कृत पढे थे. उन्हे श्यामांगवयव भूषण–(नख–शिख), स्नेहशतक, कुब्जापचीशी, रसिकरत्नावली, निकुंज निवास, मूर्खशतक, मनोरथमंजरी आदि ग्रंथ बनाये है.

नागर—(नागरीदासजी) व्रज भाषामें ये नामके चार कवि हुये है. (१) वल्लभाचार्यके शिष्य. (२) स्वामी हरिदासकी शिष्य–परंपरामें थे. (३) हित हरिवंशीय शिष्य और (४) किसनगढके महाराजा सामतसिंहजी नामी कवि हो गये. इस पुस्तकमें वे नागरीदासकी कविता है, उन्होने ७५ ग्रंथ बनाये है वे "नागर समुच्चय" नामसें प्रसिद्ध है. सं. १७५६ सें. १८८१ तक विद्यमान् थे.

नाथ—ये नामके बहुत कवि हो गये है. जैसे–उदयनाथ,

काशीनाथ, शिवनाथ, शमुनाथ, हरिनाथ इत्यादि सब अपनी कृतिमें "नाथ" नाम रखते थे इस ग्रथमें "नाथ" नामसें न्यारे न्यारे नाथ कवियोंकी कविता है

निपटनिरजन—यह स्वामीजी स १६५० तक काशीमें विद्यमान् थे "शात सरसा" और "निरजन सग्रह" ग्रथ इन्होंने बनाये है

नंददास—"अष्टछाप" अर्थात् व्रजभाषाके महान आठ कवियोंमें इनकी गणना थी ये महात्मा कवि ज्ञातिके ब्राह्मण और गुसाइथी विठ्ठलनाथजीके शिष्य ये रासपचाध्यायी, दानलीला, नाममाला, अनेकार्थ मजरी, भ्रमरगीत आदि ग्रथ रचे है इन्हुका "भ्रमरगीत ' हिदीका "गीतगोविंद" है कहेनावत है कि—"और सब घडिया, नददास जडिया"

नेवाज—ये नामके दो तीन कवि पाये जाते है एक छत्रसाल बुंदेलाके वहां थे इन्होने शकुतला नाटक रचा है, वह ब्राह्मण थे दुसरे बीलग्रामके जुलाहे और तीसरे गाजीपुरके भगवतराय खीचींके इहा थे

पजनेस—जन्म स १८७२ स्थान पन्ना इनका काव्यसग्रह "पजनेस प्रकाश ' काशीमें प्रसिद्ध हुवे है फारसी, सस्कृतके ज्ञाता और शृंगारी कवि थे

पद्माकर—बादानिवासी मोहनलाल भट्टके पुत्र बडे प्रतिभाशाली भाग्यवान कवि थे सं १८९० में ८० वर्षकी आयु भोग स्वर्गवासी भये उन्होंने जगतविनोद, पद्माभरण, प्रबोधपचासा, गगालहरी, वाल्मिकिरामायण, और आलीजहाप्रकाश ग्रंथ बनाये हे सस्कृत, फारसी, प्राकृतादि भाषाके पडित होनेसें और कवितासें लाखाका द्रव्य प्राप्त किया !

परमेश—सतावाके भाट, सं १८९६ तक विद्यमान् थे

पिंगलसिंह—जातिके चारन, राज्यकवि अब विद्यमान् है जन्म स्थान सिहोर स १९२२ गुजराती, हिंदी और चारणी भाषामें विद्वान् है उन्हे पिगलकाव्य, भावभूषण, तत्त्वप्रकाश, चित्त-

चेतावनी, आदि ९ ग्रंथ वनाये है और " हरिरसँ "की टीका की है.

प्रियादास—शिवपुर–चोवेपूरके गुरू, " व्रजरस रत्नावली " के कर्त्ता, आधुनिक कवि.

पृथ्वीराज—विकानेर नरेश राजसिंहके भ्राता; वडे रसज्ञ कवि अकवरके दरवारमें रहते थे. इन्होंने प्रतापी महाराणा प्रतापको कवितामें एक पत्र लिखा था. इस पुस्तकमें पृष्ट ३२६ में "पृथ्वीदास" नाम भूलसें छप गया है और चोथा दोहा भी उनका नहि है. " वेली किसन रुकमणीरी " नामके एक अद्भुत ग्रंथ चारणी भाषामें इन्हे वनाया सो सं. १६३७ में सपूर्ण हुआ. इनके पर संस्कृतमें टीका भी हुइ है.

प्रधान—रीवानरेश विश्वनाथसिंहके मुसाहिव रामनाथ, वह अपनी कृतिमें " प्रधान " संज्ञा रखते थे.

वनवारी—सं. १६९० के लगभग हुए. अमरसिंह राठोडकी प्रशंसामें वीररस काव्य और नायिका भेदादि काव्य उन्हे रचे है.

वलदेव—ये नामके पाच छ अच्छे नामी कवि हुए है.

वलभद्र—ओडछाके सनाढय ब्राह्मण. जन्म सं. १६०० लगभग सुप्रसिद्ध केशव कविके ज्येष्ट वंधु. इन्होंने नखशीख, भागवत-भाष्य, वलभद्री व्याकरण, हनुमन् नाटककी टीका, गोवर्धन सतसइकी टीका और दूषण विचारादि ग्रंथ रचे है.

वाजिंद—वलख–बुखार तरफके कोई वादशाह जादे. उन्होंने लश्करमें मरा हुआ उंट देख कर वैराग्य होनेसें फकीरी ली और भजनमें आयु बिताई !

वालकृष्ण—इस नामके तीन कवि हो गये हे–एक ' रस-चंद्रिका" पिंगलके कर्त्ता, दुसरा "परतीत परीक्षा" के कर्त्ता और तिसरा फुटकर कविताके कर्त्ता. उन्हुकी कविताओंका निर्णय नहि हो शकता.

बिहारी—(पहिला) ये महा कविका जन्म सं. १९६० लगभग वसुवा–गोविंदपुरमें हुवा था बहुतसें विद्वान् उन्होकी जाति माथुर

चोव वताते है, काशीनिवासी बाबु राधाकृष्णदासजीने लिखा है कि ये सनाढय ब्राह्मण और सुप्रसिद्ध केशवदास कविके पुत्र थे और गोस्वामीश्री राधाचरणजीने उनको ब्रह्मभट्ट सिद्ध किया है इनकी "सत सैया" स १७१९ में समाप्त हुई और सतसई पर गद्य–पद्यात्मक बहोतसी टीका हो चुकी है

विहारी—(दुसरा) बुंदेलखडके रहनेवाले स १८०६ तक विद्यमान् थे

बीरवल—(ब्रह्म) अकबरके मुसाहिब, सेनाधिपति, सलाहकार, काव्यमें अपना " ब्रह्म " नाम रखते थे उपमा काव्यमें अद्वितीय होनेमें कहाहै कि,–" उपमागें वरवीर " सो यथार्थ है

वेनी—ये नामके तीन कवि हो गये है एक असनीवाले वदीजन (ब्रह्मभट्ट) उन्हुका जन्म सं १६९० लगभग दुसरा, रायवरेलीमें वेंती-गामके, उनका समय स १८४४ और तीसरे लखनउके, वे अपनी कवितामें " वेनी प्रवीन " नाम रखते थे

वेताल—महाराज विक्रमसिंह बुदेलाके राजकवि जन्म सवत् १७३४, मृत्यु स १७९६

वोधा—(वुद्धसेन) सरवरिया ब्राह्मण कोई इनके स्थान वादा–राजापुर औ कोई फिरोजावाद वतलाते है, परतु फिरोजावादी वोधा एक भिन्न कवि हुए ये पन्ना दरवारमें रहेते थे परतु वह शुभान नामकी नायकापर आशक्त होनेसें देशसें निकाले गये उन्हके विरहके "कामकदला"–" माधवानल "की कथाका ग्रथ और वियोग-काव्य वनाया है

ब्रह्मानद—पहिले आबु तरहटीमें खानगाममें रहेते थे जातिके चारन जन्म नाम लाडु वारोट परतु पिछेसें जब सहजानदस्वामीके शिष्य हुवे तब " श्रीरंग " नाम रख्खा, और साधु होने बाद "ब्रह्मा-नद " नाम धारण किया सं १८८८ तक विद्यमान थे ब्रह्मविलास, सुमतिप्रकाश और धर्मप्रकाश विदुरनीति ग्रथ इन्होने वनाये है

भाण—गिरनारा ब्राह्मण, कच्छ–मांडवीमें रहेते थे. पिताका नाम मोनजी. उन्होंने भाणविलास, भाणबावनी ग्रंथ बनाये थे.

भावनादास—ये नामके दो साधुमें एक निरंजनी रमताराम था और दुसरा जोधपुरके रामसनेही; जिसने अमरकोशके आधारपर "भावनीमाला" और "सदुपदेशमंजरी" ग्रंथ बनाये है.

भिखारीदास—व्योंगा–प्रतापगढमें रहते थे. जन्म सं. १७५५ लगभग. जातिके कायस्थ. काव्यमें अपना नाम "दास" रखते थे. काव्यनिर्णय, रस सारांश, विष्णुपुराण, नामप्रकाश, छंदार्णव पिंगल और शृंगार निर्णय ग्रंथ बनाये है.

भूधर—जैनी कवि सं. सत्तरसों और अठारासेंके बीचमें हुये है.

भूषण— (भूखण) निवासस्थान तिकवांपुर-कान्हपुर. पिताका नाम रत्नाकर त्रिपाठी. ज्ञाति कनोजिये ब्राह्मण कहते है परतु कोइ ये विषयमें विरुद्ध है. महाराजाश्री शिवाजीका समीप रह कर हिंदु धर्म और जातिकी बडी सेवा की है. जन्म सं. १६७० और मृत्यु सं. १७७२, इन्होंने शिवराजभूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास और दूषणउल्लास आदि ग्रंथ बनाये है. पन्नानरेश छत्रसिंह बुंदेलाने, भूषणकी पालखी अपने कंधेपर उठाइथी एसी लोकोक्ति है.

भैया—ग्वालियरनरेश महाराजा सिंदेके भैयासाहेब वलवतराव; ये अपनी कृतिमें "भैया" नाम रखते थे और "दशमस्कंध" भाषा बनाया है.

भोजराज—ज्ञातिके ब्रह्मभट्ट सं. १९०१ में महाराजा रत्नसिंह बुंदेला चखवारीके इहां थे. उन्हे भोजभूषण और रसविलास ग्रंथ बनाया है.

भौन—बेती-राय-बरेलीके रहनेवाले. नरहरवंशी ब्रह्मभट्ट. सं. १८८१ में विद्यमान थे. इन्होंने "शृंगार रत्नाकर" ग्रंथ बनाया है. इनके पुत्र दयालभी कवितामें कुशल थे.

मतिराम—भूषण कविके ये भ्राता कहे जाते है, परंतु सांप्रत साक्षरोमें मतभेद है. जन्म सं. १६७४ और मृत्यु सं. १७७३

लगभग हुवा बुंदीपति राव भाउके यहा रहते थे और ललितललाम, रसराज, छदसार पिंगल और साहित्यसार ग्रथ इन्होने बनाये है

मयाराम—"प्राचीन रत्नावलि अलंकार"के कर्त्ता

मनियार—काशीनिवासी क्षत्री जन्म स १८१५ माना जाता है क्योंकि महिम्नको भाषा उल्था स १८४१ में किया है इनके वनाये ग्रथ हनुमानछब्बीसी और भाषा सौंदर्यलहरी प्रसिद्ध है

महेशदत्त—कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कनौज नजीक मीरांसराइमें रहनेवाले और अयोध्याके महाराजा सर मानसिंहजी बहादुर कायमजग-के इहा रहते थे ज्योतिषमें प्रवीण थे स १९२० में रामशरण भये

महमद—पूरा नाम "मलेक मुहम्मद जायसी" इन्हे दो पद्य पुस्तक वनाये पद्मावत और अखरावट पद्मावतका रचना साल हीजरी सन ९२७ (स १५८४) लिया है

मान (खुमान)—चरखारी—बुंदेलखड निवासी, जन्माध होनेसें कुछ पढे लीखे नहि, परतु कोइ सन्यासी महात्माकी कृपासें कवित्व-शक्ति प्राप्त होनेसें कमडलु पच्चीसी, हनुमान नखशीख और लक्ष्मण-शतक ग्रथ बनाये अनुमान स १८४० इन्होका जन्म माना जाता है

मानसिंहजी—जन्म सं १८९३ मृत्यु स १९५६ ये उर्दू, फारसी, सस्कृत और गुजराती भाषाके ज्ञाता थे सुनते है कि "रसिक-कवितासग्रह" और "ज्ञानसागर" ग्रथ इन्हे बनाये है

मीरावाई—जोधपुर—मेडताके राठोड रतनसिंहकी पुत्री इनका जन्म कुडकीगावमें सं १५५५ के आसपास हुआ था औ विवाह उदय पुरके महाराणा सागाजीके कुअर भोजराज साथ स १५७३ में हुआ था भोजका देहात पिताकि हस्तीमें हुआ था मि टॉडने मीरावाईको कुमाराणाकी राणी लीख कर बडा भ्रम पेदा किया है और यही विषयकी परवर्ति अन्य लेखकोने कि है अनुमान सं १६२८—३० में मीरावाईने द्वारिकामें देह छोडा

मुवारक वेल्यामी—ये सैयदजीका जन्म स १६४०मे हुवा ये अरबी फारसी और सस्कृतके अच्छे विद्वान् थे "अलकशतक" और

"तिलकशतक" इनका रचा प्रकाशित हुआ है; सुनते है कि औरभी कइ शतक इन्होने बनाये थे.

मुक्तानंद—गढडा–काठियावाडके स्वामीनारायणी साधु. उन्हे "विवेक चितामणी" और "सत्संग शिरोमणी" ग्रंथ रचे है, वे सं. १८८० तक विद्यमान थे.

मुरारिदान—जोधपुरके चारन जागीरदार, महाराजा जशवंतसिंहजीके नामसे "जशवंत जशोभूपण" नामक अलंकारका ग्रंथ बनाया. महाराजाने ग्रंथ श्रवणकर लक्ष पसाव करके "कविराजा"की पदवी दी.

मेरामण—राजकोटके ठाकुरसाहेब, इन्होने अपने सत मित्रोंकी मददसें "प्रविणसागर" नामक बृहद् ग्रंथ बनाया है. सं. १९३८

मोतीराम—भरतपुर नरेश बल्वंतसिंहके नामसें उन्हे "बजेंद्र-विनोद" नामक नायिका भेद ग्रंथ बनाया है. सं. १८८५.

मौडजी—मालीआ–काठियावाडके ठाकुर सं. १९६२ में गत हुवे. इन्हे "पोस्तपच्चीसी" नामक अफीम निषेधक लघु ग्रंथ बनाया है.

मंडन—बुंदेलखंड निवासी. इन्हे रसरत्नावली, नयन पचासा, रसविलास ये तीन ग्रंथ बनाये है.

रघुराज—रिवां महाराजा रघुराजसिंहके सत् कवि. जन्म सं. १९८० और अवसान सं, १९३६. इन्होके ग्रथ.—सुंदरशतक, विनयपत्रिका, रुक्मिणीपरिणय, भक्तमाल, आनदाबुनिधि, भक्ति-विलास, रहस्यपचाध्यायी, रामस्वयंवर, यदुराजविलास, विनयमाला, रामरसिकावली, चित्रकूटमाहात्म्य, मृगयाशतक, रघुराजविलास, विनयप्रकाश, भागवतमाहात्म्य, रघुपतिशतक, गंगाशतक, धर्मविलास, शंभुशतक, भ्रमरगीत, राजरंजन, हनुमतचरित्र, परमप्रबोध,—इत्यादि. ये परम रामभक्त थे. कवितामें कहीं कहीं तुलसीदासजीकी छांया ली है.

रघुनंदन—स्वामीनारायणी आधुनिक साधु कवि.

रसखान—दिल्हीके पठान. अपनेको बादशाही खानदान लिखा है. कुछ लोक सैयद इब्राहीम पिहानीवालेकोही रसखान समजते हे परंतु खुद रसखानने तो अपनी बनाइ "प्रेम वाटिका" में लिखा है कि—

देखि गदर हित साहिबी, दिल्ही नगर मसान;
छिनहिं बादशा बसकी ठसक छोडि रसखान

इन्होने "सुजानरसखान" और "प्रेमवाटिका" ग्रंथ बनाये कंठी धारकर वृंदावनमें रहते थे जन्म स १६४० मृत्यु काल स १६८५

रसनिधि—जन्म नाव पृथ्वीसिंह दतिया राज्यके अंतर्गत जागीरदार समय १७६० इनका "रतनहजारा" दि ग्रंथ प्रसिद्ध है, इसमे दोहेही दोहे है

रसरास—नाम नाव " रामनारायण " जातिके कायस्थ, सं १७०५ तक विद्यमान् थे

रससिंधु—ये नामके दो कवि हुये है जाति तैलंग ब्राह्मण

रसलीन—सैयद गुलामनबी बिलग्रामी, उपनाम रसलीन जन्म समय स १७४६ लगभग उन्हे " अंगदर्पण " ग्रंथ स १७९४ में और "रसप्रबोध" सं १७९८ में संपूर्ण किया मुसल्मान होकर भी उनकी कविता, शुद्ध ब्रजभाषामें और बडी रसीली है

रणछोडजी—जुनागढके नागर, नवाबके दिवान, गुजराती होकर फारसी, उर्दु, हिंदी और संस्कृत अच्छी जानते थे परम शिवभक्त थे शिवरहस्य, भाषा शिवपुराण, सदाशिवविवाह, कामदहन, आदि हिंदी ग्रंथों और तवारीखे सोरठ, सोरठके इतिहास ग्रंथ फारसीमें लिखा है जन्म स १८२४ मृत्यु स १८९७

रविराज—मूली-काठियावाडके चारन "नर्मदा लहरी" ग्रंथ बनाया है स १९५१ में देह छोडी

रविराम—(आदितराम) जामनगरनिवासी प्रश्नोरा ब्राह्मण, गानविद्यामें कुशल थे "संगीतादित्य" ग्रंथ बनाया है कवितामें रविराम और आदितराम दोनों नाम रखते थे

रहीम—(अब्दुलरहीम खानखाना) बेरमखाके पुत्र, अकबरके उदार कोशाध्यक्ष मुसल्मान होकर ब्रज और संस्कृतमें अच्छी काव्य की है, और "रहीमनी विलास"में उन्हकी कृति एकत्र की गइ है जन्म स १६१० कहेते है कि इन्होने कवि गंगको एक छप्पय सुनकर छत्तीस लाख रुपये इनाम दियेथे !!!

राज—ये कविके नामपर पृष्ठ ४५३ में तीन छंद दिये गये है वे तीनों अलग अलग कविके है.

रामचंद्र—बनारसी ब्राह्मण सं. १८३० तक विद्यमान थे. "चरणचंद्रिका" इन्हे ग्रंथ बनाया है.

रूपनारायण—जन्म लखनउमें सं. १९४१ में हुआ. कानकुब्ज ब्राह्मण. विविध भाषाके ज्ञाता थे. इन्होंने छोटे वडे ६३ ग्रंथ बनाये है.

लछीराम—अयोध्या-अमोढागांवके रहेनवाले. जन्म सं. १८९८, मृत्यु स. १९६१ बहुतसे राजाओंके नामपर इन्होंने ग्रंथ रचना की और उन्होंने गाव इनाममें दियाथा. वस्ती नरेशके नामपर "प्रेमरत्नाकर", दरभगा महाराजके लिये "लक्ष्मीवररत्नाकर", मल्ला-पुरनरेशके नामपर "मुनीश्वर कल्पतरु", तीकमगढ महाराजके नामपर "महेंद्रभूषण" और रामपुर नरेशके नामपर "महेश्वरविलास" है. सिवाय रघुवीरविलास, कमलानंद कल्पतरु, मानसिह जंगाष्टक, हनुमंतशतक, रामचंद्रभूषण, सरजुलहरी, रामरत्नाकर, इ. ग्रंथ रचे है. इस ग्रंथमें दिये हुवे झुलणा उक्त नामके दुसरे कविके है.

लाल-(पहिला) पूरा नाम गोरेलाल पुरोहित, जन्म स. १७१४ लगभग. महाराजा छत्रसालके दरवारमें रहा करते थे और उन्होंकी साथ लडाइमे मारे गये ! छत्रप्रकाश, विष्णुविलास और राजविनोद ग्रंथ बनाये है.

लाल (दुसरा)—कनौज निवासी, उन्होंने चाणाक्य राजनीतिका भाषामें अनुवाद किया है.

विश्वनाथ—बाधवगढके बघेले क्षत्री महाराजा, कवियोंके कल्प-तरु थे. इन्होंने सस्कृतमें सर्व संग्रह ग्रंथ कवीरके वीजक और विनय-पत्रिकाके तिलक बनाया है. सं. १८९१ में विद्यमान् थे.

वैजनाथ—डेहवा निकट मानपुरके कूर्मवशी भक्तराज, नंबरदार और उर्दु, फारसीमें निष्णात थे. सटीक काव्य कल्पद्रुम, नखशिख, कवित्त-रामायण, कुंडलियारामायण, बरवेरामायण, तुलसीरामायण, विनय-पत्रिका, गीतावली, छदावली, दोहावली, आदि ग्रंथकी विस्तृत टीका बनाई है ये बडे रामभक्त और उदारचित्त थे

वृंद—जन्म सं १७३० औरंगजेबके दरबारी कवि औरंगका पुत्र अजीमुशान अच्छे कवि और कवियोंका आश्रयदाता थे, उसने इनको अपने पितासे माग लिया था वह बगाल, बिहार और उड़ीसका सुबेदार था और ढाकामें अपने साथ वृंदको रखा करते थे इनने "भाव पंचाशिका"—"...सत्तसई"—"वृंदविनोद सत्तसइ" और रचे है उसके अंतमें लिखे है कि,

संवत [illegible] रस [illegible] कार्तिक सुदि [illegible]
सातें [illegible] उपज्यो [illegible]

कांकरोलीके वा[illegible] उन्हकी जाति गौड ब्राह्मण बताते है, जब दुसर "सेवक" जाति कहते है साम्प्रतम इसके वंशधर किसनगढ़मे रहते है

शालिग्राम रामस्नेही साधु भावनादासजीके शिष्य, जोधपुर निवासी उन्हे [illegible], और सन्मामृत सरित इत्यादि ग्रंथ रचे है

शिवसिंह— उनाव-काठाके निवासी, रणजीतसिंह जमीनदारके पुत्र [illegible] स १८०८ ये पोलिस इन्सपेक्टर थे शिवपुराण, ब्रह्मोत्तर-खंडका गद्यानुवाद और "शिवसिंहसरोज" नामक सग्रह ग्रंथ रचे है

शिवनाथ - पन्नानरेश पास रहते थे नायका भेदमें "रस रंजन" ग्रंथ बनाया है स १८२० तक विद्यमान थे

शिवदासराय—राजपुतानामें स १७६८ तक विद्यमान थे उन्हे "रसविलास" और "[illegible] रसकौमुदी" ग्रंथ बनाया है

शिवप्रसाद—मुर्शिदाबादके रहनेवाले गद्य भाषाके आचार्य गिने जाते है बहुतस लोगोंका कथन है कि बंगला, संस्कृत आदि ग्यारह भाषाके लिखने पढनेका अभ्यास रखते थे सरकारी नोकर थे और हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दुमे बहुतसी पुस्तके लिखि है सरकारने "सतारे हिंद" का इल्काब दिया है और अबी "राजा शिवप्रसाद सतारे हिंद" कहे जाते है

शीतल—तीकमापुरके कनोजिया ब्राह्मण सं १८९१ तक विद्यमानथे

शेख—इनका हाल कवि आलमके साथ देखो

सत्तम—मडावा-हरदोईके ब्राह्मण स १८३४ तक विद्यमान थे

सुंदर---(पहिला) ग्वालियरके ब्राह्मण. आगरा नरेश शाहजहां बादशाहने कवित्व शक्तिपर मुग्ध होकर इनको कविराय और महाकविरायकी पदवी देकर मालामाल कर दिया. इन्हे एक ग्रंथ " सुंदर शृंगार " नामक नायका भेदका बनाया, स. १६८८.

सुंदर---(दुसरा) दादुदयाल महात्माके शिष्य, सं. १७१० तक विद्यमान थे. उन्हे सुंदरविलास और ज्ञानसमुद्र आदि वेदांत-वैराग्य ग्रथ बनाये है.

स्वरूपदास---पूर्वाश्रममें चारन, पीछे साधु बन गये. रतलाममें इन्हे 'पाडव यशेंदुचंद्रिका' ग्रंथ बनाया, स. १८९२.

शिरताज---" ताज " नामक मुगल महिला, स. १५८० में मथुरामंडलमें हो गई. ये विठ्ठलनाथजी गोसाइजीकी शिष्या और वैष्णव थी, इनकी वार्ता " बसोबावन वैष्णव " में है.

श्रीपति---काल्पीके कानकुब्ज ब्राह्मण. इन्हे सं. १७७७ में " काव्यसरोज " ग्रथ बनाया. सिवाय " विक्रमविलास "-" कविकल्पद्रुम "-" सरोजकलिका "-"अलकारगगा " आदि इनके रचे कहे जाते है.

सूरदास---ज्ञाति ब्रह्मभट्ट, जन्म नाम गोपालाचार्य, इनके पिता रामदास गोपाल "प्राचीन ग्वालियर" में रहते थे और वल्लभाचार्यके शिष्य थे. इनकी गणना "अष्ट छाप" अर्थात् व्रजके आठ महा कविराजमें है. ये चंद वरदायके वशज जन्मका सं. १५३० और अवसान सं. १६४० " सूरसागर "-" सूरलहरी "-" साहित्यलहरी "-" सूररामायण " आदि ग्रंथके कर्त्ता.

हनुमान---जातिके ब्रह्मभट्ट ये नामके दो प्राचीन कवि थे. इनकी काव्य शृंगार रसमें व्होत है.

हमीर---आधुनिक चारन. इस ग्रंथमें कवित्तके नीचे जो दोहा है सो पृथुराजके संबंधका हे परंतु उन्हुका नहि.

हरजीवन---पोरबंदरके ब्रह्मनिष्ट ब्राह्मण.

हरिदास (पहिला)---रामानुज साधु. खदडपुर-काठियावाड-निवासी. "हरिविलास"का कर्त्ता. सं. १८५१ में स्वर्गवासी भये.

हरिदास (दुसरा)—गोकुलवासी वैष्णव, असलमें काठियावाडी इनके गुजराती घोल-पद मशहूर है इनकी काव्य दुसरा कोइकी हो-नेका सुने जाते है

हरदान—भावनगर महाराजा कृष्णकुमारजीके कवि हिंदी, सस्कृत, अग्रेजी, गुजराती और चारनी भाषाका ज्ञाता चारन पंडित "श्रेयस"–"विवेकातवछरी 'के कर्त्ता अब विद्यमान् हे

हरिकेश—जहांगिराबादके वतनी ज्ञाति ब्रह्मभट्ट राजा छत्रसाल बुंदेलाके पन्नामें रहते थे इनके काव्य ललित है वि सं १७६०में विधमान थे

हरिचरणदास—"ब्रहत कवि वल्लभ ' नामक भाषा-साहित्य ग्रंथके अपूर्व अद्भुत ग्रथकर्ता

हरिचद—बरसाना-व्रजके निवासी जातिके वदिजन (ब्रह्म-भाट) "छदस्वरूपिणी ' पिगलके कर्त्ता दुसरे हरिचंद, राजा छत्रसाल चरखरीवालेके इहा रहतेथे

हरिसिंह—आधुनिक काठियावाडी क्षत्री, "ज्ञानकटारी" के कर्ता

हरिश्चंद्र—काशीनिवासी वाबु गोपालचंद्र उपनाम गिरिघर कविके पुत्र, जातिके अग्रवाल वैश्य, प्रसिद्ध श्रीमत अमीचदके वंशज वगाली, सस्कृत, इग्लिशादि द्वादश भाषाके ज्ञाता थे इनका ज म काशीमें हुआ, स १९०७ ये रसिक वैष्णवने हिंदी भाषाकी गद्य शैलीका सुधार किया, "साहित्यसभा ' और औषधालयादि परोपकारी कार्याको उत्तेजन दिया काशीके पडितोने इनको "भारतेंदु"का इल्काब दिया, जवसें ये "भारतेंदु हरिश्चद वाबु" लिखे जाते है इन्होने छोटे वडे १७५ ग्रंथ बनाये है

हरिराम—दतिया निवासी जातिके ब्रह्मभाट. स १७०८ तक विद्यमान् थे इन्होने एक पिगल ग्रथ बनाया है

हाफिज—हरदोई-वनापुरकी मद्रेसामें मोहमेडन अध्यापक ये प्राचीन कवियोंके हजारों कवित्त-सवैया इकठे कर "हजारा" के नामसें दो हिस्सेमें छपवाये और दुसरा ग्रथ "नविनसग्रह" भी प्रासिद्ध किये है

अरसिकेषु कवित्व निवेदनम् ।
शिरषि मा लिख मा लिख मा लिख ॥

(ગીતિ.)

સુજનો ! સાહિત્ય સુધા,
બુધાધિપોએ સમુદ્ર શાસ્ત્ર મથી;
કાઢી કાવ્ય કળશમાં,
નાખી રાખી પિયો વિના શ્રમથી. ૧

Published by Kahanji Dharmasinh, Rajkot.
Printed by Chimanlal Ishwerlal Mehta, at
the 'Vasant' P. Press, Ghi Kanta,-Ahmedabad.

सुबोधक ग्रंथसंग्रह

સાહિત્ય-રત્નાકર.

આ પુસ્તકમાં ઈશ્વરની ભક્તિ શ્રીરામમહિમા, શ્રીરાધાકૃષ્ણ ગુણકથન તથા શ્રીશિવ-શક્તિની ભક્તિ ઉપાસના ઉપરાંત વિવિધ ઋતુવર્ણન, સજ્જન દુર્જન વિચાર દામમહિમા, પ્રીતિ-મૈત્રિ, શૃંગાર સાર્વ, નારી વિચાર, નાયિકા ભેદ તથા કાવ્ય ચમત્કૃતિ વગેરે નવરસ યુક્ત વિષયો ઉપર કવિથી અકબર, અનન્ય અનત, અહમદ આલમ, ઉદય, કબીર કમાલ, કલ્યાન, કિસોર, કેશવ, કિશ્નન, કાશીરામ, કુમેર, કૃષ્ણદાસ કુદન, ગદ, ગગ, ગોવિંદ, ગોપ, ગોપાલ, ગ્માનધર, ગ્વાલ, ઘાસીગામ, ચદ, ચદ્રકલા, ચૌરામલ, જમાલ, જસુ, જીવન જુગલ જ્યેઠ, ઠાકુર, દ્વિજરામ, દયારામ, દાદુ, દીનદર્વેશ, દુર્ગાદત્ત દેવકીનંદન દેવીદાસ, તાનસેન તુલસી, નરસિંગ નરોત્તમ નવનીત, નાગર, નાથ, નીલકંઠ નિપટનિરંજન, પજનેસ, પદ્માકર, બનારસી, બલદેવ, બલભદ્ર, બાજીદ, બેની, બેતાલ, બિહારી, બીરબલ, બુધસેન, બ્રહ્માનંદ, ભરમિ, ભૂધર, ભૂષણ, મતિરામ, મણિયાર, માન, માનસિંહ, મીરાંબાઇ મુક્તાનંદ, મુરારિદાન, રઘુરાજ, રઘુનંદન રસખાન, રસસિંધુ, રસલીન, રણછોડજી, વૃંદ, વલ્લભ શાલિગ્રામ, શિવપ્રસાદ સેવ શિવદાસ હરિચરણ, હરિચંદ, રૂપનારાયણ, રણમલ, ગવિંદત્ત રવિરામ, રહીમ (રસખાન) લાલ, રામચંદ્ર-આદિ ૩૦૦ નામાંકિત કવિઓની કવિતાઓનો કવિ-પરિચય સહ સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે કાગળ જાડા ગ્લેઝ મોટા કદનાં પૃષ્ઠ ૬૦૦ પુંઠુ પાકુ ત્રણ સોનેરી નામવાળુ મૂલ્ય રૂ ૪ાા ટપાલ રૂ ૦ાાા.

પ્રેમ-શૃંગાર દોહાવલી

એમાં પરમાત્મ પ્રેમપ્રશંસા પ્રમરસ પ્રવાહ પ્રીતમ પત્રિકા, પ્રાણપતિની પ્રાર્થના, પ્રીતરીત સ્તુતિ, સજ્જન વિયોગ, મનભાવન વિયોગ, સખીની સમસ્યાઓ ઇત્યાદિનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે કિં રૂ. ૦ા ટપાલ ૦)

ચોરાશી આસન.

આ ગ્રથમાં થી હઠયોગનાં સિદ્ધાસન સિંહાસન, દઢાસન, પદ્માસન, વીરાસન તથા ધીરાસનાદિ ૮૪ આસનોના અવાંતર (પેટા) ભેદ મળી ૯૮ આસનોના ચિત્રો મંત્ર પ્રક્રિયા સાથે આપ્યાં છે સિવાય નેતિ, ધોતિ બસ્તી તથા બ્રહ્મદાતણાદિનાં ચિત્રો પણ દાખલ કર્યાં છે ઉપરાંત બ્રહ્મસ્વરૂપનાં લક્ષણ વગેરે વિષયોનો કરેલો વધારો જીજ્ઞાસુઓને ખાસ અભ્યાસ કરવા યોગ્ય છે મૂલ્ય રૂ ૧ાા

કચ્છદેશની જૂની વાર્તાઓ.

પ્રાચીન ધર્મશાસ્ત્ર સાથે સંબંધ ધરાવતી સંખ્યાબધ ઇતિહાસિક છતા ચમત્કારિક વાર્તાઓનુ આ દળદાર પુસ્તક અનેક ફારસી, ગુજરાતી અને સિંધી ગ્રથોને આધારે એક અનુભવી કચ્છી લેખકની કસાએલી કલમે લખાએલુ છે, અને તેમા ચાનક આપનારી અસલ બેતો તથા ઉપયુક્ત બાબતોનો સમાવેશ કરવામા આવ્યો છે. પુરાણ પ્રસિદ્ધ યાદવ વશથી માંડી, હાલના રાજકર્તા શ્રીમન્ મિરઝા મહારાવ સુધીનો આ ઇતિહાસિક ગ્રંથ કેટલો ઉપયુક્ત છે તે કહેવાની વધુ અગત્ય નથી. પુઠું મજબુત, પૃષ્ટ ૧૮૬ કિં રૂ. ૧ાા. પોસ્ટેજ ૦)=

કાઠિયાવાડી સાહિત્ય–ભાગ પહેલો.

આ પુસ્તકમાં રાહ ખેગાર ને રાણકદેવીના, રાહ મડળિક ને નાગબાઇના, રાહ કવાટ ને ઉગાવાળાના, રાહ દયાસ ને નોંઘણના નાગમતી ને નાગવાળાના, ઉજળી ને મેહ જેઠવાના, ચભાડ ને સોઢા પરમારના શેણી ને વેજાણદના, કુવર ને રાણાના, સોન કસારી ને બાબરિયા વિગેરેના ઇતિહાસપ્રસિદ્ધ દુહા, સોરઠા ઉપરાંત મસ્તરામ, ભજુતગર વગેરે સંત પુરૂષોની જ્ઞાનબોધક વાણીનો સમાવેશ કર્યો છે, એટલુજ નહીં પણ ક્ષત્રીવટ, નાતજાત, જોતિષ, વૈદક, ધાન્યમહિમા, તથા ઉખાણાદિ કવિતાઓ એટલી રસિક છે કે તે પૂરી વાંચ્યાવગર પુસ્તક હાથમાંથી મુકવુ ગમતું નથી. રૂા. ૧ા. પોસ્ટેજ ૦)=

શિવભજનાવળી.

શ્રી શિવભક્તિની ભક્તિ ઉપાસનાનું આ રસિક અને બોધદાયક પુસ્તક જુદા જુદા પ્રાચીન કવિઓએ રચેલુ છે, અને તેમા અનેક સગીત, પદ, છંદ, ગરબા, ગીત, ઇત્યાદિનો સમાવેશ કરવામા આવ્યો છે. મોટા કદના પૃષ્ઠ ૨૦૦ પુઠું સોનેરી ત્રણ નામવાળું. રૂ. ૨.

ચમત્કારિક દૃષ્ટાંતમાલા.

જગત ઝવેરી ચમત્કારને નમસ્કાર કરે છે, તેથી ચિત્ર વિચિત્ર બુદ્ધિ ચાતુર્યનાં ૧૦૮ દૃષ્ટાતો ચુંટી કાઢી, આ સુબોધક કથામાળા તૈયાર કરી છે. એમા ત્રણ જન્મનું જ્ઞાન, યમરાજનુ રાજીનામુ, દત્તાત્રય ને ગોરખ, સુવરી ને નારદ, ભતૃહરી ને ગોપીચંદ, જ્ઞાનીનો દર્શનલાભ, સંન્યાસીની જ્ઞાનગંગા, મોતીની હવેલી, સોનાની ચાર પુતળી, સતીનું કથાશ્રવણ, શ્રીપ્રભુ પલમા ચાહે સો કરે, શ્રી કાશીક્ષેત્ર નિરૂપણ વિગેરે વિષયો અને કાવ્યો એટલા મનોરંજક છે કે પુસ્તક ફરી ફરી વાંચવાને ચિત્ત આકર્ષાય છે. મોટા કદનાં પૃષ્ઠ ૩૦૦. પુઠું કપડાનુ પાકુ સોનેરી ત્રણ નામવાળું મૂલ્ય રૂા. અઢી, પોસ્ટેજ રૂા. અરધો.

કાઠિયાવાડી સાહિત્ય-ભાગ બીજો

આ પુસ્તકમાં રાજિયા જોગડા, મોતિયા સામળા, સામતા, ગફેમાન, જીવણ, વીગમ વિગેરેના રચેલા સેંકડો સુબોધક સોરઠાઓ ઉપરાંત એકત્રીસ ઐતિહાસિક અને રસિક વાર્તાઓના સાર સાથે જે દુહાઓ દાખલ કર્યા છે તેમાં નાગાજણ નાગરીના નાગદે માલાના, ચંપા ને પદમણીના, ખંભાતણ ખીમરાના મુળાંદે બાનરાના કુંવર ને લાખાના, વિજોઇ ને કમાના, ઢોલરા ને દેવરાના, મારૂ ને ઢોલાના, તથા હોથલ, દાદવા, વીઝરા પોરસા, કાચબા ઇત્યાદિના શબ્દો ખાસ ચાનક આપનારા છે સિવાય સતીના સંદેશા, નાત જાતનો મહિમા ગુરૂ ચેલાનો સંવાદ, કાઠિયાવાડનું પ્રાચીન શિક્ષણ સાહિત્ય, વ્યવહારિક ઉખાણાં અને કહેવતોનો સંગ્રહ એટલો ઉપયોગી છે કે સંસારમાં પદે પદે તેનો અનુભવ થતાં નીતિશાસ્ત્રની અગત્ય પૂરી પાડે છે આ ગ્રંથો વિષે નામાંકિત નર નારીઓએ એક અવાજે સ્તુતિ કરી છે ને વિદ્વાન પત્રકારોએ પ્રશંસા કરી છે મૂલ્ય રૂ એક.

સુખરૂપ-શ્રી-મ સાર

આ પુસ્તકમાં ઇશ્વરપ્રાપ્તિ, સતી પાર્વતીનું ચરિત્ર, મહાત્મા વિદુરનો પુત્ર પ્રતિ ઉપદેશ, સતી મદાલસાએ પોતાના પુત્રોને આપેલો બોધ શ્રી ઋષભદેવનાં શિક્ષા વચન ગુરૂમાહાત્મ્ય, શ્રીકૃષ્ણનો ઉદ્ધવ પ્રતિ ઉપદેશ, શ્રી રામચંદ્ર ચરિત્ર, સ્ત્રીજાતિનું ગૌરવ, સ્ત્રી કર્તવ્ય, સ્ત્રી ઉન્નતિની સાધના, રામ મહિમા, દયા-ધર્મ, સોળ સંસ્કારનો સાર અને દામ્પત્ય ધર્મ ઇત્યાદિ સર્વ સંસારીઓને ખાસ બોધક બાબતોનો સંગ્રહ આપ્યો છે કર્તા કે વા. સૌ માણેકબાઇ, ચિત્ર સહિત પુઠું ત્રણ સોનેરી નામવાળું પૃષ્ઠ ૨ ૫ મૂલ્ય રૂ. બે.

સતીગુણચન્દ્રિકા

એમાં વાર્તારૂપે આપેલાં સંયુક્તા, કુર્મદેવી, મીરાંબાઇ રૂપમતિ, અહલ્યાબાઇ, કૃષ્ણાકુમારી તુલસીબાઇ ઝાંસીની રાણી લક્ષ્મી ૧૪, કળાવતી મીનળદેવી સરદારબા, સુંદરબા વાગમતી શરતસુંદરી રૂપસુંદરી અંશુમતિ, લાલબા રાણી ભવાની, સોનરાણી રાણકદેવી સતી સેન સત્યવતી, પદ્માવતી, મૃગનયની, તારાબાઇ દુર્ગાવતી, જીજીબાઇ, હેજાબાઇ, ગુનોરની રાણી, ચંદા રાણી, સોરીરની રાણી, મેવાડની પાનબાઇ, ઝવેરબાઇ, વીરકળા, ગજરાજ, હેમંતકુમારી, કલાવતી, કળાવતી, ચંદ્રપ્રભા કાન્તા વીરા તાઇબાઇ, ચનવા મચ્છી, મીરાંબાઇ, કમળાદેવી, સરૂબા, ઉમાબાઇ, ગૌરીબાઇ, જસમા રાણુબા, ઇત્યાદિનાં ચરિત્રો ખાસ વાંચવા યોગ્ય છે પાકું પુઠું ત્રણ સોનેરી નામવાળું મૂલ્ય રૂા બે ટપાલ ખર્ચ ૨ ૦.

શ્રીકૃષ્ણસ્મરણ

એમાં સ્નાન શૌચ, ત્રિકાળનું આહ્નિક, અષ્ટાક્ષરીમંત્ર, શ્રીકૃષ્ણ શરણાષ્ટક, યમુનાવિજ્ઞપ્તિ, ઇત્યાદિ અર્થ સહિત આપેલ છે મૂલ્ય રૂા ૦)

મહિલાસંસાર.

શ્રીમતી રૂખમાબાઇએ તેમજ સ્ત્રીસુબોધિની સભાના વ્યવસ્થાપક સ્વ. સૌ. માણેકબાઇએ લખેલા અનુભવયુકત સરસ લેખો એમાં છેઃ–એકત્ર કુટુંબથી થતી દુર્દશા, ઓઝલ–પડદાનો અત્યાચાર, સ્ત્રીકર્તવ્ય, સ્ત્રીજાતિપરઅન્યાય, દેવાશી સુંદરીઓ, રાજા જનક ને રાણી સુનીતિ, શુભ વ્રતમાં અશુભ વર્તન, માતૃભકત રામકૃષ્ણ ઇત્યાદિ ઉપરાંત રસક ગીત, ગરબા, છંદ, આરતી ખાસ મુખપાઠ કરવા યોગ્યછે. મૂલ્ય રૂ. ૦ાા.

સદ્‌બોધદિપક.

શ્રીમદ્ શંકરાચાર્ય આદિ મહાત્માઓનાં રચેલા સદાચાર સ્તોત્ર-ભાષાંતર, ગુરૂમહિમા, સુભાષિતરત્નાવળી, ષોડષચાણક્ય, ચિત્ર રૂ. ૦ાાા.

ભક્તિકલ્પદ્રુમ

ભકિત–જ્ઞાન–વેદાંત વિષે પ્રાચીન પુરૂષોએ રચેલા ગદ્યપદ્યાત્મક પાંચ પુસ્તકોઃ–શૈલસુતાસ્તોત્ર, સદ્‌ઉપદેશ મંજરી, રામરસ, અનુભવપ્રકાશ તથા મતોપશતક ચિત્ર ચરિત્ર સાથે કિં. રૂ. ૦ાા પોસ્ટેજ ૦)=

વશીકરણવિદ્યા.

ખાસ સ્ત્રીઓને માટે, મોહિની મંત્ર, હાસ્ય વિનોદ, રતિસમય ઇત્યાદિ સાથે ૦)=.

પરાશર ધર્મશાસ્ત્ર.

સ્ત્રી પુરૂષના વ્રતાચરણ, ચારે વર્ણના આચાર વિચાર, ગૃહસ્થના ધર્મો, અગમ્યગમનાદિ પ્રાયશ્ચિતના વિધિ, અભક્ષ્ય ભક્ષણાદિની શુદ્ધિ, વિધવા–વિવાહ વિચાર, વગેરે બાબતો સાથે પૃષ્ટ ૧૦૪ રૂ. એક.

અધ્યાત્મપ્રકાશ.

એમાં વૈરાગ્ય લક્ષણ, બ્રહ્મવર્ણન. વિવિધ શાસ્ત્રસિદ્ધાંત, ગીતા તથા ન્યાય વૈશેષિકને આધારે અધ્યાતમ જ્ઞાનનો અગમ્ય અનુભવ બતાવ્યો છે. પૃષ્ઠ ૧૪૦ પુઠું પાકું સોનેરી નામવાળું. રૂ. એક.

શ્રીમાનનું ચરિત્ર.

મુંબઇ નિવાસી હાલાઇ ભાટિયા જ્ઞાતિના મુખ્ય અગ્રેસર, મીલ માલેક અને પરોપકારી શેઠ ગોવિંદજી ઠાકરસી મુળજીના આ જીવન ચરિત્રમા યદુવંશની ઉત્પત્તિ, વ્યવહાર જ્ઞાન, ધર્મ–વિચાર, સ્ત્રીધર્મ નિરૂપણ, દાનમહિમા, બુદ્ધિબળ તથા ગુણ લક્ષણનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે મોટા કદનાં પૃષ્ટ ૨૬૦ સચિત્ર પુઠું પાકું ત્રણ સોનેરી નામવાળું. રૂ. ૧ાા

કવિ કહાનજી ધર્મસિંહ—